

[illegible]

प्रेमसागर।

अर्थात्

लल्लुलालकृत

भाषामें दशमस्कन्धभागवतकी कथा।

सब पण्डितने शोधकर श्रीदेवमोहन घोष औ

श्रीयदुनाथ रायके हुकुमसे

जेला चब्बिश परगना।

मोकाम मानिकतला शशधर

छापाखानेमे छापा भया।

* यह किताब मिलनेका ठीकाना बड़ीबाजार दफ्तरी पट्टी मुनीरद्दीन दफ्तरीके दुकानमे १ एक रुपेया किम्मतमे मिलेगा।

सम्वत् १९१८ चैत्र वदी ३

इति सूचिपत्र सम्पूर्णम् अध्याय ॥

प्रेमसागर।

बिघन बिदारण बिरद वर बारण बदन बिकाश।
बरदे बहु बाढ़ै बिशद बाणी बुद्धि बिलाश॥
युगल चरण जोवत जगत जपत रैन दिन तोहि।
जगमाता सरस्वति सुमिर युक्ति उक्ति दे मोहि॥

एक समै व्यासदेव कृत श्रीमत भागवतके दशमस्कंधकी कथाको चतुर्भुज मिश्रने दोहे चौपाईमें ब्रजभाषा किया, सो पाठशालाके लिये श्रीमहाराजधिराज सकलगुणनिधान पुण्यवान् महाजान मारकुइसवलिजलि गवरनर जनरल प्रतापीके राजमें॥

कवि पण्डित मण्डितकिये नग भूषण पहिराय।
गाहि गाहि विद्या सकल बस कीनही चित चाय॥
दान रीर चहुं चक्रमें चढें कविनके चित्त।
आवत पावत लाल मणि हय हाथी बहु बित्त॥

श्री श्रीयुत गुणगाहक गुणियन सुखदायक जानगिलकिरिस्त महाशयकी आज्ञासे संबत् १८६० में श्रीलल्लुलालजी कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरवालेने विसका सार ले यामनी भाषा छोड़ दिल्ली आगरेकी खड़ी बोलीमें कह नाम प्रेमसागर धरा पर श्रीयत जानगिलकिरिस्त महाशयके जानेसे बना अध

वना छपा अध छपा रह गया था सो अब श्रीमहाराजेश्वर अति दयालु कृपाल यशस्वी तेजस्वी गिलबर्ट लार्ड मिंटो प्रतापवानके राजमें औ श्रीगुणखान सुखदान कृपानिधान भाग्यवान कपतान जान उलियम टेलर प्रतापीकी आज्ञासे और श्रीयुत परम सुजान दयासागर परोपकारी डाकतर उलियम हंटर नक्षत्री की सहायतासे औ श्री निपट प्रवीण दयायुत लिपटन अवराहम लाकिट रतीवन्तके कहेसे उसी कविने संवत् १८६६ में पूराकर छपवाया पाठशालाके विद्यार्थियोंके पढ़नेको ॥

१ अध्याय ।

अथ कथा आरंभ । महाभारतके अन्तमें जब श्रीकृष्णचन्द्र अंतरध्यान हुए तब पांडव तो महा दुखी हो हस्तिनापुरका राज परीक्षितको दे हिमालय गलने गये और राजा परीक्षित सब देश जीत धर्मराज करने लगे कितने एक दिन पीछे एक दिन राजा परीक्षित आखेटको गये तो वहां देखा कि एक गाय और बैल दौड़े चले आते हैं तिनके पीछे मूसल हाथमें लिये एक शूद्र मारता आता है जब वे पास पहुंचे तब राजाने शूद्रको बुलाय दुख पाय झुंझलाय कर कहा अरे तू कौन है अपना बखान कर जो मारता है गाय औ बैलको जान क्या अर्जुनको तैंने दूर गया जाना तिससे उसका धर्म नहीं पहिचाना सुन पंडुके कुलमें ऐसा किसीको नपावेगा कि जिसके सोंहीं कोई दीनको सतावेगा इतना कह राजाने खड्ग हाथमें लिया वह देख डरकर खड़ा हुआ फिर नरपतिने गाय और बैलकोभी निकट बुलाके पूछा कि तुम कौन हो मुझे बुझाकर कहो देवता हो कै ब्राह्मण और किसलिये भागे जाते हो यह निधड़क कहो मेरे रहते किसीकी इतनी सामर्थ नहीं जो तुम्हें दुख दे ।

इतनी बात सुनी तब तो बैल शिर झुका बोला महाराज यह पापरूप काले बरण डरावनी मूरत जो आपके सम्मुख खड़ा है

सो कलियुग है इसीके आनेसे मैं भागा जाता हूं यह गाय स्वरूप पृथी है सोभी इसीके डरसे भाग चली है मेरा नाम है धर्म चार पांव राखता हूं तप सत दया और शौच सत युगमें मेरे चरण बीस बिस्वेथे त्रेतामें सोलह द्वापरमें बारह अब कलियुगमें चार बिस्वे रहे इसलिये कलिके बीचमें चल नहीं सकता धरती बोली धर्मावतार मुझसेभी इस युगमें रहा नहीं जाता क्योंकि शूद्र राजा हो अधिक अधर्म मेरे पर करेंगे तिनका बोझ मैं न सह सकूंगी इस भयसे मैंभी भागती हूं यह सुनतेही राजाने क्रोध कर कलियुगसे कहा मैं तुझे अभी मारता हूं वह घबरा राजाके चरणोंपर गिर गिडगिड़ाकर कहने लगा पृथीनाथ अब तो मैं तुम्हारी शरण आया मुझे कहीं रहनेको ठौर बताइये क्योंकि तीन काल और चारों युग जो ब्रह्माने बनाये हैं सो किसी भांति मेटे न मिटेंगे इतना बचन सुनतेही राजा परीक्षितने कलियुग से कहा कि तुम इतनी ठौर रहो जूए झूठ मदकी हाट वेश्याके घर हत्या चोरी और सोनेमें यह सुन कलिने तो अपने स्थानको प्रस्थान किया और राजाने धर्मको मनमें रख लिया पृथी अपने रूपमें मिल गई राजा फिर नगरमें आये और धर्म राज करने लगे ॥

कितने एक दिन बीते राजा फिर एक समै आखेटको गये और खेलते खेलते प्यासे भये शिरके मुकुटमें तो कलियुग रहताही था तिसने अपना औसर पा राजाको अज्ञान किया राजा प्यासके मारे कहां आते हैं कि जहां लोमस ऋषि आसन मारे नैन मूंदे हरिका ध्यान लगाये तप कर रहे थे तिन्हें देख परीक्षित मन में कहने लगा कि यह अपने तपके घमंडसे मुझे देख आंख मूंद रहा है ऐसी कुमती ठानि एक मरा सांप वहां पड़ा था सो धनुषसे उठा ऋषिके गलेमें डाल अपने घर आया मुकुट उतारतेही राजाको ज्ञान हुआ तो शोचकर कहने लगा कि कञ्चनमें कलि

युगका बास है यह मेरे शीस पर था इसीसे मेरी ऐसी कुमति हुई जो मरा सर्प ले ऋषिके गलेमें डाल दिया सो मैं अब समझा कि कलियुगनें मुझसे अपना पलटा लिया इस महापापसे मैं कैसे छूटूंगा बरन धन जन स्त्री और राज मेरा क्यों न गया सब आज न जानूं किस जन्ममें यह अधर्म जायगा जो मैंने ब्राह्मण को सताया है॥

राजा परीक्षित तो यहां इस अथाह शोच सागरमें डूब रहे थे और जहां लोमस ऋषि थे तहां कितने एक लड़के खेलते हुए जा निकले मरा सांप उनके गलेमे देख अचम्भे रहे और घबरा कर आपसमें कहने लगे कि भाई कोई इनके पुत्रसे जाके कह दे जो उपवनमें कौशिकी नदीके तीर ऋषियोंके बालकोंमें खेलते है एक सनतेही दौड़ा वहीं गया जहां शृङ्गी ऋषि छोकरोंके साथ खेलता था कहा बन्धु तुम यहां क्या खेलते हो कोई दुष्ट मरा हुआ काल नाग तुम्हारे पिताके कंठमें डाल गया है सुनतेही शृङ्गी ऋषिके नैन लाल हो आये दांत पीस पीस लगा थरथर कांपने और क्रोध कर कहने कि कलियुगमें राजा उपजे हैं अभीमानी धनके मदसे अन्धे हो गये हैं दुखदानी अब मैं उसको दूहं श्राप वही मीच पावेगा आप ऐसे कह शृङ्गी ऋषिने कौशिकी नदी का जल चुल्लुमें ले राजा परीक्षितको श्राप दिया कि यही सर्प सातवें दिन तुझे डसेगा॥

इस भांति राजाको सराप अपने बापके पास आ गलेसे सांप निकाल कहने लगा हे पिता तुम अपनी देह संभालो मैंने उसे श्राप दिया है जिसने आपके गलेमें मरा सर्प डाला था यह बचन सुनतेही लोमस ऋषिने चैतन्य हो नैन उघाड़ अपने ज्ञान ध्यानसे बिचार कर कहा अरे पुत्र तूने यह क्या किया क्यों श्राप राजाको दिया जिसके राजमें थे हम सुखी कोई पशु पंछीभी न था दुखी ऐसा धर्मराज था कि जिसमें सिंह गाय एक साथ रहते और आपसमें

कुछ न कहते अरे पुत्र जिनके देशमें हम बसे क्या हुआ तिनके हंसे मरा हुआ सांप डाला था उसे श्राप क्यों दिया तनक दोष पर ऐसा श्राप तैंने किया बड़ाही पाप कुछ बिचार मनमें नहीं किया गुण छोड़ा औगुन नहीं लिया साधको चाहिये शील सुभावसे रहे आप कुछ न कहे और की सुन ले सबका गुन लेले औगुन तज दे ॥

इतना कह लोमस ऋषिने एक चेलेको बुलाके कहा तुम राजा परीक्षितको जाके जना दो जो तुम्हें शृङ्गि ऋषिने श्राप दिया है भला लोग तो दोष देहींगे पर वह सुन सावधान तो हो इतना बचन गुरुका मान चेला चला चला वहां आया जहां राजा बैठा शोच करता था आतेही कहा महाराज तुम्हे शृङ्गी ऋषिने यह श्राप दिया है कि सातवेंदिन तक्षक डसेगा अब तुम अपना कारज करो जिस्से कर्म की फांसीसे छूटो सुनतेही राजा प्रसन्नतासे खड़ा हो हाथ जोड़ कहने लगा कि मुझ पर ऋषिने बड़ी कृपा की जो श्राप दिया क्योंकि मैं माया मोहके अपार शोच सागरमें पड़ाथा सो निकाल बाहर किया जब मुनीका शिष्य बिदा हुआ तब राजाने आप तो बैराग लिया और जन्मेजयको बुलाय राजपाट देकर कहा बेटा गौ ब्राह्मणकी रक्षा कीजो और प्रजाको सुख दीजो इतना कह आये रनवांस देखी नारी सबी उदास राजाको देखतेही रानियां पावों पर गिर रो रो कहने लगीं महाराज तम्हारा बियोग हम अबला न सह सकेंगी इससे तुम्हारे साथ जी दें तो भला राजा बोले सुनो स्त्रीको उचित है जिस्से अपने पतिका धर्म रहे सो करे उत्तम काजमें बाधा न डाले ॥

इतना कह धन जन कुटुम्ब और राजाकी माया तज निरमोही हो अपना योग साधनेको गङ्गाके तीर पर जा बैठा इसको जिसने सुना वह हाय हाय कर पछताय पछताय बिन रोये न रहा और यह समाचार जब मुनियोंने सुना कि राजा परीक्षित शृङ्गी ऋ

षिके श्रापसे मरनेको गङ्गातीर पर आ बैठा है तब व्यास बशिष्ठ भरद्वाज कात्यायन पराशर नारद बिश्वामित्र बामदेव यमदग्नि आदि अट्ठासी सहस्र ऋषि आये और आसन बिछाय पांत पांत बैठ गये अपने अपने शास्त्र बिचार बिचार अनेक अनेक भांतिके धर्म राजाको सुनाने लगे कि इतनेमें राजाकी श्रद्धा देख पोथी कांखमें लिये दिगंबर भेष किये श्रीशुकदेवजीभी आन पहुंचे उनको देखतेही जितने मुनि थे सबके सब उठ खड़े हुए और राजा परीछित भी हाथ बांध खड़ा हो बिनती कर कहने लगा कृपानिधान मुझपर बड़ी दयाकी जो इस समै आपने मेरी सुध ली इतनी बात कही तद शुकदेव मुनि भी बैठे तो राजा ऋषियों से कहने लगे कि महाराजो शुकदेवजी व्यासजीके तो बेटे और पराशरजीके पोते तिनको देख तुम बड़े बड़े मुनीश होके उठे सो तो उचित नहीं इसका कारण कहोजो मेरे मनका संदेह जाय तब पराशर मुनिबोलेराजाजितने हमबड़े बड़े ऋषिहैं पर ज्ञानमें शुकसे छोटेही हैं इसलिये सबने शुकका आदर मान किया किसी ने इस आस पर कि ये तारन तरन हैं क्योंकि जबसे जन्म लिया है तबहीसे उदासी हो बनवास करते हैं औ राजा तेराभी कोई बड़ा पुण्य उदै हुआ जो शुकदेवजी आये ये सब धर्मोंसे उत्तम धर्म कहेंगे जिससे तू जन्म मरणसे छूट भवसागर पार होगा यह बचन सुन राजा परीछितने श्रीशुकदेवजी को दण्डवत कर पूछा महाराज मुझे धर्म समझायके कहो किस रीतिसे कर्मके फंदसे छूटूंगा सातदिनमें क्या करूंगा अधर्म है अपार कैसे भवसागर करूंगा पार॥

श्रीशुकदेवजी बोले राजा तू थोड़े दिन मत समझ मुक्ति तो होती है एकही घड़ीके ध्यानमें जैसे खट्वाङ्ग राजाको नारद मुनिने ज्ञान बताया था और उसनेदोही घड़ीमें मुक्ति पाई थी तुम्हें तो सात दिन बहुत है। जो एक चित हो करो ध्यान तो

सब समझोगे अपनेही ज्ञानसे कि क्या है देह किसका है बास कौन करता है इसमें प्रकाश यह सुन राजाने हरषके पूछा महाराज सब धर्मोंसे उत्तम धर्म कौन सा है सो कृपा कर कहो तब शुकदेवजी बोले राजा जैसे सबधर्मोंमे वैष्णव धर्म बड़ाहै तैसे पुराणोंमें श्रीभागवत जहां हरिभक्त यह कथा सुनावें हैं तहां हीं सब तीर्थ औ धर्म आवें हैं जितने हैं पुराण पर नहीं हैं कोई भागवतके समान इस कारण मैं तुझे बारह स्कन्ध महापुराण सुनाता हूं जो व्यास मुनिने मुझे पढ़ाया है तू श्रद्धा समेत आनन्दसे चित्त दे सुन तब तो राजा परीक्षित प्रेमसे सुनने लगे और शुकदेवजी नेमसे सुनाने॥

नौ स्कन्ध कथा जब मुनिने सुनाई तब राजाने कहा दीन दयाल अब दया कर श्रीकृष्णावतारकी कथा कहिये क्योंकि हमारे सहायक औ कुलपूज वेही हैं शुकदेवजी बोले राजा तुमने मुझे बडा सुख दिया जो यह प्रसंग पूछा सुनो मैं प्रसन्न हो कह ताहूं यदुकुलमें पहले भजमान नाम राजा थे तिनके पुत्र पृथिक पृथिकके बिदूरथ तिनके सूरसेन जिन्होंने नौ खंड पृथी जीतके यश पाया उनकी स्त्रीका नाम मरिष्या तिसके दश लड़के और पांच लड़कियां तिनमें बडे पुत्र वसुदेव जिनकी स्त्रीके आठवें गर्भमें श्रीकृष्णचन्द्र जीने जन्म लिया जब वसुदेवजी उपजे थे तब देवताओंने सुरपुरमें आनन्दके बाजन बजाये थे और सूरसेनकी पांच पुत्रियोंमें सबसे बड़ी कुन्ती थी जो पंडुको ब्याही थी जिसकी कथा महाभारतमें गाई है और वसुदेवजी पहले तो रोहन नरेशकी बेटी रोहणीको ब्याह लाये तिस पीछे सत्रह जब अठारह पट रानी हुईं तब मथुरामें कंसकी बहन देवकीको ब्याहा तहां आकाशबाणी भई कि इस लड़कीके आठवें गर्भमें कंसका काल उपजेगा यह सुन कंसने बहन बहने ऊको एक घरमें मूंद दिया और श्रीकृष्णचन्द्रने वहांहीं जन्म लिया इतनी कथा सुन

तेही राजा परीक्षित बोले महाराज कैसे जन्म कंसने लिया किस ने विसे महाबर दिया और कौन रीतिसे कृष्ण उपजे आय फिर किस बिधिसे गोकुल पहुंचे जाय यह तुम मुझे कहो समझाय ॥

श्रीशुकदेवजी बोले मथुरापुरीका आहुक नाम राजा तिनके दो बेटे एकका नाम देवक दूसरा उग्रसेन कितने एक दिन पीछे उग्रसेनही वाहांका राजा हुआ जिसकी एकही रानी विसका नाम पवनरेखा सो अति सुन्दरी और पतिब्रता थी आठोंपहर स्वामीकी आज्ञाहीमें रहे एक दिन कपड़ोंसे भई तो पतिकी आज्ञा ले सखी सहेलीको साथ कर रथमें चढ़ बनमें खेलनेको गई वहां घनेघने वृक्षोंमें भांति भांतिके फूलफले हुए सुगन्ध सनी मन्दमन्द ठंढीठंढी पवन बह रही कोकिल कपोतकीर मोर मीठी मीठी मन भावन बोलियां बोल रहे और एक ओर पर्वतके नीचे यमुना न्यारीही लहरें ले रहीथी कि रानी इस समैको देख रथ से उतरकर चली तो अचानक एक ओर अकेली भूलके जा निकली वहां दुमलिक नाम राक्षसभी संयोगसे आ पहुंचा वह इसके योवन और रूपकी छबिको देख छकरहा और मनमे कहन लगा कि इससे भोग किया चाहिये यह ठान तुरत राजा उग्रसेनका स्वरूप बन रानिके सोंही जा बोला तू मुझसे मिल रानि बोलि महाराज दिनको कामकेलि करनी योग नहीं क्योंकि इसमें शील और धर्म जाता है क्या तुम नहीं जानते जो ऐसी कुमति बिचारि है ॥

जद पवनरेखाने इसभांति कहा तद तो दुमलिकके रानीको हाथ पकड़ खैंच लिया और जो मन माना सो किया इस छलसे भोग करके जैसा था तैसाही बनगया तब तो रानी अति दुखपाय पछताय कर बोलि अरे अधर्मी पापी चण्डाल तूने यह क्या अन्धेर किया-जो मेरा सत खोदिया धिक्कार है तेरे माता पिता और गुरुको जिसने तुझे ऐसी बुद्धि दी तुझ सा पूत जन्मसे तेरी मा

बांझ क्यौं न हुई अरे दुष्ट जो नरदेह पाकर किसीका सत संग करते हैं। सो जन्म जन्म नरकमें पड़ते हैं इसलिये बोला रानी तू शाप मत दे मुझे मैंने अपने धर्मका फल दिया है तुझे तेरी कोख बंध देख मेरे मनमें बड़ी चिंता थी सो गई आजसे हुई गर्भ की आशा लड़का होगा दशवें मास और मेरी देहके प्रभावसे तेरा पुत्र नौखण्ड पृथ्वीको जीत राज करेगा औ कृष्णसे लड़ेगा मेरा नाम प्रथम कालनेम था तब विष्णुसे युद्ध किया था अब जन्म ले आया तो इसलिये नाम कहा था तुझको पुत्र दे चला तू अपने मनमें किसी बातकी चिंता मत करे इतनी बात कह जब कालने म चला गया तब रानीको भी कुछ सोच समझ कर धीरज भया॥

जैसी हो है तव्यता तैसी उपजे बुद्धि।
होनहार हिरदे बसे बिसर जाय सब सुद्धि॥

इतनेमें सब सखी सहेली आन मिलीं रानीका सिंगार बिगड़ा देख एक सहेली बोल उठी इतनी बेर कहां रहीं और यह क्या गति हुई पवन रेखाने कहा सुनो सहेली तुमने इस बन में तजी अकेली एक बंदर आया जिसने मुझे अधिक सताया तिसके डरसे मैं अबतक थर थर कांपती हूं यह बात सुनकर तो सबकी सब घबराईं औ रानीको झट रथपर चढ़ा घर लाईं जब दश महीने पूजे तब पूरे दिनों लड़का हुआ तिस समै एक बड़ी आंधी चली कि जिसके मारे लगी धरती डोलने अंधेरा ऐसा हुआ जो दिनकी रात हो गई औ लगे तारे टूट टूट गिरने बादल गरजने और बिजली कड़कने॥

ऐसे माघ सुदी तेरस बृहस्पतिबारको कंसने जन्म लिया तब राजा उग्रसेनने प्रसन्न हो सारे नगरके मङ्गलामुखियोंको बुलाय मङ्गलाचार करवाये और सब ब्राह्मण पंडित जोतिषियोंकोभी अति मान सन्मानसे बुलवा भेजा वे आये राजाने बड़ी आवभक्ति

से आसन दे दे बैठाये तब जोतिषियोंने लग्न साध मुहूर्त बिचार कर कहा, पृथ्वीनाथ यह लड़का कंस नाम तुम्हारे बंशमें उपजा सो अति बलवन्त हो राक्षसोंको ले राज करेगा और देवता और हरिभक्तोंको दुख दे आपका राज ले निदान हरिके हाथ मरेगा॥

इतनी कथा कह शुकदेव मुनिने राजा परीक्षितसे कहा राजा अब मैं उग्रसेनके भाई देवककी कथा कहता हूं कि उसके चार बेटे थे और छः बेटियां सो छओं बसुदेवको ब्याह दीं सातवीं देवकी हुई जिसके होनेसे देवताओंको प्रसन्नता भई और उग्रसेनके भी दश पुत्र पर सबसे कंसही बड़ा था जबसे जन्मा तबसे यह उपाध करने लगा कि नगरमें जाय छोटे छोटे लड़कोंको पकड़ २ लावे और पहाड़की खोहमें मूंद मूंद मार मार डाले जो बड़े होंय तिनकी छाती पै चढ़ गला घोंट जी निकाले इस दुखसे कोई कहीं न निकलने पावे सब कोई अपने अपने लड़कोंको छिपावें प्रजा कहें दुष्ट यह कंस उग्रसेनका नहीं है कंसा कोई महा पापी जन्म ले आया है जिसने सारे नगरको सताया है यह बात सुन उग्रसेनने तिसे बुलाकर बहुतसा समझाया पर तिनका कहा ना तिसके जीमें कुछ भी न आया तब दुख पाय पछताइके कहने लगा कि ऐसे पूत होनेसे मैं अपूत क्यों न हुआ।

कहते हैं जिस समै घरमें कपूत आता है तिसी समै यश और धर्म जाता है जब कंस आठ वर्षका भया तब मगध देशपर चढ़ गया वहांका राजा जरासिंध बड़ा योधा था तिससे मिल इसने मल्लयुद्ध किया, तो, उसनें कंसका बल लखलियां तब हारमान दो बेटियां ब्याह दीं यह ले मथुरामें आया और उग्रसेनसे बैर बढ़ाया एक दिन कोपकर अपने पितासे बोला कि तुम राम नाम कहना छोड़ दो और महादेवका जप करो तिसने कहा मेरे तो कर्त्ता दुखहरता वेई हैं जो तिनकोही न भजूंगा तो अधर्मी हो कैसे भवसागर पार हूंगा यह सुन कंसने खुनसा बापको पकड़ कर सारा

राज ले लिया और नगरमें यों डौंड़ी फेर दी कि कोई यज्ञ,दान धर्म तप जप करने औ रामका नाम लेने न पावे ऐसा अधर्म बढ़ा कि गौ ब्राह्मण हरिके भक्त दुख पाने लगे और धरती अति बोझों मरने लगी जब कंस सब राजाओंका राज ले चुका तब एक दिन अपना दल ले राजा इन्द्र पर चढ़ चला तहां मंत्रीने कहा महाराज इन्द्रासन बिन तप किये नहीं मिलता आप बलका गर्व न करिये देखो गर्बने रावण कुम्भकरणको कैसा खो दिया कि जिनके कुलमें एक भी न रहा।

इतनी कथा कह शुकदेवजी राजा परीक्षितसे कहने लगा कि राजा जब पृथ्वी पर अति अधर्म होने लगा तब दुख पाय घबराय गायका रूप बन रांभती देवलोकमें गई और इन्द्रकी सभामें जा सिर झुकाय उसने अपनी सब पीर कही कि महाराज संसारमें असुर अति पाप करने लगे तिनके डरसे धर्म तो उठ गया औ मुझे आज्ञा हो तो नरपुर छोड़ रसातलको जाऊं इन्द्र सुन सब देवताओंको साथ ले ब्रह्माके पास गये ब्रह्मा सुन सबको महादेवके निकट ले गये महादेवभी सुन सबको साथ ले जहां क्षीरसमुद्रमें नारायण सो रहे थे तिनको सोता जान ब्रह्मा रुद्र इन्द्र सब देवताओंको साथ ले खड़े हो हांथ जोड़ बिनती कर वेद स्तुति करने लगे महाराजाधिराज आपकी महिमा कौन कह सके मच्छरूप हो वेद डूबते निकाले कच्छरूप बन पीठ पर गिरि धारण किया बराह बन भूमिको दांत पै रख लिया बावन हो राजा बलिको छला परसराम औतार ले क्षत्रियोंको मार पृथ्वी कश्यप मुनिको दी रामावतार लिया तब महा दुष्ट रावणको बध किया औ जब जब दैत्य तुम्हारे भक्तोंको दुख देते हैं तब तब आप तिनकी रक्षा करते हैं नाथ अब कंसके सताने पृथ्वी अति व्याकुल हो पुकार करती है तिसकी बेग सुध लीजे असुरोंको मार साधोंको सुख दीजे॥

ऐसे गाय गाय देवताओंने कहा तब आकाशवाणी हुई सो ब्रह्मा

देवताओंको समझाने लगे यह जो बाणी भई सो तुम्हें आज्ञा दी है कि तुम सब देवी देवता ब्रज मण्डल जाय मथुरा नगरीमें जन्म लो पीछे चार स्वरूप धर हरिभी औतार लेंगे वसुदेवके घर देवकीकी कोखमें और बाललीला कर नन्द यशोदाको सुख देंगे इस रीतिसे ब्रह्माने जब बुझाके कहा तब तो सुर मुनि किन्नर और गंधर्व सब अपनी अपनी स्त्रियों समेत जन्म ले ले ब्रज मंडलमें आये यदुवंशी औ गोप कहाये और जो चारों वेदकी ऋचाये थीं सो ब्रह्मासे कहने गई कि हमभी गोपी हो ब्रजमें औतार ले वासुदेवकी सेवा करें इतनो कह वेभी ब्रजमें आई औ गोपीं कहलाईं जब सब देवता मथुरापुरीमें आचुके तब क्षीरसमुद्रमें हरि बिचार करने लगे कि पहले तो लक्ष्मण होय बलराम पीछे वासुदेव हो मेरा नाम भरत प्रद्युम्न शत्रुघ्न अनिरुद्ध और सीता रुक्मिणीका अवतार लें इति ॥ २ अध्याय।

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा हे महाराज कंस तो इसी अनीतसे मथुरामें राज करने लगा औ उग्रसेन दुखभरने देवक जो कंसका चाचा था तिसकी कन्या देवकी जब व्याहन योग हुई तब तिन्ने जा कंससे कहा कि यह लड़की किसको दें वह बोला सूरसेनके पुत्र वसुदेवको दीजिये इतनी बात सुनतेही देवकने एक ब्राह्मणको बुलाय शुभ लग्न ठहराय सूरसेनके घर टीका भेज दिया तब तो सूरसेनभी बड़ी धूमधामसे बरात बनाय सब देश देशके नरेश साथ ले मथुरामें वसुदेवको व्याहन आए॥

बरात नगरके निकट आई सुन उग्रसेन देवक और कंस अपना दल साथ ले आगे बढ़ नगरमें ले गये अति आदर मानसे अगोनी कर जनवासा दिया खिलाय पिलाय सब बरातियोंको मढ़के नीचे लेजा बैठाया और वेदकी बिधिसे कंसने वसुदेवको कन्या दान दिया तिसके यौतुकमें पंद्रह सहस्र घोड़े चार सहस्र हाथी अठा

रथ सौ रथ दास दासी अनेक दे कंचन के थाल वस्त्र आभूषण रत्नजटितसे भर भर अनगनत दिये और सब बरातियोंको भी अलंकार समेत बागे पहराय सब मिल पहुंचावन चले तहां आकाशबाणी हुई कि अरे कंस जिसे तू पहुंचावने चला है तिसका आठवां लड़का तेरा काल उपजेगा तिसके हाथ तेरी मीच है॥

यह सुनतेही कंस डर कर कांप उठा औ क्रोध कर देवकीको झोंटे पकड़ रथसे नीचे खैंच लाया खड्ग हाथमें ले दांत पीस पीस लगा कहने जिस पेड़को जड़हीसे उखाड़िये तिसमें फूल फल काहेको लगेगा अब इसीको मारूं तो निर्भय राज करूं यह देख सुन बसुदेव मनमें कहने लगे इस मूरखने दिया संताप जानता नहीं है पुण्य औ पाप जो मैं अब कोप करता हूं तो काज बिगड़ेगा तिससे इस समै क्षमा करनी योग है कहा है॥

जो बैरी खैंचे तरवार, करे साधु तिसकी मनुहार।
समझ मूढ़ सोई पछताय, जैसे पानी आग बुझाय॥

यह सोच समझ बसुदेव कंसके सोहीं जा हाथ बिनती जोड़कर कहने लगे कि सुनो पृथ्वीनाथ तुम सा बली संसारमें कोई नहीं और सब तुम्हारी छांह तले बसते हैं ऐसे शूर हो स्त्री पर शस्त्र करो यह अति अनुचित है औ बहनके मारनेसे महा पाप होता है तिसपरभी मनुष्य अधर्म तो करे जो जाने कि मैं कभी न मरूंगा इस संसारकी तो यही रीति है इधर जन्मा उधर मरा करोड़ जतनसे पाप पुण्यकर कोई इस देहको पोखपर यह कभी अपनी न होयगी और धन यौवन राजभी काज न आवेगा इससे मेरा कहा मान लीजे औ अपनी अबला अधीन बहनको छोड़ दीजे इतना सुन वह अपना काल जान घबराकर और भी झुंझलाया तब बसुदेव शोचने लगे कि यह पापी तो असुर बुद्धि लिये अपने हठकी टेक पर है जिसमें इसके हाथसे यह बचे सो उपाय किया चाहिये ऐसे बिचार मनमें कहने लगे अब तो इससे यों

कह देवकी को बचाऊं कि जो पुत्र मेरे होगा सो तुम्हें दूंगा पीछे किसने देखी है लड़काही न होय के यही दुष्ट मरे यह औसर तो टले फेर समझी जायगी इस भांति मनमें ठान वसुदेवने कंससे कहा महाराज तुम्हारी मृत्यु इसके पुत्रके हाथ न होयगी क्योंकि मैंने एक बात ठहराई है कि देवकीके जितने लड़के होंगे तितने मैं तुम्हें ला दूंगा यह बचन मैंने तुमको दिया ऐसी बात जब वसुदेवने कही तब समझके कंसने मान ली औ देवकीको छोड़ कहने लगा हे वसुदेव तुमने अच्छा बिचार किया जो ऐसे भारी पापसे मुझे बचा लिया इतना कह बिदा दी वे अपने घर गये ॥

कितने एक दिन मथुरामें रहते भये जब पहला पुत्र देवकीको हुआ तब वसुदेव ले कंस पै गये और रोता हुआ लड़का आगे धर दिया देखतेही कंसने कहा वसुदेव तुम बड़े सतबादी हो मैंने सो आज जाना क्योंकि तुमने मुझसे कपट न किया निरमोही हो अपना पुत्र ला दिया इससे डर नहीं है कुछ मुझे यह बालक मैंने दिया तुझे इतना सुन बालक ले दण्डवत कर वसुदेव जी तो अपने घर आये और विसी समै नारदमुनि जीने जाय कंससे कहा राजा तुमने यह क्या किया जो बालक उलटा फेर दिया क्या तुम नहीं जानते कि वासुदेवकी सेवा करनेको सब देवताओंने ब्रजमें आय जन्म लिया है और देवकीके आठवें गर्भमें श्रीकृष्ण जन्म ले सब राक्षसोंको मार भूमिका भार उतारेंगे इतना कह नारद मुनिने आठ लकीरें खैंच गिनवाईं जब आठही आठ गिनतीमें आईं तब डर कर कंसने लड़के समेत वसुदेवजी को बुला भेजा नारद मुनि तो यों समझाय बुझाय चले गये और कंसने वसुदेवसे बालक ले मार डाला ऐसे जब पुत्र होय तब वसुदेव ले आवें औ कंस मार डाले इसी रीतिसे छः बालक मारे तब सातवें गर्भमें शेषरूप जो श्रीभगवान तिन्होंने आ बास लिया ह

कथा सुन राजा परीछितने शुकदेवमुनिसे पूछा महाराज नारदमुनिजीने जो अधिक पाप करवाया तिसका ब्योरा समझाकर कहो जिससे मेरे मनका संदेह जाय श्रीशुकदेवजी बोले राजा नारदजीने तो अच्छा बिचारा कि यह अधिक अधिक पाप करे तो श्रीभगवान तुरंतही प्रगट होवें इति॥

३ अध्याय।

फेर शुकदेवजी राजा परीछितसे कहने लगे कि राजा जैसे गर्भ में आये हरी और ब्रह्मादिकने गर्भस्तुति करी औ देवी जिस भांति बलदेवजीको गोकुल ले गई तिसी रीतिसे कथा कहता हूं एक दिन राजा कंस अपनी सभा में आ बैठा और जितने दैत्य उसके थे तिनको बुलाकर कहा सुनो सब देवता पृथीमें जन्म ले आये हैं तिन्होंमें कृष्ण भी औतार लेंगे यह भेद मुझसे नारद मुनि समझाके कह गये हैं इसीं अब उचित यही है कि तुम जाकर सब यदुबंसियोंका ऐसा नाश करो जो एकभी जीता न बचे।

यह आज्ञा पा सबके सब दण्डवत कर चले नगरमें आ ढूंढ़ ढूंढ़ पकड़ पकड़ लगे बांधने खाते पीते खड़े बैठे सोते जागते चलते फिरते जिसे पाया तिसे न छोड़ा घेरके एक ठौर लाये और जला जला डबो डबो पटकर दुख दे दे सबको मारडाला इसी रीतिसे छोटे बड़े भयावने भांति भांतिके भेष बनाये नगर नगर गांव गांव गली गली घर घर खोज खोज लगे मारने और यदुबंशी दुख पाय पाय देश छोड़ छोड़ जी ले ले भागने।

तिसी समै बसुदेवकी जो और स्त्रियां थीं सोभी रोहणी समेत मथुरासे गोकुलमें आईं जहां बसुदेवजीके परम मित्र नन्दजी रहते थे तिन्होंने अति हितसे आशा भरोसा दे रक्खा वे आनंदसे रहने लगीं जब कंस देवताओंको यों सताने औ अति पाप करने लगा तब बिष्णुने अपनी आंखोंसे देवमाया उपजाई सो हाथबांध सनमुख आई तिसे कहा तू अभी संसारमें जा औतार ले मथुरा

पुरीके बीच जहां दुष्ट कंस मेरे भक्तोंको दुख देता है और कश्यप अदिति जो वसुदेव देवकी हो ब्रजमें गयेहैं तिनको मूंद रक्खा है छःबालक तो तिनके कंसने मार डाले अब सातवें गर्भमें लक्ष्मणजी हैं उनको देवकीकी कोखसे निकाल गोकुलमें लेजाकर इसरीतिसे रोहणीके पेटमें रख दीजो कि कोई दुष्ट न जानै और सब वहांके लोग तेरा यश बखानै ।

इस भांति मायाको समझाय श्रीनारायण बोले कि तू तो पहले जाकर यह काम करके नन्दके घरमें जन्म ले पीछे वसुदेवके यहां औतार ले मैंभी नंदके घर आता हूं इतना सुनतेही माया झट मथुरामें आई और मोहनीका रूप बन वसुदेवके गेहमें पैठ गई ॥

जो छिपाय गर्भ हर लिया, जाय रोहणीको सो दिया ।
जाने सब पहिला आधान, भये रोहणीके भगवान ॥

इस रीतिसे श्रावन सुदी चौदश बुधबारको बलदेवजीने गोकुलमे जन्म लिया और मायाने वसुदेव देवकीको जा सपना दिया कि मैंने तुम्हारा पुत्र गर्भसे ले जाय रोहिणीको दिया है सो किसी बातकी चिंता मत कीजो सुनतेही वसुदेव देवकी जाग पड़े और आपसमें कहने लगे कि यह तो भगवानने भला किया पर कंसको इसी समै जनाया चाहिये नहीं तो क्या जानिये पीछे क्या दुख दे यों सोच समझ रखवालोंसे बुझाकर कहा तिन्होंने कंसको जा सुनाया कि महराज देवकीका गर्भ अधूरा गया बालक कुछ्छ न पूरा भया सुनतेही कंस घबराकर बोला कि तुम अबकी बेर चौकसी करियो क्योंकि मुझे आठवेंई गर्भका डर है जो आकाशवाणी कहगई है ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले हे राजा बलदेवजी तो यों प्रगटे और जब श्रीकृष्ण देवकीके गर्भमें आये तभी मायाने जा नन्दकी नारी यशोदाके पेटमें वास लिया दोनों आधानसे थीं कि एक पर्वमें देवकी यमुना न्हाने गईं वहां संयोगसे यशो

हाभी आन मिली तो आपसमें दुखकी चरचा चली निदान यशो
दाने देवकीको बचन दे कहा कि तेरा बालक मैं रक्खूंगी अपना
तुझे दूंगी ऐसे बचन दे यह अपने घर आई और वह अपने आगे
जद कंसने जाना कि देवकीका आठवां गर्भ रहा तद जा वसुदेव
का घर घेर चारोंओर दैत्योंकी चौकी बैठा दी और वसुदेवको
बुलाकर कहा कि अब तुम मुझसे कपट मत कीजो अपना लड़का
ला दीजो तब मैंने तुम्हारा ही कहना मान लिया था॥

ऐसे कह वसुदेव देवकीको बेड़ी औ हाथकड़ी पहिराय एक
कोठेमें मूंदकर ताले पर ताले दे निज मन्दिरमें आ मारे डरके
उपास कर सो रहा फिर भोर होतेही वहीं गया जहां वसुदेव
देवकी थे गर्भका प्रकाश देख कहने लगा कि इसी यमगुफामें मेरा
काल है मार तो डालूं पर अपयशसे डरता हूं क्योंकि अति बल
वान हो स्त्रीको हनना योग नहीं भला इसके पुत्रहीको मारूंगा
यों कह बाहर आ गज सिंह श्वान औ अपने बड़े बड़े योधा वहां
चौकीको रक्खे और आपभी नित चौकसी कर आवे पर एक पल
भी कल न पावे जहां देखे तहां आठ पहर चौंसठ घड़ी कृष्ण रूप
कालही दृष्टि आवे तिसके भयसे भावित हो रातदिन चिंतामें
गंवावे॥

इधर कंसकी तो यह दशा थी उधर वसुदेव औ देवकी पूरे दि
नों महाकष्टमें श्रीकृष्णहीको मनाते थे कि इसबीच भगवानने आ
तिन्हें स्वप्न दिया और इतना कह तिनके मनका शोच दूर किया
जो हम बेगही जन्म ले तुम्हारी चिंता मेटते हैं तुम अब मत पछि
ताओ यह सुन वसुदेव देवकी जाग पड़े तो इतनेमें ब्रह्मा रुद्र
इन्द्रादि सब देवता अपने विमान अधरमें छोड़ अलख रूप बन
वसुदेवके गेहमें आये औ हाथ जोड़ जोड़ वेद गाय गाय गर्भस्तुति
करने लगे तिस समै तिनको तो किसीने न देखा पर वेदकी धुनि
सबने सुनी यह अचरज देख सब रखवाले अचंभे रहे और वसु

देव देवकीको निहचै हुआ कि भगवान बेगही हमारी पीर हरेंगे इति॥ ४ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले राजा जिस समै श्रीकृष्णचंद जन्म लेने लगे तिसकाल सबहीके जीमें ऐसा आनंद उपजा कि दुख नामकोभी न रहा हरषसे लगे वनउपवन हरे हो हो फूलने फलने नदी नाले सरोवर भरने तिन पर भांति भांतिके पंछी कलोलें करने और नगर नगर गांव गांव घर घर मंगलाचार होने ब्राह्मण यज्ञ रचने दशोंदिशाके दिगपाल हरषने बादल ब्रजमण्डल पर फिरने देवता अपने अपने बिमानोंमें बैठ आकाशसे फूल बरषावने बिद्याधर गंधर्वचारण ढोल दमामे भेर बजाय बजाय गुण गाने और एकओर उर्वसी आदि सब अप्सरा नाच रही थीं कि ऐसे समै भादों बदी अष्टमी बुधवार रोहणी नक्षत्रमें आधी रात श्रीकृष्ण ने जन्म लिया और मेघ बरन चंदमुख कंवलनैन हो पीताम्बर काछे मुकुट धरे बैजंती माला औ रतन जटित आभरण पहरे चतुभुज रूप किये शंखचक्र गदा पद्म लिये वसुदेव देवकीको दरशन दिया देखतेही अचंभे हो तिन दोनोंने ज्ञानसे बिचारा तो आदि पुरुषको जाना तब हाथ जोड़ बिनती कर कहा हमारे बड़े भाग जो आपने दरशन दिया और जन्म मरणका निबेड़ा किया॥

इतना कह पहिली कथा सब सुनाई जैसे कंसने दुख दिया था तहां श्रीकृष्णचंद बोले तुम अब किसी बातकी चिंता मनमें मत करो क्योंकि मैंने तुम्हारे दुखके दूर करनेहीको औतार लिया है पर इस समै मुझे गोकुल पहुंचा दो और इसी बिरियां यशोदाके लड़की हुई है सो कंसको ला दो अपने जानेका कारण कहता हूं सो सुनो॥

नन्द यशोदा तप करैं मोही सों मन लाय।
देख्यो चाहत बाल सुख रहौ कछु दिन जाय॥

फिर कंसको मार आन मिलूंगा तुम अपने मनमें धीर धरो। ऐसे वसुदेव देवकीको समझाय श्रीकृष्ण बालक बन रोने लगे और अपनी माया फैलादी तब तो वसुदेव देवकीका ज्ञान गया औ जाना कि हमारे पुत्र भया यह समझ दश सहस्र गाय मनमें संकल्प कर लड़केको गोदमे उठा छातीसे लगा लिया उसका मुंह देख देख दोनो लंबी सांसें भर भर आपसमें लगे कहने जो किसी रीतसे इस लड़केको भगा दीजे तो कंस पापीके हाथसे बचे वसुदेव बोले ॥

बिधना विन राखै नहिं कोई, कर्मलिखा सोई फल होई,
तब करजोर देवकी कहै, नन्द मित्र गोकुलमे रहै ॥ पीर
यशोदा हरै हमारी नारि रोहणी तहां तिहारी ॥

इस बालकको वहां ले जाओ यों सुन वसुदेव अकुलाकर कहने लगे कि इस कठिन बंधनसे छूट कैसे ले जाऊं जों इतनी बात कही तों सब बेड़ी हथकड़ी खुल पड़ी चारोंओरके किवाड़ उघड़ गये पहरुए अचेत नींद बश भये तब तो वसुदेवजीने श्रीकृष्णको सूपमें रक्ख शिरपर धर लिया और झटपटही गोकुलको प्रस्थान किया ॥

ऊपर बरषे देव पीछे सिंह जु गूंजरै शोचत हैं वसुदेव
यमुना देखि प्रवाह अति ॥

नदीके तीर खड़े हो वसुदेव बिचारने लगे कि पीछे तो सिंह बोलता है औ आगें अथाह यमुना बह रही है अब क्या करूं ऐसे कह भगवानका ध्यान धर यमुनामें पैठे जों जों आगे जाते थे तों तों नदी बढ़ती थी जब नाकतक पानी आया तब तो ये निपट घबराये इनको व्याकुल जान श्रीकृष्णने अपना पावं बढ़ाय हुंकार दिया चरण छूतेही यमुना थाह हुई वसुदेव पार हो नन्दकी पौर पर जा पहुंचे वहां किवाड़ खुले पाये भीतर धंसके देखें तो सब सोए पड़े हैं देवीने ऐसी मोहनी डाली थी कि य

शोदाको लड़कीके होनेकी भी सुध न थी वसुदेवजीने कृष्णको तो यशोदाके ढिग सुला दिया और कन्याको ले चट अपना पंथ लिया नदी उतर फिर आय तहां बैठी शोचती थी देवकी जहां कन्या दे वहांकी कुशल कही सुनतेही देवकी प्रसन्न हो बोली हे स्वामी हमें कंस अब मारडाले तोभी चिंता नहीं क्योंकि इस दुष्टके हाथसे पुत्र तो बचा ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी राजा परीछितसे कहने लगे कि जब वसुदेव लड़कीको ले आये तब किवाड़ जोंके तों भिड़ गये औ दोनोंने हथकड़ियां बेड़ियां पहरलीं कन्या रोउठी रोनेकी धुन सुन पहरुए जागे तो अपने अपने शस्त्र ले ले सावधान हो लगे तुपक छोड़ने तिनका शब्द सुन लगे हाथी चिंघाड़ने सिंह दहाड़ने औ कुत्ते भोंकने तिसी समै अंधेरी रातके बीच रखवालेमें एक रखवालेने आ हाथ जोड़ कंससे कहा महाराज तुम्हारा बैरी उपजा यह सुन कंस मुर्छित हो गिरा इति ॥

५ अध्याय ॥

बालकका जन्म सुनतेही कंस डरता कांपता उठखड़ा हुआ और खड्ग हाथमें ले गिरता पड़ता दौड़ा छूटे बालों पसीनेमें डूबा धकड़ पकड़ करता जा बहनके पास पहुंचा जब विसके हाथसे लड़की छीन ली तब वह हाथ जोड़ बोली ए भैया यह कन्या है भानजी तेरा इसे मत मार यह पेट पोंछन है मेरी मारे हैं बालक तिनका दुख मुझे अति सताताहै वितकाज कन्याको मार क्यों पाप बढ़ाता है कंस बोला जीती लड़की न दूंगा तुझे जो व्याहेगा इसे सो मारेगा मुझे इतना कह बाहर आ जोंहीं चाहे कि फिराय कर पत्थर पर पटके तोंही हाथसे छूट कन्या आकाशको गई और पुकारके यह कह गई अरे कंस मेरे पटकनेसे क्या हुआ तेरा बैरी कहीं जन्म ले चुका अब तू जीता न बचेगा ॥

यह सुन कंस अछत पछता वहां आया जहां वसुदेव देवकी थे

आतेही विनके हाथ पावंकी हथकड़ी बेड़ी काट दीं और बिन ती कर कहने लगा कि मैंने बड़ा पाप किया जो तुम्हारे पुत्र मारे यह कलङ्क कैसे छूटेगा किस जन्ममें मेरी गति होगी तुम्हारे देवता झुठे हुए जिन्होंने कहा था कि देवकीके आठवें गर्भमें लड़का होगा सो नहो लड़की हुई वहभी हाथसे छूट स्वर्गको गई अब दयाकर मेरा दोष जीमें मत रक्खो क्योंकि कर्मका लिखा कोई मेट नहीं सकता इस संसारमें आयसे जीना मरना संयोग बियोग मनुषका नहीं छटता जो ज्ञानी हैं सो मरना जीना समान नहीं जानते हैं और अभिमानी मित्र शत्रु कर मानते हैं तुमतो बड़े साध सतबादी हो जो हमारे हेतु अपने पुत्र ले आये॥

ऐसे कह जब कंस बार बार हाथ जोड़ने लगा तब बसुदेवजी बोले महाराज तुम सच कहते हो इसमें तुम्हारा कुछ दोष नहीं विधताने यही हमारे कर्ममें लिखा था यों सुन कंस प्रसन्न हो अति हितसे बसुदेव देवकीको अपने घर ले आया भोजन कर वाय बागे पहराय बड़े आदर भावसे दोनोंको फेर वहीं पहुंचाय दिया और मंत्रीको बुलाके कहा कि देवी कह गई है तेरा बैरी जगमें जन्मा इससे अब देवताओंको जहां पावो तहां मारो क्योंकि विन्होंईने मुझसे झुठी बात कही थी कि आठवें गर्भमें तेरा शत्रु होगा मन्त्री बोला महाराज विनका मारना क्या बड़ी बात है वे तो जन्मके भिखारी हैं जद आपकोपिहोगा तभी वे भाग जांयगे विनकी क्या सामर्थ है जो तुम्हारे सन्मुख हों ब्रह्मा तो आठ पहर ज्ञान ध्यानमें रहता है महादेव भांग धतूरा खाय इन्द्रका कुछ तुम पर न बसाय रहा नारायण सो संग्राम नहीं जाने लक्ष्मीके साथ रहता है सुख माने।

कंस बोला नारायणको कहां पावें औ किस बिधि जीतें सो कहो मन्त्रीने कहा महाराज जो नारायणको जीता चाहते हो तो जिनके घरमें आठ पहर है विनका बास तिनहींका अब करो बि

नाश ब्राह्मण वैष्णव योगी यती तपस्वी सन्यासी वैरागी आदि जितने हरिके भक्त हैं तिनमें लड़केसे ले बूढ़े तक एकभी जीता न रहै यह सुन कंसने प्रधानसे कहा तुम सबको जा मारो आज्ञा पाकर मन्त्री अनेक राक्षस साथ ले बिदा हो नगरमें जा लगा गौ ब्राह्मण बालक औ हरिभक्तोंको छल बल कर ढूंढ़ ढूंढ़ मारने इति।

६ अध्याय।

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले राजा एक समै नन्द यशोदाने पुत्रके लिये बड़ा तप किया तहां श्रीनारायणने आय बर दिया कि हम तुम्हारे यहां जन्म ले आयंगे जब भादों बदी अष्टमी बुधवारको आधी रातके समै श्रीकृष्ण आये तब यशोदाने जागतेही पुत्रका मुख देख नन्दको बुला अति आनन्द माना औ अपना जीतब सुफल जाना भोर होतेही उठके नन्दजीने पण्डित औ जोतिषियोंको बुला भेजा वे अपनी अपनी पोथीपत्र ले ले आये तिनको आसन दे दे आदरमानसे बैठाये विन्होंने शास्त्र की बिधिसे संवत् महीना तिथि दिन नक्षत्र योग करण ठहराय लगन बिचार मुहूर्त्त साधके कहा महाराज हमारे शास्त्रके बिचारमें तो ऐसा आता है कि यह लड़का दूसरा विधाता हो सब असुरोंको मार ब्रजका भार उतार गोपीनाथ कहावेगा सारा संसार इसीका यश गावेगा॥

यह सुन नन्दजीने कञ्चनके सींग रूपेके खुर तांबेकी पीठ समेत दो लाख गौ पाटम्बर ओढ़ाय संकल्प कीं और अनेक दानकर ब्राह्मणोंको दक्षिणा दे दे अशीस ले ले बिदा किया तब नगरके सब मङ्गलामुखियोंको बुलाया वे आय आय अपना अपना गुण प्रकाश करण लगे बजंत्री बजाने नर्त्तक नाचने गायक गाने ढाढ़ी ढाढ़िन यश बखानने और जितने गोकुलके गोप ग्वाल थे वेभी अपनी नारियोंके सिरपर दहेड़ियां लिवाये भांति भांतिके भेष बनाये नाचते गाते नन्दको बधाई देने आये आतेही ऐसा दधिकादों

किया कि सारे गोकुलमें दही दही कर दिया जब दधिकांदों खेल चुके तब नन्दजीने सबको खिलाय पिलाय बागे पहराय तिलक कर पान दे बिदा किया॥

इसी रीतिसे कई दिन तक बधाई रही इस बीच नन्दजीसे जिस जिसने जो जो आय आय मांगा सो सो पाया बधाईसे निचिंत हो नन्दजीने सब ग्वालोंको बुलायके कहा भाइयो हमने सुना है कि कंस बालक पकड़ मंगवाता है न जानिये कोई दुष्ट कुछ बात लगा दे इससे उचित है कि सब मिल भेंट ले चलें औ बरसौंड़ी दे आवें यह बचन मान सब अपने अपने घरसे दूध दही माखन औ रूपे य गाड़ोंमें लाद लाद नन्दके साथ हो गोकुलसे चल मथुरा आये कंससे भेंटकर भेंट दी कौड़ी चुकाय बिदा हो जुहार कर अपनी बाट ली जोंहीं यमुनातीर पै आये तोंहीं समाचार सुन वसुदेव जी आ पहुंचे नन्दजीसे मिल कुशल क्षेम पूछ कहने लगे तुमसा सगा औ मित्र हमारा संसारमें कोई नहीं क्योंकि जब हमें भारी बिपत भई तब गर्भवती रोहणी तुम्हारे यहां भेज दी बिस्का लड़का हुआ सो तुमने पाल बड़ा किया हम तुम्हारा गुण कहांतक बखान इतना कह फेर पूछा कहो राम कृष्ण औ यशोदारानी आनन्दसे हैं नन्दजी बोले आपकी कृपासे सब भले हैं और हमारे जीवन मूल तुम्हारे बलदेवजी भी कुशलसे हैं कि जिनके होते तुम्हारे पुण्य प्रतापसे हमारे पुत्र हुआ पर एक तुम्हारेई दुख से हम दुखी हैं वसुदेव कहने लगे मित्र बिधातासे कुछ न बसाय कर्मकी रेख किसीसे मेटी न जाय इससे संसारमें आय दुख पीर पाय कौन पछताय ऐसा ज्ञान जनायके कहा॥

तुम घर जाऊ बेग अपने, कीने कंस उपद्रव घने।
बालक ढूंढ़ मङ्गावे नीच, हुई साध परजा की मीच॥

तुम तो सब यहां चले आये हो और राक्षस ढूंढ़ते फिरते हैं न जानिये कोई दुष्ट जाय गोकुलमें उपाध मचावे यह सुनते ही नन्द

जी अकुलाकर सबको साथ लिये शोचते मथुरासे गोकुलको चले इति॥ ७ अध्याय॥

शुकदेवजी बोले हे राजा कंसका मन्त्री तो अनेक राक्षस साथ लिये मारता फिरताही था कि कंसने पूतना नाम राक्षसीको बुला कर कहा तू जा यदुबंशियोंके जितने बालक पावे तितने मार यह सुन वह प्रसन्न हो दण्डवत कर चली तो अपने जीमें कहने लगी।

भये पूत हैं नन्दकै सुनो गोकुल गांउं।
छलकर अबही आनिहो गोपी ह्वोके जांउं॥

यह कह सोलह सिंगार बारह आभरण कर कुचमें विष लगाय मोहनी रूप बन कपट किये कंवलका फूल हाथमें लिये बनटनके ऐसी चली कि जैसी सिंगार किई लक्ष्मी अपने कंत पै जाती हो गोकुलमें पहुंच हंसती नन्दके मन्दिर बीच गई इसे देख सबकी सब मोहित हो भूलीसी रहीं यह जा यशोदाके पास बैठी और कुशल पूछ असीस दी कि बीर तेरा कान्ह जीओ कोट बरष ऐसे प्रीत बढ़ाय लड़केको यशोदाके हाथसे ले गोदमें रख जो दूध पिलावने लगी तो श्रीकृष्ण दोनों हाथोंसे चूंची पकड़ मुंह लगाय लगे प्राण समेत पै पीने तब तो अति व्याकुल हो पूतना पुकारी कैसा यशोदा तेरा पूत मानुष नहीं यह है यमदूत जेंवरी जान मैंने सांप पकड़ा जो इसके हाथसे बच जीती जाऊंगी तो फेर गोकुलमें कभी न आऊंगी यो कह भाग गांवके बाहर आई पर कृष्णने न छोड़ा निदान विसका जो लिया वह पछाड़ खाय ऐसे गिरी जैसे आकाशसे बज्र गिरे अति शब्द सुन रोहणी औ यशोदा रोती पीटती वहीं आई जहां पूतना दो कोशमें मरी पड़ी थी और विनके पीछे सब गांव उठ धाया देखें तो कृष्ण विसकी छाती पर चढ़े दूध पी रहे हैं झट उठाय मुख चूम हृदेसे लगाय घर ले आई गुणियोंको बुलाय झाड़ फूंक करने लगीं और पूतनाके पास गोपी ग्वाल खड़े आपसमें कह रहे थे कि

भाई इसके गिरनेका धमका सुन हम ऐसे डरे हैं जो छाती अबत क धड़कती है न जानिये बालककी क्या गति हुई होगी ॥

इतनेमें मथुरासे नंदजी आये तो देखते क्या हैं कि एक राक्षसी मरी पड़ी है औ ब्रजबासियोंकी भीड़ घेरे खड़ी है पूछा यह उपाध कैसे हुई वे कहने लगे महाराज पहले तो यह अति सुंदरी हो तुम्हारे घर असीस देती गई इसे देख सब ब्रजनारी भूल रहीं यह कृष्णको ले दूध पिलाने लगी पीछे हम नहीं जानते क्या गति हुई इतना सुन नन्दजी बोले बड़ी कुशल भई जो बालक बचा औ यह गोकुल पर न गिरी नहीं तो एकभी जीता न रहता सब इसके नीचे दब मरते यों कह नन्दजी तो घर आय दान पुण्य करने लगे और ग्वालोंने फरसे फावड़े कुदाल कुल्हाड़ोंसे काट काट पूतनाके हाड़ गोड़ तो गढ़े खोद खोद गाड़ दिये और मास चाम इकट्ठाकर फूंक दिया तिसके जलनेसे एक ऐसी सुगंध फैली कि जिसने सारे संसारको सुगंधसे भर दिया ॥

इतनी कथा सुन राजा परीक्षितने शुकदेवजीसे पूछा महाराज वह राक्षसी महामलीन मदमास खानेवाली तिसके शरीरसे सुगन्ध कैसे निकली सो कृपाकर कहो मुनि बोले राजा श्रीकृष्णचंद ने दूध पी तिसे मुक्ति दी इस कारण सुगन्ध निकली इति ॥

८ अध्याय ।

श्रीशुकदेवमुनि बोले ॥

जिहि नक्षत्र मोहन भये सो नक्षत्र परो आई ।
चारु बधाए रीति सब करत यशोदा माई ॥

जब सत्ताईस दिनके हरि हुए तब नन्दजीने सब ब्राह्मण औ ब्रजबासियोंको नोता भेज दिया वे आये तिन्हें आदरमान कर बैठाया आगे ब्राह्मनोंको तो बहुतसा दान दे बिदा किया और भाईयोंको बागे पहराय षट रस भोजन कराने लगे तिस समै यशोदा रानी परोसती थी रोहणी टहल करती थी ब्रजबासी हंस हंस

खारहे थे गोपियां गीत गा रहीं थी सब आनंदमें ऐसे लगन थे कि कृष्णकी सुरत किसकोभी न थी और कृष्ण एक भारी चकड़े के नीचे पालनेमें अचेत सोते थे कि इसमें भूखे हो जगे पांवके अंगूठे मुंहमें दे रोवन लगे औ हिलक हिलक चारों ओर देखने तिसी औसर उड़ता हुआ एक राक्षस आ निकला कृष्णको अकेला देख अपने मनमें कहने लगा कि यह तो कोई बड़ा बली उपजा है पर आज मैं इससे पूतनाका वैर लूंगा यों ठान सकटमें आन बैठा तिसीसे उसका नाम सकटासुर हुआ जब गाड़ा चड़ चड़ायकर हिला तब श्रीकृष्णने बिलकते बिलकते एक ऐसी लात मारी कि वह मर गया और छकड़ा टूक टूक हो गिरा तो जितने बासन दूध दहीके थे सब फूट चूर हुए औ गोरसकी नदीसी बह निकली गाड़ेके टूटने औ भांडोंके फूटनेका शब्द सुन सब गोपी ग्वाल दौड़ आये आतेही यशोदाने कृष्णको उठाय मुंह चूंब छातीसे लगा लिया यह अचरज देख सब आपसमें कहने लगे आज बिधताने बड़ी कुशल की जो बालक बच रहा औ सकटही टूट गया ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव बोले हे राजा जब हरि पांच महीनेके हुए तब कंसने तृणावर्तको पठाया वह बगूला हो गोकुलमें आया नन्दरानी कृष्णको गोदमें लिये आंगनके बीच बैठी थी कि एकाएकी कन्ह ऐसे भारी हुए जो यशोदाने मारे बोझके गोदसे नीचे उतारे इतनेमें एक ऐसी आंधी आई कि दिनकी रात हो गई औ लगे पेड़ उखड़ उखड़ गिरने छप्पर उड़ने तब व्याकुल हो यशोदा जी श्रीकृष्णको उठाने लगीं पर वे न उठे ज्योंहीं तिनके शरीरसे इनका हाथ अलगा हुआ त्योंही तृणावर्त आकाशको ले उड़ा और मनमें कहने लगा कि आज बिन मारे न रहूंगा ॥

वह तो कृष्णको लिये वहां यह बिचार करता था यहां यशोदाजीने जब आगे न पाया तब रो रो कृष्ण कृष्ण कर पुकारने लगीं बिन

का शब्द सुन सब गोपी ग्वाल आए साथ हो ढूंढ़नेको धाये अंधेरे में अटकलसे टटोल टटोल चलते थे तिस परभी ठोकरें खाय गिर गिर पड़ते थे॥

ब्रज बन गोपी ढूंढ़त डोलैं, इत रोहणी यशोदा बोलैं,
नन्द मेघ धुनि करें पुकार, टेरें गोपी गोप अपार॥

जद श्रीकृष्णने नन्द यशोदा समेत सब ब्रजबासी अति दुखित देखे तद तृणावर्तको फिराय आंगनमें ला शिला पर पटका कि विसका जी देहसे निकल सटका आंधी थम गई उजाला हुआ सब भूले भटके घर आये देखें तो राक्षस आंगनमें मरा पड़ा है श्रीकृष्ण छाती पर खेल रहे हैं आतेही यशोदाने उठाय कंठसे लगा लिया और बहुतसा दान ब्राह्मणोंको दिया इति॥

६ अध्याय॥

श्रीशुकदेवजी बोले हे राजा एक दिन वसुदेवजीने गर्गमुनिको जो बड़े जोतिषी औ यदुबंशियोंके पुरोहित थे बुलाकर कहा कि तुम गोकुल जा लड़केका नाम रख आवो॥

गई रोहणी गर्भसों भयो पूत है ताहि।
किती आयु कैसो बली कहा नाम ताआहि॥

और नन्दजीके पुत्र हुआ है सोभी तुम्हें बुलाय गये हैं सुनतेही गर्गमुनि प्रसन्न हो चले औ गोकुलके निकट जा पहुंचे तिसी समै किसीने नन्दजीसे आ कहा कि यदुबंशियोंके पुरोहित गर्गमुनिजो आते हैं यह सुन नन्दजी आनन्दसे ग्वाल बाल संग कर भेंट ले उठ धाए और पाटंबरके पांवड़े डालते बाजे गाजेसे ले आए पूजा कर आसन पर बैठाय चरणामृत ले स्त्री पुरुष हाथ जोड़ कहने लगे महाराज बड़े भाग हमारे जो आपने दयाकर दरशन दे घर पवित्र किया तुम्हारे प्रतापसे दो पुत्र हुए हैं एक रोहणीके एक हमारे कृपा कर तिनका नाम धरिये गर्गमुनि बोले ऐसे नाम रखना उचित नहीं क्योंकि जे यह बात फैले कि गर्ग

मुनि गोकुलमें लड़कोंका नाम धरने गये हैं औ कंस सुनपावे तो वह यही जानेगा कि देवकीके पुचको वसुदेवके मिचके यहां कोई पहुंचाय आया है इसी लिये गर्ग पुरोहित गया है यह समझ मुझको पकड़ मंगावेगा और न जानिये तुम परभी क्या उपाध लावे इससे तुम फैलाव कुछ मत करो चुप चाप घरमें नाम धरवा लो॥

नन्द बोले गर्गजी तुमने सच कहा इतना कह घरके भीतर ले जाय बैठाया तब गर्गमुनिने नन्दजीसे दोनोंकी जन्म तिथि समै पूछ लग्न साध नाम ठहराय कहा सुनो नन्दजी वसुदेवकी नारी रोहणीके पुचके तो इतने नाम होंयगे संकर्षण रेवतीरमण बलदाऊ बलराम कालिन्दीभेदन हलधर औ बलबीर औ कृष्णरूप जो तुम्हारा लड़का है तिसके नाम तो अनगिनत हैं पर किसी समै वसुदेवके यहां जन्मा इससे वासुदेव नाम हुआ औ मेरे बिचारमें आता है कि ये दोनों बालक तुम्हारे चारों युगमें जब जन्मे हैं तब साथही जन्मे हैं॥

नन्दजी बोले इनके गुण कहो गर्गमुनिने उत्तर दिया ये दूसरे बिधाता हैं इनको गति कुछ जानी नहीं जाती पर मैं यह जानता हूं कि कंसको मार भूमिका भार उतारेंगे ऐसे कह गर्गमुनि चुपचुपाते चले गये औ वसुदेवको जा सब समाचार कहे॥

आगे दोनों बालक गोकुलमें दिन दिन बढ़ने लगे और बाललीला कर नन्द यशोदाको सुख देने नीले पीले झंगूले पहने माथेपर छोटी छोटी लटुरियां बिखरी हुई ताइंत गंडे बांधे कठले गलेमें डाले खिलोंन हाथोंमें लिये खेलते आंगनके बीच घुटनों चल चल गिर गिर पड़ें और तोतली तोतली बातें करें रोहणी औ यशोदा पीछे लगी फिरें इस लिये कि मत कहीं लड़के किसीसे डर टोकर खा गिरें जब छोटे छोटे बछड़ों औ बछियाओंकी पूछ पकड़ पकड़ उठें और गिर गिर पड़ें तब यशोदा औ रोह

णी अति प्यारसे उठाय छातीसे लगाय दूध पिलाय भांति भांति के लाड़ लड़ावे॥

जद श्रीकृष्ण बड़े भये तो एक दिन ग्वाल बाल साथ ले ब्रजमें दधि माखनकी चोरीको गये॥

सूने घरमे ढूंढ़े जाय जो पावें सो देय लुटाय॥

जिन्हें घरमें सोते पावें तिनकी धरी ढकी दहेंडी उठा लाव जहां छींके पर रक्खा देखें तहां पीढ़ी पर पटड़ा पटड़े पै उखड धर साथीको खड़ा कर उसके ऊपर चढ़ उतार ले कुछ खावें लु टावें औ लुढ़ाय दे ऐसे गोपियोंके घर घर नित चोरी कर आवें॥

एक दिन सबने मता किया औ गेहमें मोहनको आने दिया जो घर भीतर पैठा चाहें कि माखन दही चुरावें तो जाय पकड़ कर कहा दिन दिन आते थे निशि भोर अब कहां जाओगे माखन चोर यों कह सब जब गोपी मिल कन्हैयाको लिए यशोदाके पास उलाहना देने चलीं तब श्रीकृष्णने ऐसा छल किया कि विसके ल ड़केका हाथ विसे पकड़ा दिया और आप दौड़के अपने ग्वाल बालोंका सङ्ग लिया वे चली चली नन्दरानीके निकट आय पाओं पड़ बोलीं जो तुम बिलग न मानो तो हम कहें जैसी कुछ उपा ध कृष्णने ठानी है॥

दूध दहैया मखन मद्दो बचं नहीं ब्रज मांझ।
ऐसी चोरी करतु है फिरतु भोर अरु सांझ॥

जहां कहींधरा ढंका पाते हैं तहांसे निधड़क उठा लाते हैं कुछ खाते हैं औ लुटाते हैं जो कोई इनके मुखमें दही लगा बता वे विसे उलट कर कहते हैं तूनेई तो लगाया है इस भांति नित चोरी कर आते थे आज हमने पकड़ पाया सो तुम्हें दिखाने लाई हैं यशोदा बोलीं बीर तुम किसका लड़का पकड़ लाई कल से तो धरके बाहरभी नहीं निकला मेरा कुंवर कन्हाई ऐसाही सच बोलती हो यह सुन औ अपनाही बालक हाथमें देख वे हं

सकर लजाय रहीं तहां यशोदा जीने कृष्णको बुलायके कहा पुत्र तुम किसके यहां मत जाओ जो चाहिये सो घरमें ले खाओ॥

सुनकै कान्ह कहत तुतराय, मत मैया तू इन्हें पतिराय।
ये झूठी गोपी झूठो बोलें मेरे पीछे लागी डोलें॥

कहीं दोहनी बछड़ा पकड़ातीं हैं कभी घरकी टहल करातीं हैं मुझे द्वारे रखवाली बैठाय अपने काजको जातीं हैं फिर झूटमूठ आय तुमसे बातें लगातीं हैं यों सुन गोपी हरि मुख देख देख मुसकुरा करे चलीं गईं॥

आगे एक दिन कृष्ण बलराम सखाओंके संग बाखलमें खेलते थे कि जो कान्हने मट्टी खाई तो एक सखाने यशोदासे जा लगाई वह क्रोध कर हाथमें छड़ी ले उठ धाई माको रिस भरी आती देख मुंह पोंछ डरकर खड़े हो रहे इन्होंने जातेही कहा क्योंरे तूने माटी क्यों खाई कृष्ण डरते कांपते बोले मा तुझसे किसने कहा ये बोलीं तेरे सखाने तब मोहनने कोप कर सखासे पूछा क्योंरे मैंने मट्टी कब खाई है वह भयकर बोला भैया मैं तेरी बात कुछ नहीं जानता क्या कहूंगा जो कान्ह सखासे बतराने लगे तो यशोदाने उन्हें जा पकड़ा तहां कृष्ण कहने लगे मैया तू मत रिसाय कहीं मनुष्यभी मट्टी खाते हैं वह बोली मैं तेरी अटपटी बात नहीं सुनती जो तू सच्चा है तो अपना मुख दिखा जो श्रीकृष्णने मुख खोला तो उसमें तीन लोक दृष्ट आये तब यशोदाको ज्ञान हुआ तो मनमें कहने लगी कि मैं बड़ी मूरख हूं जो त्रिलोकीके नाथको अपना सुत कर मानती हूं॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेव राजा परीक्षितसे बोले हे राजा जब नन्दरानीने ऐसा जाना तब हरिने अपनी माया फैलाई इतनेमें मोहनको यशोदा प्यार कर कंठ लगाय घर ले आई इति॥

१० अध्याय॥

एक दिन दही मथने की बिरियां जान भोरही नन्दरानी उठी

और सब गोपीयोंको जगाय बुलाया वे आयघर झाड़ बुहार लीप पोत अपनी अपनी मथनियां लेले दही मथने लगीं तहां नन्दमह रिभी एक बड़ासा कोरा चरुआ ले ईंडुए पर रख चौकी बिछा नेती औ रई मंगाय टटकी टटकी दहेंड़ियां बाछ बाछ राम कृष्ण के लिये बिलोवन बैठी तिस समै नन्दके घरमें ऐसा शब्द दही मथ नेका हो रहा था कि जैसे मेघ गरजता हो इतनेमें कृष्ण जागे तो रो रो मा मा कर पुकारने लगे जब विनका पुकारना किसीने न सुना तब आपही यशोदाके निकट आये औ आंखें डबडबाय अन मने हो ठुसक ठुसक तत्लाय तत्लाय कहने लगे कि मा तुझे कै बेर बुलाया पर मुझे कलेऊ देने न आई तेरा काज अबतक नहीं निबड़ा इतना कह मचल पड़े रई चरएसे निकाल दोनों हाथ डाल लगे माखन काढ़ काढ़ फेंकने आंग लथेड़ने और पांव पटक पटक आंचल खेंच खेंच रोने तब नन्दरानी घबराय झुंझलायके बोली

बेटा यह क्या चाल निकाली॥

चल उठ तुझे कलेऊ दूं कृष्ण कहे अब मैं नहि लूं पहिले क्यों नहिं दीना मा अब तो मेरी लेय बलाय॥

निदान यशोदाने फुसलाय प्यारसे मुंह चूम गोदमें उठा लिया और दधि माखन रोटी खानेको दिया हरि हंस हंस खाते थे नंद महरि आंचलकी ओट किये खिला रही थी इसलिये कि मत कि सीकी दीठ लगे॥

इस बीच एक गोपीने आ कहा कि तुम तो यहां बैठी हो वहां चूल्हे परसे सब दूध उफन गया यह सुनते ही झट कृष्णको गोद से उतार उठ धाई औ जाके दूध बचाय यहां कान्ह दही महीके भाजन फोड़ रई तोड़ माखन भरी कमोरी ले ग्वाल बालोंमें दौड़ आय एक उखल औंधा धरा पाया तिसपर जा बैठे और चारोंओर सखाओंको बैठाय लगे आपसमें हंस हंस बांट बांट माखन खाने॥

इसमें यशोदा दूध उतार आय देखें तो आंगन औ तिबारेमें

दही नहीं की कीच हो रही है तब तो सोच समझ हाथमें छड़ी ले निकली और ढूंढ़ती ढूंढ़ती वहां आई जहां श्रीकृष्ण मण्डली बनाय माखन खाय खिलाय रहे थे जातेही पीछेसे जो कर धरा तो हरि माको देखतेही रो कर हाहा खाय लगे कहने कि मा गो रस किसने लुटाया मैं नहीं जानूं मुझे छोड़ दे ऐसे दीन बचन सुन यशोदा हंसकर हाथसे छड़ी डाल और आनन्दमें मगन हो रिसके मिस कंठ लगाय घर लाय कृष्णको ऊखलसे बांधने लगी तब श्रीकृष्णने ऐसी किया कि जिस रस्सीसे बांधे वही छोटी होय यशोदाने सारे घरकी रस्सियां मङ्गाई तोभी बांधे न गये निदान माको दुखित जान जान आपही बंधाई दिये नन्दरानी बांध गापियोंको खोलनेकी सोंह दे फिर घरकी टहल करने लगी ॥

११ अध्याय ॥

श्रीशुकदेवजी बोले हे राजा श्रीकृष्णचन्द्रको बंधे बंधे पूर्वजन्म की सुधि आई कि कुवेरके बेटोंको नारदने श्राप दिया है तिनका उद्धार किया चाहिये यह सुन राजा परीक्षितने शुकदेवजीसे पूछा महाराज कुवेरके पुत्रोंको नारदमुनिने कैसे श्राप दिया सो समझाय कर कहो शुकदेवमुनि बोले कि नल कुवेर नाम कुवेरके दो लड़के कैलाशमें रहैं सो शिवकी सेवा कर अति धनवान हुए एक दिन स्त्रियां साथ ले वे बन बिहारको गये वहां जाय मद पी मद माते भये तब नारियों समेत नंगे हो गंगामे न्हाने लगे और गलबहियां डाल डाल अनेक अनेक भांतिकी कलोलें करनेकि इतनेमें तहां नारद मुनि आ निकले विन्हें देखतेही रंडियोंने तो निकल कपड़े पहने औ वे मतवारे वहीं खड़े रहे विनकी दशा देख नारदजी मनमे कहने लगे कि इनको धनका गर्व हुआ है इसीसे मदमाते हो काम क्रोधको सुखकर मानते हैं निर धन मनुषको अहंकार नहीं होता धनवानको धर्म अधर्मका विचार कहां है मूरख झूठी देहसे नेह कर भूले संपत कुटुम्ब देखके फूले और

साध न धन मद मनमें आने संपत विपत एक सम मानें इतना कह नारद मुनिने तिन्हें स्राप दिया कि इस पापसे तुम गोकुलमें जा वृक्ष हो जब श्रीकृष्ण अवतार लेंगे तब तुम्हें मुक्ति देंगे ऐसे नारद मुनिने तिन्हें सरापा था तिसीसे वे गोकुलमें आ रूख हुए तब तिनका नाम यमलार्जुन हुआ ॥

इतनी कथा कह शुकदेवजी बोले महाराज इसी बातकी सुरत कर श्रीकृष्ण ओखलीको घसीटे घटीसे वहां ले गये जहां यमलार्जुन पेड़ थे जातेही तिन दोनों तरवरके बीच उखलको आड़ा डाल एक ऐसा झटका मारा कि वे दोनों जड़से उखड़ पड़े औ तिनमेंसे दो पुरुष अति सुंदर निकल हाथ जोड़ स्तुति कर कहने लगे हे नाथ तुम बिन हमसे महापापियोंकी सुध कौन ले श्रीकृष्ण बोले सुनो नारदमुनिने तुम पर बड़ी दया की जो गोकुलमें मुक्ति दी तिन्होंकी कृपासे तुमने मुझे पाया अब बर मांगो जो तुम्हारे मनमें हो ॥

यमलार्जुन बोले दीननाथ यह नारदजीकीही कृपा है जो आपके चरण परसे और दरशन किया अब हमें किसी बस्तुकी इच्छा नहीं पर इतनाही दीजे जो सदा तुम्हारी भक्ति हृदेमें रहे यह सुन दर दे हंसकर श्रीकृष्णचंदने तिन्हें विदा किया इति ॥

१२ अध्याय ।

श्रीशुकदेवमुनि बोले राजा जब वे दोनो तरु गिरे तब तिनको शब्द सुन नंदरानी घबरा कर दौड़ी वहां आई जहां कृष्णको उखलसे बांध गई थी और तिनके पीछे सब गोपी ग्वालभी आये जद कृष्णको वहां न पाया तद व्याकुल हो यशोदा मोहन मोहन पुकारती औ कहती चल कहां गया बांधा था माई कहीं किसीने देखा मेरा कुंवर कन्हाई इतनेमें सोहींसे आ एक बोली ब्रजनारी कि दो पेड़ गिरे तहां बचे मुरारी यह सुन सब आगे जाय देखती तो सचही वृक्ष उखड़े पड़े हैं औ कृष्ण तिनके बीच उखलीसे

बांधे सुकड़े बैठे हैं जातेही नन्दमहरिने उखलसे खोल कान्हको रोकर गले लगा लिया और सब गोपियां डरा जान लगीं चुटकी तालो दे दे हंसाने तहां नन्द उपनन्द आपसमें कहने लगे कि ये युगानयुगके रूख जमे हुए कैसे उखड़ पड़े यह अचंभा जीमें आता है कुछ भेद इनका समझा नहीं जाता इतना सुनके एक लड़केने पेड़ गिरनेका ब्योरा जोंका तों कहा पर किसीके जीमें न आया एक बोला ये बालक इस भेदको क्या समझें दूसरेने कहा कदाचित यही हो हरिकी गति कौन जाने ऐसे अनेक अनेक भांतिकी बातें कर श्रीकृष्णको लिये सब आनन्दसे गोकुलमें आये तब नन्दजीने बहुतसा दान पुण्य किया॥

कितने एक दिन बीते कृष्णको जन्म दिन आया तो यशोदारानीने सब कुटुम्बको नोत बुलाया और मङ्गलाचार कर बरस गांठ बांधी जब सब मिलि जेंवन बैठे तब नन्दराय बोले सुनो भाइयो अब इस गोकुलमें रहना कैसे बने दिन दिन होने लगे उपद्रव घने चलो कहींऐसी ठौर जावें जहां तृण जलका सुख पावें उपनन्द बोले वृन्दावन जाय बसिये तो आनंदसे रहिये यह वचन सुन नन्दजीने सबको खिलाय पिलाय पान दे बैठाय औरही एक जोतिषीको बुलाय यात्राका मुहूर्त्त पूछा विसने बिचारके कहा इस दिशाकी यात्राको कलका दिन अति उत्तम है बांयें योगिनी पीछे दिशाशूल औ सनमुख चन्द्रमा है आप निसंदेह भोरही प्रस्थान कीजें॥

यह सुन तिस समै तो सब गोपी ग्वाल अपने अपने घर गये पर सबेरेही अपनी अपनी वस्तु भाव गाडों पै लाद लाद आ इकट्ठे भये तब कुटुम्ब समेत नन्दजीभी साथ हो लिये और चले चले नदी उतर सांझ समै जा पहुंचे वृन्दादेवीको मनाय वृन्दावन बसाया तहां सब सुख चैनसे रहने लगे॥

जब श्रीकृष्ण पांच बरषके हुए तब मासे कहने लगे कि मैं बछड़े

चरावने जाऊंगा तू बलदाऊसे कह दे जो मुझे बनमें अकेला न छोड़े वह बोली पूत बछड़े चरावनेवाले बहुत हैं दास तुम्हारे तुम मत पल ओटे हो मेरे नैन आगेसे प्यारे कान्ह बोले जो मैं बनमें खेलने जाऊंगा तो खानेको खाऊंगा नहीं तो नहीं यह सुन यशोदाने ग्वाल बालोंको बुलाय कृष्ण बलरामको सोंपकर कहा कि तुम बछड़े चरावने दूर मत जाइयो और सांझ न होते दोनों को संग ले घर आइयो बनमें इन्हें अकेले मत छोड़ियो सथही साथ रहियो तुम इनके रखवाले हो ऐसे कह कलेऊ दे राम कृष्णको विसके संग कर दिया।

वे जाय यमुनाके तीर बछड़े चराने लगे और ग्वाल बालोंमें खेलने कि इतनेमें कंसका पठाया कपट रूप किये बच्छासुर आया विसे देखतेही सब बछड़े इधर जिधर तिधर भागे तब श्री कृष्णने बलदेवजीको सैनसे जताया कि भाई यह कोई राक्षस आया आगे जो वह चरता चरता घात करनेको निकट पहुंचा तो श्री कृष्णने पिछले पांव पकड़ फिरायकर ऐसा पटका कि विसका जी घटसे निकल सटका॥

बच्छासुरका मरना सुन कंसने बकासुरको भेजा वह वृन्दाबनमें आय अपनी घात लगाय यमुनाके तीर पर्बत सम जा बैठा विसे देख मारे भयके ग्वाल बाल कृष्णसे कहने लगे कि भैया यह तो कोई राक्षस बगुला बन आया है इसके हाथसे कैसे बचेंगे॥

ये तो इधर कृष्णसे यों कहते थे औ उधर वहभी जीमें यह बिचारता था कि आज इसे विना मारे न जाऊंगा इतनेमें जो श्रीकृष्ण उसके निकट गये तो विसने इन्हें चोंचमें उठाय मुंह मूंद लिया ग्वाल बाल व्याकुल हो चारों ओर देख देख रो रो पुकार पुकार लगे कहने हाय हाय यहां तो हलधरभी नहीं हैं हम यशोदासे क्या जाय कहेंगे इनको अति दुखित देख श्रीकृष्ण ऐसे तते हुए कि वह मुखमें रख न सका जो विसने इन्हें उगला तो

इन्होंने उसे चोंच पकड़ टोंठ पांव तले दवाय चीरडाला और बछड़े गैर सखाओंको साथ ले हंसते खेलते घर आये इति ॥

१३ अध्याय ॥

श्रीशुकदेव बोले सुनो महाराज प्रात होतेही एक दिन श्रीकृष्ण बछड़े चरावन बनको चले तिनके साथ सब ग्वाल बालभी अपने अपने घरसे छाक ले ले हो लिये और द्दारमें नांय छाक धर बछरू चरनेको छोड़े लगे खड़ी गेरू हरितालमें तन चीत चीत बनके फल फूलोंके गहने बनाय बनाय पहन पहन खेलने औ पशुपंछियोंकी बोली बोल बोल भांति भांतिके कुतूहल कर कर नाचने गाने ॥

इतनेमें कंसका पटाया अघासुर नाम राक्षस आया सो अति बड़ा अजगर हो मुंह पसार बैठा और सब सखा समेत श्रीकृष्ण भी खेलते खेलते वहां जानिकले जहां वह घात लगाये मुंह बाये बैठा था दूरसे विसे देख ग्वाल बाल आपसमें लगे कहने कि भाई यह तो कोई बड़ा पहाड़ है कि जिसकी कन्दरा इतनी बड़ी है ऐसे कहते औ बछड़े चराते उसके पास पहुंचे तब एक लड़का विसका मुख खुला देख बोला भाई यह तो कोई अति भयावनी गुफा है इसके भीतर न जावेंगे हमें देखतेही भय लगता है फिर तोख नाम सखा बोला चलो इसमें धस चलें कृष्ण साथ रहते हम क्यों डरें जो कोई असुर होगा तो बकासुरकी रीतसे मारा जायगा ॥ यों सब सखा खड़े बातें करतेही थे कि विसने एक ऐसी लम्बी सांस खैंची जो बछड़ों समेत सब ग्वाल बाल उड़के विसके मुखमें जा पड़े विष भरी तत्ती भाफ जों लगी तो लगे व्याकुल हो बछड़े रांभने औ सखा पुकारने कि हे कृष्ण प्यारे बेग सुध ले नहीं तो सब जल मरते हैं विनकी पुकार सुनतेही आतुर हो श्रीकृष्ण भी उसके मुखमें बढ़गये विनने प्रसन्न हो मुंह मूंद लिया तहां श्रीकृष्णने अपना शरीर इतना बढ़ाया कि विसका पेट फटगया

सब बछरू औ ग्वाल बाल निकल पड़े तिस समय आनन्द कर दे वताओंने फूल औ अमृत बरषाय सबकी तपत हर ली तब ग्वाल बाल श्रीकृष्णसे कहने लगे कि भैया इस असुरको मार आज तो तुन भले बचाये नहीं सब मर चुके थे इति ॥

१४ अध्याय ॥

श्रीशुकदेव बोले हे राजा ऐसे अघासुरको मार श्रीकृष्णचन्द्र बछड़े घेर सखाओंको साथ ले आगे चले कितनी एक दूर जाय कदमकी छांहमें खड़े हो बंशी बजाय सब ग्वाल बालोंको बुलाय कहा भैया अह भली ठौर है इसे छोड़ आगे कहां जांय बैठो यहीं छाकें खांय सुनतेही तिन्होंने बछड़े तो चरनेको हांक दिये और आक ढाक कदम कंमलके पात लाय पतल दोने बना य झाड़ बुहार श्रीकृष्णके चारों ओर पांतिकी पांति बैठगये और अपनी अपनी छाकें खोल खोल लगे आपसमें परोसने ॥

जब परोस चुके तब श्रीकृष्णचन्द्रने सबके बीच खड़े हो पह ले आप कौर उठाय खानेकी आशा दी वे खाने लगे तिनमें मोर मुकुट धरे बनमाल गरे लकुट लिये त्रिभंगीछब किये पीतां बर पहने पीत पट ओढ़े हंस हंस श्रीकृष्णभी अपनी छाकसे सब को खिलाते थे और एक एकके पनवारसे उठाय उठाय चाख चाख खट्टे मीठे तीते चरपरेका स्वाद कहते जाते थे औ तिस मण्डलीमें एसे सुहावने लगते थे और कि जैसे तारोंमें चन्द्रमा तिस समै ब्रह्मा आदि सब देवता अपने अपने बिमानोंमें बैठे आ काशसे ग्वालमण्डलीका सुख देख रहे थे कि तिनमेंसे आय ब्रह्मा सब बछड़े चुराय ले गया और यहां ग्वाल बालोंने खाते खाते चिंता कर श्रीकृष्णसे कहा भैया हम तो निचिंताईसे बैठे खाय रहे हैं न जानिये बछड़े कहां निकल गये होंयगे ॥

तब गवालनसों कहत कन्हाई, तुम सब जेवत रहियो भाई।
जिनि कोउ उठै करै औसेर, सबकै बछरा ल्याऊं घेर ।

ऐसे कह कितभी एक दूर बनमें जाय जब जाना कि यहांसे बछ
ड़े ब्रह्मा हर ले गया तब श्रीकृष्ण वैसेही और बनाय लाये यहां
आय देखें तो ग्वाल बालोंको भी उठाय ले गया है फिर उन्होंने
वेभी जैसे थे तैसही बनाये और सांझ हुई जान सबको साथ ले
वृन्दाबन आये ग्वाल बाल अपने अपने घर गये पर किसीने यह
भेद न जाना कि ये हमारे बालक औ बछड़े नहीं बरन औरभी
दिन दिन माया बढ़ती चली।

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव बोले महाराज वहां ब्रह्मा ग्वाल
बाल बछड़ोंको ले जाय एक पर्बतकी कन्दरामें भर तिसके मुंह
पर पत्थरकी शिला धर भूल गया और यहां श्रीकृष्णचन्द्र नित नई
नई लीला करते थे इसमें एक बर्ष बीत गया तब ब्रह्माको सुध हुई
तो मनमें कहने लगा कि मेरा तो एक पलभी नहीं हुआ पर न
रका बरष हो गया इससे अब चल देखा चाहिये कि ब्रजमें ग्वाल
बाल बछड़ों बिन क्या गति भई।

यह बिचार उठकर वहां आया जहां कन्दरामें सबको मूंद गया
था शिला उठाय देखे तो लड़के औ बछड़े घोरनिद्रामें सोये पड़े
हैं वहांसे चल वृन्दावनमें आय बालक औ बछरू सब जोंके तों
देख अचंभित हो कहने लगा कैसे ग्वाल बच्छ यहां आये कैसे कृष्ण
नये उपजाये इतना कह फिर कन्दराको देखने गया जितनेमें
वह वहांसे देख कर आवे तितने बीच यहां श्रीकृष्णचन्द्रने ऐसी
माया करी कि जितने ग्वाल बाल औ बछड़े थे सब चतुर्भुज हो
गये औ एक एकके आगे ब्रह्मा रुद्र इन्द्र हाथ जोड़े खड़े हैं।

देखि बिरंचि चिचसो भयौ, भूल्यौ ज्ञान ध्यान सब गयो।
जनु पषाण देवी चौमुखी, भई भक्ति पूजा बिन दुखी॥

औ डरकर नैन मूंद लगा थर थर कांपने जब अंतरजामी श्रीकृ
ष्णचन्द्रने जाना कि ब्रह्मा अति व्याकुल है तब सबका अंग हर

लिया और आप अकेलेई रह गये ऐसे कि जैसे भिन्न भिन्न बादल एक हो जाय इति ॥ १५ अध्याय ॥

श्रीशुकदेवजी बोले हे राजा जद श्रीकृष्णने अपनी माया उठा ली तद ब्रह्माको अपने शरीरका ज्ञान हुआ तो ध्यान कर भगवानके पास आ अति गिड़गिड़ाय पाओं पड़ विनती कर हाथ बांध खड़ा हो कहने लगा कि हे नाथ तुमने बड़ी कृपा करी जो मेरा गर्ब दूर किया इसीसे अंधा हो रहा था ऐसी बुद्धि किसकी है जो बिन दया तुम्हारी तुम्हारे चरित्रोंको जाने माया तुम्हारीने सबको मोहा है ऐसा कौन है जो तुम्हें मोहे तुम सबके करता हो तुम्हारे रोमरोममें मुजसे ब्रह्मा अनेक पड़े हैं मैं किस गिनतीमें हूं दीन दयाल अब दया कर अपराध क्षमा कीजे मेरा दोष चित्तमें न लीजे ॥

इतना सुन श्रीकृष्णचन्द्र मुसकुराये तद ब्रह्माने सब ग्वाल बाल औ बछड़े सोतेके सोते ला दिये और लज्जित हो स्तुति कर अपने स्थानको गये जैसी मण्डली आगे थी तैसीही बन गई बरष दिन बीता सो किसीने न जाना जो ग्वाल बालकोंकी नींद गई तो कृष्ण बछरू घेर लाये तब तिनमेंसे लड़के बोले भैया तू तो बछड़े बेग ले आया हम भोजन करनेभी न पाये ॥

सुनत बचन हंस कहत बिहारी, मोकों चिंता भई तिहारी ॥
निकट चरत इकठौरे पाए अब घर चलो भोरके आए ॥

ऐसे आपसमें बतराय बछरूले सब हंसते खेलते अपने घर आये इति ॥ १६ अध्याय।

श्रीशुकदेव बोले महाराज जब श्रीकृष्ण आठ बरषके हुए तब एक दिन तिन्होंने यशोदासे कहा कि मा मैं गाय चरावने जाऊंगा तू बाबसे समझायकर कह जो मुझे ग्वालोंके साथ पठाय दे सुनतेही यशोदाने नन्दजीसे कहा तिन्होंने शुभ मुहुर्त्त ठहराय ग्वाल बालोंको बुलाय कातिक सुदी आठेंको राम कृष्णसे खरक

पूजवाय बिनती कर ग्वालोंसे कहा कि भाइयो आजसे गौ चरा वन अपने साथ राम कृष्णकोभी ले जाया करो पर इनके पासही रहियो बनमें अकेले न छोड़ियो ऐसे कह छाक दे कृष्ण बलराम को दहीका तिलक कर सबके संग बिदा किया वे मगन हो ग्वाल बालों समेत गायें लिये बनमें पहुंचे तहा बनकी छबि देख श्रीकृष्ण बलदेवजीसे कहने लगे दाऊ यह तो अति मनभावनी सुहावनी ठौर है देखो कैसे वृक्ष झुक झुक रहे हैं औ भांति भांतिके पशु पंछी कलोलें करते हैं ऐसे कह एक ऊंचे टीले पर जा चढ़े और लगे दुपट्टा फिराय कारी गोरी पीरी धौरी धूमरी भूरी नीली कह कह पुकारने सुनतेही सब गायें रांभती होकारती दौड़ आईं तिस समै ऐसी शोभा हो रही थी कि जैसे चारों ओर सबरन वरनकी घटा घिर आई होय॥

फिर श्रीकृष्णचन्द्र गौ चरनेको हांक भाईके साथ छाक खाय कदमकी छांहमें एक सखाकी जांघ पै शिर धर सोये कितनी एक बेरमें जो जागे तो बलरामजीसे कहा दाऊ सुनो खेल यह करें न्यारी कटक बांधके लरें इतना कह आधी आधी गायें औ ग्वाल बाल बांट लिये तब बनके फल फूल तोड़ झोलियोंमें भर भर लगे तुरही भेर भोंपू डफ ढोल दमामे मुखहीसे बजाय बजाय लड़ने औ मार मार पुकारने ऐसे कितनी एक बेर तक लड़े फिर अपनी अपनी टोली निराली ले गायें चराने लगे॥

इस बीच बलदेवजीसे सखाने कहा महाराज यहांसे थोड़ीसी दूर पर एक ताल बन है तिसमें अमृत समान फल लगे हैं तहां गधेके रूप एक राक्षस रखवाली करता है इतनी बात सुनतेही बलरामजी ग्वालबालों समेत तिस बनमें गये और लगे ईंटपत्थर डले लाठियां मार मार फल झाड़ने शब्द सुनकर धेनक नाम खर रेंकता आया और तिसने आतेही फिरकर बलदेवजीकी छातीमें एक दुलत्ती मारी तब इन्होंने तिसे उठायकर दे पटका

फिर वह लोटपोटके उठा और धरती खूंद खूंद कान दबाय हट हट दुलत्तियां झाड़ने लगा ऐसे बड़ी बेर लग लड़ता रहा निदान बलरामजीने तिसकी दोनों पिछली टांगें पकड़ फिरायकर एक ऊंचे पेड़ पर फेंका सो गिरतेही मर गया औ साथ उसके वह रूखभी टूट पड़ा दोनोंके गिरनेसे अति शब्द हुआ और सारे बनके वृक्ष हिल उठे॥

देखि दूरसों कहत मुरारी, हले रूख शब्द भयो भारी॥
तबहि सखा हलधरके आये, चलहु कृष्ण तुम बेग बुलाये॥

एक असुर मारा है सो पड़ा है इतनी बातके सुनतेही श्रीकृष्ण भी बलरामजीके पास जा पहुंचे तब धेनुकके साथी जितने राक्षस थे सो सब चढ़ आये तिन्हें श्रीकृष्णचन्द्रजीने सहजही मार गिराया तब तो ग्वाल बालोंने प्रसन्न हो निधड़क फल तोड़ मन मानती झोलियां भर लींये और गायें भर घेर लाय श्रीकृष्ण, बलदेवजीसे कहा महाराज बड़ी बेरसे आये हैं अब घरको चलिये इतना बचन सुनतेही दोनों भाई गायें लिये ग्वाल बालों समेत हंसते खेलते सांझको घर आये और जो फल लाये थे सो सारे वृन्दाबनमें बंटवाये सबको बिदा दे आप सोये फिर भोरके तड़के उठतेही श्रीकृष्ण ग्वाल बालोंको बुलाय कलेऊ कर गायें ले बनको गये औ गौ चराते चराते कालीदह जा पहुंचे वहां ग्वालोंने गायोंको यमुनामें पानी पिलाया औ आपभी पिया जों जल पी ऊपर उठे तों गायों समेत मारे बिषके सब लोट गये तब श्रीकृष्णजीने अमृतकी दृष्टसे देख सबोंको जिवाया इति॥

१७ अध्याय॥

श्रीशुकदेवजी बोले महाराज ऐसे सब रक्षा कर श्रीकृष्ण ग्वाल बालोंके साथ गेंदतड़ी खेलने लगे और जहां काली था तहां चार कोश तक यमुनाका जल तिसके बिषसे खौलता था कोई पशु पंछी

वहां न जा सकता जो भूलकर जाता सो लपटसे झुलस दहमें गिर पड़ता औ तीरमें कोई रूखभी न उपजता एक अबिनाशी कदम तट पर था सोई था राजाने पूछा महाराज वह कदम कैसे बचा मुनि बोले किसी समै अमृत चोंचमें लिये गरुड़ बिस पेड़ पर आ बैठा था तिसके मुंहसे एक बूंद गिरा था इसलिये वह रूख बचा ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजासे कहा महाराज श्री कृष्णचन्द्रजी कालीका मारना जीमें ठान गेंद खेलते खेलते कदम पर जाचढ़े औ जो नीचेसे सखाने गेंद चलाया तो यमुनामें गिरा तिसके साथ श्रीकृष्णभी कूदे इनके कूदनेका शब्द कानोंसे सुनकर वह लगा बिष उगलने औ अग्नि सम फुंकारें मार मार कहने कि यह ऐसा कौन है जो अब लग दहमें जीता है कहीं अछैहत्त तो मेरा तेज न सहिके टूट पड़ा कै कोई बड़ा पशु पंछी आया है जो अबतक जलमें आ हट होता है ॥

यों कह वह एक सौ दशों फनोंसे बिष उगलता था । श्रीकृष्ण पैरते फिरते थे तिस समै सखा रो रो हाथ पसार पसार पुकारते थे गायें मुंह बांयें चारोंओर रांभती हूंकती फिरती थीं ग्वाल न्यारेही कहते थे श्याम बेग निकल आइये नहीं तुम बिन घर जाय हम क्या उत्तर देंगे ये तो यहां दुखित हो यों कह रहे थे इसमें किसीने बृन्दाबनमें जा सुनाया कि श्रीकृष्ण कालीदहमें कूद पड़े यह सुन रोहिणी यशोदा औ नन्द गोपी गोप समेत रोते पीटते उठ धाये और सबके सब गिरते पड़ते कालीदह आये तहां श्रीकृष्णको न देख व्याकुल हो नन्दरानी दहरानी गिरने चलीं पानीमें सब गोपियोंने बीचही जा पकड़ा औ ग्वाल बाल नन्दजीको थांभे ऐसे कह रहे थे ।

छांड़ महावन या वन आये, तौह दैत्यनि अधिक सताये ॥
बहुत कुशल असुरन तै परी, अब क्यों दह तें निकसे हरी ॥

कि इतनेमें पीछेसे बलदेवजीभी वहां आये औ सब ब्रजबासियों

को समझाकर बोले अभी आवेंगे कृष्ण अविनाशी तुम काहेको होते उदासी॥

आज साथ आयो मे न हौं, मोबिन हरि पैठे दह माहीं॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षितसे कहने लगे कि महाराज इधर तो बलरामजी सबको यों आशा भरोसा देते थे औ उधर श्रीकृष्णजी पैरकर उसके पास गये तो वह आ इनके सारे शरीरसे लिपट गया तब श्रीकृष्ण ऐसे मोटे हुए कि विसे छोड़तेही बन आया फिर जों जों वह फुकारें मार मार इनपर फन चलता था तों तों ये अपनेको बचाते थे निदान ब्रजवासियोंको अति दुखित जान श्रीकृष्ण एकाएकी उछलके उसके शिरपर जा चढ़े॥

तिन लोक को बोझ ले, भारी भये मुरारि।
फन फन पर नाचत फिरे, बाजे पग पटतारि॥

तब तो मारे बोझके काली मरने लगा औ फन पटक पटक उसने जीभें निकालदीं तिसने लोहूकी धारें वह चलीं जद बिष औ बलका गर्व गया तद उन्ने मनमें जाना कि आदि पुरुषने औतार लिया नहीं तो इतनी किसमें सामर्थ है जो मेरे बिषसे बचे यह समझ जीवकी आश तज शिथल हो रहा तद नागपत्नीने आय हाथ जोड़ शिर निवाय बिनती कर श्रीकृष्णचन्द्रसे कहा महाराज आपने भला किया जो इस दुख दाई अति अभिमानीका गर्व दूर किया अब इसके भाग जागे तुम्हारा दरशन पाया।जिन चरणोंको ब्रह्मा आदि सब देवता जप तप कर ध्यावते हैं सोई पद कालीके शीस पर बिराजते हैं।

इतना कह फिर बोली महाराज मुझ पर दया कर इसे छोड़ दीजे नहीं तो इसके साथ मुझेभी बधकीजे क्योंकि स्वामी बिन स्त्रीको मरनाहीं भला है औ जो बिचारिये तो इसकाभी कुछ दोष नहीं यह जाति स्वभाव है कि दूध पिलाये बिष बढ़े।

इतनी बात नागपत्नीसे सुन श्रीकृष्णचन्द्र उस परसे उतर पड़े तबी प्रणाम कर हाथ जोड़ काली बोला नाथ मेरा अपराध क्षमा कीजे मैंने अनजाने आप पर फन चलाये हम अधम जाति सर्प हमें इतना ज्ञान कहां जो तुम्हें पहचानें श्रीकृष्ण बोले भला जो हुआ सो हुआ पर अब तुम यहां न रहो कुटुम्ब समेत रौनक द्वीपमें जा बसो ॥

यह सुन कालीने डरते कांपते कहा कृपानाथ वहां जाऊं तो गरुड़ मुझे खा जायगा जिसीके भयसे मैं यहां भाग आया हूं श्रीकृष्ण बोले अब तू निरभय चला जा हमारे पदके चिह्न तेरे शिर पर देख तुझसे कोई न बोलेगा ऐसे कह श्रीकृष्णचन्द्रने तिसी समै गरुड़को बुलाय कालीके मनका भय मिटा दिया तब कालीने धूप दीप नैवेद्य समेत बिधिसे पूजा कर बहुतसी भेंट श्रीकृष्णके आगे धर हाथ जोड़ बिनती कर बिदा होय कहा ॥

चार घरी नाचे मो माथा, यह मन प्रीति राखियो नाथा ॥

यों कह दंडवत कर काली तो कुटुम्ब समेत रौनक द्वीपको गया औ श्रीकृष्णचन्द्र जलसे बाहर आये इति ।

१८ अध्याय ।

इतनी कथा सुन राजा परीक्षितने श्रीशुकदेवजीसे पूछा महाराजा रौनकद्वीप तो भली ठौर थी काली वहांसे क्यों आया और किसलिये यमुनामें रहा यह मुझे समझाकर कहो जो मेरे मनका संदेह विसे एक सांप नित देना किया एक रूख पर धर आवें वह आवे और खा जाय एक दिन कद्रु नागिनीका पुत्र काली अपने बिषके जाय श्रीशुकदेव बोले राजा रौनक द्वीपमें हरिका बाहन गरुड़ रहता है सो अति बलवन्त है तिससे वहांके बड़े बड़े सरपोंने हारमान घमण्ड कर गरुड़का भक्ष खाने गया इतनेमें वहां गरुड़ आया औ दोनोंमें अति युद्ध हुआ निदान हारमान काली अपने मनमें कहने लगा कि अब इसके हाथसे कैसे बचूं और

कहां जाऊं इतना कह सोचा कि वृन्दाबनमें यमुनाके तीर जारहूं तो बचूं क्योंकि यह वहां नहीं जा सकता ऐसे बिचार काली वहीं गया फिर राजा परीच्छितने शुकदेवजीसे पूछा कि महाराज वह वहां क्यों नहीं जा सकता था सो भेद कहो शुकदेवजी बोले राजा किसी समय यमुनाके तट सौभरी ऋषि बैठे तप करते थे तहां गरुड़ने जाय एक मछली मार खाई तब ऋषिने क्रोधकर उसे यह शाप दिया कि तू इस ठौर फिर आवेगा तो जीता न रहेगा इस कारण वह वहां न जा सकता था और जबसे काली वहां गया तभीसे तिस स्थानका नाम कालीदह हुआ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले हे राजा जब श्रीकृष्ण चन्द्र निकले तब नन्द यशोदाने आनन्द कर बहुतसा दान पुण्य किया पुत्रका मुख देख नैनोंको सुख दिया औ सब व्रजबासियोंके भी जीमें जी आया इस बीच सांझ हुई तो आपसमें कहने लगे कि अब दिन भरके हारे थके भूखे प्यासे घर कहां जांयगे रातकी रात यहीं काटें भोर हुए वृन्दाबन चलेंगे यह कह सब सोयरहे॥

आधी रात बीत जब गई, भारी कारी आंधी भई॥
दावा अग्नि लगी चहुं ओर, अति झर बरैं वृक्ष बन दोर॥

आग लगतेही सब चौंक पड़े और घबराकर चारोंओर देख देख हाथ पसार पकार लगे पुकारने कि हे कृष्ण हे कृष्ण इस आगसे बेग बचाओ नहीं तो यह क्षणभरमें सबको जलाय भस्म करती है जब नन्द यशोदा समेत व्रजबासियोंने ऐसे पुकार की तब श्रीकृष्णचन्द्रजीने उठतेही वह आग पलमें पी सबके मन की चिंता दूर की भोर होतेही सब वृन्दाबन आये घर घर आनन्द मङ्गल हुए बधाये इति॥

१९ अध्याय।

इतनी कथा कह श्रीशुकदेव बोले महाराज अब मैं ऋतु बरणन करता हूं कि जैसे जैसे श्रीकृष्णचन्द्रने तिनमें लीला करी सो चित

है सुनो प्रथम ग्रीष्म ऋतु आई तिसने आतेही सब संसारका सुख ले लिया और धरती आकाशको तपाय अग्नि सम किया पर श्री कृष्णके प्रतापसे वृन्दाबनमें सदा बसन्तही रहै यहां घनी घनी कुंजोंके वृक्षोंपर बेलें लहलहा रहीं बरन बरनके फूल फूले हुए तिनपर भौरोंके झुण्डके झुण्ड गूंज रहे आंबोंकी डालियों पै कोयल कुहुक रही ठण्डी ठण्डी छांहोमें मोर नाच रहे सुगन्ध लिये मीठी मीठी पवन बह रही और एकओर बनके यमुना न्यारीही शोभा दे रही थी तहां कृष्ण बलराम गायें छोड़ सब सखा समेत आपसमें अनुठे अनुठे खेल खेल रहे थे कि इतनेमें कंसका पठाया ग्वालका रूप बनाय प्रलम्ब नाम राक्षस आया विसे देखतेही श्रीकृष्णचन्द्रने बलदेवजीको सैनसे कहा॥

आपना सखा नहीं बलवीर, कपटरूप यह असुर शरीर॥
याके बधको करो उपाय, ग्वाल रूप मारे नहि जाय॥
जब यह रूप धारि है आपनो, तब तुम याहि तनकशुक हनो॥

इतनी बात बलदेवजीको जताय श्रीकृष्णजीने प्रलम्ब को हंसकर पास बुलाय हात पकड़के कहा॥

सबतें नीको भेष तिहारो, भलो कपट बिन मित्र हमारो॥

यों कह विसे साथ ले आधे ग्वालबाल बांट लिये और आधे बलरामजीको दे दो लड़कोंको बैठाय लगे फल फूलोंका नाम पूछने औ बताने इसमें बताते बताते श्रीकृष्ण हारे बलदेव जीते तब श्रीकृष्णकी ओरवाले बलदेवके साथियोंको कांधोंपर चढ़ाय ले चले तहां प्रलम्ब बलरामजीको सबसे आगे ले भागा औ बनमें जाय उसने अपनी देह बढ़ाई तिस समै विस काले काले पहाड़से राक्षस पर बलदेवजी ऐसे शोभायमान थे जैसे श्याम घटा पै चांद औ कुण्डलकी दमक बिजलीसी चमकती थी पसीना मेहसा बरसता था इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा महाराज जो अकेला पाय वह बलरामजीको मारनेको हुवा तोंही उ

न्होंने मारे घूंसोंके जिसे मार गिराया इति ।

२० अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले हे राजा जब प्रलम्बको मारके चले बलराम तभी सोंहीसे सखाओं समेत आनमिले घनश्याम औ जो ग्वाल बाल बनमें गाये चराते थे वेभी असुर मारा सुन गायें छोड़ उधर देखनेको गये तोलों इधर गायें चरती चरती डाभ कांससे निकल मूंज बन बढ़ गई वहांसे आय दोनों भाई यहां देखें तो एक भी गाय नहीं ॥

बिछुरी गैयां बिछुरे ग्वाल भूले फिरें मुंज बन ताल रूखनि
चढ़े परस्पर टेरें ले ले नाम पिछौरी फेरें ॥

इसमें किसी सखाने आय हाथ जोड़ श्रीकृष्णसे कहा कि महाराज गाय सब मूंज बनमें पैठ गई तिनके पीछे ग्वाल बाल न्यारे ढूंढ़ते भटकते फिरते हैं इतनी बातके सुनतेही श्रीकृष्णने कदम पर चढ़ ऊंचे सुरसे जो बंशी बजाई तो सुन ग्वाल बाल और सब गायें मूंज बनको फाड़कर ऐसे आन मिलीं जैसे शावन भादोंकी नदी तुङ्ग तरङ्गको चीर समुद्रमें जा मिले इस बीच देखते क्या हैं कि बन चारोंओरसे दहड़ दहड़ जलता चला आता है यह देख बाल औ सखा अति घबराय भय खायकर पुकारे हे कृष्ण हे कृष्ण इस आगसे बेग बचाओ नहीं तो अभी छण एकमें सब जल मरते हैं कृष्ण बोले तुम सब अपनी आंखें मूंदो जद विन्होंने नैन मूंदे तद श्रीकृष्णजीने पल भरमें आग बुझाय एक और माया करी कि गायों समेत सब ग्वाल बालोंको भाण्डीर बनमें ले आय कहा कि अब आंखें खोल दो ॥

ग्वाल खोलदृग कहत निहारि, कहां गई वह अग्नि मुरारि ॥
कब फिर आये बन भाण्डीर, होत अचंभो तह बलवीर।

ऐसे कह गायें ले सब मिल कृष्ण बलरामके साथ वृन्दाबन आये औ सबोंने अपने अपने घर जाय कहा कि आज बनमें बलराम

जीने प्रलम्ब नाम राक्षसको मारा और मूंज बनमें आग लगी थी सोभी हरिके प्रतापसे बूझ गई॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने कहा हे राजा ग्वाल बालों के मुखसे यह बात सुन सब व्रजबासी देखनेको तो गये पर विन्होंने कृष्ण चरित्रका कुछ भेद न पाया इति॥

२१ अध्याय।

श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज ग्रीष्मकी अति अनीति देख नृप पावस प्रचण्ड पृथ्वीके पशु पंछी जीव जंतुकी दया बिचार चारोंओरसे दल बादल साथ ले लड़नेको चढ़ आया तिस समै घन जो गरजताथा सोई तो धौंसा बाजता था और बरन बरन की घटा जो घिर आई थी सोई सूर बीर रावतें थें तिनके बीच बीच बिजलीकी दमक शस्त्रकीसी चमक थीं बगपांत ठौर ठौर सतध्वजासी फहराय रही थीं दादुर मोर कड़खैतोंकीसी भांति यश बखानते थे औ बड़ी बड़ी बूंदोंकी झड़ी बाणोंकीसी झड़ी लगी थीं इस धूमधामसे पावसको आते देख ग्रीष्म खेत छोड़ अपना जीव ले भागा तब मेघ पियाने बरष पृथ्वीको सुख दिया उसने जो आठ महीने पतिके बियोगमें योग किया था तिसका भोग भर लिया कुछ गिर शीतल हुए औ गर्भ रहा तिसमेंसे अठारह भार पुत्र उपजे सोभी फल फूल भेट ले ले पिताको प्रणाम करने लगे उसकाल वृन्दावनकी भूमि ऐसी सुहावनी लगती थी कि जैसे सिङ्गार किये कामिनी और जहां तहां नदी नाले सरोवर भये हुए तिन पर हंस सारस सरस शोभा दे रहे ऊंचे ऊंचे रूखों की डालियां झूम रहीं उनमें पिक चातक कपोत कीर बैठे कोलाहल कर रहे थे औ ठांव ठांव हरे कुसुंमे जोड़े पहरे गोपी ग्वाल झूलों पै झूल झूल ऊंचे ऊंचे सुरोंसे मलारें गाते थे विनके निकट जाय जाय श्रीकृष्ण बलरामभी बाललीलाकर अधिक सुख दिखाते थे इस आनन्दसे बरषा ऋतु बीती तब श्रीकृष्ण ग्वाल बालोंसे

कहने लगे कि भैया अब तो सुखदाई शरद ऋतु आई ॥
सबको सुख भारी अब जान्यों, खाद सुगन्ध रूप पहिचान्यों ॥
निशि नक्षत्र उज्जल आकाश, मानहु निर्गुन ब्रह्म प्रकाश ॥
चार मास जो बिरमें गेह, भये शरद तिन तजे सनेह ॥
अपने अपने काजनि धाये, भूप चढ़े तकि देश पराये ॥

२२ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि हे महाराज इतना बात कह श्रीकृष्ण फिर ग्वाल बाल साथ ले लीला करने लगे और जब लग कृष्ण बनमें धेनु चरावें तब लग सब गोपी घरमें बैठीं हरिका यश गावें एक दिन श्रीकृष्णने बनमें बेणु बजाई तो बंशीका धुन सुन सारी ब्रज युवती हड़बड़ाय उठ धाईं औ एक ठौर मिलकर बाटमें आ बैठीं तहां आपसमें कहने लगीं कि हमारे लोचन सुफल तब होंगे जब कृष्णके दरशन पावेंगे अभी तो कान्ह गायोंके साथ बनमें नाचते गाते फिरते हैं सांझ समय इधर आवेंगे तब हमें दरशन मिलेंगे यों सुन एक गोपी बोली ॥

सुनो सखी वह बेणु बजाई, बांश बंश देखो अधिकाई ॥

इसमें इतना क्या गुण है जो दिन भर श्रीकृष्णके मुह लगी रहती है और अधरामृत पी आनन्द बरष घनसी गाजती है क्या हमसेभी यह प्यारी जो तीस दिन लिये रहते हैं बिचारी ॥

मेरे आगे की यह गढ़ी, अब भइ सौत बदन पर चढ़ी ॥

जब श्रीकृष्ण इसे पिताम्बरसे पोंछ बजाते हैं तब सुर मुनि किन्नर औ गन्धर्ब्ब अपनी स्त्रियोंको साथ ले बिमानों पर बैठ बैठ हौंस कर सुनेको आते हैं औ सुनकर मोहित हो जहांके तहां चित्रसे रह जाते हैं ऐसा इसने क्या तप किया है जो सब इसके आधीन होते हैं ॥

इतनी बात सुन एक गोपीने उत्तर दिया कि पहले तो इसने बांशके बंशमें उपज हरिका स्मरण किया पीछे घाम शीत जल

ऊपर लिया निदान टूक टूक हो देह जलाय धुवां पिया॥
इससे तप करते हैं कैसा, सिद्ध हुई पाया फल ऐसा॥

यह सुन कोई ब्रजनारी बोली कि हमको वेणु क्यों न रची ब्रजनाथ निशि दिन हरिके रहतीं सांथ इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षितसे कहने लगे कि महाराज जबतक श्रीकृष्ण धेनु चराय बनसे न आवें तबतक नित्य गोपी हरिके गुण गावें इति॥ २३ अध्याय॥

श्रीशुकदेव मुनि बोले कि शरद ऋतुके जातेही हेमन्त ऋतु आई औ अति जाड़ापाला पड़ने लगा तिस काल ब्रजबाला आपसमें कहने लगीं कि सुनो सहेली अगहनके न्हानसे जन्म जन्मके पातक जाते हैं और मनकी आश पूजती है यों हमने प्राचीन लोगोंके मुखसे सुना है यह बात सुन सबके मनमें आई कि अगहन न्हाइये तो निस्संदेह श्रीकृष्ण बर पाइये॥

ऐसे विचार भोर होतेंही उठ बस्त्र आभूषण पहर सब ब्रजबाला मिल यमुना न्हान आईं स्नान कर सूरजको अर्घ्य दे जलसे बाहर आय माटीकी गौर बनाय चन्दन अक्षत फूल फल चढ़ाय धूप दीप नैवेद्य आगे धर पूजाकर हाथ जोड़ शिर नाय गौरको मनायके बोलीं हे देवी हम तुमसे वार बार यही बर मांगती हैं कि श्रीकृष्ण हमारे पति होंय इस विधिसे गोपी नित न्हानें दिन भर ब्रत कर सांझको दही भात खा भूमि पर सोवें इस लिये कि हमारे ब्रतका फल शीघ्र मिले॥

एक दिन सब ब्रजबाला मिल स्नानको औघट घाट गईं औ वहां जाय चीर उतार तीरपर धर नग्न हो नीरमें पैठलगीं हरिकेगुण गाय गाय जल क्रीड़ा करने तिसी समै श्रीकृष्णभी बंशीबटकी छांहमें बैठे धेनु चरावते थे देवी इनके गानेका शब्द सुन वेभी चुप चाप चले आये और लगे छिपकर देखने निदान देखते देखते जो कछु उनकी जीमें आई तो सब बस्त्र चुराय कदम पर जा चढ़े

औ गठड़ी बांध आगे धर लीं इतनेमें गोपी जो देखें तो तीर पै चीर नहीं तब घबराकर चारोंओर उठउठ लगीं देखने औ आपसमें कहने कि अभी तो यहां एक चिड़ियाभी नहीं आई बस न कौन हर ले गया माई इस बीच एक गोपीने देखा कि शिर पर मुकुट हाथमें लकुट केशर तिलक दिये बनमाल हिये पीताम्बर पहरे कपड़ोंकी गठड़ी बांधे मौन साधे श्रीकृष्ण कदम्ब पै चढ़े छिपे हुए बैठे हैं वह देखतेही पुकारी सखी वे देखो हमारे चित चोर चीर चोर कदम्बपर पोटलि लिये बिराजते हैं यह बचन सुन औ सब युवती कृष्णको देख लजाय पानीमें पैठ हाथ जोड़ शिर नाय बिनती कर हाहा खाय बोलीं ॥

दीन दयाल हरण दुख प्यारे, दिजे मोहन चीर हमारे ॥
ऐसे सुनके कहें कन्हाई, यों नहिं दूङ्गा नन्द दुहाई ॥
एक एक कर बाहर आओ, तो तुम अपने कपड़े पाओ ॥

ब्रजबाला रिस यके बोलीं यह तुम भली सीख सीखे हो जो हमसे कहते हो नङ्गी बाहर आओ अभी अपने पिता बंधुसें जाय कहें तो वे तुम्हें चोर चोर कर आय गहें औ नन्द यशोदाको जा सुनावें तो वेभी तुमको सीख भली भांतिसे सिखावें हम करती हैं किसीकी कान तुमने मेटी सब पहचान ॥

इतनी बातके सुनतेही क्रोध कर श्रीकृष्णजीने कहा कि अब चीर तभी पाओगी जब विनको लिवा लावोगी नहीं तो नहीं यह सुन डर कर गोपी बोलीं दीनदयाल हमारी सुधके लिवैया पतिके रखैया तो आपही हैं हम किसे लावेंगी तुम्हारे रहो हेतु नेम कर मंगशिर मास न्हाती हैं श्रीकृष्ण बोले जो तुम मन लगाय मेरे लिये अगहन न्हाती हो तो लाज औ कपट तज आय अपने चीर लो जद श्रीकृष्णचन्द्रने ऐसे कहा तद सब गोपीं आपसमें सोच बिचार कर कहने लगीं कि चलो सखी जो मोहन कहते हैं सोई मानें क्योंकि ये हमारे तन मनकी सब जानते हैं इनसे लाज

कहा यों आपसमें ठान श्रीकृष्णकी बात मान हाथसे कुछ देह दु-
राय सब युवती नीरसे निकल शिर नवाय जब सन्मुख तीर पर
जा खड़ी हुई तब श्रीकृष्ण हंसके बोले कि अब तुम हाथ जोड़
जोड़ आगे आओ तो मैं बस्त्र दूं गोपी बोलीं ॥

काहे कपट करत नन्दलाल, हम सुधी भोरी ब्रजबाल ॥
परी ठगोरी सुधि बुधि गई, ऐसी तुक हरि लीला ठई ॥
मन सम्भारि कै करि है लाज, अब तुम कछू करो ब्रजराज ॥

इतनी बात कह जद गोपियाने हाथ जोड़े तो श्रीकृष्णचन्द्रजीने
बस्त्र दे उनके पास आय कहा कि तुम अपने मनमें कुछ इस बातका
बिलग मत मानो यह मैंने तुम्हें सीख दी है क्योंकि जलमें बरुण
देवताका बास है इस्से जो कोई नग्न हो जलमें न्हाता है तिसका
सब धर्म बह जाता है तुम्हारे मनकी लगन देख मगन हो मैंने
यह भेद तुमसे कहा अब अपने घर जाओ फिर कार्तिक महीने
में आय मेरे साथ रास कीजियो ॥

श्रीशुकदेव मुनि बोले कि महाराज इतना बचन सुन प्रसन्न हो
संतोष कर गोपी तो अपने घरोंको गईं औ श्रीकृष्ण बंशीबटमें
आय गोप गाय ग्वाल बाल सखाओंको सङ्ग ले आगे चले तिस समै
चारोंओर सघन बन देख देख वृक्षोंकी बड़ाई कहने लगे कि देखो
ये संसारमें आ अपने पर कितना दुख सह लोगोंको सुख देते हैं
जगतमें ऐसेही परकार्जियोंका आना सुफल है यों कह आगे बढ़
यमुनाके निकट जा पहुंचे इति ॥

२४ अध्याय ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि जब श्रीकृष्ण यमुनाके पास पहुंच लकुट
ले लाठी टेक खड़े हुए तब सब ग्वाल बाल औ सखाओंने आय
करजोड़ कहा कि महाराज हमें इस समै बड़ी भूख लगी है जो
कुछ छाक लाये थे सो खाई पर भूख न गई कृष्ण बोले देखो वह
अगाधुआं दिखाई देता है मथुरिये कंसके डरसे छिपके यज्ञ करते

हैं उनके पास जा हमारा नाम ले दण्डवत कर हाथ बांध खड़े हो दूरसे भोजन ऐसे दीन हो मांगियो जैसे भिखारी आधीन हो मांगता है॥

यह बात सुन ग्वाल चले चले वहां गये जहां माथुर बैठे यज्ञ कर रहे ते जातेही उन्होंने प्रणाम कर निपट आधीनतासे कर जोड़के कहा महाराज आपको दण्डवत कर हमारे हाथ श्रीकृष्णचन्द्रजीने यह कहला भेजा है कि हमको अति भूख लगी है कुछ कृपा कर भोजन भेज दीजे इतनी बात ग्वालोंके मुखसे सुन मथुरिये क्रोधकर बोले तुम तो बड़े मूर्ख हो जो हमसे अभी यह बात कहते हो बिन होम होचुके किसीको कुछ न देंगे सुनो जब यज्ञ कर लेंगे औ कुछ बचेगा सो बांट देंगे फिर ग्वालोंने उनसे गिड़गिड़ाके बहुतेरा कहा कि महाराज घर आये भूखेको भोजन करवानेसे बड़ा पुण्य होता है पर वे इनके कहनेको कुछ ध्यान में न लाये बरन इनकी ओरसे मुंह फेर आपसमें कहने लगे॥

बड़े मूढ़ पशुपालक नीच, मांगत भात होमके बीच॥

तब ये वहांसे निराश हो अछताय पछताय श्रीकृष्णके पास आय बोले महाराज भीख मांग मान महत गंवाया तौभी खानेको कुछ हाथ न आया अब क्या करें श्रीकृष्णजीने कहा कि अब तुम तिनकी स्त्रियोंसे जा मांगो वे बड़ी दयावन्त धरमात्मा हैं उनकी भक्ति देखियो वे तुम्हें देखतेही आदरमानसे भोजन देंगी यों सुन ये फिर वहां गये जहां वे बैठीं रसोई करती थीं जातेहीं उनसे कहा कि बनमें श्रीकृष्णको धेनु चराते क्षुधा भई है सो हमें तुम्हारे पास पठाया है कुछ खानेको होय तो दो इतना बचन ग्वालोंके मुखसे सुनतेही वे सब प्रसन्न हो कञ्चनके थालोंमें षटरस भोजन भर ले ले उठ धाईं औ किसीकी रोकी न रुकीं॥

एक मथुरनीके पतिने को न जाने दिया तो वह ध्यानकर देह छोड़ सबसे पहिले ऐसे जा मिली कि जैसे जल जलमें जा मिले

औ पीछेसे सब चली चली वहां आईं जहां श्रीकृष्णचन्द्र ग्वालबाल समेत वृक्षकी छांहमें सखाके कांधेपर हाथ दिये त्रिभङ्गी छबि किये कमलका फूल करलिये खड़े थे आतेही थाल आगे धर दण्डवत कर हरि मुख देख देख आपसमें कहने लगीं कि सखी येई हैं नन्दकिशोर जिनका नाम सुन सुन ध्यान धरती थीं अब चन्द्रमुख देख लोचन सुफल कीजिये औ जीवनका फल लीजिये ऐसे बतराय हाथ जोड़ बिनती कर श्रीकृष्णसे कहने लगीं कि कृपा नाथ आपकी कृपा बिन तुम्हारा दरशन कब किसीको होता है आज धन्य भाग हमारे जो दरशन पाया औ जन्मका पाप गंवाया॥

मूरख बिप्र कृपण अभिमानी, श्रीमद लोभ मोह मति सानी॥
ईश्वरको मानुष कर माने, माया अंध कहा पहिचाने॥
जप तप यज्ञ यासुहित कीजे, ताकों कहा न भोजन दीजे॥

महाराज वही धन्य है धन जन लाज जो आवे तुम्हारे काज औ सोई है तप जप ज्ञान जिसमें आवे तुम्हारा नाम इतनी बात सुन श्रीकृष्णचन्द्र उनकी क्षेम कुशल पूछ कहने लगे कि॥

मत तुम मुझको करो प्रणाम, मैं हूं नन्द महरका श्याम॥

जो ब्राह्मणकी स्त्रीसे आपको पजवाते हैं सो क्या संसारमें कुछ बड़ाई पाते हैं तुमनें हमें भूखे जान दया कर बनमें आन सुध ली अब हम यहां तुम्हारी क्या पहुनाई करें॥

वृन्दावन घर दूर हमारा, किस बिधि आदर करें तुमारा॥

जो वहां होते तो कुछ फूल फल ला आगे धरते तुम हमारे कारण दुख पाय जङ्गलमें आईं औ यहां हमसे तुम्हारी टहल कुछ न बन आई इस बातका पछतावाही रहा ऐसे शिष्टाचार कर फिर बोले तुम्हें आये बड़ी बेर भई अब घरको सिधारिये क्योंकि ब्राह्मण तुम्हारे तुम्हारी बाट देखते होंगे इस लिये कि स्त्री बिन यज्ञ सुफल नहीं यह श्रीकृष्णसे सुन वे हाथ जोड़ बोलीं महाराज हमनें आपके चरण कमलसे स्नेह कर कुटुम्बकी माया सब छों

हुी क्योंकि जिनका कहा न मान हम उठ धाईं तिनके यहां अब कैसे जांय जो वे घरमें न आने दें तो फिर कहां बसें इस्से आपकी शरणमें रहें सो भला और नाथ एक नारी हमारे साथ तुम्हारे दरशनकी अभिलाषा किये आवती थी विसके पतिने रोक रक्खा तब उस स्त्रीने अकुलाकर अपना जीव दिया इस बातके सुनतेही हंसकर श्रीकृष्णचन्दने विसे दिखाया जो देह छोड़ आई थी कहा कि सुनो जो हरिसे हित करता है तिसका विनाश कभी नहीं होता यह तुमसे पहले आ मिलि है॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज विसको देखतेही तो एकवार सब अचंभे रहीं पीछे ज्ञान हुआ तद हरिगुण गाने लगीं इस बीच श्रीकृष्णचन्दने भोजन कर उनसे कहा कि अबस्थानको प्रस्थान कीजे तुम्हारे पति कुछ न कहेंगे जब श्रीकृष्णचन्दने विन्हें ऐसे समझाय बुझायके कहा तब वे विदा हो दण्डवत कर अपने घर गईं औ विनके स्वामी शोच बिचारके पछताय पछताय कह रहे थे कि हमने कथा पुराणमें सुना है जो किसी समै नन्द यशोदाने पुत्रके निमित्त बड़ी तप किया था तहां भगवानने आ उन्हें यह बर दिया कि हम यदुकुलमें औतार ले तुम्हारे यहां जांयगे वेई जन्म ले आये हैं जिन्होंने ग्वाल बालोंके हाथ भोजन मंगवाय भेजा था हमने यह क्या किया जो आदि पुरुषने मांगा औ भोजन न दिया॥

यज्ञ धर्म या कारण ठये, तिनके सनमुख आज न भये।
आदि पुरुष हम मानुष जान्यो, नहीं बचन ग्वालनको मान्यो॥
हम मूरख पापी अभिमानी, कीनी दया न हरि गति जानी।

धिक्कार है हमारी मतिको औ इस यज्ञ करनेको जो भगवानको पहचान सेवा न करी हमसे नारीही भलीं कि जिन्होंने जप तप यज्ञ बिन किये साहस कर जा श्रीकृष्णके दरशन लिये औ अपने हाथों विन्हें भोजन दिया ऐसे पछताय मथुरियोंने अपनी स्त्रि

योंके सनमुख हाथ जोड़ कहा कि धन्य भाग तुम्हारे जो हरिका दरशन कर आईं तुम्हाराही जीवन सुफल है इति॥

२५ अध्याय॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जैसे श्रीकृष्णचन्द्रने गिरगोबर्धन उठाया औ इन्द्रका गर्ब हरा अब सोई कथा कहता हूं तुम चित दे सुनो कि सब ब्रजबासी बरषवें दिन कातिक बदी चौदश को न्हाय धोय केशर चन्दनसे चौक पुराय भांति भांतिकी मिठाई औ पकवान धर धूप दीप कर इन्द्रकी पूजा किया करें यह रीति उनके यहां परम्परासे चली आती थी एक दिन वही दिवस आया तब नन्दजीने बहुतसी खानेकी सामा बनवाई औ सब ब्रजबासियोंकेभी घर घर सामग्री भोजनकी हो रही थी तहां श्रीकृष्णने आ मासे पूछा कि माजो आज घर घरमें पकवान मिठाई जो हो रही है सो क्या है इसका भेद मुझे समझाकर कहो जो मेरे मनकी दुवधा जाय यशोदाबोली कि बेटा इस समै मुझे बात कहबेका अवकाश नहीं धोय केशर चन्दनसे चौक पुराय भांति भांतिको मिठाई औ पकवान धर धूप दीप कर इन्द्रकी पूजा किया करें यह रीति उनके परम्परासे चली आती थी एक दिन वही दिवस आया तब नन्दजीने बहुतसी खानेकी सामा बनवाई औ सब ब्रजबासियोंकेभी घर घर सामग्री भोजनकी हो रही थी तहां श्रीकृष्णने आ मासे पूछा कि माजो आज घर घरमें पकवान मिठाई जो हो रही है सो क्या है इसका भेद मुझे समझाकर कहो जो मेरे मनकी दुवधा जाय यशोदाबोली कि बेटा इस समै मुझे बात कहनेका अवकाश नहीं तुम अपने पितासे जा पूछो वे बुझाय कर कहेंगे यह सुन नन्द उपनन्दके पास आय श्रीकृष्णने कहा कि पिता आज किस देवताके पूजनेकी ऐसी धूम धाम है कि कि जिनके लिये पकवान मिठाई हो रही है वे कैसे भक्ति मुक्ति बरके दाता हैं विनका नाम औ गुन, कहो जो मेरे मनका संदेह जाय।

नन्दमहर बोले कि पुत्र यह भेद तुने अबतक नहीं समझा कि मेघोंके पति जो हैं सुरपति तिनकी पूजा है जिनकी कृपासे संसारमें ऋद्धि सिद्धि मिलती है औ तृण जल अन्न होता है बन उपबन फूलते फलते हैं तिनसे सब जीव जंतु पशु पक्षी आनन्दमें रहते हैं यह इन्द्र पूजाकी रीति हमारे यहां पुरुखावोंके आगेसे चल आती है कुछ आजहीं नई नहीं निकाली नन्दजीसे इतनी बात सुन श्रीकृष्णचन्द्र बोले हे पिता जो हमारे बड़ोंने जाने अनजाने इन्द्रकी पूजा की तो की पर तुम जान बुझकर धर्मका पन्थ छोड़ कुबट बाट क्यों चलते हो इन्द्रके मानेसे कुछ नहीं होता क्योंकि वह भक्ति मुक्तिका दाता नहीं औ विससे ऋद्धि सिद्धि किसने पाई है यह तमहीं कहो विसने किसे बर दिया है॥

हां एक बात यह है कि तप यज्ञ करनेसे देवतावोंने अपना राजा बनाय इन्द्रासन दे रखा है इससे कुछ परमेश्वर नहीं हो सकता सुनो जब असुरोंसे बार बार हारता है तब भागके कहीं जा छिपकर अपने दिन काटता है ऐसे कायरको क्यों मानो अपना धर्म किस लिये नहीं पहचानो इन्द्रका किया कुछ नहीं हो सकता जो कर्ममें लिखा है सोई होता है सुख सम्पत दाता भाई बंधु येभी सब अपने धर्म कर्मसे मिलते हैं औ आठ मास जो सूरज जल सोखता है सोई चार महीने बरषाता है तिसीसे पृथ्वीमें तृण जल अन्न होता है औ ब्रह्माने जो चारों बरण बनाये हैं ब्राह्मण क्षत्री बैश्य शूद्र तिनके पीछेभी एक एक कर्म लगा दिया है कि ब्राह्मण तो वेद बिद्या पढ़ें क्षत्री सबकी रक्षा करे बैश्य खेती बनज औ शूद्र इन तीनोंकी सेवामें रहै॥

पिता हम बैश्य हैं गायें बढ़ीं इससे गोकुल हुआ तिसीसे नाम गोप पड़ गया हमारा यही कर्म है कि खेती बनज करें औ गौ ब्राह्मणकी सेवामें रहैं वेदकी आज्ञा है कि अपनी कुल रीति न

छोड़िये जो लोग अपना धर्म तज औरका धर्म पालते हैं सो ऐसे हैं जैसे कुलबधू हो पर पुरुषसे प्रीति करे इससे अब इन्द्रकी पूजा छोड़ दीजे औ बन पर्वतकी पूजा कीजे क्योंकि हम बनबासी हैं हमारे राजा वेई हैं जिनके राजमें हम सुखसे रहते हैं तिन्हें छोड़ औरको पूजना हमें उचित नहीं इससे अब सब पकवान मिठाई अन्न ले चलो औ गोबर्द्धनकी पूजा करो॥

इतनी बातके सुनतेही नन्द उपनन्द उठकर वहां गये जहां बड़े बड़े गोप अथाई पर बैठे थे इन्होंने जातेही सब श्रीकृष्णकी कहीबातें तिन्हे सुनाईं वे सुनतेहि बोले कि कृष्ण सच कहता है तुम बालक जान उसकि बात मत टालो भला तुमही विचारो कि इन्द्र कौन है और हम किसलिये तिसे मानते हैं जो पालता है उसकी तो पूजाही भुलाई॥

हमें कहा सुरपतिसों काज, पूजैं बन सरिता गिरिराज।

ऐसे कह फिर सब गोपोंने कहा॥

भलो मतो आदर कियो, तजिये सिगरे देव।
गोबर्द्धन पर्वत बड़ो, ताकी कीजे सेव॥

यह बचन सुनतेही नन्दजिने प्रसन्न हो गांवमें ढंढोरा फिरवाय दिया कि कल हम सारे ब्रजबासी चलकर गोबर्द्धनकी पूजा करेंगे जिस जिसके घरमें इन्द्रकी पूजाके लिये पकवान मिठाई बनी है सो सब ले ले भोरही गोबर्द्धन पै जाइयो इतनि बात सुन सकल ब्रजबासी दूसरे दिन भोरके तड़केही उठ स्नान ध्यानकर सब सामग्री झालों पराते थालों हंड़ों चरुओंमें भर गाड़ों बहंगियों पर रखवाय रखवाय गोबर्द्धनको चले तिस समै नन्द उपनन्दभी कुटुंब समेत सामा ले सबके साथ हो लिये और बाजे गाजेसे चले चलें सब मिल गोबर्द्धन पहुंचे॥

वहां जाय पर्वतके चारोंओर झाड़ बुहार जल छिड़क घेवर बाबर जलेबी लड्डु खुरमे इमरती फेनी पेड़े बरफी खाजे गुंझे

मठड़ी सीरा पुरी कचौरी सेव पांपड़ पकौड़ी आदि पकवान और भांति भांतिके भोजन विंजन संधाने चुन चुन रख दिया इतने कि जिनसे पर्वत छिप गया औ ऊपर फूलोंकी माला पहराय बरन बरनके पाटम्बर तान दिये ॥

तिस समै की शोभा बरनी नहीं जाती गिरि ऐसा सुहावना लगता था जैसे कीसीने गहने कपड़े पहराय नख सिखसे सिंगारा होय और नन्दजीने पुरोहित बुलाय सब ग्वाल बालोंको साथ ले रोली अक्षत पुष्प चढ़ाय धूप दीप नैवेद्य कर पान सुपारी दक्षिणा धर वेदकी बिधिसे पूजा की तब श्रीकृष्णने कहा कि अबतुमशुद्ध मनसे गिरिराजका ध्यान करो तो वे आय दरशन दे भोजन करें ॥

श्रीकृष्णसे यों सुनतेही नन्द यशोदा समेत सब गोपी गोप कर जोड़ नैन मुंद ध्यान लगाय खड़े हुए तिस काल नन्दलाल उधर तो अति मोटी भारी दुसरी देह धर बड़े हाथ पांव कर कमल नैन चन्द्रमुख हो मुकुट धरे बनमाल गरे पीत बसन और रतन जड़ित आभूषण पहरे मुंह पसारे चुपचाप परवतके बीचसे निकले और इधर आपही अपने दुसरे रूपको देख सबसे पुकारके कहा देखो गिरिराजने प्रगट होय दरशन दिया जिनकी पूजा तुमने जो लगाय करी है इतना बचन सुनाय श्रीकृष्णचन्द्रजीने गिरिराजको दण्डवत की उनकी देखा देखी सब गोपी गोप प्रणामकर आपसमें कहने लगे कि इस भांति इन्द्रने कब दरशन दिया था हम बृथा उसकी पूजा किया किये और क्या जानिये पुरुषाओंने एसे प्रत्यक्ष देवको छोड़ क्यों इन्द्रको लाना था यह बात समझी नहीं जती ॥

यों सब बतराय रहे थे कि श्रीकृष्ण बोले अब देखते क्या हो जो भोजन लाये हो सो खिलाओ इतना बचन सुनतेही गोपी गोप षटरस भोजन थाल परातोंमें भर भर उठाय उठाय लगे देने

औ गोबर्द्धन माथ हाथ बढ़ाय बढ़ाय ले ले भोजन करने निदान जितनी सामग्री नन्द समेत सब ब्रजबासी ले गयेथे सो खाई तब वह मूरत पर्वतमें समाई इस भांति अद्भुत लीला कर श्रीकृष्णच न्द सबको साथले पर्वत की परिक्रमा दे दूसरे दिन गोबर्द्धनसे चल हंसते खेलते बृन्दाबन आये तिसकाल घर घर आनन्द मङ्गल ब धाये होने लगे औ ग्वालबाल सब गाय बछड़ोंको रङ्ग रङ्ग उनके गलेमें गण्डे घंटा खियां घुंघरू बांध बांध न्यारेही कुतूहल कर रहे थे इति ।

२६ अध्याय ।

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवमुनि बोले ॥

सुरपतिकी पूजा तजी, करि पर्वतकी सेव,
तबहि इन्द्र मन कोपिकै सबै बुलाए देव ।

जब से[illegible] देवता इन्द्रके पास गये तब वह उनसे पूछने लगा कि तुम मुझे समझाकर कहो कल ब्रजमें पूजा किसकी थी इस बीच नारदजी आय पहुंचे तो इन्द्रसे कहने लगे कि सुनो महाराज तुम्हें सब कोई मानता है पर एक ब्रजबासी नहीं मानते क्योंकि नन्दके एक बेटा हुआ है तिसीका कहा सब करते हैं विन्होंने तु म्हारी पूजा मेट कल सबसे पर्वत पुजवाया इतनी बातके सुन तेही इन्द्र क्रोधकर बोला कि ब्रजबासियोंके धन बढ़ा है इसीसे विन्हें अति गर्व हुआ है ॥

जप तप यज्ञ तज्यो ब्रत मेरो, काल दरिद्र बुलायौ नेरो ॥
मानुष कृष्ण देवको मानै, ताकी बातें सांची जानै ॥
वह बालक मूरख अज्ञान, बहु बादी राखै अभिमान ॥
अब हों उनको गर्ब परिहरों, पशुधोऊं लक्ष्मी बिन करों ॥

ऐसे बकझक खिजलाकर सुरपतिने मेघपतिको बुलाय भेजा वह सुनतेही डरता कांपता हाथ जोड़ सन्मुख आ खड़ा हुआ विसे देखतेही इन्द्र तेह कर बोला कि तुम अभी अपना सब दल साथले जाओ औ गोबर्द्धन पर्वत समेत ब्रजमण्डलको बरष बहा

औ ऐसा कि कहीं गिरिका चिह्न औ ब्रजबासियोंका नाम न रहे॥

इतनी आज्ञा पाय मेघपति दण्डवत कर राजा इन्द्रसे बिदा हुआ और उसने अपने स्थान पर आय बड़े बड़े मेघोंको बुलायके कहा सुनो महाराजकी आज्ञा है कि तुम अभी जाय ब्रजमण्डलको बरषके बहा दो यह बचन सुन सब मेघ अपने अपने दल बादल ले ले मेघपतिके साथ हो लिये तिसने आतेही ब्रजमण्डलको घेर लिया औ गरज गरज बड़ी बड़ी बूंदोंसे लगा मूसलधार जल बरषावने औ अंगुलीसे गिरिको बतावने॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज जब ऐसे चहुंओरसे घन घेर घटा अखण्ड जल बरषाने लगीं तब नन्द यशोदा समेत सब गोपी ग्वाल बाल भय खाय भीगते थर थर कांपते श्रीकृष्णके पास जाय पुकारे कि कृष्ण इस महाप्रलयके जलसे कैसे बचेंगे तब तो तुमने इन्द्रकी पूजा मेट पर्वत पुजवाया अब बेग उसको बुलाइये जो आय रक्षा करें नहीं तो क्षणभरमें नगर समेत सब डूब मरते हैं इतनी बात सुन और सबको भयातुर देख श्रीकृष्णचन्द बोले कि तुम अपने जीमें किसी बातकी चिंता मत करो गिरिराज अभी आय तुम्हारी रक्षा करते हैं यों कह गोवर्द्धनको तेजसे तपाय अग्नि सम किया औ बायें हाथकी छंगुली पर उठाय लिया तिस काल सब ब्रजबासी अपने ढोरों समेत आ उसके नीचे खड़े हुए औ श्रीकृष्णचन्दको देख देख अचरज कर आपसमें कहने लगे॥

है कोउ आदि पुरुष औतारी, देवन हूं कौ देव मुरारी॥
मोहन मानुष कैसो भाई, अंगुरी पर क्यों गिरि ठहराई॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेव मुनि राजा परीक्षितसे कहने लगे कि उधर तो मेघपति अपना दल लिये क्रोध कर कर मूसलाधार जल बरषाता था औ इधर पर्वत पै गिर छनाक तवेकी बूंद हो

आता था यह समाचार सुन इन्द्रभी कोप कर आप चढ़ आया और लगा तार उसी भांति सात दिन बरषा पर ब्रजमें हरि प्रतापसे एक बूंदभी न पड़ी जब सब जल निबड़ा तब मेघोंने आ हाथ जोड़ कहा कि हे नाथ जितना महाप्रलयका जल था सबका सब हो चुका अब क्या करें यों सुन इन्द्रने अपने ज्ञान ध्यानसे बिचारा कि आदि पुरुषने औतार लिया नहीं तो किसमें इतनी सामर्थ थी जो गिरि धारण कर ब्रजकी रक्षा करता ऐसे सोच समझ अछता पछता मेघों समेत इन्द्र अपने स्थानको गया और बादल उघड़ प्रकाश हुआ तब सब ब्रजवासियोंने प्रसन्न हो श्रीकृष्णसे कहा महाराज अब गिरि उतार धरिये मेघ जाता रहा यह बचन सुनतेही श्रीकृष्णचन्दने पर्वत जहांका तहां रख दिया इति॥

२७ अध्याय॥

श्रीशुकदेव बोले कि जद हरिने गिरि करसे उतार धरा तिस समै सब बड़े बड़े गोप तो इस अदभुत चरित्रको देख यों कह रहे थे कि जिसकी शक्तिने इस महाप्रलयसे आज ब्रजमण्डल बचाया तिसे हम नन्द सुत कैसे कहेंगे हां किसी समय नन्द यशोदाने महातप किया था इसीसे भगवानने आ इनके घर जन्म लिया है औ ग्वालबाल आय आय श्रीकृष्णके गले मिल मिल पूछने लगे कि भैया तूने इस कोमल कमलसे हाथ पर कैसे ऐसे भारी पर्वतका बोझ सम्भाला औ नन्द यशोदा करुणा कर पुत्रको हृदय लगाय हाथ दाब अंगुली चटकाय कहने लगे कि सात दिन गिरि कर पर रक्खा हाथ दुखता होयगा और गोपीं यशोदाके पास आय पिछली सब कृष्णकी लीला गाय कहने लगीं॥

यह जो बालक पूत तिहारौ, चिरजीवौ ब्रजकौ रखवारौ॥
जानव दैयत असुर संघरे, कहां कहां ब्रजजन न उबारे॥
जैसी कही गर्ग ऋषि राई, सोइ बान होति है आई॥ इति।

२८ अध्याय।

श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज भोर होतेही सब गायें औ

ग्वाल बालोंको सङ्गकर अपनी अपनी छाक ले कृष्ण बलराम बेणु बजाते औ मधुर मधुर सुरसे गाते जो धेनु चरावने वनको चले तो राज इन्द्र सकल देवताओंको साथ लिये कामधेनु आगे किये ऐरावत हाथीपर चढ़ा सुरलोकसे चला चला वृन्दाबनमें आय बनकी बाट रोक खड़ा हुआ जब श्रीकृष्णचन्द उसे दूरसे दिखाई दिये तब गजसे उतर नंगेपाओं गलेमें कपड़ा डाले थर थर कांपता आ श्रीकृष्णके चरणों पर गिरा और पछताय पछताय रो रो कहने लगा कि हे ब्रजनाथ मुजपर दया करो॥

मैं अभिमान गर्ब अति किया, राजस तामसमें मन दिया॥
धनमद कर सम्पति सुख माना, भेद न कछु तुम्हारा जाना।
तुम परमेश्वर सबके ईश, और दुसरो को जगदीश॥
ब्रह्मा रुद्र आदि बर दाई, तुम्हरी दई सम्पदा पाई।
जगत पिता तुम निगम निवासी, सेबत नित कमल भई दासी॥
जनकें हेत लेत औतार, तब तब हरत भूमिको भार।
दुर करो सब चूक हमारी, अभिमानी मुरख हों भारी।

जब ऐसे दीन हो इन्द्रने स्तुति करी तब श्रीकृष्णचन्द दयाल हो बोले कि अब तो तु कामधेनुके साथ आया इससे तेरा अपराध क्षमा किया पर फिर गर्ब मत कीजो क्योंकि गर्ब करनेसे ज्ञान जाता है औ कमति बढ़ती है उसीसे अपमान होता है॥

इतनी बात श्रीकृष्णके मुखसे सुनतेही इन्द्रने उठकर बेदको बिधिसे पूजा की और गोविन्द नाम धर चरणामृत ले परिक्रमकरी तिस समय गन्धर्ब भांति भांतिके बाजे बजा बजा श्रीकृष्णका यश गाने लगे औ देवता अपने बिमानोंमें बैठे आकाशसे फूल बरषावने उस काल एसा समां हुआ कि मानो फेरकर श्रीकृष्णने जन्म लिया जब पूजासे निचिंत हो इन्द्र हाथ जोड़ सन्मुख खड़ा हुआ तब श्रीकृष्णने आज्ञा दी कि अब तुम कामधेनु समेत अपने पुर जाओ आज्ञा पातेही कामधेनु औ इन्द्र बिदा होय दण्डवत कर

इन्द्रलोकको गये और श्रीकृष्णचन्द्र गौ चराआसांझ हुए सब ग्वाल बालोंको लिये वृन्दावन आये उन्होंने अपने अपने घर जाय जाय कहा आज हमने हरि प्रतापसे इन्द्रका दरशन बनमें किया॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा राजा यह जो श्रीगोविन्द कथा मैंने तुम्हें सुनाई इसके सुने औ सुनानेसे संसारमें धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पदार्थ मिलते हैं इति।

२६ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एक दिन नंदजीने संयम कर एकादशी व्रतकिया दिन तो स्नान ध्यान भजन जप पूजामें काटा औ रात्रि जागरणमें बिताई जब छ घड़ी रैन रही औ द्वादशी भई तब उठके देहशुद्धकर भोर हुआ जान धोती अंगोछा झारी ले य मुना न्हाने चले तिनके पीछे कई एक ग्वालभी हो लिये तीर पर जाय प्रणाम कर कपड़े उतार नंदजी जो नीरमें पैठे तों बरुणके सेवक जो जलकी चौकी देते थे कि कोई रातको न्हाने न पावे तिन्होंने जा बरुणसे कहा कि महाराज कोई इस समै यमुनामें न्हाय रहा है हमें क्या आज्ञा होती है बरुण बोला तिसे अभी प कड़ लाओ आज्ञा पातेही सेवक फिर वहां आये जहां नंदजी स्नान कर जलमें खड़े जप करते थे आतेही अचानक नागफांस डाल नंदजीको बरुणके पास ले गये तब नंदजीके साथ जो ग्वाल गये थे तिन्होंने आय श्रीकृष्णसें कहा कि महाराज नंदरायजीकों बरुणके गण यमुना तीरसे पकड़ बरुण लोकको ले गये इतनी बा तके सुनतेही श्रीगोविन्द क्रोधकर उठ धाये औ पल भरमें बरुण के पास जा पहुंचे इन्हें देखतेही वह उठ खड़ा हुआ और हा थ जोड़ बिनती कर बोला॥

सुफल जन्म है आज हमारो, पायौ यदुपति दरश तुम्हारो॥
कीजे दोष दूर सब मेरे, नंद पिता इस कारण घेरे॥
तुमको सबके पिता बखाने, तुम्हरे पिता नहीं हम जाने।

रातको न्हाते देख अन जाने गया पकड़ लाये भला इसी मिस मैंने दरशन आपके पाये अब दया कीजे मेरा दोष चित्तमें न लीजे ऐसे अति दीनता कर बहुतसी भेट लाय नंद और श्रीकृष्ण के आगे धर जद बरुण हाथ जोड़ शिर नाय सन्मुख खड़ा हुआ तद श्रीकृष्ण भेट ले पिताको साथ कर वहांसे चल बृन्दाबन आये इनको देखतेही सब ब्रजबासी आय मिले तिस समै बड़े बड़े गोपोंने नंदरायसे पूछा कि तुम्हें बरुणके सेवक कहां ले गये थे नंदजी बोले सुनो जों वे यहांसे पकड़ मुझे बरुणके पास ले गये तोंही पीछेसे श्रीकृष्ण पहुंचे इन्हें देखतेही वह सिंहासनसे उतर पाओं पर गिर अति बिनती कर कहने लगा नाथ मेरा अपराध क्षमा कीजे मुजसे अनजाने यह दोष हुआ सो चित्तमें न लीजे इतनी बात नंदजीके मुखसे सुनतेही गोप आपसमें कहने लगे कि भाई हमने तो यह तभी जाना था जब श्रीकृष्णचन्द्रने गोबर्द्धन धारण कर ब्रजकी रक्षा करी कि नंद महरके घरमें आदिपुरुषने आय औतार लिया है॥

ऐसे आपसमें बतराय फिर सब गोपोंने हाथ जोड़ श्रीकृष्णसे कहा कि महाराज आपने हमें बहुत दिन भर माया पर अब सब भेद तुम्हारा पाया तुम्हीं जगतके करता दुख हरता हो त्रिलोकी नाथ दया कर अब हमें बैकुंठ दिखाइये इतना बचन सुन श्रीकृष्णजीने क्षणभरमें बैकुंठ रच तिन्हें ब्रजहीमें दिखाया देखतेही ब्रजबासियोंको ज्ञान हुआ तो कर जोड़ शिर झुकाय बोले हे नाथ तुम्हारी महिमा अपरंपार है हम कुछ कह नहीं सकते पर आपकी कृपासे आज हमने यह जाना कि तुम नारायण हो भूमिका भार उतारनेको संसारमें जन्म ले आये हो॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जब ब्रजबासियोंने इतनी बात कही तभी श्रीकृष्णचंदने सबको मोहित कर जो बैकुंठकी रचना

रची थी सो उठाय ली औ अपनी माया फैलाय दी तो सब गो पोंने सपना सा जाना और नंदजीनेभी मायाके वश हो श्रीकृष्ण को अपना पुत्रही कर माना इति॥

३० अध्याय॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले॥

जैसे हरि गोपिन सहित, कीनौ रास बिलास।
सो पंचध्याई कहौं, जैसो बुद्धि प्रकाश॥

जब श्रीकृष्णजीने चीर हरे थे तब गोपियोंको यह बचन दिया था कि हम कार्तिक महीनेमें तुम्हारे साथ रास करेंगे तभीसे गोपी रासकी आशा किये मनमें उदास रहैं औ नित्य उठ कार्तिक मासहीको मनाया करें दैवी उनके मनाते मनाते सुखदाई शरद ऋतु आई॥

लागो जबतें कार्तिक मास, घाम शीत बरषाको नाश।
निर्मल जल सरवर भर रहे, फूले कमल होय डहडहे॥
कुमुद चकोर कंत कामिनी, फूलहिं देखि चन्द्र यामिनी॥
चकई मिलन कमल कुम्हिलानं, जे निज मित्र भानुकों मानें॥

ऐसे कह श्रीशुकदेव मुनि फिर बोले कि पृथ्वीनाथ एक दिन श्रीकृष्णचंद कार्तिक पूनोकी रात्रिको घरसे निकल बाहर आय देखें तो निर्मल आकाशमें तारे छिटक रहे हैं चांदनी दशों दिशामें फैल रही है शीतल सुगन्ध सहित मन्द गति पौन बह रहा है औ एक ओर सघन बनकी छवि अधिकही शोभा दे रही है ऐसा समा देखतेही उनके मनमें आया कि हमने गोपियोंको यह बचन दिया है जो शरद ऋतुमें तम्हारे साथ रास करेंगे सो पूरा किया चाहिये यह बिचार कर बनमें जाय श्रीकृष्णने बांसुरी बजाई बंशीकी धुनि सुनि सब ब्रज युवती बिरहकी मारी कामातुर हो अति घबराई निदान कुटुम्बकी माया छोड़ कुल कान कपट गृहकाज तज हड़बड़ाय उलटा पलटा शृंगार कर उठ

आई एक गोपी जो अपने पतिके पाससे जो उठ चली तो उसके पतिने बाटमें जा रोका औ फेरकर घर ले आया जाने न दिया तब तो वह हरिका ध्यान कर देह छोड़ सबसे पहले जा मिली उसके चित्तकी प्रीति देख श्रीकृष्णचंद्रने तुरंत मुक्ति गति दी ॥

इतनी कथा सुन राजा परीक्षितने श्रीशुकदेवजीसे पूछा कि कृपानाथ गोपीने श्रीकृष्णजीको ईश्वर जानके तो नहीं माना केवल बिषयकी बासना कर भजा वह मुक्त कैसे हुई सो मुझे तुम समझाके कहो जो मेरे मनका संदेह जाय श्रीशुकदेवमुनि बोले धर्मावतार जो जन श्रीकृष्णचंद्रकी महिमा अनजाने भी गुन गाते हैं सोभी निस्संदेह भक्ति मुक्ति पाते हैं जैसे कोई बिन जाने अमृत पियेगा वहभी अमर हो जीयेगा औ जानके पियेगा उसेभी गुण होगा यह सब जानते हैं कि पदार्थका गुन औ फल बिन हुए रहता नहीं ऐसेही हरि भजनका प्रताप है कोई किसी भावसे भजो मुक्त होयगा कहा है ॥

जपमाला छापा तिलक सरै न एकौ काम।
मन काचै नाचै वृथा सांचे राचे राम ॥

औ सुनो जिन जिन्ने जैसे जैसे भावसे श्रीकृष्णको मानके मुक्ति पाई सो कहता हूं कि नन्द यशोदादिने तो पुत्र कर बूझा गोपियोंने जार कर समझा कंसने भय कर भजा ग्वाल बालोंने मित्र कर जपा पाण्डवोंने प्रीतम कर जाना शिशुपालने शत्रु कर माना यदुबंशियोंने अपना कर ठाना औ योगी यती मुनियोंने ईश्वर कर ध्याया पर अन्तमें मुक्ति पदारथ सब हीने पाया जो एक गोपी प्रभुका ध्यान कर तरी तो क्या अचरज हुआ ॥

यह सुन राजा परीक्षितने श्रीशुकदेवमुनिसे कहा कि कृपानाथ मेरे मनका संदेह गया अब कृपा कर आगे कथा कहिये श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जिसकाल सब गोपियां अपने अपने झुण्ड लिये श्रीकृष्णचन्द्र जगत उजागर रूप सागरसे धाय कर

जाय मिलीं कि जैसे चौमासेकी नदियां बलकर समुद्रको जाय मिलें उस समैके बनावकी शोभा बिहारीलालकी कुछबरनी नहीं जाती कि सब सिङ्गार करे नटवर भेष धरे ऐसे मन भावने सुन्दर सुहावने लगते थे कि ब्रजयुवती हरि छबि देखतेही छक रहीं तब मोहन तिनकी छेम कुशल पूछ रूखे हो बोले कहो रात समै भूत प्रेतकी बिरियां भयांवनी बाट काट उलटे पुलटे वस्त्र आभूषण पहने अति घबराईं कुटुम्बकी माया तज इस महाबनमें तुम कैसे आईं ऐसा साहस करना नारीको उचित नहीं स्त्रीको कहा है कि कायर कुमत कूढ़ कपटी कुरूप कोढ़ी काना अन्धा लूला लङ्गड़ा दरिद्री कैसाही पति हो पर इसे उसकी सेवा करनी जोग है इसीमें उसका कल्यान है औ जगतमें बड़ाई कुलवंती पतिव्रताका धर्म है कि पतिको छणभर न छोड़े और जो स्त्री अपने पुरुषको छोड़ पर पुरुषके पास जाती है सो जन्म जन्म नर्क बास पाती है ऐसे कह फिर बोले कि सुनो तुमने आय सघन बन निर्मल चांदनी औ यमुना तीरकी शोभा देखी अब घर जाय मन लगाय कंतकी सेवा करो इसीमें तुम्हारा सब भांति भला है इतना बचन श्रीकृष्णके मुखसे सुनतेही सब गोपी एकबार तो अचेत हो अपार सोच सागरमें पड़ी पीछे॥

नीचे चितै उसासें लई, पद नखतें भूखोदत भई॥
जो दृगसों छूटी जलधारा, मान हु टूटे मोती हारा॥

निदान दुखसे अति घबराय रो रो कहने लगीं कि अहो कृष्ण तुम बड़े ठग हो पहले तो बंशी बजाय अचानक हमारा ज्ञान ध्यान मन धन हर लिया अब निर्दई होय कपट कर कर्कश बचन कह प्राण लिया चाहत हो यों सुनाय पुनि बोलीं॥

लोग कुटुम्ब घर पति तजे, तजो लोगकी लाज।
हैं अनाथ कोऊ नहीं, राखि शरण ब्रजराज॥

और जो जन तुम्हारे चरनोंमें रहते हैं सो तन धन लाज बड़ा

ई नहीं चाहते बिनके तो तुम्ही हा जन्म जन्मके कंत है प्राण रूप भगवंत ॥

कहि है कहा जाय हम गेह, उरझे प्राण तुम्हारे नेह ॥

इतनी बातके सुनतेही श्रीकृष्णचंदने मुसकुराय सब गोपियोंको निकट बुलायके कहा जो तुम राची हो इस रंग तो खेलो रास हमारे संग यह बचन सुन दुख तज गोपी प्रसन्नतासे चारों ओर घिर आई औ हरि मुख निरख लोचन सुफल करने लगीं ॥

ठाढ़े बीच जु श्याम घन इहिं छबि कामिनि केलि ॥
मनहुं नीलगिरिके तरे उलही कंचन बेलि ।

आगे श्रीकृष्णजीने अपनी मायाको आज्ञा की कि हम रास करेंगे उसके लिये तू एक अच्छा स्थान रच औ यहां खड़ी रह जो जो जिस जिस बस्तुकी इच्छा करै सो सो ला दीजो महाराज बिसने सुनतेही यमुनाके तीर जाय एक कंचनका मंडलाकार बड़ा चौतरा बनाय मोती हीरे जड़ उसके चारों ओर सपल्लव केलेके खंभ लगाय तिनमें बंदनवार औ भांतिभांतिके फूलोंकी माला बांध आ श्रीकृष्णचंदसे कहा ये सुनतेही प्रसन्न हो सब ब्रजयुवतियोंको साथ ले यमुना तीरको चले वहां जाय देखें तो चन्द्रमंडलसे रासमंडल के चौंतरेकी चमक चौगुनी शोभा दे रही है उसके सुगन्ध चारों ओर रैली चांदनीसी फैल रही है समेत शीतल मीठो मीठो पौन चल रही है औ एक ओर सघन बनकी हरियाली उजाली रातमें अधिक छवि ले रही है ॥

इस समैको देखतेही सब गोपी मगन हो उसी स्थानके निकट मानसरोवर नाम एक सरोवर था तिसके तीर जाय मन मानते सुथरे बस्त्र आभूषण पहन नख सिखसे सिङ्गार कर अच्छे बाजे बीणा पखावज आदि सुर बांध बांध ले आई औ लगी प्रेम मद माती हो शोच संकोच तज श्रीकृष्णके साथ मिल बजाने गाने नाचने उस समै श्रीगोबिन्द गोपियोंकी मन्डलीके मध्य ऐसे सुहा

वने लगते थे जैसे तारा मंडलमें चंद्र ।

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले सुनो महाराज जब गोपियोंने ज्ञान विवेक छोड़ रासमें हरिको मनसे विषई पति कर माना औ अपने आधीन जाना तब श्रीकृष्णचन्द्रने मनमें विचारा कि ॥

अब मोहि इन अपने बश जान्यो, पति बिषई सम मनमें आन्यो ॥
भई अज्ञान लाज तजि देह, लपटहिं करत सनेह ॥
ज्ञान ध्यान मिलकै बिसरायो, छांड़ि जाऊं इनि गर्व बढ़ायो ॥

देख मुजबिन पीछे बनमें क्या करती हैं और कैसे रहती हैं ऐसे बिचार श्रीराधिकाको साथ ले श्रीकृष्णचन्द्र अंतरध्यान हुए इति ॥

३१ अध्याय ।

श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज एकाएकी श्रीकृष्णचन्द्रको न देखते ही गोपियोंकी आंख आगे अंधेरा हो गया औ अति दुख पाय ऐसे अकुलाईं जैसे मणि खोय सर्प घबराता है इसमें एक गोपी कहने लगी ॥

कहो सखी मोहन कहां, गये हमें छिटकाय ।
मेरे गरे भुजा धरे, रहे हृते उर लाय ॥

अभी तो हमारे संग हिले मिले रास बिलास कर रहे थे इतनेंहीमें कहां गये सममेंसे किसीसेभी जाते न देखा यह बचन सुन सब गोपी बिरहकी मारी निपट उदास हो हाय मार बोलीं ॥

कहां जांय कैसी करैं, कासों कहैं पुकारि ।
कैकित कछु न जानिये, क्यों कर मिलैं मुरारि ॥

ऐसे कह हरिमदमाती होय सब गोपी लगीं चारों ओर ढूंढ़ ढूंढ़ गुण गाय गाय रो रो यों पुकारने ॥

हमको क्यों छोड़ी ब्रजनाथ, सरबंस दिया तिहारे साथ ॥

जब वहां न पाया तब आगे जाय आपसमें बोलीं सखी यहां तो हम किसीको नहीं देखतीं कि जिसे पूछें कि हरि किधर गये यों सुन एक गोपीने कहा सुनो आली एक बात मेरे जीमें आई है कि

ये जितने इस बनमे पशु पक्षी औ वृक्ष हैं सो सब ऋषि मुनि हैं ये कृष्ण लीला देखनेको औतार ले आय हैं इन्हींसे पूछो ये यहां खड़े देखते हैं जिधर हरि गये होंगे तिधर बता देंगे इतना बचन सुनतेही सब गोपी बिरहसे व्याकुल हो क्या जड़ क्या चैतन्य लगीं एक एकसे पूछने॥

हे बड़ पीपल पाकड़ बीर, लहा पुण्य कर उच्च शरीर॥
पर उपकारी तुमही भये, वृक्ष रूप पृथ्वी पर लये॥
घाम शीत बरषा दुख सहौ, काज पराये ठाढ़े रहौ॥
बकला फूह मूल फल डार, तिनसों करत पराई सार॥
सबका मन धन हरे नन्दलाल, गये इधरको कहो दयाल॥
हे कदम्ब अम्ब कचनारि, तुम कहुं देखे जात मुरारि॥
हे अशोक चम्पा करबीर, जात लखे तुमने बलबीर॥
हे तुलसी अति हरिकोप्यारी, तनते कहूं न राखत न्यारी॥
फूली आज मिले हरि आय, हम हूंको किन देत बनाय॥
जाती जुही मालती माई, इतह्वै निकले कुंवर कन्हाई॥
मृगनि पुकारि कहैं ब्रजनारी, इत तुम जात लखे बनवारी॥

इतना कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इसी रीतसे सब गोपी पशु पक्षी द्रुम बेलोंसे पूछती पूछती श्रीकृष्णमय हो लगीं पूतना बध आदि सब श्रीकृष्णकी करी हुई बाल लीला करने औ ढूंढ़ने निदान ढूंढ़ते ढूंढ़ते कितनी एक दूर जाय देखें तो श्रीकृष्णचन्दके चरण चिन्ह कमल जव ध्वजा अंकुश समेत रेत पर जगमगाय रहे हैं देखतेही ब्रज युवती जिस रजको सुर नर मुनि खोजते हैं तिस रजको दण्डवत कर शिर चढ़ाय हरिके मिलनेकी आश धर वहांसे बढ़ीं तो देखा जो उन चरण चिन्होंके पास पास एक नारीकेभी पांव उपड़े हुए हैं उन्हें देख अचरज कर आगे जाय देखें तो एक ठौर कोमल पातोंके बिछौने पर सुंदर जड़ाऊ दरपन पड़ा है लगीं उससे पूछने जब बिरह भरा वहभी न बोला

तब तिन्होंने आपसमें पूछा कहो आली यह क्योंकर लिया तिसी समै जो पिय प्यारीके मनकी जानती थी उसने उत्तर दिया कि सखी जद प्रीतम प्यारीकी चोटी गुथने बैठे औ सुन्दर बदन बिलोकनेमें अंतर हुवा तिस बिरियां प्यारीने दरपन हाथमें ले पियको देखया तद श्रीमुखका प्रतिबिम्ब सनमुख आया यह बात सुन गोपियां कुछ न कोपियां बरन कहने लगीं कि उसने शिव पार्वतीको अच्छो रीतिसे पूजा है औ बड़ा तप किया है जो प्राणपतिके साथ एकांतमें निघड़क बिहार करती है महाराज सब गोपी तो इधर बिरह मदमातीं बकबक झकझक ढूंढ़ती फिर तीही यों कि उधर श्रीराधिकाजी हरिके साथ अधिक सुख मान प्रीतिमको अपने बश जान आपको सबसे बड़ा ठान मनमें अभिमान आन बोलीं प्यारे अब मुझसे चला नहीं जाता कांधे चढ़ाय ले चलिये इतनी बातके सुनतेही गर्वप्रहारी अंतरजामी श्रीकृष्णचंद्रने मुसकुराय बैठ कर कहा कि आइये हमारे कांधे चढ़ लीजिये जद वह हाथ बढ़ाय चढ़नेको हुई तद श्रीकृष्ण अंतरध्यान हुए जों हाथ बढ़ाये थे तों हाथ पसारे खड़ी रह गई ऐसे कि जैसे घनसे मान कर दामिनी बिछड़ रही हो कै चन्द्रसे चन्द्रिका रुस पीछे रह गई हो औ गोरे तनकी जोति छूटि छिति पर छाय यों छबि दे रही थी कि मानों सुन्दर कंचनकी भूमि पै खड़ी है नैनोंसे जलकी धार बह रही थी औ सुबासके बस जो सब पास भवर आय आय बैठते थे तिन्हेंभी उड़ाय न सकती थी औ हाय हाय कर बनमें बिरहकी मारी इस भांति रो रही थी अकेली कि जिसके रोनेकी धुन सुन सब रोते थे पशु पंछी औ द्रुम बेली औ यों कह रही थी ॥

हा हा नाथ परम हितकारी, कहां गये स्वच्छन्द बिहरी ॥
चरण शरण दासी मैं तेरी, कृपासिंधु लीजे सुध मेरी ॥

कि इतनेमें सब गोपीभी ढूंढ़ती ढूंढ़ती उसके पास जा पहुंचीं

औ विसके गये लग लग सबोंने मिल मिल ऐसा सुख माना कि जैसे कोई महाधन खोय मध्य आधा धन पाय सुख माने निदान सब गोपीभी विसे अति दुखित जान साथ ले महाबनमें पैठीं औ जहां लग चांदना देखा तहां लग गोपियोंने बनमें श्रीकृष्णचन्द्रको ढूंढ़ा जब सघन बनके अंधेरेमें बाट न पाई तब वे सब वहांसे फिर धीरज धर मिलनकी आश कर यमुनाके उसी तीर पर आइ बैठीं जहां श्रीकृष्णचन्द्रने अधिक सुख दिया था इति ॥

३२ अध्याय ।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज सब गोपी यमुना तीर पर बैठ प्रेम मदमाती हो हरिके चरित्र और गुण गाने लगीं कि प्रीतम जबसे तुम ब्रजमें आये तबसे नये नये सुख यहां आनकर छाये लक्ष्मीने कर तुम्हारे चरणकी आश किया है अचल आयके वास हम गोपी हैं दासी तुम्हारी बेग सुध लीजे दयाकर हमारी जदसे सुंदर सांवली सलोनी मूरति है हेरी तदसे हुई [illegible] को चेरी तुम्हारे नैन बानोंने हने हैं हिय हमारे सो प्यारे किस लिये लेखे नहीं हैं तुम्हारे जीव जाते हैं हमारे अब करुना कीजे तजकर कठोरता बेग दरशन दीजे जो तुम्हें मारनाहीं था तो हमको बिषधर आग औ जलसे किस लिये बचाया तभी मरने क्यों न दिया तुम केवल यशोदा सुत नहीं हो तुम्हें तो ब्रह्मा रुद्र इन्द्रादि सब देवता बिनती कर लाये हैं संसार की रक्षाके लिये ॥

हे प्राणनाथ हमें एक अचरज बड़ा है कि जो अपनोंहींको मारोगे तो करोगे किसकी रखवाली प्रीतम तुम अंतरजामी होय हमारे दुख हर मनकी आश क्यों नहीं पूरी करते क्या अबलाओं परही करता धारी है हे प्यारे जब तुम्हारी मन्द मुसकानयुत प्यार भरी चितवन औ भृकुटीकी मरोर नैनोंकी मटक ग्रीवाकी

खटक औ बातोंकी चटक हमारे जीमें आती है तब क्या क्या न दुख पाती हैं और जिस समै तुम गौ चरावने जाते थे बनमें तिस समै तुम्हारे कोमल चरणका ध्यान करनेसे बनके कंकर कांटे आ कसकते थे हमारे मनमें भोरके भये सांझको फिर आते थे तिस पर भी हमें चार पहर चार युगसे जनाते थे जब सन्मुख बैठ सुंदर बदन निहारती थी तब अपने जीमें बिचारती थी कि ब्रह्मा कोई बड़ा मूरख है जो पलक बनाई है हमारे इकटक देखनेमें बाधा डालनेको॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इसी रीतसे सब गोपी बिरहकी मारी श्रीकृष्णचन्द्रके गुण औ चरित्र अनेक अनेक प्रकारसे गाय गाय हारीं तिस परभी न आये बिहारी तब तो निपट निराश हो मिलनेकी आशकर जीनेके भरोसा छोड़ अति अधीरतासे अचेत हो गिरकर ऐसे रोय पुकारीं कि सुनकर चर अचरभी दुखित भये भारी इति॥

३३ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जब श्रीकृष्णचन्द्र अंतरजामीने जाना जो अब ये गोपियां मुज बिनजीती न बचेगीं॥

तब तिनहीमें प्रगट, भये नंद नंदन यों।
दृष्ट बंधकर छिये, फेर प्रगटे नटवर ज्यों॥
आये हरि देखे जबै उठी सबै पा चेत।
प्राण परे ज्यों मृतकमें इन्द्री जगें अचेत॥
बिन देखे सबको मनयों ब्याकुल भयौ।
मानौ मदन भुजंग सबनि डसिकै गयौ॥
पार खरी पिय जान पहुंचे आइकै।
अमृत बेलनी सींच लई सब जराइकै॥
मनहु कमल निशि मलिन हैं।
ऐसेही ब्रज बाल, कुण्डल रबि छबि देखिकै॥

फूले नैन बिशाल।

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले की महाराज श्रीकृष्णचंद्र आनंद कंदको देखतेही सब गोपीयां एकाएकी बिरह सागरसे निकल उनके पास जाय ऐसे प्रसन्न हुईं कि जैसे कोई अथाह समुद्रमें डूब थाह पाय प्रसन्न होय और चारोंओरसे घेरकर खड़ी भईं तब श्रीकृष्ण उन्हें साथ लिये वहां आये जहां पहले रास बिलास किया था जातेही एक गोपीने अपनी ओढ़नी उतारके श्रीकृष्णके बैठनेको बिछा दी जोंवे उसपर बैठे तों कई एक गोपी क्रोध कर बोलीं कि महाराज तुम बड़े कपटी बिरभना मन धन लेते जानते हो पर किसीका कुछ गुण नहीं मानते इतना कह आपसमें कहने लगीं॥

गुण छांडै औ गुण गहै, रहै कपट मन भाय।
देखो सखी बिचारिकै, तासों कहा बसाय।

यह सुन एक विनमेंसे बोली कि सखी तुम अलगी रहो अपने कहे कुछ शोभा नहीं पाती देखो मैं कृष्णहीसे कहाती हूं यो कह बिसने मुसकरायके श्रीकृष्णसे पूछा कि महाराज एक बिन गुण मानले दूसरा किये गुणका पलटा दे तीसरा गुणके पलटे औगुण करें चौथा किसीके किये गुणकोभी मनमें न धरे इन चारोंमें कौन भला औ कौन बुरा यह तुम हमें समझाके कहो श्रीकृष्णचंद्र बोले कि तुम सब मन दे सुनो भला औ बुरा मैं बुझाकर कहता हूं उत्तम तो वह है जो बिन किये करे जैसे पिता पुत्रको चाहता है और किये पर करनेसे कुछ पुण्य नहीं सो ऐसे हैं जैसे बांटके हेत गौ दूध देती है गुणको औगुन माने तिसे शत्रु जानिये सबसे बुरा कृतघ्नी जो किये को मेटे॥

इतना बचन सुनतेही जब गोपियां आपसमें एक एकका मह देख हंसने लगीं तब तो श्रीकृष्णचंद्र घबराकर बोले कि सुनो मं इन चारोंकी गिनतीमेंनहीं जो तुम जानके हंसती हो बरन

मेरी तो यह रीति है कि जो मुझसे जिस बातकी इच्छा रखता है तिसके मनकी वांछा पूरी करता हुं कदाचित तुम कहो कि जो तुम्हारी यह चाल है तो हमें बनमें ऐसे क्यों छोड़ गये इस का कारण यह है कि मैंने तुम्हारी प्रीतिकी परीक्षा ली इस बातका बुरा मत मानो मेरा कहा सच्चाही जानो यों कह फिर बोले॥

अब हम परचौ लियो तिहारों । कीनो सुमिरण ध्यान हमारौ॥ मोही सों तुम प्रीत बढ़ाई । निर्धन मनो संपदा पाई॥ ऐसें आईं मेरे काज । छांड़ी लोक वेदकी लाज॥ जों बैरागी छांड़े गेह। मनदे हरिसों करे सनेह॥ कहा तिहारी करें बड़ाई। हम पै पलटौ दियौ नजाई।

जो ब्रह्माके सौ बरष जियें तोभी हम तुम्हारे ऋणसे उतरन न होंय इति॥ ३४ अध्याय।

श्रीशुकदेवमुनि बोले राजा जब श्रीकृष्णचंद्रने इस छबसे रसके बचन कहे तब तो सब गोपियां रिस छोड़ प्रसन्न हो उठ हरिसे मिल भांति भांतिके सुख मान आनंद मगन हो कुतूहल करने लगीं तिस समै॥

कृष्ण योगमाया ठई, भये अंश बहु देह।
सबकों सुख चाहत दियो, लीला परम सनेह।

जितनी गोपियां थीं तितनीही शरीर श्रीकृष्णचंद्रने धर उसी रासमण्डलके चौंतरे पर सबको हाथ ले फिर रास बिलासका आरम्भ किया॥

द्वै द्वै गोपी जोड़े हाथा तिनके बीच बीच हरि साथा अपनी अपनी ढिग सबजाने, नहीं दूसरेकों पहिचाने। अंगुरिनमें अंगुरी कर दिये, प्रफुल्लित सङ्ग हरिलिये फिरें बिच गोपी बिच नंदकिशोर, सघन घटा दामिनि चहुंओर श्याम कृष्ण गोरी ब्रजबाला, मानहुं कनक नीलमनि माला।

महाराज इसी रीतिसे खड़े होय गोपी औ कृष्ण लगे अनेक अनेक प्रकारके यंत्रोंके सुर मिलाय मिलाय कठिन२ राग अलाप अलाप बजाय बजाय गाने औ तीखी चोखी आड़ी डेवढ़ी दुगन तिगनकी तानें उपजें ले ले बोल बताय बतावनाचने औ आनन्दमें ऐसे मगन हुई कि उनको तन मनकिभी सुध न थी कहीं इनका अञ्चल उघड़ जाता था कहीं उनका मुकुट खिसल इधर मोतियोंके हार टूट टूट गिरते थे उधर बनमाल पसीनेकी बूंदें माथों पर मोतियोंकी लड़सी चमकती थीं औ गोपियोंके गोरे गोरे मुखड़ों पर अलकें यों बिखर रही थीं कि जैसे अमृतके लोभसे सपोलिये उड़कर चांदको जा लगे होंय कभी गोपी श्रीकृष्णकी मुरलीके साथ मिलकर जीलमें गाती थीं कभी कोई अपनी तान अलगही ले जाती थी औ जब कोई बंशीको छेंक उसकी तान समूची जेरांकी त्यों गलेसे निकालती थी तब हरि ऐसे भूल रहते थे कि जेरां बालक दरपनमें अपना प्रतिबिम्ब देख भूल रहै॥

इसी ढबसे गाय गाय नाच नाच अनेक अनेक प्रकारके हावभाव कटाच्छ कर कर सुख लेते देते थे औ परस्पर रीझ रीझ हंस हंस कंठ लगायर बस्त्र आभूषण निछावर कर रहेथे उसकाल ब्रह्मा रुद्र इन्द्र आदि सब देवता औ गंधर्व अपनी अपनी स्त्रियों समेत बिमानोंमें बैठे रासमंडलीका सुख देखदेख आनंदसे फूल बरसावते थे औ उनकी स्त्रियां वह सुख लख होंस कर मनमें कहती थीं कि जो जन्म ले ब्रजमें जातीं तो हमभी हरिके साथ रासबिलास करतीं औ राग रागनियोंका ऐसा समां बंधा हुआ था कि जिसे सुनके पौन पानीभी न बहता था औ तारामंडल समेत चन्द्रमा थकित हो किरनोंसे अमृत बरषाता था इसमें रात बढ़ी तो छः महीने बीत गये औ किसीने न जाना तभीसे उस रैनका नाम ब्रह्मरात्रि हुआ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले पृथ्वीनाथ रास लीला करते करते जो कुछ श्रीकृष्णचंद्रके मनमें तरंग आई तो गोपियोंको लिये यमुना तीर पै जाय नीरमें पैठ जल क्रीड़ा कर श्रम मिटाय बाहर आय सबके मनोरथ पूरे कर बोले कि अब चार घड़ी रात रही है तुम सब अपने घर जाओ इतना बचन सुन उदास हो गोपियोंने कहा नाथ आपके चरण कमल छोड़के घर कैसे जांय हमारा लालची मन तो कहा मानताही नहीं श्रीकृष्ण बोले कि सुनो जैसे योगी जन मेरा ध्यान धरते हैं तैसे तुमभी ध्यान कीजियो मैं तुम्हारे पास जहां रहोगी तहां रहूंगा इतनी बातके सुनतेही संतोष कर सब बिदा हो अपने अपने घर गईं औ यह भेद उनके घरवालोंमेंसे किसीने न जाना कि ये यहां न थीं॥

इतनी कथा सुन राजा परीक्षितने श्रीशुकदेवमुनिसे पूछा कि दीन दयाल यह तुम मुझे समझाकर कहो जो श्रीकृष्णचंद्र तो असुरोंको मार पृथ्वीका भार उतारने औ साधु संतको सुख दे धर्मका पंथ लंपटका कर्म है जो बिरानी नारीसे भोग करे शुकदेवजी बोले॥

सुन राजा यह भेद न जान्यौ। मानष सम परमेश्वर मान्यौ॥
जिनके सुमिरे पातक जात। तेजवंत पावन ह्वै गात॥ जैसे अग्नि मांझ कछु परै सोऊ अग्नि होयके जरै॥

सामर्थी क्या नहीं करते क्योंकि वे तो करके कर्मकी हानि करते हैं जैसे शिवजीने बिष लिया औ खाके कंठको भूषण दिया औ काले सांपका किया हार कौन जाने उनका ब्योहार वे तो अपने लिये कुछभी नहीं करते जो बिनका भजन सुमिरन कर कोई बर मांगता है तैसाही तिसको देते हैं॥

उनकी तो यह रीति है कि सबसे मिले दृष्ट आते हैं औ ध्यान कर देखिये तो सबहीसे ऐसे अलग जनाते हैं जैसे जलमें कमल

का पात और गोपियोंकी उतपत्ति तो मैं तुम्हें पहलेही सुना चुका हूं कि देवी औ वेदकी ऋचायें हरिका दरश परश करने को ब्रजमें जन्म ले आई हैं औ इसी भांति श्रीराधिका भी ब्रह्मा से बर पाय श्रीकृष्णचंदकी सेवा करनेको जन्म ले आईं औ प्रभु की सेवामें रहीं ॥

इतना कह श्रीशुकदेवजी बोले महाराज कहा है कि हरिके चरित्रमान लीजे पर उनके करनेमें मन नदीजे जोकोई गोपीनाथ का यश गाता है सो निर्भय अटल परम पद पाता है औ जैसा फल होता है अठसठ तीरथके न्हानेमें तैसाही फल मिलता है श्रीकृष्ण यश गानेमें इति ॥ ३५ अध्याय ॥

श्रीशुकदेवमुनि कहने लगे कि राजा जैसे श्रीकृष्णजीने विद्याधरको तारा और शंखचूड़को मारा सो प्रसंग कहता हूं तुम जी लगाय सुनो एक दिन नंदजीने सब गोप ग्वालोंको बुलायके कहा कि भाइयो जब कृष्णका जन्म हुआ था तब मैंने कुलदेवी अम्बिकाकी यह मानता करी थी कि जिस दिन कृष्ण बारह बरसका होगा तिस दिन नगर समेत बाजे गाजेसे जाकर पूजा करूंगा सो दिन उसकी कृपासे आज देखा अब चलकर पूजा किया चाहिये ॥

इतना बचन नंदजीके मुखसे सुनतेही सब गोप ग्वाल उठ धाये औ झटपटही अपने२ घरोंसे पूजाकी सामग्री ले आये तद तो नन्दरायभी पूजापा औ दूध दही मांखन सगड़ों बहंगियोंमें रखवाय कुटुम्ब समेत उनके साथ हो लिये औ चले चले अम्बिकाके स्थानपर पहुंचे वहां जाय सरस्वती नदीमें न्हाय नन्दजीने पुरोहित बुलाय सबको साथ ले देवीके मन्दिरमें जाय शास्त्रकी रीतिसे पूजा की औ जो पदारथ चढ़ानेको ले गये थे सो आगे धर परिक्रमा दे हाथ जोड़ बिनती कर कहा कि मा आपकी कृपासे कान्ह बारह बरषका हुआ ॥

ऐसे कह दण्डवत कर मन्दिरके बाहर आय सहस्र ब्राह्मण जिमा

ये इसमें अबेर जो हुई तो सब ब्रजबासियों समेत नंदजी तीरथ
व्रत कर वहांही रहे रातको सोते थे कि एक अजगरने आय नंद
रायका पांव पकड़ा औ लगा निगलने तब तो वे देखतेही भय
खाय घबरायके लगे पुकारने हे कृष्ण बेग सुध ले नहीं तो यह
मुझे निजाता है उनका शब्द सुनतेही सारे ब्रजबासी स्त्री क्या पु
रुष नींदसे चौंक नंदजीके निकट जाय उजाला कर देखें तो एक
अजगर उनका पांव पकड़े पड़ा है इतनेमें श्रीकृष्णचंद्रजीने पहुं
च सबके देखतेही जों उसकी पीठमें चरण लगाया तोंहीं वह अ
पनी देह छोड़ सुन्दर पुरुष हो प्रणाम कर सनमुख हाथ जोड़
खड़ा हुआ तब श्रीकृष्णने उस्से पूछा कि तैं कौन है औ किस पा
पसे अजगर हुआ था सो कहो वह शिर झुकाय बिनती कर बोला
अंतरजामी तुम सब जानते हो मेरी उतपत्ति कि मैं सुदरशन
नाम विद्याधर हूं सुरपुरमें रहता था औ अपने रूप गुणके आगे
गर्वसे किसीको कुछ न गिनता था ॥

एक दिन बिमानमें बैठ फिरनेको निकला तो जहां अंगिरा ऋ
षि बैठे तप करते थे तिनके ऊपर हो सौ बेर आया गया एक बेर
जों उन्होंने बिमानकी परछांईं देखी तो ऊपर देख क्रोध कर
मुझे श्राप दिया कि रे अभिमानी तु अजगर सांप हो ॥

इतना बचन उसके मुखसे निकला कि मैं अजगर हो नीचे गिरा
तिस समै ऋषिने कहा था कि तेरी मुक्ति श्रीकृष्णचंद्रके हाथ होगी
इसी लिये मैंने नंदरायजीके चरण आन पकड़े थे जो आप आ
यके मुझे मुक्त करो सो कृपानाथ आपने आय कृपाकर मुझे मुक्ति
दी ऐसे कह बिद्याधर तो परिक्रमा दे हरिसे आज्ञा ले दंडवत
कर बिदा हो बिमान हो पर चढ़ सुर लोकको गया यह चरित्र
देख सब ब्रजबासियोंको अचरज हुआ निदान भोर होतेही देवी
का दरशन कर सब मिल बृन्दाबन आये ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवमुनि बोले कि पृथ्वीनाथ एक

दिन हलधर औ गोविन्द गोपियों समेत चांदनी रातको आनंद से बनमें गाय रहे थे कि इसबीच कुबेरका सेवक शंखचुड़ नाम यक्ष जिसके सीसमें मणि औ अति बलवान था सो आ निकला देखे तो एक ओर सब गोपियां कुतूहल कर रही हैं औ एक ओर कृष्ण बलदेव मगन हो मत्तवत गाय रहे हैं कुछ इसके जीमें जो आई तो सब ब्रजयुवतीयोंको घेर आगे धर ले चला तिस समय भय खाय पुकारीं ब्रजबाम रक्षा करो कृष्ण बलराम॥

इतना वचन गोपियोंके मुखसे निकलतेही सुनकर दोनों भाई रूख उखाड़ हाथोंमें ले यों दौड़ आये कि मानों गज माते सिंह पर उठ धाये औ वहां जाय गोपियोंसे कहा कि तुम किसीसे मत डरो हम आन पहुंचे इनको काल समान देखतेही यक्ष भयमान हो गोपियोंको छोड़ अपना प्राण ले भागा उसकाल नंदलालने बलदेवजीको तो गोपियोंके पास छोड़ा औ आप जाय उसके झोंटे पकड़ पछाड़ा निदान तिरछा हाथ कर उसका शिर काट मणि ले आन बलरामजीको दिया इति ॥

३६ अध्याय।

श्रीशुकदेवमुनि बोले राजा जबतक हरि बनमें धेनु चरावें तबतक सब ब्रजयुबतियां नंदरानीके पास आय बैठकर प्रभुका यश गावें जो लीला श्रीकृष्ण बनमें करें सो गोपियां घर बैठी उचरें ।

सुनौ सखी बाजति है बैन। पशु पक्षी पावत हैं चैन॥ पति संग देवी थकी बिमान। मगन भई है धुनि सुन कान॥ करतें परहिं चुरी मुदरी। बिह्वल मन तनकी सुध हरी॥ तबहीं एक कहै ब्रजनारी। गरजनि मेघ तजी अति हारी॥ गावत हरि आनंद अडोल। भौंह नचावत पाणि कपोल॥ पिय संग मृगी थकी सुनि बेणु। यमुना फिरी घिरी तहां धेनु॥ मोहे बादर छैयां करें। मानौ छत्र कृष्ण पर धरें॥ अब हरि सघन कुंजकों धाये। पनि

सब बंशीवटतर आये। गायन पाछें डोलत भये। घेरलई जल पराबन गये॥ सांझ भई अब उलटे हरी। रांभति गाय बेणु धुनि करी॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज इसी रीतिसे नित गोपियां दिन भर हरिके गुण गावें औ सांझ समय आगे जाय श्रीकृष्णचंद आनंद कंदसे मिल सुख मान ले आवें औ तिस समै यशोदारानीभी रज मंडित पुत्र का मुख प्यारसे पोंछ कंठ लगाय सुख माने इति॥

३७ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एक दिन श्रीकृष्ण बलराम सांझ समै धेनु चरायके बनसे घरको ले आते थे इस बीच एक असुर अति बड़ा बैल बन आय गायोंमें मिला॥

आकाश लों देह तिन धरी, पीठ कड़ी पथरसी करी बड़े सींग तीछन दोउ खरे, रक्त नैन अतिही रिस भरे। पुंछ उठाय डकारतु फिरै, रहि रहि भुतल गोबर करे फड़कै कंध हिलावे कान, भजे देव सब छोड़ बिमान खुरसों खोदे नदे करारे पर्वत उथल पीठसों डारे सबको त्रास भयो तिहि काल, कंपहिं लोकपाल दिगपाल। पृथवी हले शेष थरहरे, तिय औ धेनु गर्व भु परे।

उसे देखतेही सब गायें तो जिधर तिधर फैल गईं औ ब्रज बासी दौड़ वहां आये जहां सबके पीछे कृष्ण बलराम चले आते थे प्रणाम कर कहा महाराज आगे एक अति बड़ा बैल खड़ा है उससे हमें बचाओ इतनी बातके सुनतेही अंतरजामी श्रीकृष्ण चन्द बोले कि तुम कुछ मत डरो उससे वह बृषभका रूप बनकर आया है नीच हमसे चाहता है अपनी मीच इतना कह आगे जाय उसे देख बोले बनवारी कि आव हमारे पास कपट तन धारी तु और किसुको क्यों डराता है मेरे निकट किस लिये

नहीं आता जो जो बैरी सिंहका कहावता है सो मृग पर नहीं धावता देख मैंही हुं काल रूप गे। बिन्द मैंने तुजसे बहुतोंको मारके किया है निकंद ॥

यों कह फिर ताल ठोक ललकारे आ मुजसे संग्राम कर यह वचन सुनतेही असुर ऐसे क्रोधकर धावा कि मानौ इन्द्रका बज्र आया जों जों हरि उसे हटाते थे त्यों त्यों वह संभल संभल बढ़ा आता थां एक बार जो उन्होंने विसे दे पटका तोंहीं खिजला कर उठा औ दोनों सींगांमे उसने हरिको दवाया तब तो श्रीकृष्णजीनेकी फुरतीसे निकल झट पांव पर पांव दे उसके सींग पकड़ यों मड़ोड़ा कि जैसे कोई भींगे चीरको निचोड़ै नि दान वह पछाड़ खाय गिरा औ उसका जी निकल गया तिस समै सब देवता अपने अपने बिमानोंमे बैठ आनंदसे फुल वरषा वने लगे औ गोपी गोप कृष्ण यश माने इस बीच श्रीराधिकाजी ने आ हरिसे कहा कि महाराज वृषभ रूप जो तुमने मारा इस्का पाप हुआ इसे अब तुम तीरथ न्हाय आवो तब किसीको हाथ लगाओ इतनी बातके सुनतेही प्रभु बोले कि सब तीरथोंको मैं ब्रजहीमें बुला लेता हुं यों कह गोवर्द्धनके निकट जाय दो कोड़े कुंड खूदवाये तहीं सब तीरथ देह धर आये औ अपना अपना नाम कह कह उनमें जल डाल डाल चले गये तब श्री कृष्णचंद उनमें स्नान कर बाहर आय अनेक गौ दान दे बहुत सेब्राह्मण जिमाय शुद्ध हुए औ विसी दिनसे कृष्णकुण्ड राधाकुण्ड करके वे प्रसिद्ध हुए ॥

यह प्रसंग सुनाय श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज एक दिन नारदमुनिजी कंसके पास आये औ उसका कोप बढ़ानेको जब उन्होने बलराम औ श्यामके होने औ मायाके आने औ कृष्ण के जानेका भेद समझाकर कहा तब कंस क्रोध कर बोला नारद जी तुम सच कहते हो ॥

प्रथम दियौ सुत आनिकै मन परतीत बढ़ाय।
जों ठग कछु दिखाइकै, सर्वसु ले भजि जाय॥

इतना कह बसुदेवको बुलाय पकड़ बांधा औखांड़े पर हाथ रख अकुलाकर बोला।

मिला रहा कपटी तु मुझे। भला साध जाना मैं तुझे॥ दिया नंदके कृष्ण पठाय। देवी हमें दिखाइ आय॥ मनमें कुछी कही मुख और। आज अवशय मारूं इहि ठौर॥ मित्र सगा सेवक हितकारी। करें कपट सो पापी भारी॥ मुख मीठा मन बिष भरा॥ रहै कपट के हेत। आप काज परमोहिया उससे भला जुप्रेत॥

ऐसे बकझक फिर कंस नारदजीसे कहने लगा कि महाराज हमने कुछ इसके मनका भेद न पाया कुआ लड़का औ कन्याको ला दिखाया जिसे कहा अधूरा गया सोई जा गोकुलमें बलदेव भया इतना कह क्रोध कर होठ चबाय खड्ग उठाय जों चाहा कि बसुदेवको मारूं तों नारदमुनिने हाथ पकड़कर कहा राजा बसुदेवको तो तू रख आज औ जिसमें कृष्ण बलदेव आवें सो कर काज ऐसे समझाय बुझाय जब नारदमुनि चले गये तब कंसने बसुदेव देवकीको तो एक कोठरीमें मुंद दिया औ आप भयातुर हो केसी नाम राक्षसको बुलाके बोला॥

महाबली तु साथी मेरा। बड़ा भरोसा मुजको तेरा॥
एकबार तु ब्रजमें जा। राम कृष्ण हरि मुझे दिखा॥

इतना बचन सुनतेही केसी तो आज्ञा पा बिदा हो दण्डवत कर बृन्दाबनको गया औ कंसने साल तुसाल चाणूर अरिष्ट बोमासुर आदि जितने मंत्री थे सबको बुला भेजा वे आये तिन्हें समझाकर कहने लगा कि मेरा बैरी पास आय बसा है तुम अपने जीमें सोच बिचार करके मेरे मनका शूल जो खटकता है निकालो मंत्री बोले पृथ्वीनाथ आप महाबली हो किससे डरते हो

राम कृष्णका मारना क्या बड़ी बड़ी बात है कुछ चिंता मत करो जिस छल बलसे वे यहां आवें सोई हम मता बतावें॥

पहलेतो यहां भली भांतिसे एक ऐसी सुंदर रंगभूमि बनवायें कि जिसकी शोभा सुनतेही देखनेको नगर नगर गांव गांवके लोग उठ धावें पीछे महादेवका यज्ञ करवाओ औ होमके लिये बकरे भैंसे मंगवाओ यह समाचार सुन सब ब्रजबासी भेंट लावेंगे तिनके साथ राम कृष्णभी आवेंगे उन्हें तभी कोई मल्ल पछाड़ेगा कै कोई औरही बली यौंर यौं मारडालेगा इतनी बातके सुनतेही॥

कहै कंस मन लाय। भलौ मतौ मंत्री कियौ लीने मल्ल
बुलाय॥ आदर कर बीरा दये।

फिर सभाकर अपने बड़े बड़े राक्षसोंसे कहने लगा कि जब हमारे भानजे राम कृष्ण यहां आवें तब तममेंसे कोई उन्हें मारडालियो जो मेरे जीका खटका जाय विन्हें यों समझाय पुनि महावतको बुलाके बोला कि तेरे बशमें मतवाला हाथी है तु द्वारपर लिये खड़ा रहियो जद वे दोनों आवें औ द्वारमें पांव दें तब तू हाथीसे चिर वाड़ालियो किसी भांति भागने न पावें जो विन दोनोंको मारेगा सो मुंहमांगा धन पावेगा॥

ऐसे सबको सुनाय समझाय बुझाय कात्तिक वदी चौदशको शिवका यज्ञ ठहराय कंसने सांझसमै अक्रूरको बुलाय अति आव भगति कर घर भीतर ले जाय एक सिंहासन पर अपने पास बैठाय हाथ पकड़ अति प्यारसे कहा कि तुम यदुकुलमें सबसे बड़े ज्ञानी धरमात्मा धीर हो इसलिये तुम्हें सब जानहे मानते है ऐसा कोई नहीं जो तुम्हे देख सुखी न होय इसे जैसे इन्द्रका काज बावनने जा किया जो छलकर बलिका साराराज लेदिया और राजा बलिको पाताल पठाया तैसे तुम हमारा काम करो तो एक बेर बृन्दाबन जाओ और देवकीके दोनो लड़कोंको जों बने तों

छल बल कर यहां ले आओ कहा है जो बड़े हैं सो आप दुख सह करते हैं पराया काज तिसमें तम्हें तो है हमारी सब बातकी लाज अधिक क्या कहेंगे जैसे बनै तैसे उन्हें ले आओ तो यहां सहजहीमें मारे जायगे कै तो देखतेही चाणुर पछाड़ेगा कै गज कुवलिया पकड़ चीर डालेगा नहीं तो मैंहीं उठ मारूंगा अपना काज अपने हाथ संवारूंगा औ उन दोनोंको मार पीछे उग्रसेनको हनुंगा क्योंकि वह बड़ा कपटी है मेरा मरना चाहता है फिर देवकीके पिता देवकको आगसे जलाय पानीमें डबोऊंगा साथही उसके वसुदेवको मार हरिभक्तोंको जड़से खोऊंगा तब निकंटक राज कर जुरासिंधु जो मेरा मित्र है प्रचंड उसके चासमे कांपते हैं नौखंड औ नरकासुर बानासुर आदि बड़े बड़े महाबली राक्षस जिनके सेवक हैं तिससे जा मिलुंगा जो तुम राम कृष्णको ले आओ॥

इतनी बातें कह कर कंस अक्रूरको समझाने लगा कि तुम बृन्दाबनमें जाय नंदके यहां कहियो जो शिवका यज्ञ है धनुष धरा है औ अनेक अनेक प्रकारके कुतूहल वहां होयंगे यह सुन नंद उपनंद गोपों समेत बकरे भैंसे ले भेंट देने लावेंगे तिनके साथ देखनेको कृष्ण बलदेवभी आवेंगे यह तो मैंने तुम्हे उनके लावनेका उपाय बताय दिया आगे तुम सज्ञान हो जो और उकत बनिआवे सो करि कहियो अधिक तुमसे क्या कहें कहा है॥

होव विचित्र घसीठ, जाहि बुद्धि बल आपनो।
पर कारज पर दीठ, करहिं भरोसो ता तनो॥

इतनी बातके सुनतेही पहले तो अक्रूरने अपने जीमें बिचारा कि जो मैं अब इसे कुछ भली बात कहूंगा तो यह न मानेगा इससे उत्तम यही है कि इस समै इसके मन भाती सुहाती बात कहूं ऐसे औरभी ठौर कहा है कि वही कहिये जो जिसे सुहाय यों सोच विचार अक्रूर हाथ जोड़ सिर झुकाय बोला महाराज तुम

ने भला मताकिया यह बचन हमनेभी सिर चढ़ाय मानलिया हो नहार पर कुछ बश नहीं चलता मनुष अनेक मनोरथ कर धावता है पर करमका लिखाही फल पावता है सोचते हैं और होता है और किसीके मनका चीता होता नहीं आगम बांध तुमने यह बात बिचारी है न जानिये कैसी होय मैंने तुम्हारी बात मान लीकल भोरकोजाऊंगा औ रामकृष्णको ले आऊंगा ऐसे कह कंस से बिदा हो अक्रुर अपने घर आया इति ॥

३८ अध्याय ।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज ज्यों श्रीकृष्णचंद्रने केसेको मारा औ नारदने जाय स्तुति करी पुनि हरिने व्योमासुरको हना त्यों सब चरित्र कहता हूं तुम चित दे सुनौ कि भोर होतेही केसी अति ऊचा भयावना घोड़ा बन वृन्दाबनमें आया और लगा लाल लाल आंखें कर नथने चढ़ाय कान पूंछ उठाय टाप टाप भूं खोदने औ हींस हींस कांधा कंपाय कंपाय लाते चलाने ॥

उसे देखतेही ग्वाल बालोंने भय खाय भाग श्रीकृष्णसे जा कहा वे सुनके वहां आये जहां वह था औ विसे देख लड़नेको फेंट बांध ताल ठोक सिंहकी भांति गरजकर बोले अरे जो तू कंसका बड़ा प्रीतम है औ घोड़ा बन आया है तो औरके पीछे क्यों फिरता है आ मुजसे लड़ जो तेरा बलदेखूं दीप पतङ्गकी भांति कबतक फिरेगा तेरी मृत्यु तो निकट आन पहुंची है यह बचन सुन केसी कोपकर अपने मनमें कहने लगा कि आज इसका बल देखूंगा औ पकड़ ईषकी भांति चबाय कंसका कारज कर जाऊंगा ॥

इतना कह मुंहबायके ऐसे दौड़ा कि मानो सारे संसारको खा जायगा आतेही पहले ज्यों उन्ने श्री कृष्ण पर मुंह चलाया तो उन्होंने एक बेर तो धकेलकर पीछेको हटाया जब दूसरी बेर वह फिर संभलके मुख फैलाय धाया तब श्रीकृष्णने अपना हाथ उसके मुंहमें डाल लोहलाठसा कर ऐसा बढ़ाया कि जिसने विसके दशों

द्वार जा रोके तब तो केसी घबराकर जीमें कहने लगा कि अब देह फटती है यह कैसी भई अपनी मृत्यु आप मुहमें ली जैसे मछली बंशीको निगल प्राण देती है तैसे मैंनेभी अपना जीव खोया ॥

इतना कह उसने बहुतेरे उपाय हाथ निकालनेको किये पर एकभी काम न आया निदान सांस रुक कर पेट फट गया तो पछाड़ खायके गिरा तब उसके शरीरसे लोहू नदीकी भांति बह निकला तिस समैं ग्वाल बाल आय आय देखने लगे औ श्रीकृष्णचन्द्र आगे जाय बनमें एक कदमकी छांह तले खड़े हुए ॥

इसी बीच बीन हाथमें लिये नारदमुनिजी आन पहुंचे प्रणाम कर खड़े होय बीन बजाय श्रीकृष्णचंदको भुत भविष्यतो सब लीला औ चरित्र गायके बोले कि कृपानाथ तुम्हारी लीला अपरंपार है इतनो किसमें सामर्थ है जो आपके चरित्रोंको बखाने पर तुम्हारि दयासे मैं इतना जानता हुं कि आप भक्तोंको सुख देनेके अर्थ औ साधोंकी रक्षाके निमित्त औ दुष्ट असुरोंके नाश करनेके हेतु बार बार औतार ले संसारमे प्रगट हो भूमिका भार उतारते हो ॥

इतना बचन सुनतेही प्रभुने नारदमुनिको तो बिदा दी वे दंडवत कर सिधारे औ आप सब ग्वाल बाल सखाओंको साथ लिये एक बड़के तले बैठ पहले तो किसीको मंत्री किसीको प्रधान किसीको सेनापति बनाय आप राजा हो राजरीतिसे खेल खेलने लगे औ पीछे आंखमिचोली इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि पृथ्वीनाथ ॥

मारयौ केसी भेरही, सुनि कंस यह बात। व्योमासुरसों कहतु है, भखता कंपत गात ॥ अरि कंदन व्योमासुर बली, तेरी जग में कीरति भली जैसे रामके पवनको पूत। त्योंही तू मेरे यमदूत ॥ बसुदेव पूत हनि लयाव । आजकाज मेरो करि आव ॥

यह सुन करजोड़ व्योमासुर बोला महाराज जो बतायगी सो करूंगा आज मेरी देह है आपहीके काज जो जीके लोभी है तिन्हें स्वामीके अर्थ जी देते आती है लाज सेवक औ स्त्रीको तो दूसीमें यश धरम है जो स्वामीके निमित्त प्राण दे ऐसे कह कृष्ण बलदेव पर बीड़ा उठाय कंसको प्रणामकर व्योमासुर वृन्दावनको चला बाटमें जाय ग्वालका भेष बनाय चला चला वहां पहुंचा जहां हरि ग्वाल बाल सखाओंके साथ मिचौली खेल रहे थे जातेही दूरसे जब उसने हाथ जोड़ श्रीकृष्णचन्द्रसे कहा महाराज मुझेभी अपने साथ खिलाओ तब हरिने उसे पास बुलाकर कहा तु अपने जीमें किसी बातकी होंस मत रख जो तेरा मन माने सो खेल हमारे संग खेल यों सुनवह प्रसन्न हो बोला कि वृक मेंढ़का खेल भला हैं श्रीकृष्णचन्द्रने मुसकुरायके कहा बहुत अच्छा तू बन भेड़िया औ सब ग्वालबाल होवें मेंढ़े सुनतेही फूलकर व्योमासुर तो लगारी हुआ औ ग्वाल बाल बने मेंढ़े मिलकर खेलने लगे ॥

तिस समै वह असुर एक एकको उठा ले जाय औ पर्वतकी गूफामें रख उसके मुह पर आड़ी सिला धर मुन्दके चला आवे ऐसे जब सबको वहां रख आया औ अकेले श्रीकृष्ण रहे तब ललकारकर बोला कि आज कंसका काज सरूंगा औ सब यदुवंशियोंको मारूंगा यों कह ग्वालका भेष छोड़ सचमुच भेड़िया बन जों हरि पर झपटा त्यों उन्होंने उसको पकड़ गला घोंट बारे घूंसोंके यों मार पटका कि जैसे यज्ञके बकरेको मार डालते हैं इति ॥

३९ अध्याय।

श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज कार्त्तिक बदी द्वादशीको तो केसी औ व्योमासुर मारा गया औ त्रयोदशीको भोरके तड़केही अक्रूर कंसके पास आय बिदा हो रथ पर चढ़ अपने मनमें यों बिचारता वृन्दावनको चला कि ऐसा मैंने क्या जप तप यज्ञ दान

तीरथ ब्रत किया है जिसके पुण्यसे यह फल पाऊंगा अपने जा
ने तो इस जन्मभर कभी हरिका नाम नहीं लिया सदा कंसकी
संगतिमें रहा भजनका भेद कहां पाऊं हां अगले जन्म कोई बड़ा
पुण्य किया हो उस धर्मके प्रतापका यह फल हो तो हो जो कं
सने मुझे श्रीकृष्णचन्द आनंद कंदके लेनेको भेजा है अब जाय
उनका दरशन पाय जन्म सुफल करूंगा ॥

हाथ जोरिकै पायन परि हौं, पुनि पग रेणु सीस पर धरि
हौं, पाप हरण जेई पग आहि, सेवत श्रीब्रह्मादिक ताहि, जे
पग कालीके सिर परे, जे पग कुच चन्दन सों भरे, नाचे रासमेंड
ली आछे, जे पग डोलें गायन पाछे। जो पग परस अहिलया
तरी, जा पगतें गङ्गा नीसरी, बलि छलि कियो इन्द्रको काज,
ते पग हौं देखौंगो आज मोको। सगुन होत हैं भले, मृगके
झुंड दाहने चले।

महाराज ऐसे विचार फिर अक्रूर अपने मनमें कहने लगा कि
कहीं मुझे वे कंसका दूत तो न समझें फिर आपही शोचा कि
जिनका नाम अंतरजामी है वे तो मनकी प्रीति मानते हैं औ
सब मित्र शत्रुको पहचानते हैं ऐसा कभी न समझेंगे बरन मुझे
देखतेही गले लगाय दया कर अपना कोमल कमलसा कर मेरे
सीस पर धरेंगे तब मैं उस चन्द्रबदनकी शोभा इकटक निरख
अपने नैन चकोरोंको सुख दूंगा कि जिसका ध्यान ब्रह्मा रुद्र इन्द्र
आदि सब देवता सदा करते हैं ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि
महाराज इसी भांति शोच बिचार करते रथ हांके इधरसे तो
अक्रूरजी गये और उधर बनसे गौ चराय ग्वालबाल समेत कृष्ण
बलदेवभी आये तो इनसे बृन्दाबनके बाहरही भेट भई हरि छबि
दूरसे देखतेही अक्रूर रथसे उतर अति अकुलाय दौड़ उनके
पांओं पर जा गिरा औ ऐसा मगन हुआ कि मूहसे बोल न आया

आनंद कर नैनोंसे जल बरषावने लगा तब श्रीकृष्णजी उसे उठाय अति प्यारसे मिल हाथ पकड़ घर लिवाय ले गये वहां नंदर अक्रूरजीको देखतेही प्रसन्न हो उठकर मिले औ बहुतसा नमस्कार किया पांव धुलवाय आसन दिया॥

लिये तेल मरदनियां आये। उबटि सुगंध चुपरि अन्हवाये॥
चौका पटा यशोदा दियो। षटरस रुचि सो भोजन कियौ॥

जब अंचायके पान खाने बैठे तब नंदजी उनसे कुशल क्षेम पूछ बोले कि तुम तो यदुबंशियोंमें बड़े साधु हो सदा अपनी बड़ाईसे रहेहो कहो अब कंस दुष्टके पास कैसे रहते हो औ वहांके लोगोंकी क्या गति है सो भेद कहो अक्रूरजी बोले॥

जबतें कंस मधुपुरी भयौ। तबतें सबहीकौं दुख दयो॥
पूछो कहा नगर कुशलात। परजा दुखी होत है गात॥
औलों है मथुरामें कंस। तौलों कहां बचे यदुबंश॥
पशु मेंढ़े छेरीनकों जैसें खटीक रिपु होइ।
त्यौं परजाकौ कंस है। दुख पावें सब कोई॥

इतना कह फिर बोले कि तुम कंसका व्योहार जानते हो हम अधिक क्या कहेंगे इति॥

४० अध्याय॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि पृथ्वीनाथ जब नंदजी बातें कर चुके तब अक्रूरको कृष्णबलराम सैनसे बुलाय अगल ले गये॥

आदर कर पूछी कुशलात। कहौ कका मथुराकी बात॥
है वसुदेव देवकीनीके। राजा बैर परौ तिनहीके॥
अति पापी है मामा कंस। जिन खोया सिगरो यदुबंश॥

कोई यदुकुलका महारोग जन्म ले आया है तिसने सब यदुबंशियोंको सताया है औ सच पूछो तो बसुदेव हमारे लिये इतना दुख पाते हैं जो हमें न छिपाते तो वे इतना दुख न पाते यों कह कृष्ण फिर बोले॥

नमसां कहा चलत उनि कहैगा। तिनको सदा सिरी हौं रहैगा।
करतु हैांयगे सुरत हमारी। संकटमें पावत दुख भारी॥

यह सुन अक्रूरजी बोले कि कृपानाथ तुम सब जानते हो क्या कहूंगा कंसकी अनीति बिसकी किसीसे नहीं है प्रीति बसुदेव औ उग्रसेनको नित मारनेका बिचार किया करता है पर वे आजतक अपनी प्रारब्धसे बच रहे हैं और जबसे नारद मुनि आय आपके होनेका सब समाचार बुझायके कह गये हैं तबसे बसुदेव जीको बेड़ी हथकड़ी दे महा दुखमें रखा है औ कल उसके यहां महादेवका यज्ञ है औ धनुष धरा है कोई देखनेको आवेंगे सो तुम्हें बुलानेको मुझे भेजा है यह कहकर कि तुम जाय रामकृष्ण समेत नंदरायको यज्ञ की भेंट सुद्धा लिवाय लायो सो मैं तुम्हें लेनेको आया हूं इतनी बात अक्रूरजीसे सुन रामकृष्णने औ नंदरायसे कहा॥

कंस बुलाया है सुनु तात। कही अक्रूर कहा अह बात॥
गोरस मेंढ़ छेरी लेउ। धनुष यज्ञ है ताकों देउ॥
सब मिल चलो साथ आपने। राजा बोले रहत न बने॥

जब ऐसे समझाय बुझाय कर श्रीकृष्णचन्द्रजीने नंदजीसे कहा तब नंदरायजीने उसी समै ढंढोरियेको बुलवाय सारे नगरमें यों कह डोंड़ी फिरवाय दी कि कल सबेरे हो सब मिल मथुराको जयंगे राजाने बुलाय है इसबातके सुनतेसे भोर होतेही भेंट ले ले सकल ब्रजबासी आन पहुंचे औ नंदजीभी दूध दही माखन मेढ़ें बकरे भैंसे ले सगड़ जुतवाय उनके साथ हो लिये और कृष्ण बलदेवभी अपने ग्वालबाल सखाओंको साथ ले रथ पर चढ़े॥

आगे भये नंद उपनंद। सब पाछैं हलधर गोबिन्द॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि पृथ्वीनाथ एकाएकी श्रीकृष्णचन्द्रका चलना सुन सब ब्रजकी गोपियां अति घबराय व्याकुल हो घर छोड़

हड़बड़ाय उठ आईं औ कूदतीं झंखती गिरती पड़ती वहां धाईं जहां श्रीकृष्णचन्द्रका रथ था आतेही रथके चारोंओर खड़ी हो हाथ जोड़ बिनती कर कहने लगीं हमें किस लिये छोड़ते हो ब्रजनाथ सर्वस दिया है तुम्हारे हाथ साधकी तो प्रीति कभी घटती नहीं कर की रेखासी सदा रहती है औ मूढ़की प्रीति नहीं ठहरती जैसे बालूकी भींति ऐसा तुम्हारा क्या अपराध किया है जो हमें पीठ दिये जाते हो यों श्रीकृष्णचन्द्रको सुनाय फिर गोपियां अक्रूरकी ओर देख बोलीं॥

यह अक्रूर क्रूर है भारी। जानी कछू न पीर हमारी॥
जा बिन छिन सब होति अनाथ, ताहि ले चलेओ अपने साथ॥
कपटी क्रूर कठिन मन भयो, नाम अक्रूर वृथा किन दयो॥
हे अक्रूर कुटिल मति हीन, क्यों दाहत अबला अधीन॥

ऐसे कड़ी कड़ी बातें सुनाये शोच संकोच छोड़ हरिका रथ पकड़ आपसमें कहने लगीं मथुराकी नारियां अति चञ्चल चतुर रूप गुन भरी हैं उनसे प्रीति कर गुण औ रसके बश हो वहांहीं रहेंगे विहारी तब काहेको करेंगे सुरत हमारी उन्हींके बड़े भाग हैं जो प्रीतम सङ्ग रहेंगीं हमारे जप तप करनेमें ऐसी क्या चूक पड़ी थी जिससे श्रीकृष्णचन्द्र बिछड़ते हैं यों आपसमें कह फिर हरिसे कहने लगीं कि तुम्हारा तो नाम है गोपीनाथ किस लिये नहीं ले चलते हमें अपने साथ॥

तुम बिन छिन छि कैसें कटै, पलक ओट भये छाती भटै। हित लगाय क्यों करत बिछोह, निठुर निर्दई धरत न मोह॥ ऐसे तहां जपैं सुन्दरी, शोचैं दुख समूद्रमें परी। चाहि रहीं इकटक हरि ओर, ठगी मृगीसी चंद चकोर॥ परहिं नैनतें आंसु टुट, रहीं बियुरि लट मुख पर छुट।

श्रीशुकदेवमुनि बोले कि राजा उस समै गोपियोंकी तो यह दशा थी जो मैंने कही औ यशोदारानी ममता कर पुत्रको कंठ

लगाय रो रो अति प्यारसे कहती थीं कि बेटा जै दिनमें तुम य हांसे फिर आओ तै दिनके लिये कलेऊ ले जाओ तहां जाय किसीसे प्रीति मत कीजियो बेग आय अपनी जननीको दरशन दीजो इतनी बात सुन श्रीकृष्ण रथसे उतर सबको समझाय बुझाय मासे बिदा होय दंडवत कर असीस ले फिर रथ पर चढ़ चले तिस काल इधरसे तो गोपियों समेत यशोदाजी अति अकुलाय रो रो कृष्ण कृष्ण कर पुकारती थीं औ उधरसे श्रीकृष्ण रथ पर खड़े पुकार पुकार कहते जाते थे कि तुम घर जाओ किसी बात की चिंता मत करो हम पांच चार दिनमेंही फिरकर आते हैं॥

ऐसे कहते कहते औ देखते देखते जब रथ दूर निकल गया औ धूली आकाशतक छाई तिसमें रथकी ध्वजाभी न दी दिखाई तब निराश हो एक बेर तो सबकी सब नीर बिन मीनकी भांति तड़फड़ाय मूर्छा खाय गिरीं पीछे कितनी एक बेरको चेत कर उठीं औ अवधकी आश मनमें धर धीरज कर ऊधर यशोदाजी तो सब गोपियोंको ले बृन्दाबनको गई औ इधर श्रीकृष्णचन्द्र सब समेत चले चले यमुना तीर पर आ पहुंचे तहां ग्वाल बालोंने जल पिया औ हरिनेभी एक बड़की छांहमें रथ खड़ा किया जद अक्रूरजी न्हानेका बिचार कर रथसे उतरे तद श्रीकृष्णचन्द्रने नन्दरायसे कहा कि आप सब ग्वाल बालोंको ले आगे चलिये चचा अक्रूर स्नान कर ले तो पीछेसे हमभी आ मिलते हैं॥

यह सुन सबको ले नंदजी आगे बढ़े औ अक्रूरजी कपड़े खोल हाथ पांव धोय आचमन कर तीर पर जाय नीरमें पैठ डुबकी ले पूजा तर्पण जप ध्यान कर फिर चुभकी मार आंख खोल जलमें देखें तो वहां रथ समेत श्रीकृष्ण हष्ट आये॥

पुनि सुन देखे सीस उठाय, तिहिं ठां बैठे हैं यदुराय। करै अचंभो हिये बिचारि, वे रथ ऊपर हूर मुरारि। बैठे दोऊ बड़की छांह, तिनहीं कों देखा जल मांह। बाहर भीतर भेद

न लहों सांचो रूप कौनसों कहों॥

महाराज अक्रूरजी तो एकही सुरत बाहर भीतर देख देख शोचतेही थे कि इस बीच पहले तो श्रीकृष्णचंद्रजीने चतुर्भुज हो शंख चक्र गदा पद्म धारण कर सुर मुनि किन्नर गंधर्व आदि सब भक्तों समेत जलमें दरशन दिया औ पीछे शेषशाई हो तो अक्रूर देख औरभी भुल रहा इति॥

४१ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज पानीमें खड़े खड़े अक्रूरको कितनी एक बेरमें प्रभुका ध्यान करनेसे ज्ञान हुआ तो हाथ जोड़ प्रणाम कर कहने लगा कि करता हरता तुम्हीं हो भगवंत भक्तोंके हेतु संसारमें आय धरते भेष अनंत और सुर नर मुनि तुम्हारि अंश हैं तुमहींसे प्रगट हो तुमहींसे ऐसे समाते हैं जैसे जल सागरसे निकल सागरमें समाता है तुम्हारी महिमा है अनूप कौन कह सके सदा रहते हो विराट स्वरूप शिर स्वर्ग पृथ्वी पांव समुद्र पेट नाभि आकाश बादल केश वृक्ष रोम अग्नि मुख दशों दिशा कान नैन चन्द्र औ भानु इन्द्र भुजा बुद्धि ब्रह्मा अहंकार रुद्र गरजन बचन प्राण पवन जल बीर्ज पलक लगाना रात दिन इस रूपसे सदा बिराजते हो तुम्हें कौन पहचान सके इसभांति स्तुति कर अक्रूरने प्रभुके चरणका ध्यान धर कहा कृपानाथ मुझे अपनी शरणमें रक्खो इति॥

४२ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जब श्रीकृष्णचंद्रने नटमायाकी भांति जलमें अनेक रूप दिखाय हरलिये तब अक्रूरजीने नीरसे निकल तीर पर आ हरिको प्रणाम किया तिस काल नंदलालने अक्रूरसे पूछा कि कका सीत समै जलके बीच इतनी बेर क्यों लगी हमें यह अति चिंता थी तुम्हारी कि चचाने किस लिये बाट चलनेकी सुधि बिसारी क्या कुछ अचरज तो जा कर

नहीं देखा यह समझायके कहो जो हमारे मनकी दुवधा जाय॥

सुनि अक्रूर कहै जोड़ हात, तुत सब जानतहो ब्रजनाथ॥
भलो दरश दीनों जल मांहिं, कृष्ण चरितको अचरज गाहिं॥
मोहि भरोसौ भयौ तिहारौ, बेग नाथ मथुरा पग धारौ॥

अब यहां बिलंब न करिये शीघ्र चल कारज कीजे इतकी बात के सुनतेही हरि झट रथ पर बैठ अक्रूरको साथ ले चल खड़े हुए औ नंद आदि जो सब गोप ग्वाल आगे थे उन्होंने जा मथुराके बाहर डेरे किये औ कृष्ण बलदेवकी बाट देख देख अति चिंता कर आपसमें कहने लगे इतनी अबेर न्हाते क्यों लगी और किस लिये अबतक नहीं आये हरी कि इस बीच चले चले आनंद कंद श्रीकृष्णचन्द्रभी जाय मिले उस समै हाथ जोड़ शिर झुकाय बिनतीकर अक्रूरजी बोले कि व्रजराज अब चलके मेरा घर पवित्र कीजे औ अपने भक्तोंको दरश दिखाय सुख दीजे इतनी बात सुनतेही हरिने अक्रूरसे कहा॥

पहले कंसकों देहु, तब अपनो दिखरावे गेहु॥
सबकी विनती कही जु जाय, सुनि अक्रूर चले सिर नाय॥

चले चले कितनी एक बेरमें रथसे उतरकर वहां पहुंचे जहां कंस सभा किये बैठा था इनको देखतेहीं सिंहासनसे उठ नीचे आय अति हितकर मिला औ बड़ा आदर मानसे हाथ कपड़ ले जाय सिंहासन पर अपने पास बैठाय इनकी कुशल क्षेम पूछ बोला जहां गये थे वहांकी बात कहो॥

सुनि अक्रूर कहै समझाय, व्रजकी महिमा कही न जाय॥
कहा नंदकी करों बड़ाई, बात तुम्हारी सीस चढ़ाई॥
राम कृष्ण दोऊ हैं आये, भेट सबै ब्रजबासी लाये॥
डेरा किये नदीके तीर, उतरे गाड़ा भारीं भीर॥

यह सुन कंस प्रसन्न हो बोला अक्रूरजी आज तुमने हमारा बड़ा काम किया जो राम कृष्णको ले आये अब घर जाय निश्राम करो॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परिक्षितसे कहा कि महाराज कंसकी आज्ञा पाय अक्रूरजी तो अपने घर गये वह शोच विचार करने लगा और जहां नंद उपनंद बैठे थे तहां उन से हलधर औ गोबिन्दने पूछा जो हम आपकी आज्ञा पावें तो नगर देख आवें यह सुन पहले तो नन्दजीने कुछ खानेको मिठाई निकाल दी उन दोनों भाइयोंमे मिलकर खाय ली पीछे बोले अच्छा जाओ देख आओ पर बिलम्ब मत कीजो ॥

इतना बचन नन्द महरके मुखसे निकलतेहि आनन्दकर दोनों भाई अपने ग्वाल बाल सखाओंको साथ ले नगर देखने चले आगे वढ़ देखें तो नगरके बाहर चारोंओर बन उपबन फूल फल रहे हैं तिन पर पंछी बैठे अनेक अनेक भांतिकी मन भावन बोलियां बोलते हैं औ बड़े बड़े सरोवर निर्मल जलसे भरे हैं उनमें कमल खिले हुए जिन पर भौंरोंके झुंडके झुंड गूंज रहे औ तीरमें हंस सारस आदि पंछी कलोलें कर रहे शीतल सुगंध सनी मन्दपौन बह रही औ बड़ी बड़ी बाड़ियोंकी बाड़ों पर पनवाड़ियां लगीं हुईं बीच बीच बरन बरनके फूलोंकी क्यारियां कोसोंतक फूली हुईं ठौर ठौर इंदारो बावड़ियों पर रहट परे हैं चल रहे माली मीठे सुरोंसे गाय गाय जल सींच रहे ॥

यह शोभा बन उपबनकी निरख हरष प्रभु सब समेत मथुरा पुरीमें पैठे वह पुरी कैसी है कि जिसके चहुंओर ताबेको कोट औ पक्की चुआन चौड़ी खाई स्फटिकके चारो फाटक तिनमें अस्टधाती कि वाड़ कंचन खचित लगे हुए औ नगरमें बरन बरनके राते पीले हरे धौले पंचखने सतखने मन्दिर ऊंच ऐसे कि घटासे बातें कर रहे जिनके सोनेके कलश कलशिवोंकी जोति बिजली सी चमक रही ध्वजा पताका फहराय रहीं जाली झरोखो सो खोंसे धूपको सुगंध आय रही द्वार द्वार पर केलेके खंभ औ सुव

रन कलश सपल्लव भरे धरे हुए तोरन बंदनवार बंधी हुई घर घर बाजन बाज रहे औ एकओर भांति भांतिके मणिमय कंचनके मंदिर राजाके न्यारेही जगमगाय रहे तिनकी शोभा कुछ बरनी नहीं जाती ऐसी जो सुन्दर सुहावनी मथुरा पुरी तिसे श्रीकृष्ण बलदेव ग्वाल बालोंको साथ लिये देखते चले ॥

पड़ी धूम मथुरा नगर, आवत नन्द कुमार।
सुनि धाये पुर लोग सब, गृहको काज बिसार ॥

और जो मथुराकी सुन्दरी। सुनत कान अति आतुर खरी ॥
कहैं परस्पर बचन उचारि। आवत हैं बलभद्र मुरारी ॥
तिन्हें अक्रूर गये हैं लैन। चलहु सखी अब देखहिं नैन ॥
कोऊ खात न्हाततें भजै। गुहत सीस कोऊ उठि तजै ॥
काम केलि पियकी बिसरावे। उलटे भूषण बसन बनावे ॥
जैसेंही तैसें उठि धाईं। कृष्ण दरश देखनको आईं ॥
काज काज डर डार। कोऊ खिरकिन कोऊ अटन पर।
कोऊ खड़ी दुवार। कोउ दौरी गलियन फिरत ॥
ऐसे जहां तहां खड़ि नारी। प्रभुहिं बतावें बांह पसारी।
नील बसन गोरे बलराम। पीतांबर ओढ़े घनश्याम ॥
ये भानजे कंसके दोऊ। इनतें असुरबचा नहीं कोऊ।
सुनत हुती पुरुषारथ जिनकौ। देखहु रूप नैनभरि तिनकौ ॥
पुरब जन्म सुकृतकोऊ कीनौ। सो बिधि यह दरशन फल दीनौ।

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज इसी रीति से सब पुरवासी क्या स्त्री क्या पुरुष अनेक प्रकारकी बातें कह कह दरशन कर मगन होते थे और जिस हाट बाट चौहटेमें हो सब समेत कृष्ण बलराम निकलते थे तहीं अपने अपने कोठों पर खड़े इन पर चोवा चन्दन छिड़क छिड़क आनन्दसे वे फूल बरषावते थे औ ये नगरकी शोभा देख देख ग्वाल बालोंसे यों कहते जाते थे भैया कोई भूलियो मत औ जो कोई भूले तो पिछले

डेरों पर जाइयो इसमें कितनी एक दूर जायके देखते क्या हैं कि कंसके धोबी धोये कपड़ोंकी लादियां ला दे पोटें मोटें लिये मद पिये रंग राते कंस यश गाते नगरके बाहरसे चले आते हैं उन्हें देख श्रीकृष्णचन्द्रने बलदेवजीसे कहा कि भैया इनके सब चीर छीन लीजिये औ आप पहर ग्वाल बालोंको पहराय बचे सो लुटाय दीजिये भाईको यों सुनाय सब समेत धोबियोंके पास जाय हरि बोले॥

हमकों उज्वल कपरा देहु। राजहि मिलि आवे फिर लेहु॥
जो पहिरावनि नृपसों पैहैं। तामेंतें कछु तुमकों दैहैं।

इतनी बातके सुनतेही तिनमेंसे जो बड़ा धोबी था सो हंसकर कहने लगा॥

राखैं घरी बनाय ह्वै आवौ नृपद्वार लों।
तब लीजो पट आय जो चाहो सो दीजोयो॥

बन बन फिरत चरावत गैया। अहिर जाति कामरी उढ़ैया॥
नटको भेष बनायके आये। नृप अम्बर पहरन मन भाये॥
जुरिकै चले नृपतिके पास। पहिरावनि लेबेकी आस॥
नेक आस जीबनकी जोऊ। खोवन चहत अबहिं पुनि सोऊ॥

यह बात धोबीकी सुनकर हरिने फिर मुसकुराय कहा कि हम तो सूधी चालसे मांगते हैं तुम उलटी क्यों समझते हो कपड़े देनेसे कुछ तुम्हारा न बिगड़ेगा बरन यश लाभ होगा यह बचन सुन रजक झुंझलाकर बोला राजाके वागे पहरनेका मुह तो देखा मेरे आगेसे जा नहीं अभी मारडालता हूं इतनी बातके सुनतेही क्रोध कर श्रीकृष्णचन्द्रने तिरछा कर एक हाथ मारा कि तिसका शिर भुट्टासा उड़ गया तब जितने उसके साथी औ टहलुए थे सबके सब पोटें मोटें ला दियां छोड़ अपना जीव ले भाजे औ कंसके पास जा पुकारे यहां श्रीकृष्णजीने सब कपड़े ले लिये औ आप पहन भाईको पहराय ग्वाल बालोंको बांट रहे

से। लटाय दिये तिस समै ग्वालबाल अति प्रसन्न हो हो लगे उलट पलटे बस्त्र पहरने॥

कटि कस पग पहरे झगा, सुथनमें खें बांह।
बनन भेद जाने नहीं, हंसत कृष्ण मन मांह॥

जो वहांसे आगे बढ़े तों एक सुजीने आय दण्डवत कर खड़े होय करजोड़के कहा महाराज मैं कहनेको तो कंसका सेवक कहलाता हूं पर मनसे सदा आपहीका गुण गाता हूं दया कर कहिये तो बागे पहराऊं जिससे तुम्हारा दास कहाऊं॥

इतनी बात उसके मुखसे निकलतेही अंतरजामी श्रीकृष्णचन्द्रने तिसे अपना भक्त जान निकट बुलायके कहा तू भले समै आया अच्छे बसन पहराय दे तबतो उसने झटपटही खोल उधेड़ कतर छांटसो कर ठीक ठाक बनाय चुन चुन राम कृष्ण समेत सबको बागे पहराय दिये उसकाल नंदलाल तिसे भक्ति देख साथ ले आगे चले॥

तहां सुदामा माली आयो। आदर कर कर अपने कर लायो।
सबहीकों माला पहराई। मालीके घर भई बधाई॥ इति॥

४३ अध्याय॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि पृथ्वीनाथ मालीकी लगन देख मगन हो श्रीकृष्णचन्द्र उसे भक्तिपदारथ दे वहांसे आगे जाय देखें तो सांही गलीमें एक कुबड़ी केशर चंदनसे कटोरियां भरे थालीके बीच धरे लिये हाथमें खड़ी है उससे हरिने पूछा तू कौन है औ यह कहां ले चली है वह बोली दीन दयाल मैं कंसकी दासी हूं मेरा नाम है कुबजा नित्य बटन घिस कंसको लगाती हूं औ मनसे तुम्हारे गुन गाती हूं तिसीके प्रतापसे आज आपका दरशन पाय जन्म सार्थक किया औ नैनका फल लिया अब दासीका मनोरथ यह है जो प्रभुको आज पाऊं तो चंदन अपने हाथों चढ़ाऊं॥

उसको अति भक्ति देख हरिने कहा जो तेरी इच्छा तो प्रसन्नता

है तो लगा इतना बचन सुनतेही कुबजाने बड़े रावचावसे चित लगाय जब राम कृष्णको चंदन चरचा तब श्रीकृष्णचंदने उसके मनकी लाग देख दयाकर पांव पर पांव धर दो अंगुली ठोड़ीके तले लगाय उचकाय विसे सीधा किया हरिका हाथ लगतेही वह महासुन्दरी हुई औ निपट विनती कर प्रभुसे कहने लगी कि कृपानाथ जो आपने कृपाकर इस दासीको देह सुधी की तोहीं दयाकर अब चलके घर पवित्र कीजे औ बिश्राम ले दासीको सुख दीजे यह सुन हरि उसका हाथ पकड़ मुसकुरायके कहने लगे॥

तैं श्रम दूर हमारो कियौ। मिलकै शीतल चंदन दियौ॥
रूप शील गुण सुन्दरि नीकी। तासों प्रीति निरन्तर जीकी॥
आय मिलोंगो कंसहि मारि। यों कह आगे चले मुरारि।

औ कुब्जा अपने घर जाय केशर चन्दनसे चौक पुराय हरिके मिलनेकी आश मनमें रख मंगलाचार करने लगी॥

आवें तहां मथुराकी नारी। करैं अचंभो कहै निहारि॥
धनि धनि कुबजा तेरो भाग। जाको बिधना दियो सुहाग॥
ऐसो कहा कठिन तप कियौ। गोपीनाथ भेट भुज लियौ॥
हम नीके नहिं देखे हरी। तोकों मिले प्रीति अति करी॥
ऐसे तहां कहत सब नारि। मथुरा देखत फिरत मुरारि॥

इस बीच नगर देखते देखते सब समेत प्रभु धनुष पौर पर जा पहुंचे इन्हें अपने रगराते माते आते देखतेही पौरिये रिसायके बोले इधर किधर चले आते हो गंवार दूर खड़े रहो यह है राजद्वार द्वारपालोंकी बात सुनी अनसुनीकर हरि सब समेत दरराने चले गये यहा वहां नौत ताड़ लंबा अति मोटा भारी महादेव का धनुष धरा था जातेही झट उठाय चढ़ाय सहज सुभावही खैंच यों तोड़डाला कि यों हाथी गांडा तोड़ता है॥

इसमें सब रखवाले कंसके बिठाये धनुषकी चौकी देते थे चढ़ आये प्रभुसे उन्हेंभी मार गिराया तिस समै पुरवासी तो यह च

चि देख बिचार कर निशंक हो आपसमें यों कहने लगे कि देखो राजाने घर बैठे अपनी मृत्यु आप बुलाई है इन दोनोंके हाथसे अब जीता न बचेगा औ धनुष टूटनेका अति शब्द सुन कंस भय खाय अपने लोगोंसे पूछने लगा कि यह महाशब्द काहेका हुआ इस बीच कितने एक लोग राजाके जो दूर खड़े देखते थे वे मूंड़ फिकारे यों जा पुकारे कि महाराजकी दुहाई राम कृष्णने आय नगरमे बड़ी धूम मचाई शिवका धनुष तोड़ सब रखवालोंको मारडाला॥

इतनी बातके सुनतेही कंसने बहुतसे योधाओंको बुलाके कहा तुम इनके साथ जा औ औ कृष्ण बलदेवको छल बल कर अभी मार आओ इतना बचन कंसके मुखसे निकलतेही ये अपने अस्त्र शस्त्र ले वहां गये जहां वे दोनों भाई खड़े थे इन्होंने विन्हें ज्यों ललकारा त्यों विन्होंने इन सबकोभी आय मारडाला जब हरिने देखा कि यहां कंसका सेवक अब कोई नहीं रहा तब बलराम जीसे कहा कि भाई हमें बड़ी बेर हुई डेरेपर चला चाहिये क्यों कि बाबा नंद हमारी बाट देख भावना करते होयंगे यों कह सब ग्वालबालोंको साथ ले प्रभु बलराम समेत चलकर वहां आये जहां डेरे थे आतेही नंदमहरसे तो कहा कि पिता हम नगरमें जाय भला कुतूहल देख आये औ गोप ग्वालोंको आपनो बागे दिखलाय॥

तब लखि नन्द कहै समुझाय। कान्ह तुम्हारी टेव न जाय
ब्रज बन नहीं हमारो गांव। यह है कंस राजकी ठांव॥
यहां जिन कछू उपद्रव करो। मेरी सीख पुत मन धरो॥

जब नन्दरायजी ऐसे समझाय चुके तब नन्दलाल बड़े लाड़से बोले कि पिता भूख लगी है जो हमारी माताने खानेको साथ कर दिया है सो दीजिये इतनी बातके सुनतेही उन्होंने जो पदारथ खानेका साथ आया था सो निकाल दिया कृष्ण बलदेवने लै

ग्वाल बालोंके साथ मिलकर खाय लिया इतनी कथा कह श्रीशु कदेवमुनि बोले कि महाराज इधर तो ये आय परमानन्दसे ब्या लूकर सोये औ उधर श्रीकृष्णकी बातें सुन सुन कंसके चित्तमें अति चिंता हुई तो न उसे बैठे चैन था न खड़े मनही मन कुढ़ ता था अपने पीर किसीसे न कहता था कहा है।

जैसे काठहि घुनखात है, कोऊ न जाने पीर।
त्यों चिंता चितमे भये बुधि बल घटत शरीर॥

निदान अति घबराया तब मन्दिरमें जाय सेज पर सोया पर उसे मारे डरके नींद न आई॥

तीन पहर निश जागत गई, लागी पलक नींद छिन भई॥
तब सपनौ देख्यौ मन माह, फिरै सीसविन धडकी छांह॥
कबहूं नगन रेतमें न्हाय, धावै गदहा चढ़ विष खाय॥
बसे मसान भूत संग लिये, रक्त फूलकी माला हिये॥
बरत रुख देखै चहुं ओर, तिन पर बैठे बाल किशोर॥

महाराज जब कंसने ऐसा सुपना देखा तब तो वह अति व्याकुल हो चौंक पड़ा औ शोच बिचार करता उठकर बाहर आया अप ने मंत्रियोंको बुलाय बोला तुम अभी जाओ रङ्गभूमिको झड़वाय छिड़कवाय संवारो और नन्द उपनन्द समेत सब ब्रजबासियोंको औ वसुदेव आदि यदुबंशियोंको रङ्गभूमिमें बुलाय बिठाओ औ सब देश देशके जो राजो आये हैं तिन्हंभी इतनेमें मैंभी आता हूं कंसकी आज्ञा पाय मंत्री रङ्गभूमिमें आये उसे झड़वाय छिड़क वाय तहां पाटम्बर छाय बिछाय ध्वजा पताका तोरन बंदनवार बंधवाय अनेक अनेक भांतिके बाजे बजवाय सबको बुलाय भेजा वे आये औ अपने अपने मञ्चपर जाय जाय बैठा इस बीच राजा कंसभी अति अभिमान भरा अपने मचान पर आय बैठा उसकाल देवता बिमानोंमें बैठे आकाशसे देखने लगे इति॥

५५ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराजभोरही जब नन्द उपनन्दआदि सब बड़े बड़े गोप रङ्गभूमिकी सभामें गये तब श्रीकृष्णचन्द्रजीने बलदेवजीसे कहा कि भाई सब गोप आगे गये अब बिलम्ब न करिये शीघ्र ग्वाल बाल सखाओंके साथ ले रङ्गभूमि देखने चलिये॥

इतनी बातके सुनतेही बलरामजी उठ खडेहुए औ ग्वालबाल सखायोंसे कहा कि भाइयो चलो रङ्गभूमिकी रचना देख आवें यह बचन सुनतेही तुरंत सब साथ हो लिये निदान श्रीकृष्ण बलराम नटवर भेष किये ग्वाल बाल सखायोंको साथ लिये चले चले रङ्गभूमिकी पौर पर आय खड़े हुए जहां दश सहस्र हाथियोंका बलवाला मातवाला गज कुबलया खड़ा झूमता था॥

देखि मतङ्ग द्वार मतवारौ, गजपालहि बलराम पुकारौ॥
सुनो महावत बात हमारी, लेहु द्वारतें गज तुम टारी॥
जान देहु हमको नृप पाश, नातरु ह्वै है गजकौ नाश॥
कहे देत नहिं दोष हमारौ, मत जानै हरिकौं तूं बारौ॥

ये त्रिभुवन पति हैं दुष्टोंको मार भूमिका भार उतानेको आये हैं यह सुन महावत क्रोधकर बोला मैं जानता हूं गौ चरायिके त्रिबुबन पति भये हैं इसीसे यहां आय बड़े सूरकी भांति अड़े खड़े हैं धनुषका तोडना न समझियो मेरा हाथी दश सहस्र हाथियोंका बल रखता है जब तक इस्से न लडोगे तबतक भीतर न जाने पाओगे तुमने तो बहुत बली मारे हैं पर आज इसके हाथसे बचेगे तब मैं जानूंगा कि तुम बड़े बली हो॥

तबै कोपि हलधर कहैपा, सुन रे मूढ़ कुजात।
गज समेत पटकौं अबहि, मुखसंभारि कहु बात॥
नेकुन लगि है बार, हाथी मरि जै है अबहि॥
तोसों कहत पुकार, अजहु माक्क मेरौ कहैपा॥

इतनी बातके सुनतेही झुंझलाकर गजपालने गज पेला जों वह बलदेवजी पर टूटा तों इन्होंने हाथ घुमाय एक थपेरा ऐसा

मारा कि वह सूंड़ सकोड़ चिंघाड़ मार पीछे हटा यह चरित्र देख कंसके बड़े बड़े योधा जो खड़े देखते थे सो अपने जियोंमें हारमान मनहीं मन कहने लगे कि इन महाबलवानोंसे कौन जीत सकेगा औ महावतभी हाथीको पीछे हटा जान अति भय मान जीमें बिचार करने लगा कि जो ये बालक न मारे जांय तो कंसभी मुझे जीता न छोड़ेगा यों सोच समझ उसने फिर अंकुश मार हाथीको तत्ता किया औ इन दोनों भाईयों पर हूल दिया उसने आतेही सूंडसे हरिको पकड़ पछाड़ झुनझलाय जों दांतोंसे दबाया तों प्रभु सूक्ष्म शरीर बनाय दांतोंके बीच बच रहे।

हरपि उठे तिहि काल सब, सुर मुनि पुर नर नारि।
दहुं दसन बिच ह्वै कढ़े, बल निधि प्रभु दै तारि॥
उठे गजहिके साथ, बहुरि ब्यालहीं हांक दै।
सुरतहिं भये सनाथ, देखि चरित्र सब श्यामको॥
हांकसुनत अति कोप बढ़ायौ, झटकि सुण्ड बहु रोंगजधायौ॥
रहे सदुर तरदेव विमुरारि, गये जानि गजनर हैपा निहारि।
पाछें प्रगट फेर हरि टेरे, बलदाऊ आगेतों घेरे।
लागे गजहिं खिलावन दोऊ, भैचक रहे देख सब लोऊ॥

महाराज उसे कभी बलराम सुण्ड पकड़ खैंचते थे कभी श्याम पूछ पकड़ और वह इन्हें पकड़नेको आता था तब ये अलग हो जाते थे कितनी एक बेरतक उससे ऐसे खेलते रहे जैसे बछड़ोंके साथ बालकपनमें खेलते थे निदान हरिने पूंछ पकड़ फिराय उसे दे पटका और मारे घूंसोंके मार डाला दांत उखाड़ लिये तब उसके मुहसे लोहू नदीकी भांति बह निकला हाथीके मरतेही महावत ललकार कर आया प्रभुने उसेभी हाथीके पांवतले झट मार गिराया औ हंसते हंसते दोनों भाई नटवर भेष किये एक एक दांत हाथीका हाथोंमें लिये रङ्गभूमिके बीच जा खड़े हुए उसकाल नन्दलालको जिन जिनने जिस जिस भावसे देखा

इस उसको जिसी जिसी भावसे हष्ट आये मल्लोंने मल्ल माना रा
जाओंने राजा जाना देवताओंने अपना प्रभु बूझा ग्वालबालोंने
सखा नन्द उपनन्दने बालक समझा औ पुरकी युवतियोंने रूप
निधान औ कंसादिक राक्षसोंके काल समान देखा महाराज इन
को निहारतेही कंस अति भयमान हो पुकारा अरे मल्लो इन्हें
पछाड़ मारो कै मेरे आगेसे टारो॥

इतनी बात जों कंसके मुहसे निकली तों सब मल्ल गुरु सुत चेले
संग लिये बरन बरनके भेष किये ताल ठोक ठोक भिड़नेको श्री
कृष्ण बलरामके चारोंओर घिर आये जैसे वे आये तैसे येभी सं
भल खड़े हुए तब उनमेंसे इनकी ओर देख चतुराई कर चाणूर
बोला सुनो आज हमारे राजा कुछ उदास हैं इसी जी बहलाने
को तुम्हारा युद्ध देखा चाहते हैं क्योंकि तुमने बनमें रह सब
विद्या सीखी है और किसी बातका मनमें सोच न कीजे हमारे
साथ मल्लयुद्ध कर अपने राजाको सुख दीजे॥

श्रीकृष्ण बोले राजाजीने बड़ी दयाकर हमें बुलाया है आज ह
मसे क्या सरैगा इनका काज तुम अति बली गुनवान हम बालक
अजान तुमसे हाथ कैसे मिलावें कहा है व्याह बैर औ प्रीति समा
नसे कीजे पर राजाजीसे कुछ हमारा बस नहीं चलता इससे तु
म्हारा कहा मानते हैं हमें बचा लीजो बलकर पटक न दीजो
अब हमें तुम्हें उचित है जिस्से धर्म रहे सो कीजिये औ मिलकर
अपने राजाको सुख दीजिये॥

सुनि चाणुर कहै भय खाय, तुम्हरी गति जानी नहिं जाय॥
तुम बालक मानुष नहिं दोऊ, कौने कपट बली हौ कोऊ॥
खेलत धनुष खण्ड द्वै करो, मारो तुरत कुबलया तरो॥
तुमसों लरे हानि नहिं होई, ये बातें जानें सब कोई। इति॥

४५ अध्याय।

श्रीशुकदेवमनि बोले कि पृथ्वीनाथ ऐसे कितनी एक बातें कर

ताल ठोक चाणूर तो श्रीकृष्णके सोंहीं हुआ औ मुष्टिक बलराम जीसे आय भिड़ा इनसे उनसे मल्लयुद्ध होने लगा॥

सिरसों सिर भुजसों भुजा। दृष्ट दृष्टसों जोरि।
चरण चरण गहि झपटकैं। लपटत झपटत झपट झकोरि॥

उसकाल सब लोग इन्हें उन्हें देख देख आपसमें कहने लगे कि भाइयो इस सभामें अति अनीति होती है देखो कहां ये बालक रूप निधान कहां ये सबल मल्ल वज्रसमान जो बरजें तो कंस रिसाय नहिं बरजें तो धर्म न साथ इससे अब यहां रहना उचित नहीं क्योंकि हमारा कुछ बश नहीं चलता॥

महाराज इधर तो ये सब लोग यों कहते थे औ उधर श्री कृष्ण बलराम मल्लोंसे मल्लयुद्ध करते थे निदान इन दोनों भाइयों ने मल्लोंको पछाड़ मारा तिनके मरतेही सब मल्ल आय टूटे प्रभुने पलभरमें तिन्हेंभी मार गिराया तिस समें हरिभक्त तो प्रसन्न हो बाजन बजाय बजाय जैजैकार करने लगे औ देवता आकाशसे अपने बिमानोंमें बैठ यश गाय गाय फूल बरषावने और कंस अति दुख पाय व्याकुल हो रिसाय अपने लोगोंसे कहने लगा अरे बाजे क्यों बजाते हो तुम्हें क्या कृष्णकी जीत भाती है॥

यों कह बोला ये दोनों बालक बड़े चंचल हैं इन्हें पकड़ बांध सभासे बाहर ले जाओ औ देवकी समेत उग्रसेन बसुदेव कपटी को पकड़ लाओ पहले उन्हें मार पीछे इन दोनोंकोभी मारडालो इतना बचन कंसके मुखसे निकलतेही भक्तोंके हितकारी मुरारि सब असुरोंको छिणभरमें मारि उछलके वहां जा चढ़े जहां अति ऊंचे मंचपर झिलम पहने टोप दिये फरी खांड़ा लिये बड़े अभिमानसे कंस बैठा था वह इनको काल समान निकट देखतेही भय खाय उठ खड़ा हुआ औ लगा थर थर कांपने॥

मनसे तो चाहा कि भागूं पर मारे लाजके भाग न सका फरी खांड़ा संभाल,लगा चोट चलान उसकाल नन्दलाल अपनी घात

लगाये उसका चोट बचाते थे और सुर नर मुनि गंधर्व यह कहा युद्ध देख देख भयमान हो यों पुकारते थे हेनाथ इस दुष्टको बेग मारो कितनी एक बेरतक मञ्चपर युद्ध रहा निदान प्रभुने सबको दुखित जान उसके केश पकड़ मञ्चसे नीचे पटका औ ऊपरसे आपभी कूदे कि उसका जीव घटसे निकल सटका तब सब सभाके लोग पुकारे श्रीकृष्णचन्द्रने कंसको मारा यह शब्द सुन सुर नर मुनि सबको अति आनन्द हुआ ॥

करि अस्तुति पुनि पुनि हरष, बरष सुमन सुर वृन्द ।
मुदित बजावत दुंदभी, कहि जै जै नन्द नन्द ॥
मथुरापुर नर नारि, अति प्रफुलित सबको हियो ।
मनहुं कुमुद बन चारु, विकसित हरि शशिमुख निरखि ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि धर्मावतार कंसके मरतेही जो अति बलवान आठ भाई उसके थे सो लड़नेको चढ़ आये प्रभुने उन्हेंभी मार गिराया जब हरिने देखा कि अब यहां राक्षस कोई नहीं रहा तब कंसकी लोथको घसीट यमना तीरपर ले आये औ दोनों भाईयोंने बैठ बिश्राम लिया तिसी दिनसे उस ठौरका नाम बिश्राम घाट हुआ ॥

आगे कंसका मरना सुन कंसकी रानियां औरानियों समेत अति व्याकुल हो रोती पीटती वहां आईं जहां यमुनाके तीर दोनों बीर मृतक लिये बैठे थे औ लगीं अपने पतिका मुख निरख सुख सुमिर सुमिर गुण गाय गाय व्याकुल हो हो पछाड़ खाय खाय मरने कि इस बीच करुणा निधान कान्ह करुणा कर उनके निकट जाय बोले ॥

माईं सुनहु शोक नहिं कीजे । मामाजीको पानी दीजे ॥
सदा न कोउ जीवत रहै । झूठो सो जो अपनो कहै ॥
मता पिता सुत बंधु न कोई । जन्म मरण फिरही फिर होई ॥
जौलौं जासों अनसंद रहै । तौही लौं मिलिकै सुख लहै ॥

महाराज जब श्रीकृष्णचन्द्रने रानियोंको ऐसे समझाया तब विन्होंने वहांसे उठ धीरज धर यमुना तीर पै आ पतिको पानी दिया औ आप प्रभुने अपने हाथ कंसको आग दे उसकी गति की इति ॥

४६ अध्याय।

श्रीशुकदेवमुनि बोले कि हे राजा रानियां तो यौरानियों समेत वहांसे न्हाय धोय रोय रोजमन्दिरको गईं औ श्रीकृष्ण बलराम बसुदेव देवकीके पास आय उनके हाथ पांवकी हथकड़ियां बेड़ियां काट दण्डवत कर हाथ जोड़ सन्मुख खड़े हुए तिस समै प्रभुका रूप देख बसुदेव देवकीको ज्ञान हुआ तो उन्होंं अपने जीमें निश्चै कर जाना कि य दोनों बिधाता हैं असुरोंको मार भूमिका भार उतारनेको संसारमें औतार ले आये हैं॥

जब वसुदेव देवकीने यों जीमें जाना तब अंतरजामी हरिने अपनी माया फैलाय दी उसने उनको वह मति हर ली फिर तो विन्होंने इन्हें पुत्र कर समझा कि इतनेमें श्रीकृष्णचन्द्र अति दीनता कर बोले॥

तुमबकु दिबसे लहैया दुखभारी, करत रहे अति सुरतहमारि॥

इसमें हमारा कुछ अपराध नहीं क्योंकि जबसे आप हमें गोकुलमें नन्दके यहां रख आये तबसे परबश थे हमारा बश न था पर मनमें सदा यह आता था कि जिसके गर्भमें दश महीने रह जन्म लिया विसे ना कभी कुछ सुख दिया ना हमहींने माता पिताका सुख देखा वृथा जन्म पराये यहां खोया विन्होंने हमारे लिये अति बिपति सही हमसे कुछ विनकी सेवा न भई संसारमें सामर्थी वेई हैं जो मा बापकी सेवा करते हैं हम विनके ऋणी रहे टहल न कर सके॥

पृथ्वीनाथ जब श्रीकृष्णजीने अपने मनका खेद यों कह सुनाया तब अति आनन्द कर इन दोनोंने इन दोनोंको हित कर कंठ लगाया औ रसुख मान पिछला दुख सब गंवाया ऐसे माता

पिताको सुख दे दोनों भाई वहांसे चले चले उग्रसेनके पास आ ये और हाथ जोड़ कर बोले॥

नानाजू अब कीजे राज, शुभ नक्षत्र नीकौ दिन आज॥

इतना हरि मुखसे निकलतेही राजा उग्रसेन उठकर श्री श्री कृष्णचन्द्रके पाओं पर गिर कहने लगे कि कृपानाथ मेरी बिनती सुन लीजिये जैसे आपने सब असुरों समेत कंस महादुष्टको मार भक्तोंको सुख दिया तैसेहीं सिंहासन पै बैठ अब मधुपुरीका राज कर प्रजा पालन कीजिये प्रभु बोले महाराज यदुबंशियोंको राजका अधिकार नहीं इस बातको सब कोई जानता है जब राजा ययाती बूढ़े हुए तब अपने पुत्र यदुको उन्होंने बुलाकर कहा कि अपनी तरुण अवस्था मुझे दे औ मेरा बुढ़ापा तू ले यह सुन उसने अपने जीमें बिचारा कि जा मैं पिताको युवा अवस्था दूंगा तो यह तरुण हो भोग करैगा इस्में मुझे पाप होगा इससे नहीं करनाहीं भला है यों शोच समझके उसने कहा कि पिता यह तो मुझसे न हो सकेगा इतनी बातके सुनतेही राजा ययातीने क्रोधकर यदुको शाप दिया कि जा तेरे बंशमें राजा कोई न होगा॥

इस बीच पुरु नाम उनका छोटा बेटा सन्मुख आ हाथ जोड़ बोला पिता अपनी वृद्ध अवस्था मुझे दो औ मेरी तरुणाई तुम लो यह देह किसी कामकी नहीं जो आपके काम आवै तो इस्से उत्तम क्या है जब पुरुने यों कहा तब राजा ययाती प्रसन्न हो अपनी वृद्ध अवस्था दे उसकी युवा अवस्था ले बोले कि तेरे कुलमें राजगादी रहेगी इससे नानाजी हम यदुबंशी हैं हमें राज करना उचित नहीं॥

करौ बैठ तुम राज, दूर करहु संदेह सब।
हम करि हैं सब काज, जो आयसु दैहौ हमें॥

जो न मानि है आन तुम्हारो, ताहि दण्ड करि है हम भारी॥

और कछू चित शोच न कीजै, नीति सहित परजहि सुख दीजै॥
यादव जिते कंसके त्रास, नगर छाड़िकै गये प्रवास॥
तिनकौ अब कर खोज मङ्गाओ, सुख दै मथुरा मांझ बसाओ॥
बिप्र धेनु सुर पूजन कीजै, इनकी रक्षामें चित दीजै॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवमुनि बोले कि धर्मावतार महाराराधिराज भक्त हितकारी श्रीकृष्णचन्द्रने उग्रसेनको अपना भक्त जान ऐसे समझाय सिंहासन पर बिठाय राज तिलक दिया औ छत्र फिरवाय दोनों भाइयोंने अपने हाथों चंवर किया॥

उसकाल सब नगरके वासी अति आनन्दमें मगन हो धन्य धन्य कहने लगे औ देवता फूल बरषावने महाराज यों उग्रसेनको राजपाट पर बिठाय दोनों भाई बहुतसे वस्त्र आभूषण अपने साथ लिवायें वहांसे चले चले नन्दरायजीके पास आये औ सन्मुख हाथ जोड़ खड़े हो अति दीनता कर बोले हम तुम्हारी क्या बड़ाई करें जो सहस्र जीभ होयं तोभी तुम्हारे गुनका बखान हमसे न हो सके तुमने हमें अति प्रीति कर अपने पुत्रकी भांति पाला सब लाड़ प्यार किया औ यशोदा मैयाभी बड़ा स्नेह करतीं अपना हित हमहीं पर रखतीं सदा निज पुत्र समान जानतीं कभीं मनसेभी हमें पराया कर न मानतीं॥

ऐसे कह फिर श्रीकृष्णचन्द बोले कि हे पिता तुम यह बात सुन कर कुछ बुरा मत मानो हम अपने ममकी बात कहते हैं कि माता पिता तो तुमही हो कहेङ्गे पर अब कुछ दिन मथुरामें रहेंगे अपने जात भाइयोंको देख यदुकुलकी उतपत्ति सुनेंगे औ अपने माता पितासे मिल उन्हें सुख देंगे क्योंकि विन्होंने हमारे लिये बड़ा दुख सहा है जो हमें तुम्हारे वहां न पहुंचा आते तौ वे दुख पाते इतना कह वस्त्र आभूषण नन्दमहरके आगे धर प्रभुने निरमोही हो कहा॥

मैयासों पालागन कहियो, हम पै प्रेम करें तुम रहियो।

इतनी बात श्रीकृष्णके मुखसे निकलतेही नन्दराय तो अति उदास हो लगे लम्बी सांसें लेने औ ग्वालबाल बिचार कर मनही मन यों कहने कि यह अचम्भेकी बात कहते हैं इससे ऐसा समझमें आता है कि अब ये कपट कर जाया चाहते हैं नहीं तो ऐसे निठुर बचन न कहते महाराज निदान उनमेंसे सुदामा नाम सखा बोला भैया कन्हैया अब मथुरामें तेरा क्या काम है जो निठुराई कर पिताको छोड़ यहां रहता है भला किया कंसको मारा सब काम संवारा अब नंदके साथ हो लीजिये औ बृन्दाबनमें चल राज कीजिये यहांका राज देख मनमें मत ललचाओ वहांका सा सुख न पाओगे॥

सुनो राज देख मूरख भूलते हैं औ हाथी घोड़े देख फूलते हैं तुम बृन्दाबन छोड़ कहीं मत रहो वहां सदा बसंत ऋतु रहतीहै सघन बन औ यमुनाकी शोभा मनसे कभी नहीं बिसरती भाई जो वह सुख छोड़ हमारा कहा ना मान माता पिताकी माया तज यहां रहोगे तो इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई होगी उग्रसेनकी सेवा करोगे औ रात दिन चिंतामें रहोगे जिसे तुमने राज दिया तिसीके आधीन होना होगा यह अपमान कैसे सहा जायगा इससे अब उत्तम यही है कि नन्दरायको दुख ना दीजे इनके साथ हो लीजे॥

ब्रज बन नदी बिहार बिचारो। गायनको मनतें न बिसारो॥
नहीं छांड़ि हैं हम ब्रजनाथ। चलि हैं सबै तिहारे साथ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवमुनिने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज ऐसे कितनी एक बातें कह दश बीस एक सखा श्रीकृष्ण बलरामजीके साथ रहे औ तिन्होंने नन्दरायसे बुझाकर कहा कि आप सबको ले निसंदेह आगे बढ़िये पीछेसे हमभी इन्हें साथ लिये चले आते हैं इतनी बातके सुनतेही हुए॥

ब्याकुल सबै अहीर, मानहुं पन्नगके डसे।

हरि मुख लखत अधीर, ठाढ़े काढ़े चित्रसे॥

इस समै बलदेवजी नन्दरायको अति दुखित देख समझाने लगे कि पिता तुम इतना दुख क्यों पाते हो थोड़े एक दिनोंमें यहांका काज कर हमभी आते हैं आपको आगे इस लिये बिदा करते हैं कि माता हमारी अकेली व्याकुल होती होंगी तुम्हारे गयेसे तिन्हें कुछ धीरज होगा नन्दजी बोले कि बेटा एकबार तुम मेरे साथ चलो फिर मिलकर चले आइयो॥

ऐसे कह अति बिकल हो, रहे नन्द गहि पाय॥
भई छीन दुति मन्द मति, नैनन जल न रखाय॥

महाराज जब माया रहित श्रीकृष्णचन्द्रजीने ग्वाल बालों समेत नन्दमहरको महाव्याकुल देखा तब मनमें बिचारा कि ये मुजसे बिछड़ेंगे तो जीते न बचेंगे तोंही इन्होंने अपनी उस मायाको छोड़ा जिस ने सारे संसारको भुला रक्खा है उसने आतेही नन्दजीको सब समेत अज्ञान किया फिर प्रभुबोले कि पिता तुम इतना क्यों पछताते हो पहले यही बिचारो जो मथुरा औ बृन्दाबनमें अंतरही क्या है तुमसे हम कहीं दूर तो नहीं जाते जो इतना दुख पाते हो बृन्दाबनके लोग दुखी होंगे इस लिय तुम्हें आगे भेजते हैं॥

जद ऐसे प्रभुने नन्दमहरको समझाया तद वे धीरजधर हाथ जोड़ बोले प्रभु जो तुम्हारे ही जीमें यों आया तो मेरा क्या बश है जाता हूं तुम्हारा कहा टल नहीं सकता इतना बचन नन्दजीके मुखसे निकलतेही हरिने सब गोप ग्वाल बालों समेत नन्दरायको तो बृन्दाबन बिदा किया औ आप कई एक सखाओं समेत दोनों भाई मथुरामें रहे उसकाल नन्द सहित गोप ग्वाल॥

चले सकल मग शोचत भारी। हारे सबंसु मनहुं जुआरी॥
काहु सुधि काहू सुधी नाही। लटपट चरण परत मग नाहीं॥
जात बृन्दावन देखत मधुबन। बिरहबिथा बाढ़ी व्याकुल तन॥

इसी रीतसे जों तों वृन्दाबन पहुंचे इनका आना सुनतेही यशोदा रानी अति अकुलाकर दौड़ी आई औ राम कृष्णको न देख महा व्याकुल हो नन्दजीसे कहने लगीं॥

अहो कंत सुत कहां गंवाये। बसन आभूषण लीने आये॥
कञ्चन फेंक काच घर राख्यौ। अमृत छांड़ि मुढ़ विष चाख्यौ॥
पारस पाय अंध जों डारै। फिरिगुण सुनहिं कपार हिमारै॥

ऐसे तुमनेभी पुत्र गंवाय औ बसन आभूषण उसके पलटे ले आये अब उन बिन धन ले क्या करोगे हे मूरख कंत जिनके पलक ओट भये छाती फटे कहो उन बिन दिन कैसे कटैं जब उन्होंने तुमसे बिछड़नेको कहा तब तुम्हारा हिया कैसे रहा॥

इतनी बात सुन नन्दजीने बड़ा दुख पाया औ नीचा शीश कर यह बचन सुनाया कि सच है ये बस्त्र अलंकार श्रीकृष्णने दिये पर मुझे यह सूध नहीं जो किसने लिये और मैं कृष्णकी बात क्या कहुंगा सुन कर तूभी दुख पावेगी॥

कंस मार मोपे फिर आये। प्रीति हरण कहि बचन सुनाये॥
बसुदेवके पुत्र ले भये। कर मनुहार हमारी गये॥
हों तब महरि अचंभे रहैगा। पोषण भरण हमारो कहैगा।
अबन महरि हरिसों सुत कहिये, ईश्वर जानि भजन करि रहिये॥

वैसे तो हमने पहलेही नारायण जाना था पर माया बश पुत्र कर माना महाराज जद नन्दरायजीने सच सच बातें श्रीकृष्णकी कही कह सुनाईं तिस समै माया बश हो यशोदारानी कभी तो प्रभको अपना पुत्र जान मनही मन पछताय व्याकुल हो हो रोती थीं औ कभी ज्ञान कर ईश्वर जान उनका ध्यान धर गुण गाय गाय मनका खेद खोती थीं औ इसी रीतिसे सब वृन्दाबनबासी क्या स्त्री क्या पुरुष हरिके प्रेम रंग राते अनेक अनेक प्रकारकी बातें करते थे सो मेरी सामर्थ नहीं जो मैं बरणन करूं इससे अब मथुराकी लीला कहता हुं तुम चित दे सुनो॥

कि जब हलधर औ गोविन्द नंदराय को बिदाकर बसुदेव देव कीके पास आये तब उन्होंने इन्हें देख दुख भुलाय ऐसे सुख माना कि जैसे तपी तप कर अपने तपका फल पाय सुख मानै आगे बसुदेवजीने देवकीसे कहा कि कृष्ण बलदेव पराये यहां रहे हैं इन्होंने तिनके साथ खाया पिया है औ अपनी जातका व्यौहारभी नहीं जानते इससे अब उचित है कि पुरोहितको बुलाय पूछें जो वह कहे सो करें देवकी बोली बहुत अच्छा ॥

तब बसुदेवजीने अपने कुल पूज गर्गमुनिजीको बुला भेजा वे आये उनसे अपने इन्होंने मनका संदेह सब कहके पूछा कि महाराज अब हमें क्या करना उचित है सो दया कर कहिये गर्ग मुनि बोले पहले सब जात भाइयोंको नौत बुलाइये पीछे जात कर्म कर राम कृष्णका जनेऊ दीजे ॥

इतना बचन पुरोहितके मुखसे निकलतेही बसुदेवजीने नगरमें नौता भेज सब ब्राह्मण औ यदुवंशियोंको नौत बुलाया वे आये तिन्हें अति आदरमान कर बिठाया ॥

उसकाल पहले तो बसुदेवजीने बिधिसे जात कर्म कर जन्म पत्री लिखवाय दश सहस्र गौ सोनेके सींग तांबेकी पीठ रूपेके खुर समेत पाटम्बर उढ़ाय ब्राह्मणोंको दीं जो श्रीकृष्णके जन्म समै संकल्पी थीं पीछे मंगलाचार करवाय वेदकी बिधिसे सब रीति भांति कर राम कृष्णका यज्ञोपवीत किया औ उन दोनों भाइयोंको कुछ दे विद्या पढ़ानेको भेज दिया ॥

वे चले चले अवंतिकापुरीका एक सान्दीपन नाम ऋषि महापण्डित औ बड़ा ज्ञानवान काशीपुरीमें था उनके यहां आये दण्डवत कर हाथ जोड़ सनमुख खड़े हो अति दीनता कर बोले ॥

हमपर कृपाकर रिषिराय। बिद्या दान देहु मन लाय ॥

महाराज जब श्रीकृष्ण बलरामजीने सान्दीपन ऋषिसे यों दीनता कर कहा तब तो तिन्होंने इन्हें अति प्यारसे अपने घरमें

रक्खा औ लगे बड़ी कृपाकर पढ़ाने कितने एक दिनोंमें वे चार वेद उपवेद छ शास्त्र नौ व्याकरण अठारह पुराण मंत्र तंत्र आगम जोतिष बैदिक कोक संगीत पिंगल पढ़ चौदह विद्या निधान हुए तब एक दिन दोनों भाइयोंने हाथ जोड़ अति बिनती कर गुरुसे कहा कि महाराज कहा है जो अनेक जन्म औतार ले बहुतेरा कुछ दीजिये तौभी विद्याका पलटा न दिया जाय पर आप हमारी शक्ति देख गुरुदक्षिणाकी आज्ञा कोजे तो हम यथा शक्ति दे असीस ले अपने घर जांय॥

इतनी बात श्रीकृष्ण बलरामके मुखसे निकलतेही सान्दीपन ऋषि वहांसे उठ शोच बिचार करता घर भीतर गया औ उसने अपनी स्त्रीसे इनका भेद यों समझाकर कहा कि ये राम कृष्ण जो दोनों बालक हैं सो आदि पुरुष अविनाशी हैं भक्तोंके हेतु अवतार ले भूमिका भार उतारनेको संसारमें आये हैं मैंने इनकी लीला देख यह भेद जाना क्योंकि जो पढ़ पढ़ फिर फिर जन्म लेते हैं सोभी विद्या रूपी सागरकी थाह नहीं पाते औ देखो इस बाल अवस्थासे थोड़ेही दिनोंमें ये ऐसे आगम अपार समुद्रके पार हो गये ये जो किया चाहैं सो पलभरमें कर सकते हैं इतना कह फिर बोले॥

इन पै कहा मांगिये नारि। सुनके सुन्दरि कहै बिचारि॥
मृतक पुत्र मांगो तुम जाय। जो हरि हैं तो दे हैं लाय॥

ऐसे घरमें से बिचार कर सान्दीपन ऋषि स्त्री सहित बाहर आय श्रीकृष्ण बलदेवजीके सन्मुख कर जोड़ दीनता कर बोले महाराज मेरे एक पुत्र था तिसे साथ ले मैं कुटुम्ब समेत एक पर्वमें समुद्र न्हान गया था जो वहां पहुंच कपड़े उतार सब समेत तीरमें न्हाने लगा तो एक सागरकी बड़ी लहर आई तिसमें मेरा पुत्र बह गया सो फिर न निकला किसी मगर मच्छने निगल लिया तिसका दुख मुझे बड़ा है जो आप गुरुदक्षिणा दिया चाहते हैं तो ब

दो सुत ला दीजे औ हमारे मनका दुख दूर कीजे ॥

यह सुन श्रीकृष्ण बलराम गुरुपत्नी औ गुरुको प्रणाम कर रथप र चढ़ उनको पुत्र लानेके निमित्त समुद्रकी ओर चले औ चले चले कितनी एक बेगमें तीरपर जा पहुंचे कि इन्हें क्रोधवान आते देख सागर भयमान हो मनुष शरीर धारण कर बहुतसी भेंट ले नीरसे निकल तीरपर डरता कांपता इनके सोंही आ खड़ा हुआ औ भेंट रख दण्डवत कर हाथ जोड़ शिर निवाय अति बिनती कर बोला ॥

बड़ो भाग प्रभु दरशन दियो। कौन काज इत आवन भयो ॥

श्रीकृष्णचन्द्र बोले हमारे गुरुदेव यहां कुनबे समेत न्हाने आये थे तिनके पुत्रको जो तू तरङ्गसे बहाय ले गया है तिसे ला दे इसी लिये हम यहां आये हैं ॥

सुन समुद्र बोलो सिर नाय। मैं नहिं लीनों वाहि बहाय।
तुम सबहीके गुरु जगदीश। राम रूप बांध्यो हो ईश ॥

तभीसे मैं बहुत डरता हूं औ अपनी मर्यादसे रहता हूं हरि बोले जो तूने नहीं लिया तो यहांसे और कौन उसे ले गया समुद्रने कहा कृपानाथ मैं इसका भेद बताताहूं कि एक शंखासुर नाम असुर शंख रूप मुझमें रहता है सो सब जलचर जीवोंको दुख देता है औ जो कोई तीर पै न्हानेको आता है तिसे पकड़ कर ले जाता है कदाचित वह आपके गुरु सुतको ले गया हो तो मैं नहीं जानता आप भीतर पैठ देखिये ॥

यों सुन कृष्ण धसे मन लाय। मांझ समुंदर पहुंचे जाय ॥
देखतही शंखासुर मारयो। पेट फाड़के बाहर डारयो ॥
तामें गुरूको पुत्र न पायो। पछताने बलभद्र सुनायो ॥

कि भैया हमने इसे बिन काज मारा बलरामजी बोले कुछ चिंता नहीं अब आप इसे धारण कीजे यह सुन हरिने शंखको आयुध किया आगे दोनों भाई वहांसे चले चले यमकी पुरीमें जा पहुंचे

जिसका नाम है संयमनी औ धर्मराज जहांका राजा है॥

इनको देखतेही धर्मराज अपनी गादीसे उठ आगे आय अति आवभगति कर ले गया सिंहासनपर बैठाय पांवधो चरणामृत ले बोला धन्य यह ठौर धन्य अह पुरी जहां आकर प्रभुने दरशन दिआ औ अपने भक्तोंको कृतारथ किया अब कुछ आज्ञा कीजे जो सेवक पुरण करे प्रभुने कहाकि हमारे गुरु पुत्रको ला दे॥

इतना बचन हरिके मुखसे निकलतेही धर्मराज झट जाकर बालकको ले आया और हाथ जोड़ बिनती कर बोला कि कृपानाथ आपकी कृपासे यह बात मैंने पहलेही जानी थी कि आप गुरुसुतके लेनेको आवेंगे इसलिये मैंने यत्नकर रक्खा है इस बालकको आजतक जन्म नहीं दिया महाराज ऐसे कह धर्मराजने बालक हरिको दिया प्रभुने ले लिया औ तुरंत उसे रथपर बैठाय वहांसे चल.कितनि एक बेरमें ला गुरुके सोहीं खड़ा किया औ दोनों भाईयोंने हाथ जोड़के कहा गुरुदेव अब क्या आज्ञा होती है।

इतनी बात सुन औ पुत्रको देख सांदीपन ऋषिने अति प्रसन्न हो श्रीकृष्ण बलरामजीको बहुतसी आशीसें दे कर कहा॥

अब हौं मागों कहा मुरारि, दीनौ मोहि पुत्र सुख मारि॥
अति यश तुमसौ शिष्यहमारौ, कुशल क्षेम अब घरहि पधारौ॥

जबऐसे गुरुने आज्ञाकी तबदोनों भाई बिदा हो दण्डवतकर रथपर बैठ वहांसे चले चले मथुरा पुरीके निकट आय इनका आना सुन राजा उग्रसेन बसुदेव समेत नगर निबासी क्या स्त्री क्या पुरुष सब उठ धाये औ नगरके बाहर आय भेंट कर अति सुख पाय बाजे गाजेसे पाटम्बरके पांवड़े डालते प्रभुको नगरमें ले गये उस काल घर घर मङ्गलाचार होने लगे औ बधाइ बाजने इति॥

४७ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि पृथ्वीनाथ जों श्रीकृष्णचंदने वृन्दावन

की सुरत करी तों मैं सब लीला कहता हूं तुम चित दे सुनो कि एक दिन हरिने बलरामजीसे कहा कि भाई सब वृन्दाबनवासी हमारी सुरत कर अति दुख पाते होंगे क्योंकि जो हमने उन से अवध की थी सो बीत गई इससे अब उचित है कि किसीको वहां भेज दीजे जो जा कर उनका समाधान कर आवै॥

यों भाईसे मता कर हरिने ऊधोको बुलायके कहा कि अहो ऊधो एक तो तुम हमारे बड़े सखा हो दूजे अति चतुर ज्ञानवान औ धीर इसलिये हम तुम्हें वृन्दाबन भेजा चाहते हैं कि तुम जाकर नन्द यशोदा औ गोपियोंको ज्ञान दे उनका समाधान कर आओ औ माताओं रोहिणीको ले आओ ऊधोजीने कहा जो आज्ञा॥

फिर श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि तुम प्रथम नन्द महर औ यशोदाजी को ज्ञान उपजाय उनके मनका मोह मिटाय ऐसे समझाकर कहियो जो वे मुझे निकट जान दुख तजें औ पुत्र भाव छोड़ ईश्वर मान भजें पीछे विन गोपियोंसे कहियो जिन्होंने मेरे काज छोड़ी है लोक वेदकी लाज रात दिन लीला यश गाती हैं औ अवधकी आश किये प्राण मुट्ठीमें लिये हैं कि तुम कंत भाव छोड़ हरिको भगवान जान भजो औ विरह दुख तजो॥

महाराज ऐसे ऊधोको कह दोनों भाइयोंने मिलकर एक पाती लिखी जिसमें नन्द यशोदा समेत गोप ग्वाल बालोंको तो यथा योग दण्डवत प्रणाम आशीरवाद लिखा औ सब व्रजयुवतियोंको योगका उपदेश लिख ऊधोके हाथ दी औ कहा यह पाती तुमही पढ़ सुनाइयो जैसे बने तैसे उन सबको समझाय शीघ्र आइयो॥

इतना संदेह कह प्रभुने निज बस्त्र आभूषण मुकुट पहराय आपनेही रथपर बैठाय ऊधोजीको वृन्दाबन बिदा किया वे रथ हांके कितनी एक बेरमें मथुरासे चले चले वृन्दाबनके निकट जा पहुंचे तो वहां देखते क्या हैं कि सघन सघन कुंजोंके पेड़ों पर भांति भांतिके पंछी मनभावन बोलियां बोल रहे हैं औ जिधर तिधर

धौली पीली भूरी काली गायें घटाली फिरती औ ठौर ठौर गौपी गोप ग्वाल बाल श्रीकृष्ण यश गाय रहे हैं ॥

यह शोभा निरख हरषते औ प्रभुका बिहार स्थल जान प्रणाम करते ऊधोजी ज्यों गांवके खेड़े गये त्यों किसीने दूरसे हरिका रथ पहिचान पास आय इनका नाम पूछ नन्दमहरसे जा कहा कि महाराज श्रीकृष्णका भेष किये उन्हींका रथ लिये कोई ऊधो नाम मथुरासे आया है ॥

इतनी बातके सुनतेही नन्दराय जैसे गोपमण्डलीके बीच अथाई पर बैठे थे तैसेही उठ धाये औ तुरंत ऊधोजीके निकट आये राम कृष्णका सङ्गी जान अति हितकर मिले औ कुशल क्षेम पूछ बड़े आदरमानसे घर लिवाय ले गये पहले पांव धुलवाय आसन बैठनेको दिया पीछे षटरस भोजन बनाय ऊधोजीको पुरुसनईकी जब वे रुचसे भोजन कर चुके तब एक सुथरी उज्ज्वल फेनसी सेज बिछवा दी तिस पर पान खाय जाय उन्होंने पौढ़कर अति सुख पाया औ मारगका श्रम सब गंवाया कितनी एक बेरमें ज्यों ऊधोजी सोके उठे त्यों नन्दमहर उनके पास जा बैठे औ पूछने लगे कि कहो ऊधोजी सूरसेनके पुत्र हमारे परम मित्र बसुदेवजी कुटुम्ब सहित आनन्दसे हैं औ हमसे कैसी प्रीति रखते हैं यों कह फिर बोले ॥

कुशल हमारे सुतकी कहो, जिनके सङ्ग सदा तुम रहो ॥
कबहू वे सुधि करत हमारी, उन बिन दुख पायत हमभारी ॥
सबही सों आवन कह गये, बीति अवध बहुत दिन भये ॥

नित उठ यशोदा दही बिलोय माखन निकाल हरिके लिये रखेती है उसकी औ ब्रजयुवतियोंकी जो उनके प्रेम रङ्गमें रङ्गी हैं सुरत कभू कान्ह करते हैं कै नहीं ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि पृथ्वीनाथ इसी रीतिसे समाचार पूछते पूछते औ श्रीकृष्णचन्द

की पूर्व लीला गाते गाते नन्दरायजी तो प्रेम रस भीजि इतना कह प्रभुका ध्यान धर अवाक हुए कि ॥

महाबली कंसादिक मारे, अब हम काहे कपट दिसारे॥

इस बीच अति व्याकुल हो सुध बुध देहकी बिसारे मन मारे रोती यशोदा रानी ऊधोजीके निकट आय राम कृष्णकी कुशल पूछ बोली कहो ऊधोजी हरि हम बिन वहां कैसे इतने दिन रहे और क्या संदेसा भेजा है कब आय दरशन देंगे इतनी बात की सुनतेही पहले तो ऊधोजीने नन्द यशोदाको श्रीकृष्ण बलरामकी पाती पढ़ सुनाई पीछे समझाकर कहने लगे कि जिन के घरमें भगवानने जन्म लिया औ बाल लीला कर सुख दिया तिनकी महिमा कौन कह सके तुम बड़े भागमान हो क्योंकि जो आदि पुरुष अबिनाशी शिव बिरञ्चिका करता न जिसके मात न पिता न भाई न बन्धु तिन्हें तुम आपना पुत्र जान मानते हो औ सदा उसीके ध्यानमें मन लगाये रहते हो वह तुमसे कब दुर रह सकता है कहा है ॥

सदा समीप प्रेम बश हरी। जिनके हेतु देह जिन धरी॥
जाको बैरी मित्र न कोई। ऊंच नीच कोऊ किन होई॥
जोई भक्ति भजन मन धरे। सोई हरिसों मिल अनुसरे॥

जैसे भृङ्गी कीटको ले जाता है औ अपना रूप बना देता है और जैसे कमलके फूलमें भौंरी मूंद जाती है औ भौंरा रात भर उसके ऊपर गुंजता रहता है तिसे छोड़ और कहीं नहीं जाता तैसेही जो हरिसे हित करता है औ उनका ध्यान धरता है तिसे वेभी आपसा बना लेते हैं औ सदा तिसके पासही रहते हैं॥

यों कह फिर ऊधोजी बोले कि अब तुम हरिको पुत्र करमत जानो ईश्वर कर मानो वे अंतरजामी भक्त हितकारी प्रभु आय दरशन दे तुम्हारा मनोरथ पूरा करेंगे तुम किसी बातकी चिंता न करो॥

महाराज इसी रीतिसे अनेक अनेक प्रकारकी बातें कहते कह तें औ सुनते सुनते जब सब रात बितीत भई औ चार घड़ी पी छली रही तब नन्दरायजीसे ऊधोजीने कहा कि महाराज अब दधि मथनेकी बिरियां हुई जो आपकी आज्ञा पाऊं तो यमुना स्नान करि आऊं नन्दमहर बोले बहुत आच्छा इतना कह वे तो वहां बैठ सोच बिचार करते रहे औ ऊधोजी झट पट रथमें बैठ यमुना तीर पर आये पहले वस्त्र उतार देह शुद्ध करी पीछे नीरके निकट जाय रज शिर चढ़ाय हाथ जोड़ कालिंदीकी अति स्तुति गाय आचमन कर जलमें पैठ औ न्हाय धोय संध्या पूजा तरपणसे निचिंत हो लगे जप करने इसी समै सब ब्रज युवति यांभी उठीं औ अपना अपना घर झाड़ बुहार लीप पोत धूप दीप कर लगीं दधि मथने ।

दधिको मथन मेघसौ गाजे । गावें नूपुरकी धुनि बाजे ।
दधि मथिकै माखन लियौ । कियौ गेहको काम ।
तब सब मिल पानीं चलीं । सुन्दरि ब्रजकी बाम ।

महाराज वे गोपियां श्रीकृष्णके बियोग मद मातियां ऊनकाही यश गातियां अपने अपने मुख लिये प्रीतमका ध्यान किये बा टमें प्रभुकी लीला गाने लगीं ।

एक कहे मदि मिले कन्हाई । एक कहै वे भजे लुकाई ।
पीछेतें पकरी मो बांह वे ठाढ़े हरि बरकी बाह ।
कहत एक गो दोहत देखे । बोली एक भोरही पेखे ।
एक कहे वे धेनु चरावें सुनहु कान दै वेणु बजावें ।
या मारग हम जाय न माई । दान मांगि है कुंवर कन्हाई ।
गागरि फोरि गांठि छोरि है । नैक छितकै चित्त चोरि है ।
है कहुं दूर दौरि आय है । तब हम कहां जानि पाय है ।
ऐसे कहत चलीं ब्रज नारी । कृष्ण बियोग विकल तन भारी ।

इति ४८ अध्याय ।

श्रीशुकदेवमुनि बोले पृथ्वीनाथ जब ऊधोजी जप कर चुके तब नदीसे निकल वस्त्र आभूषण पहन रथमें बैठ जो कालिंदी तीरसे नन्दगेहकी ओर चले तो गोपी जो जल भरनेको निकलीं थीं तिन्होंने रथ दूरसे पंथमें आते देखा देखतेही आपसमें कहने लगीं कि यह रथ किसका चला आता है इसे देखो तब आगे पांव दढ़ा औ यों सुन तिनमेंसे एक गोपी बोली कि सखी कहीं वही कपटी अक्रूर तो न आया होय जिसने श्रीकृष्णचन्द को ले जाय मथुरामें बसाया औ कंसको मरवाया इतना सुन एक औरे उनमेंसे बोली यह विश्वासघाती फिर काहेको आया एक बेरतो हमारे जीवन मूलको ले गया अब क्या जीव लेगा महाराज इसी भांतिकी आपसमें अनेक अनेक बातें कह॥

ठाढ़ी भई तहां ब्रज नारि। शिरतें गागरि धरी उतारि।

इतनेमें जो रथ निकट आया तो गोपियां कुछ एक दूरसे ऊधो जीको देखकर आपसमें कहने लगीं कि सखी यह तो कोई श्याम बरन कमल नैन मुकुट शिर दिये वनमाल हिये पीताम्बर पहरे पीत पट ओढ़े श्रीकृष्णचंद सा रथमें बैठा हमारी ओर देखता चला आता है तब तिनहीं मेंसे एक गोपीने कहा कि सखी यह तो कलसे नन्दके यहां आया है ऊधो इसका नाम है औ श्रीकृष्ण चंदने कुछ संदेसा इसके हाथ कह पठायाहै॥

इतनी बातके सुनतेही गोपियां एकांत ठौर देख सोच सङ्कोच छोड़ दौड़कर ऊधोजीके निकट गईं औ हरिका हित जान दण्डवत कर कुशलक्षेम पूछ हाथ जोड़ रथके चारोंओर घिरके खड़ी हुईं उनका अनुराग देख ऊधोजीभी रथसे उतर पड़े तब सब गोपियां तिन्हें एक पेड़की छायामें बैठाय आपभी चारोंओर घिरके बैठीं औ अति प्यारसे कहने लगीं॥

भली करी ऊधो तुम आये। समाचार माधोके लाये।

सदा समीप कृष्णके रहो। उनका कह्या सन्देसा कहो॥

पठवै मातिवैयतेकै है ।। और नाकाहकी दुधी लेत ॥
सर्वस्व दीनीं उनके हाथ । अरुकै प्राण चरणके साथ ॥
अपने ही स्वारथके भये । सबहीकों अब दुख दै गये ॥

औ जैसे फल हीन तरवरको पंछी छोड़ जाता है तैसेही हरि हमें छोड़ गये हमने उन्हें अपना सर्वस्व दिया तौभी वे हमारे न हुए महाराज जब प्रेममें मगन होय इसी ढबकी बातें बकतथी गोपियोंने कहीं तब ऊधोजी उनके प्रेमकी दृढ़ता देख जो प्रणाम करनेको उठा चाहते थे तोंहीं किसी गोपीने एक भौंरेको फूल पर बैठता देख उसके मिस ऊधोसे कहा ॥

अरे मधुकर तैंने माधवके चरण कमलका रस पिया हैतिसीसे तेरा नाम मधुकर हुआ औ कपटीका मित्र है इसीलिये तुझे तिसनैं अपना दूत कर भेजा है तू हमारे चरण मत परसे क्योंकि हम जाने हैं जितने श्याम बरन हैंतितने सब कपटी हैं जैसा तू है तैसेई हैं श्याम इसे तू हमें मत करे प्रणाम जो तू फूल फूलका रस लेता फिरता है औ किसीका नहीं होता तो वेभी प्रीति कर किसीके नहीं होते ऐसे गोपी कह रही थी कि एक भौंरा और आया तिसे देख ललिता नाम गोपी बोली ॥

अहो भ्रमर तम अलगे रहो । यह तुम जाय मधुपरी कहो ।

वहां कुवजासी पटरानी औ श्रीकृष्णचन्द्र बिराजते हैं कि एक जन्मकी हम क्या कहें तुम्हारी तो जन्म जन्मकी यही चाल है बलि राजाने सर्वस दिया तिसे पाताल पठाया औ सीतासी सती को बिन अपराध घरसे निकला जब उनकी यह दशा की तो हमारी क्या चलि है यों कह फिर सब गोपी मिल हाथ जोड़ ऊधोसे कहने लगीं कि ऊधोजी हम अनाथ हैं श्रीकृष्ण बिन तुम अपने साथ ले चलो श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इतना बचन गोपियोंके मुखसे निकलतेही ऊधोजीने कहा जो संदेसा श्रीकृष्णचन्द्रने लिख भेजा है सो मैं समझाकर कहता हूं तुम चित दे

सुनौ लिखा है तुम जोगकी आस छोड़ भोग करो तुमसे बियोग कभी न होगा औ कहा है निश दिन तुम करती हो मेरा ध्यान दूसरे कोई नहीं है प्रिय मेरे तुम समान॥

इतना कह फिर ऊधोजी बोले जो हैं आदि पुरुष अबिनाशी हरी तिनसे तुमने प्रीति निरंतर करी औ जिन्हें सब कोई अलख अगोचर अभेद बखाने तिन्हें तुमने पृथ्वी पवन पानी तेज आकाशका है जैसे देहमें निवास ऐसे प्रभु तुममें बिराजते हैं पर मायाके गुणसे न्यारे दिखाई देते हैं उनका सुमिरन ध्यान किया करो वे सदा अपने भक्तके बश रहते हैं औ पास रहनेसे होता है ज्ञान ध्यानका नाश इसलिये हरिने किया है दूर जाय के बास औ सुनो यह भी श्रीकृष्णचन्द्रने समझायके कहा है कि तुमसे बेणु बजाय बनमें बुलाया औ जब देखा मदन औ बिरहका प्रकाश तब हमने तुम्हारे साथ मिलकर किया था रास॥

यह तुम ईश्वरता बिसराई। अन्तरध्यान भये यदुराई।

फिर जों तुमने ज्ञान कर ध्यान हरिका मनमें किया तोंहीं तुम्हारे चितकी भक्ति जान प्रभुने आय दरशन दिया महाराज इतना बचन ऊधोजीके मुखसे निकलतेही॥

गोपी तबै कहैं सतराय। सुनी बात अब रह अरगाय॥
ज्ञानयोग बुद्धि हमहिं समावै। ध्यान छोड़ आकाश बतावैं॥
जिनको लीलामें मन रहै। तिनको को नारायण कहै।
बालकपनमें जिन सुख दयो। सो क्यों अलख अगोचर भयो॥
औ सब गुणअद्भुत रूप सरूप। सो क्यों निरगुण होय निरूप।
औ तनमें पिय प्राण हमारे। तो को सुनि है बचन तिहारे॥
एक सखी कहि कहौ बिचारि। ऊधोको कोजे मनुहारि।
इनसों सखी कछु नहिं कहिये। इनके दरशन देख सुख रहिये॥
एक कहति अपराध न याको। यह आयौ पठयौ कुबजाको॥
अब कुबजा जो नाहि सिखावै। सोई आके गायो गावै।

कबहू प्रणाम कहूँ नहि ऐसी। कही आय ब्रजमें इन जैसी।
ऐसी बात सुनेको माई। उठत शूल सुनि सही न जाई।
कहत भोग तजि योग अराधो। ऐसी कैसे कहि हैं माधो।
जप तप संयम नेम अचार। यह सब बिधव कौ व्योहार।
युग युग जीवहु कुंवर कन्हाई। सीस हमारे पर सुखदाई।
अछत पति भभूति किन लाई। कहो कहांकी रीति चलाई।
हमकों नेम योग व्रत एहा। नन्द नन्दन पद सदा सनेहा।
ऊधो तुम्हें दोष को लावे। यह सब कुबजा नाथ नचावे।

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज जब गोपियोंके मुखसे ऐसे प्रेम सने बचन सुने तब योग कथा कहके ऊधो मनहीं मन पछताय सकुचाय मौन साध शिर निवाय रहगये फिर एक गोपीने पूछा कह बलभद्रजी कुशल छेमसे हैं औ बालापनकी प्रीति बिचार कभी वेभी हमारि सुधि करते हैं कि नहीं।

यह सुन तिनहींमेंसे किसी और गोपीने उत्तर दिया कि सखी तुमतो हो अहीरी गंवारी औ मथुराकी हैं सुन्दर नारी तिनके बश हो हरि बिहार करते हैं अब हमारी सुरत क्यों करेंगे जबसे वहां जाके छाये सखी तबसे भी भये पराये जो पहले हम ऐसा जानतीं तो काहेको जाने देतीं अब पछताये कुछ हाथ नहीं आता इससे उचित है कि सब दुख छोड़ अवधकी आश कर रहिये क्योंकि जैसे आठ महीने पृथ्वी बन पर्बत मेघकी आश किये तपन सहते हैं औ तिन्हें आय वह ठंढा करता है तैसे हरिभी आय मिलेंगे।

एक कहति हरि कीनों काज। बैरी मारो लीनों राज॥
काहेकों वृन्दावन आवें। राज छांड़ि क्यों गाय चरावें।
छोड़हु सखी अवधकी आश। चिन्ता जीते भये निराश।
एक त्रिया बोली अकुलाय। कृष्ण आश क्यों छोड़ी जाय।

बन पर्वत औ यमुनाके तीरमें जहां जहां श्रीकृष्ण बलबीरने लीला करी हैं वही वही ठौर देख सुध आती है खरी प्राण पति हरिको यों कह फिर बोली॥

दुख सागर यह ब्रज भयौ। नाम गाव बिच धार।
बूड़हिं बिरह बियोग जल। कृष्ण करें कब पार॥
गोपिनाथकी क्यों सुधि गई। लाज न कछु नामकी भई॥

इतनी बात सुन ऊधोजी मनहीं मन बिचार कर कहने लगे कि धन्य है इन गोपियोंको औ इनकी इच्छाको जो सर्वस छोड़ श्री कृष्ण चंद्रके ध्यानमें लीन हो रहीं हैं महाराज ऊधोजी तो उन का प्रेम देख मनहीं मन सराहतेही थे कि उसकाल सब गोपी उठ खड़ी हुई औ ऊधोजीको बड़े आदर मानसे अपने घर लिवाय ले गई उनकी प्रीति देख इन्होंनेभी वहां जाय भोजन किया औ बिश्राम कर श्रीकृष्णकी कथा सुनाय तिन्हें बहुत सुख दिया तब सब गोपी ऊधोजीकी पूजा कर बहुतसी भेंट आगे धर हाथ जोड़ अति बिनती कर बोलीं ऊधोजी तुम हरिसे जाय कहियो कि नाथ आगे तो तुम बड़ी कृपा करते थे हाथ पकड़ अपने साथ लिये फिरते थे अब ठकुराई पाय नगर नारी कुबजाके कहे योग लिख भेजा हम अबला अपवित्र अबतक गुरु मुखभी नहीं हुई हम ध्यान क्या जानें॥

उनसों बालापनकी प्रीति, जाने कहा योगकी रीति॥
वे हरि क्यों न योग देजात, यह न संदेशेकी है बात॥
ऊधो यों कहियो समझाय, प्राण जात हैं राखें आय॥

महाराज इतनी बात कह सब गोपियां तो हरिका ध्यान कर मगन हो रहीं औ ऊधोजी तिन्हें दण्डवत कर वहांसे उठ रथ पर बैठ गोवर्धनमें आये वहां कोई एक दिन रहे फिर वहांसे जो चले तो जहां जहां श्रीकृष्णचन्द्रजीने लीला करी थी तहां तहां गये औ दो दो चार चार दिन सब ठौर रहे।

निदान कितने एक दिवस पीछे फिर वृन्दावनमें आये औ नन्द यशोदाजीके पास जा हाथ जोड़ कर बोले आपकी प्रीति देख मैं इतने दिन ब्रजमें रहा अब आज्ञा पाऊं तो मथुराको जाऊं॥

इतनी बातके सुनतेही यशोदारानी दूध दही माखन औ बहुतसी मिठाई घरसे जाय ले आई औ ऊधोजीको देके कहा कि यह तो तुम श्रीकृष्ण बलराम प्यारेको देना औ बहन देवकीसे यों कहना कि मेरे कृष्ण बलरामको भेज दें बिरमाय न रक्खें इतना संदेसा कह नन्दरानी अति व्याकुल हो रोने लगी तब नन्दजी बोले कि ऊधोजी हम तुमसे अधिक क्या कहैं तुम आप चतुर गुणवान महाराज हो हमारी ओर हो प्रभसे ऐसे जाय कहियो जो वे ब्रजबासियोंका दुःख बिचार बेग आय दरशन दें औ हमारी सुध न बिसारें॥

इतना कह जब नन्दरायने आंसू भर लिये औ जितने ब्रजबासी क्या स्त्री क्या पुरुष वहां खड़े थे सोभी सब लगे रोने तब ऊधोजी तिन्हें समझाय बुझाय आशा भरोसा दे ढाढ़स बंधाय बिदा हो रोहिणीको साथ ले मथुराको चले औ कितनी एक बेरमें चले चले श्रीकृष्णचंदके पास आ पहुंचे॥

इन्हें देखतेही श्रीकृष्ण बलदेव उठकर मिले औ बड़े प्यारसे इनकी क्षेम कुशल पूछ वृन्दावनके समाचार पूछने लगे कहो ऊधोजी नंद यशोदा समेत सब ब्रजबासी आनंदसे हैं औ कभी हमारी सुरत करते हैं कि नहीं ऊधोजी बोले महाराज ब्रजकी महिमा औ ब्रजबासियोंका प्रेम मुझसे कुछ कहा नहीं जाता उनकू तो तुम्हीं हो प्राण निश दिन करते हैं वे तुम्हाराही ध्यान औ ऐसी देखी गोपियोंकी प्रीति जैसी होती है पूरण भजनकी रीति आपका कहा योगका उपदेश जा सुनाया पर मैंने भजनका भेद उनहीसे पाया॥

इतना समाचार कह ऊधोजी बोले कि दीनदयाल मैं अधिक

क्या करूं आप अंतरजामी घट घटकी जानते हैं थोड़ेहीमें सम झिये कि ब्रजमें क्या जड़ क्या चैतन्य सब आपके दरश परस बिन महा दुखी हैं केवल अवधकी आश कर रहे हैं ॥

इतनी बातके सुनतेही जब दोनों भाई उदास हो रहे तब ऊधो जी तो श्रीकृष्णचन्द्रसे बिदा हो नन्द यशोदाका सन्देसा वसुदेव देवकीको पहुंचाय अपने घर गये औ रोहिणीजी श्रीकृष्ण बल रामसे मिल आनंद कर निज मन्दिरमें रहीं इति ॥

४९ अध्याय।

श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज एक दिन श्रीकृष्ण विहारी भक्त हितकारी कुबजाकी प्रीति विचार अपना बचन प्रतिपालने को ऊधोको साथ ले उसके घर गये ॥

जब कुबजा जान्यौ हरि आये। पाटम्बर पांवड़े बिछाये।
अति आनन्द लये उठि आगे। पूरब पुण्य पुञ्ज सब जागे ॥
ऊधोकों आसन बैठारि। मन्दिर भीतर धसे मुरारि।

वहां जाय देखे तो चित्रशालामें ऊजला बिछौना बिछा है उस पर एक फूलोंसे संवारी अच्छी सेज बिछी है तिसी पर हरि जा बिराजे औ कुबजा एक और मन्दिरमें जाय सुगन्ध उबटन लगाय न्हाय धोय कंघी चोटी कर सुथरे कपड़े गहने पहन आप को नखसिखसे सिङ्गार पान खाय सुगन्ध लगाय ऐसे रावचावसे श्रीकृष्णचंदके निकट आई कि जैसे रति अपने पतिके पास आई होय औ लाजसे घूंवट किये प्रथम मिलनका भय डर लिये चूप चाप एक ओर खड़ी हो रही देखतेही श्रीकृष्णचंद आनंद कन्दने उसे हाथ पकड़ अपने पास बिठाय लिया औ उसका मनोरथ पूरण किया ॥

तब उठि ऊधोके ढिग आये। भई लाज हंसि नैन निवाये ॥

महाराज यों कुबजाको सुख दे ऊधोजीको साथ ले श्रीकृष्णचंद फिर अपने घर आये औ बलरामजीसे कहने लगे कि भाई हमने

अक्रूरजीसे कहाया कि तुम्हारा घर देखने आयेंगे सो पहले तो वहां चलिये पीछे तिन्हें हस्तिनापुरको भेज वहांके समाचार मंगवावें॥

इतना कह दोनों भाई अक्रूरके घर गये वह प्रभुको देखतेही अति सुख पाय प्रणाम कर चरण रज शिर चढ़ाय हाथ जोड़ बिनती कर बोला कृपानाथ आपने बड़ी कृपा की जो आय दरशन दिया औ मेरा घर पवित्र किया यह सुन श्रीकृष्णचन्द्र बोले कका इतनी बड़ाई क्यों करते हो हम तो आपके लड़के हैं यों कह फिर सुनाया कि कका आपके पुण्यसे असुर तो सब मारे गये पर एक ही चिंता हमारे जीमें है जो सुनते हैं कि पण्डु बैकुण्ठ सिधारे औ दुर्योधनके हाथसे पांचों भाई हैं दुखी हमारे।

कुंती फूफी अधिक दुख पावे। तस बिन जाय कौन समझावे।

इतनी बातके सुनतेही अक्रूरजीने हरिसे कहा कि आप इस बातकी चिंता न कीजे मैं हस्तिनापुर जाऊंगा औ तिन्हें समझाय वहांकी सुधले आऊंगा इति॥

५० अध्याय।

श्रीशुकदेवमुनि बोले कि पृथ्वीनाथ जब ऐसे श्रीकृष्णजीने अक्रूरके मुखसे सुना तब उन्हें पण्डुकी सुध लेनेको बिदा किया वे रथपर बैठ चले चले कई एक दिनमें मथुरासे हस्तिनापुर पहुंचे औ रथसे उतर जहां राजा दुर्योधन अपनी सभामें सिंहासन पर बैठा था तहां जाय जुहार कर खड़े हुए इन्हें देखतेही दुर्योधन सभा समेत उठकर मिला औ अति आदर मानसे अपने पास बिठाय इनको कुशल क्षेम पूछ बोला॥

नीके सुरसेन बसुदेव। नीये हैं मोहन बलदेव।
उग्रसैन राजा किहिं हेत। नाहिन काहूकी सुध लेत॥
पृथ्वहि मार करत हैं राज। तिन्हें न काहूसों है काज।

ऐसे जब दुर्योधनने कहा तब अक्रूर सुन चुप हो रहा औ मन

यों मन कहने लगा कि यह पापियोंकी सभा है यहां मुझे रहना उचित नहीं क्योंकि जो मैं रहूंगा तो यह ऐसी अनेक अनेक बातें कहैगा सो मुझसे कब सुनी जायगीं इससे यहां रहना भला नहीं। यों बिचार अक्रूरजी वहांसे उठ बिदुरको साथ ले पण्डुके घर गये तहां जाय देखें तो कुंती पतिके शोकसे महा व्याकुल हो रो रही है उसके पास जा बैठे औ लगे समझाने कि माई बिधनासे कुछ किसीका बश नहीं चलता औ सदा कोई अमर हो जीताभी नहीं रहता देह धर जीव दुख सुख सहता है इससे मनुष्यको चिंता करनी उचित नहीं क्योंकि चिंता कियेसे कुछ हाथ नहीं आता केवल चिंताको दुख देना है॥

महाराज जब ऐसे समझाय बुझाय अक्रूरजीने कुंतीसे कहा तब वह शोच समझ चुप हो रही औ इनकी कुशल पूछ बोली कहो अक्रूरजी हमारे माता पिता औ भाई बसुदेवजी कुटम्ब समेत भले हैं औ श्रीकृष्ण बलराम कभी भीम युधिष्ठिर अर्जुन नकुल सहदेव इन अपने पांचों भाइयोंकी सुध करते हैं ये तो यहां दुख समुद्रमें पड़े हैं वे इनकी रक्षा कब आय करेंगे हमसे अब तो इस अंध धृतराष्ट्रका दुख सहा नहीं जाता क्योंकि वह दुर्योधनकी मतिसे चलता है इन पांचोंको मारनेके उपायमें दिन रात रहता है कई बेर तो बिष घोल दिया सो मेरे भीमसेननेपी लिय॥

इतना कह पुनि कुंती बोली कि कहो अक्रूरजी जब सब कौरव यों बैर किये रहैं तब ये मेरे बालक किसका मुह चहें औ भीचसे बचकैसे होंय सयाने यही दुख बड़ा है हम क्या बखाने ज्यों हरनी झुण्डसे बिछड़ करती है त्रास त्यों मैं भी सदा रहती हूं उदास जिन्होंने कंसादिक असुर संहारे सोई हैं मेरे रखवारे॥

भीम युधिष्ठिर अर्जुन भाई। इनको दुख तुम कहियो जाई॥

जब ऐसे दीन हो कुंतीने कहे बैन तब सुन कर अक्रूरने भर लिये नैन औ समझाके कहने लगा कि माता तुम कुछ चिंता मत

करो ये जो पांचों पुत्र तुम्हारे हैं सो महा बली जशस्वी होंग शत्रु औ दुष्टोंको मार करेंगे निकन्द इनके पच्छी हैं श्रीगोबिन्द यों कह फिर अक्रूरजी बोले कि श्रीकृष्ण बलरामने मुझे यह कह तुम्हारे पास भेजा है कि फूफीसे कहियो किसी बातसे दुख न पावें हम वेगही तुम्हारे निकट आते हैं॥

महाराज ऐसे श्रीकृष्णकी कही बातें कह अक्रूरजी कुंतीको समझाय बुझाय आशा भरोसा दे बिदाहो बिदुरको साथ ले धृतराष्ट्रके पास गये औ उससे कहा कि तुम पुरखा होय ऐसी अनीति क्यों करतेहो जो पुत्रके बश होय अपने भाईका राजपाट ले भतीजोंको दुख देतेहो यह कहांका धर्म है जो ऐसा अधर्म करतेहो॥

लोचन गये न सूझे हिये। कुल बहि जाय पापके किये॥

तुमने भले चंगे बैठे बिठाये क्यों भाईका राज लिया औ भीम युधिष्ठिरको दुख दिया इतनी बातके सुनतेही धृतराष्ट्र अक्रूरका हाथ पकड़ बोला कि मैं क्या करूं मेरा कहा कोई नहीं सुनता ये सब अपनी अपनी मतिसे चलते हैं मैं तो इनके सोंहीं मुरख हो रहा हूं इससे इतनी बातोंमें कुछ नहीं बोलता एकांत बैठ चुप चाप अपने प्रभुका भजन करता हूं इतनी बात जो धृतराष्ट्रने कही तो अक्रूरजी दण्डवत कर वहांसे उठ रथपर चढ़ हस्तिनापुरसे चले चले मथुरा नगरीमें आये॥

उग्रसेन बसुदेवसों, कही पण्डुकी बात।
कुंतीके सुत महा दुख, भये छीन अतिगात॥

यों उग्रसेन बसुदेवजीसे हस्तिनापुरके सब समाचार कह अक्रूरजी फिर श्रीकृष्ण बलरामजीके पास जा प्रणाम कर हाथ जोड़ बोले महाराज मैंने हस्तिनापुरमें जाय देखा आपकी फूफी औ पांचों भाई कौरोंके हाथसे महा दुखी हैं अधिक क्या कहूंगा आप अंतरजामी हैं वहांकी अवस्था औ बिपरीत तुमसे कुछ छिपी नहीं यों कह अक्रूरजी तो कुंतीका कहा संदेसा सुनाय बिदाहो

अपने घर गये औ सब समाचार सुन श्रीकृष्ण बलदेव जो हैं सब देवनके देव सो लोक रीतिसे बैठ चिंताकर भूमिका भार उतारनेको बिचार करने लगे॥

इतनी कथा श्रीशुकदेव मुनिने राजा परीच्छितको सुनाय कर कहा कि हे पृथ्वीनाथ यह जो मैंने ब्रजबन मथुराका यश गाया सो पूर्वार्द्ध कहाया अब आगे उत्तरार्द्ध गाऊंगा जो द्वारिकानाथका बल पाऊंगा॥ इति॥

५१ अध्याय।

अथ उत्तरार्द्ध कथा लिखते।

श्रीशुकदेवजी बोले महाराज जों श्रीकृष्णचन्द दल समेत जरासिन्धुको जीत कालयमनको मार मुचकुन्दको तार ब्रजको तज द्वारिकामें जाय बसे तों मैं सब कथा कहता हूं तुम सचेत हो चित लगाय सुनो कि राजा उग्रसेन तो राजनीति लिये मथुरापुरीका राज करते थे औ श्रीकृष्ण बलराम सेवककी भांति उनकी आज्ञाकारी इससे राजा राज प्रजा सुखी थी पर एक कंसकी रानियांहीं अपने पतिके शोकसे महा दुखी थीं न उन्हें नींद आती थी न भूख प्यास लगती थी आठ पहर उदास रहती थीं॥

एक दिन वे दोनों बहन अति चिंताकर आपसमें कहने लगीं कि जैसे नृप बिन प्रजा चन्द बिन यामिनी शोभा नहीं पाती तैसे कंत बिन कामिनीभी शोभा नहीं पाती अब अनाथ हो यहां रहना भला नहीं इससे अपने पिताके घर चल रहिये सो अच्छा महाराज वे दोनों रानियां ऐसे आपसमें शोच बिचार कर रथ मंगवाय उसपर चढ़ मथुरासे चली चली मगध देशमें अपने पिताके यहां आईं औ जैसे श्रीकृष्ण बलरामजीने सब असुरों समेत कंसको मारा तैसे उन दोनोंने रो रो समाचार अपने पितासे सब कह सुनाय॥

सुनतेही जरासिन्धु अति क्रोधकर सभामें आया औ लगा कहने

किऐसेबली कौन यदुकुलमें उपजे जिन्होंनेसब असुरोंसमेत महा बली कंसको मार मेरी बेटियोंको रांड किया मैं अभी अपना सब कटक ले चढ़ धाऊं औ सब यदुबंशियों समेत मथुरापुरीको जलाय राम कृष्णको जीता बांध लाऊं तो मेरा नाम जुरासिन्धु नहीं तो नहीं ॥

इतना कह उसने तुरंतही चारोंओरके राजाओंको पत्र लिखे कि तुम अपना दल ले ले हमारे पास आओ हम कंसका पलटा ले यदुबंशियोंको निरबंश करेंगे जुरासिन्धुका पत्र पातेही सब देश देशके नरेश अपना अपना दल साथ ले झट चले आये औ यहां जुरासिंधुनेभी अपनी सब सेना ठिक ठाक बनाय रक्खी निदान सब असुरदल साथ ले जुरासिंधुने जिस समै मगध देशसे मथुरापुरीको प्रस्थान किया तिस समै उसके सङ्ग तेईस अक्षौहिणी थीं इक्कीस सहस्र आठ सौ सत्तर रथी औ इतनेही गजपति एक लाख नव सहस्र साढ़े तीन सौ पैदल औ छयसठ सहस्र अश्वपति यह अक्षौहिणीका प्रमाण है ॥

ऐसे तेईस अक्षौहिणी उसके साथ थीं औ उनमेंसे एक एक राक्षस जैसा बली था सो मैं कहांतक बर्णन करूं महाराज जिस काल जुरासिन्धु सब असुर सेना साथ ले धौंसा दे चला उसकाल दशोंदिशाके दिगपाल लगे थर२ कांपने औ सब देवता मारे डरके भागने पृथ्वी न्यारीही बोझसे छातसी हिलने निदान कितने एक दिनोंमें चला२ जा पहुंचा औ उसने चारोंओरसे मथुरापुरीको घेर लिया तब नगर निबासी अति भय खाय श्रीकृष्णचन्द्रके पास जा पुकारे कि महाराज जुरासिंधुने आय चारोंओरसे नगर घेरा अब क्या करैं औ किधर जांय ॥

इतनी बातके सुनतेही हरि कुछ शोच बिचार करने लगे इसमें बलरामजीने जाय प्रभुसे कहा कि महाराज आपने भक्तोंका दुख दूर करनेके हेतु अवतार लिया है अब अग्नि तन धारण कर असु

रूपी वनको जलाय भूमिका भार उतारिये यह सुन श्रीकृष्णच न्द्र उनको साथ ले उग्रसेनके पास गये औ कहा कि महाराज हमें तो लड़नेकी आज्ञा दीजे और आप सब यदुबंशियोंको साथ ले गढ़की रक्षा कीजे॥

इतना कह जों माता पिताके निकट आये तों सब नगर निवासी घिर आये औ लगे अति व्याकुल हो कहने कि हे कृष्ण हे कृष्ण अब इन असुरोंके हाथसे कैसे बचें तब हरिने माता पिता समेत सबको भयातुर देख समझाके कहा कि तुम किसी भांति चिंता मत करो यह असुरदल जो तुम देखते हो सो पल भरमें यहांका यहीं ऐसे बिलाय जायगा कि जैसे पानीके बलूले पानीमें बिलाय जाते हैं यों कह सबको समझाय बुझाय ढाढ़स बन्धाय उनसे बिदा हो प्रभु जों आगे बढ़े तों देवताओंने दो रथ शस्त्र भर इनके लिये भेज दिये वे आय इनके सोंहीं खड़े हुए तब ये दोनों भाई उन दोनों रथोंमें बैठ लिये॥

ये निकसे दोऊ यदुराय, असुर सेनमें पहुंचे जाय॥

जहां जुरासिन्धु खड़ा था तहां जा निकले देखतेही जुरासिन्धु श्रीकृष्णचन्द्रसे अति अभिमान कर कहन लगा अरे तू मेरे सोंहीं से भाग जा मैं तुझे क्या मारूं तू मेरी समानका नहीं जो मैं तुज पर शस्त्र चलाऊं भला बलरामको मैं देख लेता हूं श्रीकृष्णचन्द्र बोले अरे मूरख अभिमानी तू यह क्या बकता है जो सूरमा होते हैं सो बड़ा बोल किसीसे नहीं बोलते सबसे दीनता करते हैं काम पड़े अपना बल दिखाते हैं और जो अपने मुंह अपनी बड़ाई मारते हैं सो क्या कुछ भले कहाते हैं कहा है कि गरजता है सो बरषता नहीं इससे हथा बकवाद क्या करता है।

इतनी बातके सुनतेही जुरासिन्धुने जों क्रोध किया तों श्रीकृष्ण बलदेव दल खड़े हुए इनके पीछे वह भी अपनी सब सेना ले धाया औ उसने यों पुकारके कह सुनाया अरे दुष्टो मेरे आगेसे

तुम कहां भाग जाओगे बहुत दिन जीते बचे बचे तुमने अपने मनमें क्या समझा है अब जीते न रहने पाओगे जहां सब असुरों समेत कंस गया है तहांइ सब यदुबंशियों समेत तुम्हें भी भेजूंगा महाराज ऐसा दुष्ट बचन उस असुरके मुखसे निकलतेही कितनी एक दूर जाय दोनों भाई फिर खड़े हुए श्रीकृष्णजीने तो सब शस्त्र लिये औ बलरामजीने हल मूसल जो असुरदल उनके निकट गया तो दोनों बीर ललकारके ऐसे टूटे कि जैसे हाथियोंके यूथ पर सिंह टूटे औ लगा लोहा बाजने॥

उसकाल मारू जो बाजता था सो तो मेघसा गरजता था औ चारोंओरसे राक्षसोंका दल जो घिर आया था सो दल बादलसा छाया था औ शस्त्रोंकी झड़ी झड़ीसी लगी थी उसके बीच श्रीकृष्ण बलराम युद्ध करते ऐसे शोभायमान लगतेथे जैसे सघन घनमें दामिनी सुहावनी लगती है सब देवता अपने२ बिमानोंपर बैठ आकाशसे देख देख प्रभुका यश गाते थे औ इन्हींकी जीत मानते थे और उग्रसेन समेत सब यदुबंशी अति चिंताकर मन हीमन पछताते थे कि हमने यह क्या किया जो श्रीकृष्ण बलराम को असुर दलमें जाने दिया॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि पृथ्वीनाथ जब लड़ते लड़ते असुरोंकी बहुतसी सेना कट गई तब बलदेवजीने रथसे उतर जुरासिन्धुको बांध लिया इसमें श्रीकृष्णचन्द्रजीने जा बलरामसे कहा कि भाई इसे जीता छोड़ दो मारोमत क्योंकि यह जीता जायगा तो फिर असुरोंको साथ ले आवेगा तिन्हें मार हम भूमिका भार उतारेंगे औ जो जीता न छोड़ेंगे तोजो राक्षस भाग गये हैं सो हाथ न आवेंगे ऐसे बलदेवजीको समझाय प्रभुने जुरासिन्धुको छुड़वाय दिया वह अपने विन लोगों में गया जो रणसे भागके बचे थे॥

बहुं दिय चाहि कहै पछताय, बिगरी सेना गई बिलाय॥

मरो दुःख अति कैसे जीजे, अबघर छांडि तपस्वी कीजे।
मन्त्री तबै कहैं समझाय, तुम सो ज्ञानी क्यों पछिताय।
कबहूं हार जीत पुनि होइ। राजदेश छांडे नहिं कोइ।

क्या हुआ जो अबकी लड़ाईमें हारे फिर अपना दल जोड़ लेवेंगे औ सब यदुबंशियों समेत कृष्ण बलदेवको स्वर्ग पठावेंगे तुम किसी बातकी चिंता मत करो महाराज ऐसे समझाय बुझाय जो असुर रणसे भागके बचेथे तिन्हें औ जरासिन्धुको मन्त्रीने घर ले पहुंचाया और वह वहां फिर कटक जोड़ने लगा यहां श्रीकृष्ण बलराम रणभूमिमें देखते क्या हैं कि लोहूकी नदी बह निकली है तिसमें रथ बिना रथी नावसे बहे जाते हैं ठौर ठौर हाथी मरे पहाड़से पड़े हुए आते हैं उनके घावोंसे रक्त झरनोंकी भांति झरता है तहां महादेव जी भूत प्रेत संगलिये अति आनन्द कर नाच नाच गाय गाय मुण्डोंकी माला बनाय बनाय पहनते हैं भूतनी प्रेतनी जोगिनियां खप्पर भर भर रक्त पोती हैं गिद्ध गीदड़ काग लोथों पर बैठ बैठ मास खाते हैं औ आपसमें लड़ते जाते हैं॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जितने रथ हाथी घोड़े औ राक्षस उस खेतमें रहे थे तिन्हें पवनने तो समेट इकठा किया और अग्निने पलभरमें सबको जलाय भस्म कर दिया पञ्च तत्त्व पञ्चतत्त्वमें मिलगये उन्हें आते तो सबने देखा परजाते किसीने न देखा कि किधर गये ऐसे असुरोंको मार भूमिका भार उतार श्रीकृष्ण बलराम भक्त हितकारी उग्रसेनके पास आय दण्डवत कर हाथ जोड़ बोले कि महाराज आपके पुण्य प्रतापसे असुर दल मार भगाया अब निरभय राज कीजे औ प्रजा को सुख दीजे इतना वचन इनके मुखसे निकलतेही राजा उग्रसेनने अति आनन्द मान बड़ी बधाई की औ धर्मराज करने लगे इसमें कितने एक दिन पीछे फिर जरासिन्धु उतनीही सेना

ले चढ़ि आया औ श्रीकृष्ण बलदेवजीने पुनि त्यौंही मार भगाया ऐसे तेइस तेइस अक्षौहिणी ले जुरासिन्धु सत्रह बेर चढ़ि आया औ प्रभुने मार मार हटाया ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवमुनिने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज इसबीच नारद मुनिजीके जो कुछ जीमें आई तो ये एकाएकी उठकर कालयमनके वहां गये इन्हें देखतेही वह सभा समेत उठ खड़ा हुआ औ उसने दण्डवत कर करजोड़ पूछा कि महाराज आपका आना यहां कैसे भया ॥

तबकै नारद कहै बिचारि। मथुरामें बलभद्र मुरारि ॥
तो बिन तिन्हें हतै नहिं कोइ। जुरासिंधु सों कुछ नहि होइ।
तू है अमर और अति बली। बालक सैं बलदेव औ हरि ॥

यों कह फिर नारदजी बोले कि जिसे तू मेघ बरन कमल नैन अति सुन्दर बदन पीताम्बर पहरे पीत पट ओढ़े देखे तिसका तू पीछा बिन मारे मत छोड़ियो इतना कह नारदमुनि तो चले गये औ कालयमन अपना दल जोड़ने लगा इसमें कितने एक दिन बीच उसने तीन कड़ोड़ महा म्लेच्छ अति भयावने इकटे किये ऐसे कि जिनके मोटे भुज गलें बड़े दांत मैले भेष भूरे केश नैन लाल घुघचीसे तिन्हें साथ ले डङ्का दे मथुरापुरी पर चढ़ आया औ उसे चारोंओरसे घेर लिया उसकाल श्रीकृष्णचन्द्रजीने उसका ब्यौहार देख अपने जीमें बिचारा कि अब यहां रहना भला नहीं क्योंकि आज यह चढ़ आया है औ कलको जुरासिंधभी चढ़ आवे तो प्रजा दुख पावेगी इससे उत्तम यही है कि यहां न रहिये सब समेत अनत जाय बसिये महाराज हरिने यों बिचार कर बिश्वकर्माको बुलाय समझाय बुझायके कहा कि तुम अभी जाके समुद्रके बीच एक नगर बनायो ऐसा जिसमें सब यदुबंशी सुखसे रहैं पर वे यह भेद न जानें कि ये हमारे घर नहीं औ पल भरमें सबको वहां ले पहुंचायो ॥

इतनी बातके सुनतेही जा बिश्वकर्माने समुद्रके बीच सुदर्शनके ऊपर बारह योजनका नगर जैसा श्रीकृष्णजीने कहा था तैसाही रातभरमें बनाय उसका नाम द्वारिका रख आ हरिसे कहा फिर प्रभुने उसे आज्ञा दी कि इसी रूमें तु सब यदुबंशियोंको वहां ऐसे पहुंचाय दे कि कोई यह भेद न जाने जो हम कहां आये औ कौन ले आया ॥

इतना बचन प्रभुके मुखसे ज्यों निकला त्यों रातों रातही उग्रसेन बसुदेव समेत बिश्वकर्माने सब यदुबंशियोंको ले पहुंचाया औ श्रीकृष्ण बलरामभी वहां पधारे इस बीच समुद्रकी लहरका शब्द सुन सब यदुबंशी चौंक पड़े औ अति अचरज कर आपसमें कहने लगे कि मथुरामें समुद्र कहांसे आया यह भेद कुछ जाना नहीं जाता ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि पृथ्वीनाथ ऐसे सब यदुबंशियोंको द्वारिकामें बसाय श्रीकृष्णचन्द्रजीने बलदेवजीसे कहा कि भाई अब चलके प्रजाकी रक्षा कीजे औ कालयमनका बध इतना कह दोनों भाई वहांसे चल ब्रजमण्डलमें आये इति ॥ ५२ अध्याय ।

श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज ब्रजमण्डलमें आतेही श्रीकृष्णचन्द्रने बलरामजीको तो मथुरामें छोड़ा औ आप रूप सागर जगत उजागर पीताम्बर पहने पीत पट ओढ़े सब सिङ्गार किये कालयमनके दलमें जाय उसके सन्मुख हो निकले वह इन्हें देखतेही अपने मनमें कहने लगा कि हो न हो यही कृष्ण है नारदमुनिने जो चिह्न बताते थे सो सब इसमें पाये जाते हैं इन्हीने कंसादि असुर मारे जरासिन्धुकी सब सेना हनी ऐसे मनही मन बिचार ॥

कालयमन यों कहै पुकारि। काहे भाजो जात मुरारि।
आय परयो अब मोसों काल। ठाढ़े रहौ करो संग्राम ॥

जरासिंधु हों नाही कंस। यादव कुलको करों बिध्वंस॥

हे राजा यों कह कालयमन अति अभिमान कर अपनी सब सेना को छोड़ अकेला श्रीकृष्णचन्द्रके पीछे धाया पर उस मूरखने प्रभुका भेद न पाया आगे आगे तो हरि भागे जाते थे औ एक हाथके अंतरसे पीछे पीछे वह दौड़ा जाता था निदान भागते२ जब अनेक दूर निकल गये तब प्रभु एक पहाड़की गुफामें बढ़गये वहां जा देखें तो एक पुरुष सोया पड़ा है ये झट अपना पीताम्बर उसे उढ़ाय आप अलग एक ओर छिप रहे पीछेसे कालयमन भी दौड़ता हांफता उस अति अंधेरी कन्दरामें जा पहुंचा औ पीताम्बर ओढ़े तिस पुरुषको सोता देख उसने अपने जीमें जाना कि यह कृष्णही छल कर सो रहा है॥

महाराज ऐसा मनहीं मन बिचार क्रोध कर उस सोते हुएको एक लात मार कालयमन बोला अरे कपटी क्या निडर साधकी भांति निचिंताईसे सोरहा है उठ मैं तुझे अबही मारता हूं यों कह इसने उसके ऊपरसे पीताम्बर झटक लिया वह नींदसे चौंक पड़ा औ जों तिसने इसकी ओर क्रोधकर देखा तों यह जल बल भस्म हो गया इतनी बातके सुनतेही राजा परीक्षितने कहा॥

यह शुकदेव कहौ समझाय, को वह रहेउ कन्दरा जाय॥
तौकी दृष्ट भस्म क्यों भयो, काने वाहि महावर दयो॥

श्रीशुकदेवमुनि बोले पृथ्वीनाथ इक्ष्वाकुबंशी क्षत्री मानधाताका बेटा मुचकुन्द अति बली महाप्रतापी जिसका अरिदल दलन यश छाय रहा तो सतयुग एक समै सब देवता असुरोंके सताये निपट घबराये मुचकुन्दके पास आये औ अति दीनता कर उन्होंने कहा महाराज असुर बहुत बढ़े अब तिनके हाथसे बच नहीं सकते बेग हमारी रक्षा करो यह रीति परम्परासे चली आई है कि जब जब सुर मुनि ऋषि अबल हुए हैं तब तब उनकी सहायता क्षत्रियोंने करी है॥

इतनी बातके सुनतेही मुचकुन्द उनके साथ होलिया औ जाके असुरोंसे युद्ध करने लगा इसमें लड़ते लड़ते कितनेहीं युग बीत गये तब देवताओंने मुचकुन्दसे कहा कि महाराज आपने हमारे लिये बहुत श्रम किया अब कहीं बैठ बिश्राम लीजिये औ देह को सुख दीजिये॥

कहत हिननि कीनो संग्राम, गयो कुटुम्ब सहित धन धाम।
रहेघा न कोऊ तहां तिहारो, ताते अब जिन घर पग धारो॥

और जहां तुम्हारा मन माने तहां जाओ यह सुन मुचकुन्दने देवताओंसे कहा कृपानाथ मुझे कहीं कृपा कर ऐसी एकांत ठौर बताइये कि जहां जाय मैं निश्चिंताईसे सोऊं औ कोई न जगावे इतनी बातके सुनतेही प्रसन्न हो देवताओंने मुचकुन्दसे कहा कि महाराज आप धौलागिरि पर्वतकी कन्दरामें जाय शयन कीजिये वहां तुम्हें कोई न जगावेगा औ जो कोई जाने अनजाने वहां जाके तुम्हें जगावेगा तो वह देखतेही तुम्हारी दृष्टसे जल बल राख हो जावेगा॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजासे कहा कि महाराज ऐसे देवताओंसे बर पाय मुचकुन्द तिस गुफामें रहा था इससे उसकी दृष्ट पड़तही कालयमन जलकर छार हो गया आगे करुणानिधान कान्ह भक्त हितकारीने मेघ बरन चन्द्रमुख कमल नैन चतुर्भुज हो शंख चक्र गदा पद्म लिये मोर मकुट मकराकृति कुण्डल बनमाल औ पीताम्बर पहरे मुचकुन्दको दरशन दिया प्रभुका स्वरूप देखतही वह अष्टाङ्ग प्रणाम कर खड़ा हो हाथ जोड़ बोला कि कृपानाथ जैसे आपने इस महा अंधेरी कन्दरामें आय उजाला कर तम दूर किया तैसे दयाकर अपना नाम भेद बताय मेरे मनकाभी भरम दूर कीजे॥

श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि मेरे तो जन्म कर्म औ गुण हैं घने वे किसी भांति गने न जांय कोई कितनाहीं गने पर मैं इस जन्मका भेद क

हता हूं सो सुनौ कि अबकी वसुदेवके यहां जन्म लिया इससे वासु देवमेरा नाम हुआ औ मथुरापुरीमें असुरों समेतकंसको मैंनेही मार भूमिका भार उतारा औ सत्रह बेर तेईस तेईस अक्षौहिणी सेना ले जरासिन्धु युद्ध करनेको चढ़ि आया सोभी मुझीसे हारा और यह कालयमन तीन करोड़म्लेछकी भीड़भाड़ लेलड़नेको आया था सो तुम्हारी दृष्टसे जल मरा इतनी बात प्रभुके मुखसे निकलतेही सुनकर मुचकुन्दको ज्ञान हुआ तो बोला कि महाराज आपकी माया अति प्रबल है उसने सारे संसारको मोहा है इसीसे किसीकी कुछ सुध बुध ठिकाने नहीं रहती ॥

करत कर्म सब सुखके हेत। तातें भारी दुख सहि लेत ॥
चुभे हाड़ ज्यों श्वान मुख, रुधिर चचोरै आप ॥
जानत ताहीतें चुवत, मुख माने संताप ॥

और महाराज जो इस संसारमें आया है सो गृहरूपी अन्धकूप से बिन आपकी कृपा निकल नहीं सकता इसी मुझेभी चिंता है कि मैं कैसे गृहरूप कूपसे निकलूंगा श्रीकृष्णजी बोले सुन मुचकुन्द बात तो ऐसे ही है जैसे तूने कही पर मैं तेरे तरनेका उपाय बता देताहूं सो तू कर तैंने राज पाय भूमि धन स्त्रीके लिये अधिक अधर्म किये हैं सो बिन तप किये न छूटेंगे इससे उत्तर दिशा में जाय तू तपस्या कर यह अपनी देह छोड़ फिर ऋषिके घर जन्म लेगा तब तू मुक्ति पदारथ पावेगा महाराज इतनी बात जो मुचकुन्दने सुनी तो जाना कि अब कलियुग आया यह समझ प्रभुसे बिदा हो दण्डवत कर परिक्रमा दे मुचकुन्द तो बद्रीनाथको गया औ श्रीकृष्णचन्द्रजीने मथुरामें आय बलरामजीने कहा ॥

कालयमन को कियो निकन्द। बद्री दिशि पठयो मुचकुन्द ॥
कालयमनकी सेना घनी। तिन घेरी मथुरा आपनी ॥
आबहु तहां मलेछन मारैं। सकल भूमि को भार उतारैं ॥

ऐसे कह हलधरको साथ ले श्रीकृष्णचन्द्र मथुरापुरीसे निकल

वहां आये जहां कालयमनका कटक खड़ा था औ आतेही दोनों भाई उनसे युद्ध करने लगे निदान लड़ते लड़ते जब मेलेछकी सेना प्रभुने सब मारी तब बलदेवजीसे कहा कि भाई अब मथुराकी सब सम्पत्ति ले द्वारिकाको भेज दीजे बलरामजी बोले बहुत अच्छा तब श्रीकृष्णचन्द्रने मथुराका सब धन निकलवाय भैंसों छकड़ों ऊंटों हाथियों पर लदवाय द्वारिकाको भेज दिया इस बीच फिर जुरासिन्धु तेईसही अक्षौहिणी सेना ले मथुरापुरीपर चढ़ आया तब श्रीकृष्ण बलराम अति घबरायके निकले औ उसको सन्मुख जा दिखाईदे विसके मनका संताप मिटानेको भाग चले तद मन्त्रीने जुरासिन्धुसे कहा कि महाराज आपके प्रतापके आगे ऐसा कौन बली है जो ठहरे देखो वे दोनों भाई कृष्ण बलराम छोड़के सब धन धाम लेके अपना प्राण तुम्हारी त्रासके मारे नंगे पाओं भागे चले जाते हैं इतनी बात मन्त्रीसे सुन जुरासिन्धुभी यो पुकार कर कहता हुआ सेना ले उनके पीछे दौड़ा॥

काहे डरके भागे जात। ठाढ़े रहौ करो कछु बात॥
परत उठत कंपत क्यों भारी। आईहै ढिग मीच तिहारी॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवमुनि बोले कि पृथ्वीनाथ जब श्रीकृष्ण औ बलदेवजीने भागके लोक रीति दिखाई तब जुरासिन्धुके मनसे पिछलासब शोकगया औ अति प्रसन्नहुआ ऐसा कि जिसका कुछ बरणन नहीं किया जाता आगे श्रीकृष्ण बलराम भागते भागते एक गैातम नाम पर्वत ग्यारह योजन ऊंचा था तिस पर चढ़ गये और उसकी चोटीपर जाय खड़े भये॥

जुरासिन्धु कहै पुकारि। शिखर चढ़े बलभद्र मुरारि॥
अब किम हम सों जाव पलाय। या पर्वत को देहु जलाय॥

इतना बचन जुरासिन्धु मुखसे निकलतेही सब असुरोंने इस पहाड़को जा घेरा औ नगर नगर गांव गांवसे काठ कबाड़ लाय लाय उसके चारोंओर चुन दिया तिस पर गड़गूदड़ घी तेलसे

भिगोकर आग लगादी जब वह आग पर्वतकी चोटी तक चढ़की तद उन दोनों भाइयोंने वहांसे कूद इस भांति द्वारिकाकी बाट ली कि किसीने उन्हें जातेभी न देखा और पहाड़ जलकर भस्म होगया उसकाल जरासिन्धु श्रीकृष्ण बलरामको उस पर्वतके सङ्ग जलमरा जान अति सुखमान सब दल साथ ले मथुरापुरीमें आ या और वहांका राज ले नगरमें ढंढोरा दे उसने अपना थाना बैठाया जितने उग्रसेन वसुदेवके पुराने मन्दिर थे सो सब ढह वाये और उसने आप अपने नये बनवाये॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजासे कहा कि महाराज इस रीतिसे जरासिन्धुको धोखा दे श्रीकृष्ण बलरामजी तो द्वारि कामें जाय बसे और जरासिन्धुभी मथुरा नगरीसे चल सब सेना ले अति आनन्द करता निशङ्क हो अपने घर आया इति॥

५३ अध्याय।

श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज अब आगे कथा सुनिये कि जब कालयमनको मार मुचकुन्दको तार जरासिन्धको धोखा दे बल देवजीको साथ ले श्रीकृष्ण आनन्द कन्द यों द्वारिकामें गये तो सब यदुबंशियोंके जीमें जी आया औ सारे नगरमें सुख छाया सब चैन आनन्दसे पुरवासी रहने लगे इसमें कितने एक दिन पीछे एक दिन कई एक यदुबंशियोंने राजा उग्रसेनसे कहा कि महा राज अब कहीं बलरामजीका बिवाह किया चाहिये क्योंकि ये समाये हुए इतनी बातके सुनतेही राजाउग्रसेनने एकब्राह्मणको बुलाय अति समझाय बुझायके कहा कि देवता तुम कहीं जाक र अच्छा कुल घर देख बलरामजीकी सगाई कर आओ इतना कह रोली अक्षत रुपया नारियल मंगवा उग्रसेनजीने उस ब्रा ह्मणको तिलक कर रुपया नारियल दे बिदा किया वह चला चला आनर्त देशमें राजा रैवतके यहां गया और उसकी कन्या रेवतीसे बलरामजीकी सगाई कर लग्न ठहराय उसके ब्राह्मणके

साथ टीका लिवाय द्वारिकामें राजा उग्रसेनके पास ले आया और उसने वहांका सब ब्यौरा कह सुनाया सुनतेही राजा उग्रसेन ने अति प्रसन्न हो उस ब्राह्मणको बुलाय जो टीका ले आया था मंगलाचार करवाय टीका लिया और उसे बहुत सा धन दे बिदा किया पीछे आप सब यदुवंशियोंको साथ ले बड़ी धूमधामसे आनर्त देशमें जाय बलरामजीका ब्याह कर लाये ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेव मुनिने राजासे कहा कि पृथ्वीनाथ इस रीतिसे तो सब यदुबंशी बलदेवजीका ब्याह कर लाये और श्रीकृष्णचन्द्रजी आपही भाईको साथ ले कुण्डलपुरमें जाय भीष्मक नरेशकी बेटी रुक्मिणी शिशुपालकी मांगको राक्षसोंसे युद्ध कर छीन लाये उसे घरमें लाय ब्याह लिया यह सुन राजा परीक्षित ने श्रीशुकदेवजीसे पूछा कि कृपासिन्धु भीष्मक सुता रुक्मिणीको श्रीकृष्णचन्द्र कुण्डलपुरमें जाय असुरोंको मार किसरीतिसे लाये सो तुम मुझे समझाकर कहो श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज आप मन लगाय सुनिये मैं सब भेद वहांका समझाकर कहता हूं कि विदर्भ देशमें कुण्डलपुर नाम एक नगर तहां भीष्मक नाम नरेश जिसका यश छाय रहा चहुं देश उनके घरमें जाय श्रीसीताजीने औतार लिया कन्याके होतेही राजा भीष्मकने ज्योतिषियोंको बुलाय भेजा तिन्होंने आय लग्न साध इसका नाम रुक्मिणी धर कर कहा कि महाराज हमारे बिचारमें ऐसा आता है कि यह कन्या अति सुशील सुभाव रूप निधान गुणोंमें लक्ष्मी समान होगी और आदि पुरुषसे ब्याही जायगी ।

इतना बचन जोतिषियोंके मुखसे निकलतेही राजा भीष्मकने अति सुख मान बड़ा आनन्द किया औ बहुत सा कुछ ब्राह्मणोंको दिया आगे वह लड़की चन्द्र कलाकी भांति दिन दिन बढ़ने लगी और बाल लीला कर कर मात पिताको सुख देन इसमें कुछ बड़ी हुई तो लगी सखी सहेलियोंके साथ अनेक अनेक प्र

कारके अनूठे अनूठे खेल खेलने एक दिन वह मृग नैनी पिक बैनी चम्पक बरणी चन्द्रमुखी सखियोंके संग आंखमिचौली खेलने गई तो खेल समै सब सखियां उसे कहने लगीं कि रुक्मिणी तू हमारा खेल खोनेको आई है क्योंकि जहां तू हमारे साथ अंधेरे में छिपती है तहां तेरे मुख चन्द्रकी जोतिसे चान्दना हो जाता है इससे हम छिप नहीं सकती यह सुन वह हंसकर चुपहो रही।

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने कहा कि महाराज इसी भांति वह सखियोंके संग खेलती थी औ दिन दिन छवि उसकी दूनी होती थी कि इस बीच एक दिन नारदजी कुण्डलपुरमें आये औ रुक्मिणीको देख श्रीकृष्णचन्द्रके पास द्वारिकामें जाय उन्होंने कहा कि महाराज कुण्डलपुरमें राजा भीष्मकके घर एक कन्या रूप गुण शीलकी खान लक्ष्मीकी समान जन्मी है सो तुम्हारे योग है यह भेद जब नारद मुनिसे सुन पाया तभीसे रात दिन हरिने अपना मन उसपर लगाया महाराज इस रीति करके तो श्रीकृष्ण चन्द्रने रुक्मिणीका नाम गुण सुना और जैसे रुक्मिणीने प्रभुका नाम औ यश सुन सो कहताहूं कि एक समै देश देशके कितने एक याचकोंने जाय कुण्डलपुरमें श्रीकृष्णचन्द्रका यश गाय गैसे प्रभुने मथुरामें जन्म लिया औ गोकुल वृन्दावनमें जाय ग्वाल बालोंके संग मिल बाल चरित्र किया औ असुरोंको मार भूमिका भार उता र यदुवंशियोंको सुख दिया था तैसेही गाय सुनाया हरिके चरित्र सुनतेही सब नगर निवासी अति आश्चर्य कर आपसमें कहने लगे कि जिनकी लीला हमने कानों सुनी तिन्हें कब नैनों देखें गे इस बीच याचक किसी ढबसे राजा भीष्मककी सभामें जाय प्र भुके चरित्र औ गुण गाने लगे उस काल॥

पड़ी अटा रुक्मिणी सुन्दरी। हरि चरित्र धुन श्रवननि परी॥
अचरज करै भूलि मन रहै। फेर झमक कर देखनि चहै॥
सुनके कुंअरि रही मन लाय। प्रेम लता उर उपजी आय॥

भई मगन बिह्वल सुन्दरी। वाकी सुध बुध हरि गुण हरो॥

यों कह श्रीशुकदेवजी बोले कि पृथ्वीनाथ इस भांति श्रीरुक्मिणीजीने प्रभुका यश औ नाम सुना तो विसी दिनसे रात दिन आठ पहर चौंसठ घड़ी सोते जागते बैठे खड़े चलते फिरते खाते पीते खेलते विन्हींका ध्यान किये रहे और गुन गाया करे नित भोरही उठ स्नान कर मट्टीकी गौरी बनाय रोली अच्छत पुष्प चढ़ाय धूप दीप नैवेद्य कर मनाय हाथ जोड़ शिर नाय उसके आगे कहा करे॥

मो पर गौरि कृपा तुम करो। यदुपति पति दे मन दुख हरो॥

इसी रीतिसे सदा रुक्मिणी रहने लगी एक दिन सखियोंके संग खेलती थी कि राजा भीष्मक उसे देख अपने मनमें चिन्ता कर कहने लगा कि अब यह हुई व्याहन जोग इसे शीघ्र कहीं न दीजे तो हसेंगे लोग कहा है कि जिसके घरमें कन्या बड़ी होय तिसका दान पुण्य जप तप करना वृथा है क्योंकि कियेसे तबतक कुछ धर्म नहीं होता जबतक कन्याके ऋणसे न उतरण होय यों बिचार राजा भीष्मक अपनी सभामें आय सब मन्त्री कुटुम्बके लोगोंको बुलाय बोले भाइयो कन्या व्याहन जोग हुई इसके लिये कुलवान गुण खान रूप निधान शीलवान कहीं बर ढूंढ़ा चाहिये॥

इतनी बातके सुनतेही विन लोगोंने अनेक अनेक देशोंके नरेशोंके कुल गुण रूप औ पराक्रम कह सुनाये पर राजा भीष्मकके चितमें किसुकी बात कुछ न आई तब उनका बड़ा बेटा जिसका नाम रुक्मि सो कहने लगा कि पिता नगर चंदेरीका राजा शिशुपाल अति बलवान है और सब भांतिसे हमारी समान तिससे रुक्मिणी की सगाई वहां कीजे औ जगतमें यशलीजे महाराज जद उसकीभी बात राजाने सुनी अनसुनी की तद तो रुक्मकेश नाम उनका छोटा लड़का बोला।

रुक्मिणी पिता कृष्णकों दीजे। बासुदेव सों सगाई कीजे॥
यह सुनि भीष्मक हरषे गात। कही पूत में नीकी बात॥
तू बालक सब सों अति ज्ञानी। तेरी बात भली हम मानी॥

कहा है।

छोटे बड़ेनि पूछके। कीजै मन परतीत।
सार बचन गहलीनिये। यही जगतकी रीति॥

ऐसे कह फिर राजा भिष्मक बोले कि यह तो रुक्मकेशने भली बात कही यदुवंशियोंमें राजा सूरसेन बड़े यशी औ प्रतापी हुए तिनहींके पुत्र वसुदेवजी हैं सो कैसेहैं कि जिनके घरमें आदि पुरुष अविनाशी सकल देवनके देव श्रीकृष्णचन्द्रजीने जन्म ले महाबली कंसादिक राक्षसोंको मारा औ भूमिका भार उतार यदुकुलको उजागर किया और सब यदुवंशियों समेत प्रजाको सुख दिया ऐसे जो द्वारिकानाथ श्रीकृष्णचन्द्रजीको रुक्मिणी दें तो जगतमें यश औ बड़ाई लें इतनी बातके सुनतेही सब सभाके लोग अति प्रसन्न हो बोले कि महाराज यह तो तुमने भली बिचारी ऐसा बर घर और कहीं न मिलेगा इससे उत्तम यही है कि श्रीकृष्णचन्द्रहीको रुक्मिणी व्याह दीजे महाराज जब सब सभाके लोगोंने यों कहा तब राजा भीष्मकका बड़ा बेटा जिसका नाम रुक्म सो सुन निपट झुंझलायके बोला॥

समझ न बोलत महागवार। जानत नहीं कृष्ण ब्योहार।
ग्यारह बरस नन्दके रहेया। तबअहीर सब जाति कहेयो।
कामरि ओढ़ी गाय चराई। बरहै बैठ छाक तिन खाई॥

वह तो गंवार ग्वाल है जिसकी जात पांतका क्या ठिकाना और जिसके मां बापहीका भेद नहीं जाना जाता उसे हम पुत्र किसका कहें कोई नन्द गोपका जानता है कोई वसुदेवका कर मानता है पर आजतक यह भेद किसीने नहीं पाया कि कृष्ण किसका बेटा है इसीसे जो जिसके मनमें आता है सो गाता है महाराज हमें

सब कोई जानता मानता है और यदुबंशी राजा कबभये क्याहुआ थोड़े दिनोंसे बलकर उन्होंने बड़ाई पाई पहला कलङ्क तो अब न छुटेगा वह उग्रसेनका चाकर कहता है तिस्से सगाईकर क्या हम कुछ संसारमें यश पावेंगे कहा है व्याह बैर और प्रीति समानसे करिये तो शोभा पाईये और जो कृष्णको देंगे तो लोक कहेंगे ग्वालका सारा तिससे जायगा नाम औ यश हमारा॥

महाराज यों कह फिर रुक्म बोला कि नगर चंदेरीका राजा शिशुपाल बड़ा बली औ प्रतापी है उस्के डरसे सब घर घर कांपते हैं और परम्परासे उनके घरमें राज गादी चली आती है इससे अब उत्तम यही है कि रुक्मिणी उसीको दीजे और मेरे आगे फेर कृष्णका नामभी न लीजे इतनी बातके सुनतेही सब सभाके लोग मारे डरके मनहीं मन अछता पछताके चुप हो रहे और राजा भीष्मकभी कुछ न बोला इसमें रुक्मने जोतिषीको बुलाय शुभ दिन लग्न ठहराय एक ब्राह्मणके हाथ राजा शिशुपालके यहां टीका भेज दिया वह ब्राह्मण टीका लिये चला चला नगर चन्देरीमें जाय राजा शिशुपालकी सभामें पहुंचा देखतेही राजाने प्रणाम कर जब ब्राह्मणसे पूछा कहो देवता आपका आना कहांसे हुआ और यहां किस मनोरथके लिये आये तब तो उस बिप्रने असीस दे अपने जानेका सब ब्यौरा कहा सुनतेही प्रसन्न हो राजा शिशपालने अपना पुरोहित बुलाय टीका लिया औ तिस ब्राह्मणको बहुतसा कुछ दे बिदा किया पीछे जुरासिन्धु आदि सब देशदेशके नरेशोंको नोत बुलाया वे अपना दल ले ले आये तब यहभी अपना सब कटक ले ब्याहन चढ़ा ब्राह्मणने आ राजा भीष्मकसे कहा जो टीका ले गया था कि महाराज मैं राजा शिशुपालको टीका दे आया वह बड़ी धूमधामसे बरात ले ब्याहनको आता है आब अपना कार्य्य कीजे॥

यह सुन राजा भीष्मक पहले तो निकट उदास हुए पीछे कुछ

शोच समझ मन्दिरमें जाय उन्होंने पटरानीसे कहा वह सुनकर लगी मंगलामुखी औ कुटम्बकी नारियोंको बुलाय मङ्गलाचार करवाय ब्याहकी सब रीति भांति करने फिर राजाने बाहर आ प्रधान औ मन्त्रियोंको आज्ञा दी कि कन्याके बिवाहमें हमें जो जो बस्तु चाहिये सो सो सब इकट्ठी करो राजाकी आज्ञा पातेही मन्त्री औ प्रधानोंने सब बस्तु बातकी बातमें बनवाह मंगवाह लाय धरी लोगोंने देखा सुना तो यह चरचा नगरमें फैली कि रुक्मिणीका बिवाह श्रीकृष्णचन्द्रसे होता था सो दुष्ट रुक्मने न होने दिया अब शिशुपालसे होगा ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि पृथ्वीनाथ नगरमें तो घर घर यह बात हो रही थी औ राजमन्दिरमें नारियां गाय बजायके रीति भांति करती थीं ब्राह्मण वेद पढ़ पढ़ टेहले करवाते थे ठौर ठौर दुंदभी बाजते थे बार बार सपल्लव केलेके खंभ गाड़ गाड़ सोनेके कलश भर भर लोग धरते थे औ तोरण वंद नवारें बांधते थे और एक ओर नगर निवासी न्यारेही हाट बाट चौहट्टे झाड़ बुहार पटसि पाटते थे इस भांति घर और बाहरमें धूम मच रही थी कि उसी समै दो चार सखियोंने जा रुक्मिणीसे कहा कि ॥

तोहि रुक्म शिशुपालहि दई, अब तू रुक्मिणी रानी भई।
बोली सोच नाय कर शीस, मन बच मेरे प्राण जगदीश ॥

इतना कह रुक्मिणीने अति चिंताकर एक ब्राह्मणको बुलाय हाथ जोड़ उसकी बहुतसी बिनती औ बड़ाई कर अपना मनोरथ उसे सब सुनायके कहा कि महाराज मेरा संदेसा द्वारिका ले जाओ और द्वारिकानाथको सुनाय उन्हें साथ कर ले आओ तो मैं तुम्हारा बड़ा गुन मानूंगी औ यह जानूंगी कि तुम नेहीं दया कर मुझे श्रीकृष्ण वर दिया ॥

इतनी बातके सुनतेही वह ब्राह्मण बोला अच्छा तुम संदेसा क

हो मैं ले जाऊंगा औ श्रीकृष्णचंद्रको सुनाऊंगा व कृपानाथ हैं जो कृपा कर मेरे संग आवेंगे तो ले आऊंगा इतना वचन जों ब्राह्मणके मुखसे निकला तोंहीं रुक्मिणीजीने एक पाती प्रेम रंग रात लिख उसके हाथ दी और कहा कि श्रीकृष्णचंद्र आनन्द कंदको पाती दे मेरी ओरसे कहियो कि उस दासीने कर जोड़ अति विनती कर कहा है जो आप अंतरजामी हैं घट घटकी जानते हैं अधिक क्या कहूंगी मैंने तुम्हारी शरण ली है अब मेरी लाज तुम्हें है जिसमें रहै सो कीजे और इसदासीको आय बेग दरशन दीजे॥

महाराज ऐसे कह सुन जब रुक्मिणीजीने उस ब्राह्मणको बिदा किया तब वह प्रभुका ध्यान कर नाम लेता द्वारिकाको चला औ हरि इच्छासे बातके कहते जा पहुंचा वहां जाय देखे तो समुद्र बीच वह पुरी है जिसके चहुं ओर बड़े बड़े पर्ब्बत औ बन उपबन शोभा दे रहे हैं तिनमें भांति भांतिके पशु पच्ची बोल रहे हैं औ निरमल जल भरे सुथरे सरोवर तिनमें कमल डहडहाय रहे तिन पर भौरोंके झुण्डके झुण्ड गुञ्ज रहे ओर तीर पै हंस सारस आदि पच्ची कलोलें कर रहे कोसोंतक अनेक अनेक प्रकारके फल फूलोंकी बाड़ियां चली गई हैं तिनको बाड़ोंपर पनबाड़ियां लहलहा रही हैं बावड़ी इन्दारों पै खड़े मीठे सुरोंसे गाय गाय माली रहट परोहे चलाय चलाय ऊंचे नीचे नीर सींच रहे हैं और पनघटों पर पनहारियोंके ठट्टके ठट्ट लगे हुए हैं।

यह छबि निरख हरष वह ब्राह्मण जों आगे बढ़ा तों देखता क्या है कि नगरके चारोंओर अति ऊंचा कोट उसमें चार फाटक तिनमें कञ्चन खचित जड़ाऊ किवाड़ लगे हुए हैं औ पुरीके भीतर चांदी सोनेके मणिमय पचखने सतखने मन्दिर ऊंचे ऐसे कि आकाशसे बातें करें जगमगाय रहे हैं तिनके कलश कलशियां बिजलीसी चमकती हैं बरन बरनकी ध्वजा पताका फहराय रहीं

हैं खिड़की झरोखों जालियोंसे सुगन्धकी लपटें आय रही हैं द्वार द्वार सपल्लव केलेके खंभ औ कञ्चन कलश भरे धरे हैं तोरन बंदनवारें बन्धी हुई हैं और घर घर आनन्दके बाजन बाज रहे हैं ठौर ठौर कथा पुराण औ हरि चरचा हो रही है आठारह बरन सुखचैनसे बास करते हैं सुदरशन चक्र पुरीकी रक्षा करता है॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा ऐसी जो सुन्दर सुहावनी द्वारिकापुरी तिसे देखता देखता वह ब्राह्मण राजा उग्रसेनकी सभामें जा खड़ा हुआ औ। अशीस कर इसने पूछा कि श्रीकृष्णचन्द्रजी कहां बिराजते हैं तब किसीनें इसे हरिका मन्दिर बताय दिया यह जो द्वारपर जाय खड़ा हुआ तो द्वारपालोंने इसे देख दण्डवत कर पूछा॥

कोहै आप कहां तें आये। कौन देशको पाती लाये।

वह बोला ब्राह्मण हूं औ कुण्डलपुरका रहनेवाला राजा भीष्मककी कन्या रुक्मिणी उसकी चिटी श्रीकृष्णचन्द्रको देने आया हूं इतनी बातके सुनतेही पौरियोंने कहा महाराज आप मन्दिरमें पधारिये श्रीकृष्णचन्द्र सोंही सिंहासनपर बिराजते हैं बचन सुन ब्राह्मणजों भीतर गया तों हरिने देखतेही सिंहासनसे उतर दण्डवतकर अति आदरमान किया औ सिंहासनपर बिठाय चरण धोय चरणामृत लिया और ऐसे सेवा करनेलगे जैसे कोई अपने इष्टकी सेवा करे निदान प्रभुने सुगन्ध उबटन लगाय न्हवाय धुलाय पहले तो उसे षटरस भोजन करवाया पीछे बीड़ा दे केशर चन्दनसे चरच फूलोंकी माला पहिराय मणिमय मन्दिरमें ले जाय एक सुथरे जड़ाऊ छपरखटमें लिटाया महाराज वहभी बाटका हारायका तो याहो लेटतेही सुख पाय सो गया श्रीकृष्णजी कितनी एक बेरतक तो उसकी बातें सुननको अभिलाषा किये वहां बठे मनहीं मन कहते रहे कि अब उठे अब उठे निदान जब देखा कि न उठा तब आतुर हो उसके पैतानें बैठ लगे पांव दाबने

इसमें उसकी नींद टूटी तो वह उठ बैठा तद हरिने तिसकी क्षेम कुशल पूछा पूछ ॥

नीको राज देश तुम तनों। हम सों भेद कहो आपनों।
कौन काज यहां आवत भयो। दरश दिखाय हमें सुख दयो ॥

ब्राह्मण बोला कि कृपानिधान आप मन दे सुनिये मैं अपने आनेका कारण कहता हूं कि महाराज कुण्डलपुरके राजा भीष्मककी कन्याने जबसे आपका नाम औ गुण सुना है तभीसे वह निश दिन तुम्हारा ध्यान किये रहती है औ चरण कमलकी सेवा किया चाहती थी और संयोगभी आय बना था पर बात बिगड़ गई प्रभु बोले सो क्या ब्राह्मणने कहा दीनदयाल एक दिन राजा भीष्मकने अपने सब कुटुम्ब औ सभाके लोगोंको बुलायके कहा कि भाइयो कन्या व्याहन जोग भई अब इसके लिये बर ठहराया चाहिये इतना बचन राजाके मुखसे निकलतेही तिन्होंने अनेक अनेक राजाओंका कुल गुन नाम औ पराक्रम कह सुनाया पर इनके मनमें न आया तद रुक्मकेशने आपका नाम किया तो प्रसन्न हो राजाने उसका कहना मान लिया और सबसे कहा कि भाइयो मेरे मनमें तो इसकी बात पत्थरकी लकीर हो चुकी तुम क्या कहते हो वे बोले महाराज ऐसा घर वर जो त्रिलोकी ढूंढ़िये तोभी न पाइयेगा इसे अब उचित यही है कि बिलम्ब न कीजे शीघ्र श्रीकृष्णचन्द्रसे रुक्मिणीका बिवाह कर दीजे महाराज यह बात ठहर चुकी थी इसमें रुक्मने भांजी मार रुक्मिणीकी सगाई शिशुपालसे की अब वह सब असुर दल साथ ले व्याहनको चढ़ा है ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि पृथ्वीनाथ ऐसे उस ब्राह्मणने सब समाचार कह रुक्मिणी जीकी चिठी हरिके हाथ दी प्रभुने अति हितसे पाती ले छातीसे लगाय ली औ पढ़कर प्रसन्न हो ब्राह्मणसे कहा देवता तुम किसी बातकी चिन्ता मत

करो मैं तुम्हारे साथ चल असुरोंको मार उनका मनोरथ पूरा करूंगा यह सुन ब्राह्मणको तो धीरज हुआ पर हरि रुक्मिणीका ध्यान कर चिन्ता करने लगे इति॥

५२ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि हे राजा श्रीकृष्णचन्द्रने ऐसे उस ब्राह्मण को ढाढ़स बन्धाय फिर कहा॥

जैसे घिसके काठते काढ़हिं ज्वाला जारि।
ऐसे सुन्दरि ल्याय हों दुष्ट असुर दल मारि॥

इतना कह फिर सुथरे वस्त्र आभूषण मन मानसे पहन राजा उग्रसेनके पास जाय प्रभुने हाथ जोड़ कर कहा महाराज कुण्डल पुरके राजा भीष्मकने अपनी कन्या देनेको पत्र लिख पुरोहितके हाथ मुझे अकेला बुलाया है जो आप आज्ञा दें तो जाऊं औ उस की बेटी व्याह लाऊं॥

सुनकर उग्रसेन यों कहै। दूर देश कैसे मन रहै।
तहां अकेले जात मुरारि। मत काहू सों उपजै रारि॥

तब तुम्हारे समाचार हमें यहां कौन पहुंचावेगा यों कह पुनि उग्रसेन बोले कि अच्छा जो तुम वहां जाया चाहते हो तो अपनी सब सेना साथ ले दोनों भाई जाओ औ व्याह कर शीघ्र चले आओ आगे हां किसीसे लड़ाई झगड़ा न करना क्योंकि तुम चिरञ्जीव हो तो सुन्दरी बहुत आय रहेंगी आज्ञा पातेही श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि महाराज तुमने सच कहा पर मैं आगे चलता हूं आप कटक समेत बलरामजीको पीछेसे भेज दीजेगा॥

ऐसे कह हरि उग्रसेन वसुदेवसे बिदा हो उस ब्राह्मणके निकट आये और रथ समेत अपने दारुक सारथीको बुलवाया वह प्रभु की आज्ञा पातेही चार घोड़ेका रथ तुरन्त जोत लाया तब श्री कृष्णचन्द्र उसपर चढ़े औ ब्राह्मणको पास बिठाय द्वारिकासे कुण्ड लपुरको चले जों नगरके बाहर निकले तो देखते क्या हैं कि दाह

की ओर ते। मृगके झुण्डके झुण्डचले जाते हैं औ सनमुखसे सिंह सिंहिनी अपना भक्ष लिये गरजते आते हैं यह शुभ सगुण देख ब्राह्मण अपने जीमें बिचार कर बोला कि महाराज इस समै इस सगुनके देख मेरे बिचारमें यह आता है कि जैसे ये अपना काज साधके आते हैं तैसेही तुमभी अपना काज सिद्ध कर आओगे श्री कृष्णचन्द्र बोले आपकी कृपासे इतना कह हरि वहांसे आगे बढ़े औ नये नये देश नगर गांव देखते देखते कुण्डलपुरमें जा पहुंचे तो तहां देखा कि ठौर ठौर व्याह कि सामा जो संजोय धरी है तिसे नगरकी छबि कछु औरकी और हो रही है॥

झारे गली चोहटे छावें। चोया चन्दन सों छिरकावें।
पोय कुम्कुमी ओरा किये। बिच बिच कनक नारियल दिये॥
हरे पात फल फूल अपार। ऐसी घर घर बन्दन बार॥
ध्वजा पताका तोरन तने। सुढब कलश कञ्चन कैं बने॥

और घर घरमें आनन्द हो रहा है महाराज यह तो नगरकी शोभा थी औ राजमन्दिरमें जो कुतुहल हो रहा था उसका बरणन कोई क्या करे वह देखही बनि आवे आगे श्रीकृष्णचन्द्रने सब नगर देख औ राजा भीष्मककी बाड़ीमें डेरा किया औ शीतल छांहमें बैठ ठण्डे हो उस ब्राह्मणसे कहा कि देवता तुम पहले हमारे आनेका समाचार रुक्मिणीजीको जा सुनाओ जो वे धीरज धर अपने मनका दुख हरें पीछे वहांका भेद हमें आ बताओ जो हम फिर उसका उपाय करें ब्राह्मण बोला कि कृपानाथ आज व्याहका पहला दिन है राजमन्दिरमें बड़ी धूमधाम हो रही है मैं जाता हूं पर रुक्मिणीजीको अकेली पाय आपके आनेका भेद कहूंगा यों सुनाय ब्राह्मण वहांसे चला महाराज इधरसे हरि तो यों चुपचाप अकेले पहुंचे और उधरसे राजा शिशुपाल जरासिन्धु समेत सब असुर दल लिये इस धूमसे आया कि जिसका वारापार नहीं औ इतनी भीड़ संग कर लाया कि जिसके बोझसे लगा शे

अनेग डगमगाने औ पृथ्वी उथलने उसके आनेकी सोध पाय राजा भीष्मक अपने मन्त्री औ कुटुम्बके लोगों समेत आगू बढ़ लेनेगये और बड़े आदर मानसे अगोनी कर सबको पहरावनी पहराय रत्न जटित वस्त्र आभूषण औ हाथी घोड़े दे उन्हें नगर में ले आये औ जनवासा दिया फिर खाने पीनेका सनमान किया॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज अब मैं अन्तर कथा कहता हूं आप चित लगाय सुनिये कि जब श्री कृष्णचन्द्र द्वारिकासे चले तिसी समै सब यदुबंशियोंने जाय राजा उग्रसेनसे कहा कि महाराज हमने सुना है जो कुण्डलपुरमें राजा शिशुपाल जरासिन्धु समेत सब असुर दलले ब्याहन आया है औ र हरि अकेले गये हैं इससे हम जानते हैं कि वहां श्रीकृष्णजीसे और उनसे युद्ध होगा यह बात जानके भी हम अजान हो हरि को छोड़ यहां कैसे रहैं हमारा मन तो मानता नहीं आगे जो आप आज्ञा कीजे सो करें॥

इस बातके सुनतेही राजा उग्रसेनने अति भय खाय घबराय बलरामजीको निकट बुलाय समझायके कहा कि तुम हमारी सब सेना ले श्रीकृष्णके नपहुंचते न पहुंचते शीघ्र कुण्डलपुर जा ओ औ उन्हें अपने सङ्ग कर ले आओ राजाकी आज्ञा पातेही बलदेवजी छप्पनकरोड़ यादव जोड़ले कुण्डलपुरको चले उस काल कटकके हाथी काले धौले धूमरे दल बादलसे जनाते थे औ उनके श्वेत श्वेत दांत बग पांतिसे धौंसा मेघसा गरजता था औ शस्त्र बिजलीसे चमकते थे राते पीले बागे पहने घुड़चढ़ोंके टो लकेटोल जिधर तिधर दृष्ट आतेथे रथोंके तांतोंके तांते झमझ माते चले जाते थे तिनकी शोभा निरख निरख हरष हरष देव ता अति हितसे अपने अपने विमानों पर बैठे आकाशसे फूल बरसाय श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्दकी जै मानते थे इस बीच सबदल लिये चले चले कुण्डलपुरमें हरिके पहुंचतेही बलरामजीभी जा

पहुंचे यों सुनाय फिर श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज बोले कि महाराज श्रीकृष्णचन्द्र रूप सागर जगत उजागर तो इस भांतिकुण्डलपुर पहुंच चुकेथे पर रुक्मिणी इनके आनेका समाचार न पाय।

बिलख बदन चितवें चहुं ओर। जैसे चन्द्रमलिन भये भोर।
अति चिन्ता सुन्दरि जिय बाढ़ी। देखे ऊंच अटा पर ठाढ़ी॥
चढ़ि चढ़ि उझकै खिरकी द्वार। नैननि तें छाड़े जल धार॥
बिलख बदन अति मलिन मन। लेत उसास निसास॥
व्याकुल बरषा नैन जल। सोचत कहति उदास।

कि अबतक क्यों नहीं आये हरि विनकातो नाम है अन्तरजामी ऐसी मुजसे क्या चूक पड़ी जो अबलग विन्होंने मेरी सुध न ली क्या ब्राह्मण वहां नहीं पहुंचा कै हरिने मुझे कुरूपा जान मेरी प्रीतिकी प्रतीत न करी कै जुरासिन्धुका आना सुन प्रभु न आये कल व्याहका दिन है औ असुर आय पहुंचा जो वह कल मेरा कर गहेगा तो यह पापी जीव हरि बिन कैसे रहैगा जप तप नेम धर्म कुछ आड़े न आया अब क्या करूं और किधर जाऊं अपनी बरात ले आया शिशुपाल कैसे बिरमें प्रभु दीन दयाल॥

इतनी बात जब रुक्मिणीके मुंहसे निकली तब एक सखीने तो कहा कि दूर देश बिन पिता बन्धुकी आज्ञा हरि कैसे आवेंगे औ दूसरी बोली कि जिनका नाम है अन्तरजामी दीन दयाल वे बिन आये न रहेंगे रुक्मिणी तु धीरज धर व्याकुल न हो मेरा मन यह हामी भरता है कि अभी आय कोई यों कहता है कि हरि आये महाराज ऐसे वे दोनों आपसमें बत कहाव कर रही थीं कि वैसेमें ब्राह्मणने जाय आशीस दे कहा कि श्रीकृष्णचन्द्रजीने आय राज बाड़ीमें डेरा किया औ सब दल लिये बलदेवजीभी पीछेसे आते हैं ब्राह्मणको देखते और इतनी बातके सुनतेही रुक्मिणीजीके जीमें जो आया और उन्होंने उस काल ऐसा

सुख माना कि जैसे तपी तपका फल पाय सुख माने॥

आगे श्रीरुक्मिणीजी हाथ जोड़ शिर झुकाय उस ब्राह्मणके सन्मुख कहने लगीं कि आज तुमने आय हरिका आगमन सुनाय मुझे प्राण दान दिया मैं इसके पलटे क्या दूं जो त्रिलोकीकी माया दूं तो भी तुम्हारे ऋणसे उतरण न हूं ऐसे कह मन मार सुकचाय रही तब वह ब्राह्मण अति सन्तुष्ट हो आशीरबाद कर वहांसे उठ राजा भीष्मकके पास गया और उसने श्रीकृष्णके आनेका ब्यौरा सब समझायके कहा सुनत प्रमाण राजा भीष्मक उठधाया औ चलाचला वहां आया जहां बाड़ीमें श्रीकृष्ण बलराम सुखधाम बिराजते थे आतेही अष्टांग प्रणाम कर सन्मुख खड़े हो हाथ जोड़के कहा राजा भीष्मकने॥

मेरे मन वच हे तुम हरी, कहा कहों जो दुष्टनि करी॥

अब मेरा मनोरथ पूरण हुआ जो आपने आय दरशन दिया यों कह प्रभुके डेरे करवाय राजा भीष्मक तो अपने घर आय चिन्ता कर ऐसे कहने लगा॥

हरि चरित्र जाने सब कोई, क्या जाने अब कैसी होई॥

और जहां श्रीकृष्ण बलदेव थे तहां नगर निवासी क्या स्त्री क्या पुरुष आय आय शिर नाय प्रभुका यश गाय गाय सराहि सराहि आपसमें यों कहते थे कि रुक्मिणी जोग बर श्रीकृष्णही हैं बिध ना करै यह जोरी जुरै औ चिरञ्जीव रहै इस बीच दोनों भाइयोंके कुछ जो जीमें आया तो नगर देखने चले उस समै ये दोनों भाई जिस हाट बाट चौहटेमें हो जाते थे तहीं नर नारियोंके ठट्ठके ठट्ठ लग जाते थे औ वे इनके ऊपर चोआ चन्दन गुलाव नीर छिड़क छिड़क फूल बरषाय बरषाय हाथ बढ़ाय बढ़ाय प्रभुको आपसमें यों कह कह बताते थे॥

नीलाम्बर ओढ़े बलराम, पीताम्बर पहने घनश्याम॥
कुण्डल चपल मुकुट शिर धरें, कमल नयन चाहत मन हरें॥

औ ये देखते जाते थे निदान सब नगर औ राजा शिशुपालका कटक देख ये तो अपने दलमें आये औ इनके आनेका समाचार सुन राजा भीष्मकका बड़ा बेटा अति क्रोध कर अपने पिताके निकट आय कहने लगा कि सच कहो कृष्ण यहां किसका बुलाया आया यह भेद मैंने नहीं पाया बिन बुलाये यह कैसे आया ब्याह काज है सुखका धाम इसमें इसका है क्या काम ये दोनों कपटी कुटिल जहां जाते हैं तहांहीं उतपात मचाते हैं जो तुम अपना भला चाहो तो तुम मुझसे सत्य कहो ये किसके बुलाये आये॥

महाराज रुक्म ऐसे पिताको धमकाय यहांसे उठ सात पांच करता वहां गया जहां राजा शिशुपाल औ जरासिन्धु अपनी सभामें बैठे थे औ उनसे कहा कि यहां राम कृष्ण आये हैं तुम अपने सब लोगोंको जना दो जो सावधानीसे रहें इन दोनों भाईयोंका नाम सुनतेही राजा शिशुपाल तो हरि चरित्रका लख व्यौहार जी हार करने लगा मनहीं मन बिचार औ जरासिन्धु कहने कि सुनो जहां ये दोनों आवें हैं तहां नकुछ उपद्रव मचावें हैं ये महाबली औ कपटी हैं इन्होंने ब्रजमें कंसादि बड़े बड़े राक्षस सहज सुभावही मारे इन्हें तुम मत जानो बारे ये कभी किसीसे लड़कर नहीं हारे श्रीकृष्णचन्द्रने सत्रह बेर मेरा दल हना जब मैं अठारवीं बेर चढ़ आया तब यह भाग पर्वत पै जा चढ़ा जो मैंने उसमें आग लगाई तो यह छलकर द्वारिकाको चला गया॥

याको काहु भेद न पायो। अब यहां करन उपद्रव आयो॥
है यह छली महा छल करे। काहू पै नहिं जान्यौ परे॥

इससे अब ऐसा कुछ उपाय कीजे जिससे हम सबोंकी पत रहै इतनी बात जब जरासिन्धुने कही तब रुक्म बोला कि वे क्या बसु है जिनके लिये तुम इतने भावित हो तिन्हें तो मैं भली भांतिसे जान्ता हूं कि बन बन गाते नाचते बेणु बजाते धेनु चराते फिरते थे वे बालक गंवार यह बिद्याकी रीति क्या जानें तुम

किसी बातकी चिन्ता अपने मनमें मत करो हम सब यदुबंशियों समेत कृष्ण बलरामको क्षणभरमें मार हटावेंगे॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज उस दिन रुक्म तो जुरासिन्धु औ शिशुपालको समझाय बुझाय ढाढ़स बंधाय अपने घर आया और उन्होंने सात पांच कर रात गंवाई भोर होतेही इधर राजा शिशुपाल औ जुरासिन्धु तो व्याहका दिन जान बरात निकालनेकी धूमधाममें लगे और उधर राजा भीष्मकके यहांभी मङ्गलाचार होने लगे इसमें रुक्मिणीजीने उठतेही एक ब्राह्मणके हाथ श्रीकृष्णचन्द्रसे कहला भेजा कि कृपानिधान आज व्याहका दिन है दो घड़ी दिन रहे नगरके पूरब देवीका मन्दिर है तहां मैं पूजा करने जाऊंगी मेरी लाज तुम्हें है जिसमें रहे सो करियेगा॥

आगे पहर एक दिन चढ़ सखी महली औ कुटुम्बकी स्त्रियां आईं तिन्होंने आतेही पहले तो आंङ्गनमें गजमोतियोंका चौक पुरवाय कञ्चनकी जड़ाउ चौकी बिछवाय तिसपर रुक्मिणीको बिठाय सात सुहागनोंसे तेल चढ़वाया पीछे सुगन्ध उबटन लगाय न्हलाय धुलाय उसे सोलह सिङ्गार करवाय बारह आभूषण पहराय ऊपर राता चोला उढ़ाय बेणी बनाय बिठाया इतनेमें घड़ी चार एक दिन पीछला रह गया उसकाल रुक्मिणी बाल अपनी सब सखी सहेलियोंको साथ ले बाजे गाजेसे देवीकी पूजा करनेको चली तो राजा भीष्मकने अपने लोग रखवालीका उसके साथ कर दिये॥

ये समाचार पाय कि राजकन्या नगरके बाहर देवी पूजने चली है राजा शिशुपालनेभी श्रीकृष्णचन्द्रके डरसे अपने बड़े बड़े रावत सांवत सूरबीर योधाओंको बुलाय सब भांति ऊंच नीच समझाय बुझाय रुक्मिणीजीकी चौकसीको भेज दिया वेभी आय अपने अपने अस्त्र शस्त्र संभाल राजकन्याके सङ्ग हो लिये उस बिरि

यों रुक्मिणीजी सब सिङ्गार किये सखी सहेलियोंके झुण्डके झुण्ड लिये अन्तर पटकी ओटमें औ काले काले राक्षसोंके कोटमें जाते ऐसी शोभायमान लगतीथीं कि जैसे श्याम घटाके बीच तारे मण्डल समेत चन्द्र निदान कितनी एक बेरमें चलीं चलीं देवीके मन्दिरमें पहुंचीं वहां जाय हाथ पांव धोय आचमन कर शुद्ध होय राजकन्याने पहले तो चन्दन अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य कर श्रद्धा समेत वेदकी बिधिसे देवीकी पूजा की पीछे ब्राह्मणियोंको इच्छा भोजन करवाय सुथरी तीयलें पहराय रोलकी खौड़ काढ़ अक्षत लगाय उन्हें दक्षिणा दी औ उनसे आशीस ली॥

आगे देवीकी परिक्रमा दे वह चन्द्रमुखी चम्पकबरणी मृगनयनी पिकबयनी गजगवनी सखियोंको साथ ले हरिके मिलनेकी चिन्ता किये जों वहांसे निचिन्त होय चलनेको हुई तो श्रीकृष्णचन्द्रभी अकेले रथपर बैठ वहां पहुंचे जहां रुक्मिणीके साथी सब योधा अस्त्र शस्त्रसे जकड़े खड़े थे इतना कह श्रीशुकदेवजी बोले कि॥

पूजि गौरि जबही चली, एक कहति अकुलाय।
सुन सुन्दरि आये हरि देख ध्वजा फहराय॥

यह बात सखीसे सुन औ प्रभुके रथकी बैरख देख राजकन्या अति आनन्द कर फूली अङ्ग न समाती थी औ सखीके हाथ पर हाथ दिये मोहिनी रूप किये हरिके मिलनेकी आस लिये कुछ कुछ मुसकुराती ऐसे सबके बीच मन्द गति जाती थी कि जिसकी शोभा कुछ बरणी नहीं जाती आगे श्रीकृष्णचन्द्रको देखतेही सब रखवाले भूलेसे खड़ा हो रहे औ अन्तर पट उनके हाथसे छूट पड़ा इसमें मोहनी रूपसे रुक्मिणीजीको जो उन्होंने देखा तो औरभी मोहित हो ऐसे शिथिल हुए कि जिन्हें अपने तन मनकी भी सुध न थी॥

भकुटी धनुष चढ़ाय, अञ्जन बरणी पनचकै।
लोचन बाण चलाय, मारे पै जीवत रहै॥

महाराज उसकाल सब राक्षस तो चित्रकेसे खड़े खड़े देखतेही रहे औ श्रीकृष्णचन्द सबके बीच रुक्मिणीके पास रथ बढ़ाय जा खड़े हुए प्राण पतिको देखतेही उसने सकुच कर मिलनेको जों हाथ बढ़ाया तों प्रभुने बांए हाथसे उठाय उसे रथपर बैठाया॥

कांपत गात सकुच मन भारी। छांड़ि सबन हरि सङ्ग सिधारी॥
जों बैरागी छाड़े गेह। कृष्ण चरण सों करै सनेह॥

महाराज रुक्मिणीजीने तो तप जप व्रत पुण्य कियेका फल पाया औ पिछला दुख सब गंवाया बैरी अस्त्र शस्त्र लिये खड़े मुख देखते रहे प्रभु उनके बीचसे रुक्मिणीको ले ऐसे चले कि॥

जों बहुभुण्डनि स्यारचे, परे सिंह बिच आय।
अपनो भच्छण लेइके, चले निडर घहराय॥

आगे श्रीकृष्णचन्द्रके चलतेही बलरामजीभी पीछेसे धौंसा दे सब दल साथ ले जा मिले॥

५५ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज कितनी एक दूर जाय श्रीकृष्णचन्द्रने रुक्मिणीजीको शोच संकोच युत देखकर कहा कि सुन्दरी अब तुम किसीबातकी चिन्ता मत करो मैं शङ्खध्वनि कर सब तुम्हारे मनका डर हरूंगा औ द्वारिकामें पहुंच वेदकी बिधिसे बरूंगा यों कह प्रभुने उसे अपनी माला पहिराय बांई ओर बैठाय जैसां शङ्खध्वनि करी त्यों शिशुपाल औ जरासिन्धुके साथी सब चौंक पड़े यह बात सारे नगरमें फैल गई कि हरि रुक्मिणीको हर ले गये॥

इसमें रुक्मिणी हरण अपने बिन लोगोंके मुखसे सुन कि जो चौकसीको राजकन्या संग गये थे राजा शिशुपाल औ जरासिन्धु अति क्रोधकर झिलम टोप पहन पेटी बांध सब शस्त्र लगाय अप

मा अपना कटक ले लड़नेको श्रीकृष्णके पीछे चढ़ दौड़े औ उन के निकट जाय आयुध संभाल संभाल ललकारे अरे भागे क्यों जाते हो खड़े रहो शस्त्र पकड़ लड़ो जो सच्चे सूरबीर हैं वे खेतमें, पीठ नहीं देते महाराज इतनी बात सुनतेही जादव फिर सनमुख हुए और लगे दोनों ओरसे शस्त्र चलने उसकाल रुक्मिणी बाल अतिभयमान घुंघटकी ओट किये आंसुभर भर लम्बी सांसे लेती थी औ प्रीतमका मुख निरख निरख मनहीं मन बिचार कर यों कहती थी कि ये मेरे लिये इतना दुख पाते हैं अन्तरजामी रुक्मिणीके मनका भेद जान बोले कि सुन्दरि तू क्यों डरती है तेरे देखतेही देखते सब असुर दलको मार भूमिका भार उतारता हूं तू अपने मनसें किसी बातकी चिन्ता मत कर इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा उसकाल देवता अपने अपने बिमानोंमें बैठे आकाशसे देखते क्या हैं कि ॥

जादव असुरन सों लरत, होत महा संग्राम।
ठाढ़े देखत कृष्ण हैं, करत युद्ध बलराम॥

मारू बाजता है कड़खैत कड़का गाते हैं चारण यश बखानते हैं अश्वपति अश्वपतिसे गजपति गजपतिसे रथी रथीसे पैदल पैदलसे भिड़ रहे हैं इधर उधरके सूरबीर पिल पिलके हाथ मारते हैं औ कायर खेत छोड़ अपना जी ले भागते हैं घायल खड़े झूमते हैं कबन्ध हाथमें तरवार लिये चारोंओर घूमते हैं औ लोथपर लोथ गिरती हैं तिनसे लोहूकी नदी बह चली है तिसमें जहां तहां हाथी जो मरे पड़े हैं सो टापुसे जनाते हैं औ मुण्ड मगरसे बह रहे हैं भूत प्रेत पिशाच सङ्ग लिये शिव चुन चुन मुण्डमाल बनाय बनाय पहनते हैं औ गिद्ध श्याल कूकर आपसमें लड़ लड़ लोथें खैंच खैंच लाते हैं औ फाड़ फाड़ खाते हैं काए आंखें निकाल निकाल धड़ोंसे ले जाते हैं निदान देवताओंके देखतेही देखते बलरामजीने सब असुरदल यों काटडाला कि

जों किसान खेत काटडाले आगे जुरासिन्धु औ शिशुपाल सब दल कटाय कई एक घायल सङ्ग लिये भागके एक ठौर जा खड़े रहे तहां शिशुपालने बहुत अछताय पछताय शिर डुलाय जुरासिन्धु से कहा कि अब तो अपयश पाय औ कुलको कलङ्क लगाय संसार में जीना उचित नहीं इसे आप आज्ञा दें तो मैं रणमें जाय लड़ मरूं ॥

नातरु हैं करि हैं बनबास। लैहुं जोग छांड़ सब आस।
गई आन पत अब क्यों कीजे। राखि प्राण क्यों अपयश लीजे ॥

इतनी बात सुन जुरासिन्धु बोला कि महाराज आप ज्ञानवान हैं औ सब बातमें सुजान प्रवीन मैं तुम्हें क्या समझाऊं जो ज्ञानी पुरुष हैं सो हुई बातका शोच नहीं करते क्योंकि भले बुरेका करत औरही है मनुषका कुछ बश नहीं अरु परवश पराधीन है जैसे काटकी पुत लीची नटुवा जों नचाता है तों नाचती है सो ऐसेही मनुष करताके बश है वह जो चाहता है सो करता है इसे सुख दुखमें हरष शोक न कीजे सब सपनासा जान लीजे मैं तेईस अक्षौहिणी ले मथुरापुरी पर सत्रह बेर चढ़ गया और इसी कृष्णने सत्रह बेर मेरा सब दल हना मैंने कुच शोच न किया और अठारवीं बेर जब इसका दल मारा तब कुच हरषभी न किया यह भागकर पहाड़पर जा चढ़ा मैंने इसे वहीं फुंक दिया न जानिये यह क्यों कर जिया इसकी गति कुछ जानी नहीं जाती इतना कह फिर जुरासिन्धु बोला कि महाराज अब उचित यही है जो इस समयको टाल दीजे कहा है कि प्राण बचे तो पीछे सब हो रहता है जैसे हमें हुआ कि सत्रह बार हार अठारवीं बेर जीते इससे जिससें अपनो कुशल होय सो कीजे औ हठ छांड़ दीजे ॥

महाराज जब जुरासिन्धुने ऐसे समझायके कहा तब विसे कुछ धीरज हुआ औ जितने घायल योधा बचे थे तिन्हें साथ ले अ

छता पछता जुरासिन्धुके सङ्ग हो लिया थे तो यहांसे यों हारके चले और जहां शिशुपालका घर था तहांकी बात सुनों कि पुत्र का आगमन विचार शिशुपालकी मा जों मङ्गलाचार करने लगी तों सन्मुख छींक हुई औ दाहनी आंख उसकी फड़कने लगी यह असगुण देख विसका माथा ठनका कि इस बीच किसीने आय कहा जो तुम्हारे पुत्रकी सब सेना कट गई औ दुलहनभी न मिली अब वहांसे भाग अपना जीव ले आता है इतनी बातके सुनतेही शिशुपालकी महतारी अति चिन्ता कर अबाक हो रही आगे शिशुपाल औ जुरासिन्धुका भागना सुन रुक्म अति क्रोध कर अपनी सभामें आन बैठा और सबको सुनाय कहने लगा कि कृष्ण मेरे हाथसे बच कहां जा सकता है अभी जाय विसे मार रुक्मिणीको ले आऊ तो मेरा नाम रुक्म नहीं तो फिर कुण्डल पुरमें न आऊं महाराज ऐसे पैज कर रुक्म एक अक्षौहिणी दल ले श्रीकृष्णचन्द्रसे लड़नेको चढ़ धाया और उससे यादवोंका दल जा घेरा उसकाल विसने अपने लोगोंसे कहा कि तुमतो यादवोंके मारो औ मैं आगे जाय कृष्णको जीता पकड़ लाता हूं इतनी बातके सुनतेही उसके साथी तो यदुवंशियोंसे युद्ध करने लगे औ वह रथ बढ़ाय श्रीकृष्णचन्द्रके निकट जाय ललकार कर बोला अरे कपटी गंवार तू क्या जाने राज ब्योहार बालक पनमें जैसे तैंने दूध दहीकी चोरी करी तैसे तूने यहांभी आय सुन्दरी हरि॥

ब्रजबासी हम नहीं अहीर। ऐसे कह कर लीने तीर॥
विषके बुझे लिये उन बीन। खेंच धनुष सर छोड़ तीन॥

उन बाणोंको आते देख श्रीकृष्णचन्द्रने बीचही काटा फिर रुक्मने और बाण चलाये प्रभुने वे भी काट गिराये औ अपना धनुष सम्भाल कईएक बाण ऐसे मारे कि रथके घोड़ों समेत सारथी उड़ गया और धनुष उसके हाथसे कट नीचे गिरा पुनि जितने आयुध उसने लिये हरिने सब काट काट गिरा दिये तब

तो वह अति झुझलाय फरी खांड़ा उठाय रथसे कूद श्रीकृष्णचन्द्रकी ओर यों झपटा कि जैसे बावला गीदड़ गज पर आवे कै जौं पतङ्ग दीपक पर धावे निदान जातेही उनने हरिके रथ पर एक गदा चलाई कि प्रभुने झट उसे पकड़ बांधा औ चाहा कि मारें इसमें रुक्मिणीजी बोलीं॥

मारो मत भैया है मेरौ। छाड़ो नाथ तिहारौ चेरौ।
मूरख अन्ध कहा यह जाने। लक्ष्मीकन्तहि मानुष माने॥
तुम योगेश्वर आदि अनन्त। भक्त हेत प्रगटत भगवन्त॥
यह जड़ कहा तम्हें पहचाने। दीन दयाल कृपाल बखाने॥

इतना कह फिर कहने लगीं कि साधु जड़ औ बालकका अपराध मनमें नहीं लाते जैसे सिंह स्वानके भूसने पर ध्यान नहीं करता और जो तुम इसे मारोगे तो होगा मेरे पिताको सोग यह करना तुम्हें नहीं है जोग जिस ठौर तम्हारे चरण पड़ते हैं तहांके सब प्राणी आनन्दमें रहते हैं यह बड़े अचरजकी बात है कि तुम सासरा रहते राजा भीष्मक पुत्रका दुख पावे महाराज ऐसे कह एक बार तो रुक्मिणीजी यों बोलीं कि तुमने भला हित सम्बन्धीसे किया जो पकड़ बांधा औ खड्ग हाथमें ले मारने को उपस्थित हुए पुनि अति व्याकुल हो थर थराय आंखें डबडबाय बिसुर बिसुर पाओं पड़ गोद पसार कहने लगीं॥

बन्धु भीख प्रभु मोकों देऊ। इतनों यश तुम जगमें लेऊ।

इतनी बातके सुन्नेसे औ रुक्मिणीजीकी ओर देखनेसे श्रीकृष्णचन्द्रजीका सब कोप शान्त हुआ तब उन्होंने उसे जीवसे तो न मारा पर सारथीको सैन करी उसने झट इनकी पगड़ी उतार टुण्डियां चढ़ाय मुंछ दाढ़ी औ शिर मुंड़ सात चोटी रख रथके पीछे बांध लिया॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज रुक्मकी तो श्रीकृष्णजीने वहां यह अवस्था की और बलदेवजी वहांसे सब

असुर दलको मार भगायकर भाईके मिलनेको ऐसे चले कि जैसे श्वेत गज कमल दहमें कमलोंको तोड़ खाय बिथराय अकुलायके भागता होय निदान कितनी एक बेरमें प्रभुके समीप जाय पहुंचे औ रुक्मको बन्धा देख श्रीकृष्णजीसे अति झुंझलायके बोले कि तुमने यह क्या काम किया जो शालेको पकड़ बांधा तुम्हारी कुटेव नहीं जाती ॥

बांध्यो याहि करी बुधि थारी। यह तुम कृण सगाई तोरी ॥
औ यदुकुल कौ लोक लगाई। अब हम सों को करिहि सगाई ॥

जिस समै यह युद्ध करनेको आपके सन्मुख आया तुमने इसे सम झाय बुझायके उलटा क्यों न फेर दिया महाराज ऐसे कह बल राम जीने रुक्मको तो खोल समझाय बुझाय अति शिष्टाचार कर बिदा किया फिर हाथ जोड़ अति बिनती कर बलराम सुखधाम रुक्मिणी जीसे कहने लगे कि हे सुन्दरि तुम्हारे भाई की जो यह दशा हुई इसमें कुछ हमारी चूक नहीं यह उसके पूर्व जन्मके किये कर्मका फल है और क्षत्रियोंका धर्मभी है कि भूमि धन स्त्रियोंके काज करते हैं युद्ध दल परस्पर साज इस बातका तुम बिलग मत मानो मेरा कहा सचही जानो हार जीतभी उस के साथही लगी है और यह संसार दुखका समुद्र है यहां आय सुख कहां पर मनुष मायाके बश हो दुख सुख भला बुरा हार जीत संयोग बियोग सबही मनसे मान लेते हैं पै इसमें ह रष शोक जीवको नहीं होता तुम अपने भाईके बिरूप होनेकी चिन्ता मत करो क्योंकि ज्ञानी लोग जीव अमर देहका नाश क हते हैं इस लेखे देहकी पत जानेसे कुछ जीवकी नहीं गई ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि धर्मावतार जब बलरामजीने ऐसे रुक्मिणीको समझाया तब ॥

सुनि सुन्दरि मन समझकै, किये जेठकी लाज।
सैन मांहिं पिय सों कहत हांकहु रथ ब्रजराज ॥

घूंघट ओट बदनकी करै। मधुर बचन हरि सों उच्चरै।
सम्मुख ठाढ़े हैं बलदाऊ। अहो कन्त रथ बेग चलाऊ॥

इतना बचन औरुक्मिणीजीके मुखसे निकलतेही इधर तो श्रीकृष्णचन्द्रजीने रथ द्वारिकाकी ओर हांका औ उधर रुक्म अपने लोगोंमें जाय अति चिन्ताकर कहने लगा कि मैं कुण्डलपुर से यह पैज करके आया था कि अभी जाय कृष्ण बलरामको सब यदुबंशियों समेत मार रुक्मिणीको ले आऊंगा सो मेरा पन पूरा न हुआ और उलटी अपनी पत खोई अब जीता न रहूंगा इस देश औ गृहस्थाश्रमको छोड़ बैरागी हो कहीं जाय मरूंगा॥

जब रुक्मने ऐसे कहा तब उसके लोगोंमेंसे कोई बोला महाराज तुम महाबीर हो औ बड़े प्रतापी तुम्हारे हाथसे जो ये जीते बच गये सो विनके भले दिन थे अपनी प्रारब्धके बलसे निकल गये नहीं तो आपके सनमुख हो कोई शत्रु कब जीता बच सकता है तुम सज्ञान हो ऐसी बात क्यों बिचारते हो कभी हार होती है कभी जीत पर सुर बीरोंका धर्म है जो साहस नहीं छोड़ते भला रिपु आज बच गया फिर मार लेंगे महाराज जद यों विसने रुक्मको समझाया तद वह यह कहने लगा कि सुनो॥

हारो उन सों औ पत गई। मेरे मन अति लज्जा भई।
जन्म न हैां कुण्डलपुर लाऊ। बरन औरही गावं बसाऊ॥
यों कह उन इक नगर बसायौ। सुत दारा धन तहां मंगायौ॥
ताको धरो भोज कठ नाम। ऐसे रुक्म बसायो गांम॥

महाराज उधर रुक्म तो राजा भीष्मकसे बैर कर वहां रहा औ इधर श्रीकृष्णन्द औ बलदेवजी चले चले द्वारिकाके निकट आय पहुंचे॥

उड़ी रेणु आकाश जु छाई। तबही पुरबासिन सुध पाई॥
आवत हरि जाने जहिं राखैरा नगर बनाय॥
शोभा भई तिहूं लोककी, कही कौन पै जाय॥

उसकाल घर घर मङ्गलाचार हो रहे द्वार द्वार कलके खंभ गड़े कञ्चन कलश सजल सपल्लव धरे ध्वजा पताका फहराय रहीं तो रण बन्दनवारें बन्धी हुईं और हर हाट बाट चोहटोंमें चौमुखे दिये लिये युवतियोंके यूथके यूथ खड़े औ राजा उग्रसेनभी सब यदुबंशियों समेत बाजे गाजेसे अगाऊ जाय रीति भांति कर बल राम सुखधाम औ श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्दको नगरमें ले आये उस समैके बनावकी छबि कुछ बरणी नहीं जाती क्या पुरुष सब होके मनमें आनन्द छाय रहा था प्रभुके सोंहीं आयर सब भेंट दे दे भेंटते थे औ नारियां अपने द्वारों बारों चौबारों कोठों परसे मङ्गली गीत गायर आरती उतार उतार फूल बरषावती थीं औ श्रीकृष्णचन्द औ बलदेवजी जथा जोग सबकी मनुहार करते जाते थे निदान इसी रीतिसे चले चले राजमन्दिरमें जा बिराजे आगे कई एक दिवस पीछे एक दिन श्रीकृष्णजी राजसभामें गये जहां राजा उग्रसेन सूरसेन बसुदेव आदि सब बड़े बड़े यदुबंशी बैठे थे और प्रणाम कर इन्होंने उनके आगे कहा कि महारा ज युद्ध जीत जो कोई सुन्दरी लाता है वही राक्षस ब्याह कहाता है॥

इतनी बातके सुनतेही सूरसेनजीने पुरोहित बुलाय बिसे सम झायके कहा कि तुम श्रीकृष्णके बिबाहका दिन ठहरा दो उस ने भट पत्रा खोल भला महीना दिन बार नक्षत्र देख शुभ सूर ज चन्द्रमा बिचार ब्याहका दिन ठहराय दिया तब राजा उग्रसेन ने अपने मन्त्रियोंको तो यह आज्ञा दी कि तुम ब्याहकी सब सा मा इकठी करो और आप बैठ पत्र लिख लिख पाण्डव कौरव आदि सब देश बिदेशके राजाओंको ब्राह्मणोंके हाथ भिजवाये म हाराज चीठी पातेही सब राजा प्रसन्न हो हो उठ धाये तिन्होंके साथ ब्राह्मण पण्डित भाट भिखारीभि हो लिये॥

और ये समाचार पाय राजा भीष्मकनेभी बहुत बस्त्र शस्त्र जड़ाऊ आभूषण औ रथ हाथी घोड़े दस दासियोंके डोले एक ब्राह्मणको दे कन्यादानका सङ्कल्प मनहींमें ले अति बिनती कर द्वारिकाको भेज दिया उधरसे तो देश देशके नरेश आये औ इधरसे राजा भीष्मकका पठाया सब सामा लिये वह ब्राह्मण भी आया उस समैकी शोभा द्वारिकापुरीकी कुछ बरणी नहीं जाती आगे ब्याहका दिन आया तो सब रीति भांति कर बर कन्याको मंढ़के नीचे लेजा बैठाया और सब बड़े बड़े बूढ़े यदुबंशीभी आय बैठे उस बिरियां॥

पण्डित तहां वेद उच्चरें। रुक्मिणि सङ्ग हरि भांवरि फिरें॥
ढोल दुन्दुभी भेरि बजावें। हरषहिं देव पुष्प बरषावे॥
सिद्ध साध चारण गन्धर्व। अन्तरीक्ष भये देखें सर्व॥
चढ़ें बिमान घिरे शिर नावें। देव बधू सब मङ्गल गावें॥
हाथ गहेरा प्रभु भांवरि पारी। बाम अङ्ग रुक्मिणी बैठारी॥
छोरी गांठ पटा फेर दियो। कुल देवीकी पूजा कियो॥
छोरत कङ्कन हरि सुन्दरी। खेलत दूधा भाती करी।
अति आनन्द भआ जगदीश। निरषि हरषि सब देहिं अशीस॥
हरि रुक्मिणी जोरी शिरजियें। जिनको चरित सुधारसपियें॥
दीनो दान बिप्र जे आये। मागध बन्दी जन पहिराये॥
जो नृप देश देशके आये। दीनी बिदा सबे पहुंचाये॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जो जन हरि रुक्मिणीका चरित्र पढ़ सुनेगा औ पढ़ सुनके सुमिरण करेगा सो भक्ति मुक्ति यश पावेगा पनि जो फल होता है अश्वमेधादि यज्ञ गौआदि दान गङ्गादि स्नान प्रयागादि तीर्थके करनेमें सोई फल मिलता है हरि कथा कहने सुन्नेमें। इति॥

५३ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोलेकि महाराज एक दिन श्रीमहादेवजी अपने

स्थानके बीच ध्यानमें बैठे थे कि एकाएकी कामदेवने आ सताया तो हरका ध्यान छूटा औ लगे अज्ञान हो पार्वतीजीके साथ क्रीड़ा करने इसमें कितनी एक बेर पीछे शिवजीको केलि करतेर जब ज्ञान हुआ तब क्रोधकर कामदेवको जलाय भस्म किया॥

काम बली जब शिव दहैया। तब रति धरत न धीर॥
पति बिन अति तलफत खरी। बिह्वल बिकल शरीर॥
काम नारि अति लोटति फिरै। कन्त कन्त कहि छिति भुज भरै॥
पिय बिन तिय अति दुखिया जान। तब यों गौरा कियौ बखान॥

कि हे रति तू चिन्ता मत करै तेरा पति तुझे जिस भांति मिलेगा तिसका भेद सुन मैं कहती हूं कि पहले तो वह श्रीकृष्णचन्द्रके घरमें जन्म लेगा औ तिसका नाम प्रद्युम्न होगा पीछे उसे सम्बर ले जाय समुद्रमें बहावेगा फिर वह मच्छके पेटमें हो सम्बरहीकी रसोईमें आवेगा तू वहीं जायके रह जब वह आये तब उसे ले पालियो पुनि वह सम्बरको मार तुझे साथ ले द्वारिकामें सुखसे जाय बसेगा महाराज॥

शिव रानी यों रति समझाई। तब तन धर सम्बर घर आई॥
सुन्दरि बीच रसोई रहै। निश दिन मारग पियकौ चहै॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा उधर रति तो पियके मिलनकी आश कर यों रहने लगी औ इधर रुक्मिणीजीको गर्भ रहा औ दश महीनेमें पूरे दिनों लड़का भया यह समाचार पाय जोतिषियोंने आय लग्न साध वसुदेवजीसे कहा कि महाराज इस बालकके शुभग्रह देख हमारे विचारमें यों आता है कि रूप गुण पराक्रममें यह श्रीकृष्णचन्द्रजीहीके समान होगा पर बालक पलभर जलमें रहेगा पुनि रिपुको मार स्त्री समेत आन मिलेगा यों कह प्रद्युम्न नाम धर जोतिषी तो दक्षिणा ले बिदा हुए औ वसुदेवजीके घरमें रीति भांति औ मङ्गलाचार होने लगे आगे श्रीनारदमुनि जीने जाय कसी समै समझाय सम्बरसे

कहा कि तु किस नींद सोता है तुझे चेत है कै नहीं वह बोला क्या इन्होंने कहा तेरा बैरी कामका अवतार प्रद्युम्न नाम श्री कृष्णचन्द्रके घरमें जन्म ले चुका॥

राजा नारदजी तो सम्बरको यों चिताय चले गये औ सम्बरने शोच बिचार कर मनहीं मनमें यह उपाय ठहराया कि पवन रूप हो वहां जाय बिसे हरलाऊं औ समुद्रमें बहाऊं तो मेरे मनकी चिन्ता मिटे औ निर्भय हो रहूं यह बिचार सम्बर वहांसे उठ अलखरूप हो चला चला श्रीकृष्णचन्द्रके मन्दिरमें आया कि जहां रुक्मिणीजी सोअरमें हाथसे दबाय छातीसे लगाय बालकको दूध पिलाती थीं औ वह चुप चाप घात लगाय खड़ा हो रहा जो बालक परसे रुक्मिणीजीका हाथ अलग हुआ तो असुर अपनी माया फैलाय उसे उठाय ऐसे ले आया कि जितनी स्त्रियां वहां बैठी थीं तिनमेंसे किसीने न देखा न जाना कि कौन किस रूपसे आय क्यों कर उठाय ले गाय बालकको आगे न देख रुक्मिणीजी अति घबराई औ रोने लगीं उनके रोनेका शब्द सुन सब यदुबंसी क्या स्त्री क्या पुरुष घिर आये औ अनेक अनेक प्रकारकी बातें कह कह चिन्ता करने लगे॥

इसबीच नारदजीने आय सबको समझाकर कहा कि तुम बालकके जानेकी कुछ भावना मत करो तिसे किसी बातका डर नहीं वह कहीं जाय पर उसे काल न व्यापैगा और बालापन बितीत कर एक सुन्दरी नारी साथ लिये तुम्हें आय मिलेगा महाराज ऐसे सब यदुबंशियोंको भेद बताय समझाय बुझाय नारदमुनि जब बिदा हुए तब वे भी शोच समझ सन्तोष कर रहे॥

अब आगे कथा सुनिये कि सम्बर जो प्रद्युम्नको ले गया था उसने उन्हें समुद्रमें डाल दिया वहां एक मछलीसे इन्हें निगल लिया उस मछलीको एक औ बड़ी मछली निगल गई इसमें एक मछुएने जाय समुद्रमें जो जाल फेंका तो वह मीन जालमें आई

धीमर जाल खैंच उस मच्छको देख अति प्रसन्न हो ले अपने घर आया निदान वह मछली उसने राजा सम्बरको भेट दी राजाने ले अपने रसोई घरमें भेज दी रसोई करनेवालीने जों उस मछलीको चीरा तों उसमेंसे एक और मछली निकली तिसका पेट फाड़ा तो एक लड़का श्यामवरण अति सुन्दर उसमेंसे निकला उसने देखतेही अति अचरज किया औ वह लड़का ले जाय रतिको दिया उसने महा प्रसन्न हो लेलिया यह बात सम्बरने सुनी तो रतिको बुलायके कहा कि इस लड़केको भले भांतिसे यत्न कर पाल इतनी बात राजाकी सुन रति उस लड़केको ले निज मन्दिरमें आई उसकाल नारदजीने जाय रीतिसे कहा॥

अब तू याहि पाल चित लाय। तो पति प्रद्युम्न प्रगटेगा आय।
सम्बर मारि तोहि लैजै है। बालापन या ठौर बितै है॥

इतना भेद बताय नारदमुनि तो चले गये औ रति अति हित से चित लगाय पालने लगी जों जों वह बालक बढ़ता था तों तों रतिको पतिके मिलनेका चाव होता था कभी वह उसका रूप देख प्रेम कर हियेसे लगाती थी कभी दृग मुख कपोल चूम आप ही बिहस उसके गले लगती थी और यों कहती थी॥

ऐसो प्रभु संयोग बनायो। मछली मांहिं कन्त मैं पायो॥

औ महाराज।

प्रेम सहित पिय लगायकै, हित सों प्यावत ताहि॥
हलरावत गुण गायकै, कहत कन्त चित चाहि॥

आगे जब प्रद्युम्नजी पांच बर्षके हुए तब रतिने अनेक अनेक भांतिके बस्त्र आभूषण पहनाय पहनाय अपने मनकी साध पूरी करने लगी औ नैनोंको सुख देने उसकाल वह बालक जों रतिका अञ्चल पकड़ कर मा मा कहने लगा तों वह हंस कर बोली हे कन्त तुम यह क्या कहते हो मैं तुम्हारी नारी तुम देखो अपने हिये बिचारी मुझे पारवती जीने यह कहा था कि तु सम्बरके

घर जाय रही तेरा कन्त श्रीकृष्णचन्द्रजीके घरमें जन्म लेगा सो मछलीके पेटमें हो तेरे पास आवेगा औ नारदजीभी कह गये थे कि तु उदास मत हो तेरा स्वामी तुझे आय मिलता है तभीसे मैं तुम्हारे मिलनेकी आश किये यहां वास कर रही हुं तुम्हारे आनेसे मेरी आश पूरी भई।

ऐसे कह रतिने फिर पतिको धनुषविद्या सब पढ़ाई जब वे धनुष विद्यामें निपुन हुए तब एक दिन रतिने पतिसे कहा कि स्वामी अब यहां रहना उचित नहीं क्योंकि तुम्हारी माता श्रीरुक्मिणीजी ऐसे तुम बिन दुख पाय अकुलाती हैं जैसे बच्छ बिन गाय इसे अब उचित यही है कि असुर सम्बरको मार मुझे सङ्ग ले द्वारिकामें चलि मात पिताका दरशन कीजे और तिन्हें सुख दीजे जो आपके देखनेकी लालसा किये हुए हैं॥

श्रीशुकदेवजी यह प्रसङ्ग सुनाय राजासे कहने लगे कि महाराज इसी रीतिसे रतिकी बातें सुनते सुन्ते प्रद्युम्नजी जब सयाने हुए तो एक दिन खेलते खेलते राजा सम्बरके पास गये वह इन्हें देखतेही अपनेही लड़के समान जान लाड़ कर बोला कि इस बालकको मैंने अपना लड़का कर पाला है इतनी बातके सुनतेही प्रद्युम्नजीने अति क्रोध कर कहा कि मैं बालक हूं बैरी तेरा अब तू लड़कर देख बल मेरा यों सुनाय खंभ ठोक सनमुख हुआ तब हंसकर सम्बर कहने लगा कि भाई यह मेरे लिये दूसरा प्रद्युम्न कहांसे आ या क्या दूध पिला मैंने सर्प बढ़ाया जो ऐसी बातें कहता है इतना कह फिर बोला अरे बेटा तु क्यों कहता है ये बैन क्या तुझे यम दूत आये हैं लेन॥

महाराज इतनी बात सम्बरके मुंहसे सुनतेही वह बोला प्रद्युम्न मेराही है नाम मुझसे आज तु कर संग्राम तैंने तो या मुझे सागरमें बहाया पर अब मैं अपना बैर लेन फिर आया तुने अपने घरमें आपना काल बढ़ाया आप कौन किसका बेटा और कौन

किसका बाप। सुन सम्बर आयुध गहे, बढ़्यो क्रोध मन भाव॥
मनहु सर्पकी पुछ पर पर्यो अचेरे पांव॥

आगे सम्बर अपना सब दल मंगवाय प्रद्युम्नको बाहर ले आय क्रोध कर गदा उठाय मेघकी भांति गरजकर बोला देखूं अब तुझे कालसे कौन बचाता है इतना कह ज्यों उसने दपटपै गदा चलाई त्यों प्रद्युम्नजीने सहजही काट गिराई फिर उसने रिसाय कर अग्निबाण चलाये इन्होंने जलबाण छोड़ बुझाय गिराये तब तो सम्बरने महा क्रोध कर जितने आयुध उसके पास थे सब किये औ उन्होंने काट काट गिराय दिये जब कोई आयुध उनके पास न रहा तब क्रोधकर धाय प्रद्युम्नजी जायलिपटे औ दोनोंमें मल्ल युद्ध होने लगा कितनी एक बेर पीछे ये उसे आकाश को ले उड़े वहां जाय खड्गसे उसका शिर काट गिराय दिया औ फिर आय असुर दलका बध किया॥

सम्बरको मारा रतिने सुख पाया औ विसी समय एक बिमान स्वर्गसे आया उसपर रति पति दोनों चढ़ बैठे द्वारिकाको चले ऐसे कि जैसे दामिनी समेत सुन्दर मेघ जाता हो और चले चले वहां पहुंचे कि जहां कञ्चनके मन्दिर ऊंचे सुमेरुसे जगमगाय रहे थे बिमानसे उतर अचानक दोनों रनवासमें गये इन्हें देख सब सुन्दरी चौंक उठीं और यों समझ कि श्रीकृष्ण एक सुन्दरी नारी सङ्ग ले आये हैं सकुच रहीं पर यह भेद किसुने न जाना कि प्रद्युम्न हैं सब कृष्णही कृष्ण कहती थीं इसमें जब प्रद्युम्नजी ने कहा कि हमारे माता पिता कहां हैं तब रुक्मिणीजी अपनी सखियोंसे कहने लगीं हे सखी यह हरिकी उनहार कौन है वे बोलीं हमारी समझमें तो ऐसा आता है कि हो न हो यह श्री कृष्णहीका पुत्र है इतनी बातके सुनतेही रुक्मिणीजीकी छाती से दुधकी धार बह निकली औ बाईं बांह फड़कने लगी और मि लनेको मन घबराया पर बिन पतिकी आज्ञा मिल न सकीं उस

काल वहां नारदजीने आय पूर्व कथा कह सबके मनका सन्देह मिटा दिया तब तो रुक्मिणीजीने दौड़कर पुत्रका शिर चूम उसे छातीसे लगाया और रीति भांतिसे व्याह कर बेटे बहूको घरमें लिया उस समय क्या स्त्री क्या पुरुष सब यदुबंशियोंने आय मङ्गलाचार कर अति आनन्द किया घर घर बधाई बाजने लगीं औ सारी द्वारिकापुरीमें सुख छाय गया॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज ऐसे प्रद्युम्नजी जन्म ले बालकपन अनत बिताय रिपुको मार रतिको ले द्वारिकापुरीमें आये तब घर घर आनन्द मङ्गल हुए बधावे इति॥

५७ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज सत्राजीतने पहले तो श्रीकृष्ण चन्द्रको मणिकी चोरी लगाई पीछे झूठ समझ लज्जित हो उसने अपनी कन्या सत्यभामा हरिको ब्याह दी यह सुन राजा परीक्षितने श्रीशुकदेवजीसे पूछा कि कृपानिधान सत्राजीत कौन था मणि उसने कहां पाई और कैसे हरिको चोरी लगाई फिर क्यों कर झूठ समझ कन्या ब्याह दी यह तुम मुझे बुझाके कहो॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज सुनिये मैं सब समझाकर कहता हूं सत्राजीत एक यादव था तिसने बहुत दिन तक सूरजकी अति कठिन तपस्या की तब सूरजदेवताने प्रसन्न हो उसे निकट बुलाय मणि देकर कहा कि स्यमन्तक है इस मणिका नाम इसमें है सुख सम्पतका विश्राम सदा इसे मानियो और बल तेजमें मेरे समान जानियो तू इसे जप तप संयम व्रत कर ध्यावेगा तो इससे मुंह मांगा फल पावेगा जिस देश नगर घरमें यह जावेगा तहां दुख दरिद्र काल कभी न आवेगा सर्वदा सुकाल रहेगा औ ऋद्धि सिद्धिभी रहेगी॥

महाराज ऐसे कह सूरजदेवताने सत्राजीतको बिदा किया वह

मणिले अपने घर आया आगे प्रातही उठ वह प्रातःस्नान कर संध्या तर्पणसे निश्चिन्त हो नित चन्दन अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य सहित मणिकी पूजा किया करै और विसमणिसे जोआठ भार सोना निकले सो ले औ प्रसन्न रहै एक दिन पूजा करते करते सत्राजीतने मणिकी शोभा औ कान्ति देख निज मनमें विचारा कि यह मणि श्रीकृष्णचन्द्रको ले जाकर देखाइये तो भला॥

यों बिचार मणि कन्ठमें बांध सत्राजीत यदुबंशियोंकी सभाको चला मणिका प्रकाश दूरसे देख सब यदुबंशी खड़े हो श्रीकृष्णजी से कहने लगे कि महाराज तुम्हारे दरशनकी अभिलाषा किये सूरज चला आता है तुमको ब्रह्मा रुद्र इन्द्रादि सब देवता ध्यावते हैं औ आठ पहर ध्यान धर तुम्हारा यश गावते हैं तुम हो आदि पुरुष अविनाशी तुम्हें नित सेवती है कमला भई दासी तुम हो सब देवोंके देव कोई नहीं जानता तुम्हारा भेव तुम्हारे गुण औ चरित्र हैं अपार क्यों प्रभु छिपोगे आय संसार महाराज जब सत्राजीतको आता देख सब यदुबंशियों कहने लग तब हरि बोले कि यह सूरज नहीं सत्राजीत यादव है इसने सूर्यकी तपस्या कर एक मणि पाई है उसका प्रकाश सूरजकी समान है वही मणि बांधे चला आता है॥

महाराज इतनी बात जबतक श्रीकृष्णजी कहैं तबतक वह आय सभामें बैठा जहां यादव सारे पासे खेल रहे थे मणिकी कान्ति देख सबका मन मोहित हुआ औ श्रीकृष्णचन्द्रभी देख रहे तद सत्राजीत कुछ मनहीं मन समझ उस समय बिदा हो अपने घर गया आगे वह मणि गलेमें बांध बांध नित आवे एक दिन सब यदुबंशियोंने हरिसे कहा कि महाराज सत्राजीतसे मणि ले राजा उग्रसेनको दीजै औ जगमें यश लीजै यह मणि इसे नहीं भवती राजाके जोग है॥

इस बातके सुनतेही श्रीकृष्णजीने हंसते हंसते सत्राजीतसे कहा

कि यह मणि राजाजीको दे। और संसारमें यश बड़ाई लो ई सेका नाम सुनतेही वह प्रणाम कर चुपचाप वहांसे उठ सोच विचार करता अपने भाईके पास जा बोला कि आज श्रीकृष्णजीने मुझसे मणि मांगी और मैंने न दी इतनी बात जो सत्राजीतके मुंहसे निकली तो क्रोधकर उसके भाई प्रसेनने वह मणि ले अपने गलेमें डाली औ शस्त्र लगाय घोड़े पर चढ़ अहेरको निकला महावनमें जाय धनुष चढ़ाय लगा साबर चीतल पाढ़े रोज औ मृग मारन इसमें एक हिरण जो उसके आगेसे झपटा तो इसनेभी खिजलायके तिसके पीछे घोड़ा टपटा आ चला चला अकेला कहां पहुंचा कि जहां युगानुयुग कि एक बड़ी औंडी गुफा थी॥

मृग औ घोड़ेके पांवकी आहट पाय उसमेंसे एक सिंह निकला वह इन तीनोंको मार मणि ले फिर उस गुफामें बड़ गया मणिके जातेही उस महा अन्धेरी गुफामें ऐसा प्रकाश हुआ कि पाताल तक चांदना हो गया वहां जामवन्त नाम रीछ जो श्रीरामचन्द्रके साथ रामाबतारमें था सो त्रेतायुगसे तहां कुटम्ब समेत रहा था वह गुफामें उजाला देख उठ धाया यो चला चला सिंहके पास आया फिर वह सिंहको मार मणि ले अपनी स्त्रीके निकट गया तिसने मणि ले अपनी पुत्रीके पालनेमें बांधी वह तिसे देख नित हंस हंस खेला करै औ सारे स्थानमें आठ पहर प्रकाश रहै इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज मणि यों गई औ प्रसेनकी यह गति भई तब प्रसेनके साथ जो लोग गये थे तिन्होंने आ सत्राजीतसे कहा कि महाराज॥

हम कौं त्याग अकेलो धायौ। जहां गयौ तहां खोज न पायौ॥
कहत न बन ढूंढ़ फिर आये। कहूं प्रसेन न बनमें पाये॥

इतनी बातके सुनतेही सत्राजीत खाना पीना छोड़ अति उदास हो चिन्ताकर मनहीं मन कहने लगा कि यह काम श्रीकृष्णका है जो मेरे भाईको मणिके लिये मार मणि ले घरमें आय बैठा

है पहले मुझसे मांगता था मैंने न दी अब उसने यों जो ऐसें यह मनहीं मन कहे और रात दिन महा चिन्तामें रहै एक दिन वह रात्रि समै स्त्रीके पास सेज पर तनछीन मनमलीन मह मारे बैठा मनहीं मन कुछ शोच विचार करता था कि उसकी नारीने कहा॥

कहा कन्तमन शोचत रहौ। मो सों भेद आपनों कहौ॥

सत्राजीत बोला कि स्त्रीसे कठिन बातका भेद कहना उचित नहीं क्योंकि इसके पेटमें बात नहीं रहती जो घरमें सुनती है सो बाहर प्रकाश कर देती है यह अज्ञान इसे किसी बातका ज्ञान नहीं भला हो कै बुरा इतनी बातके सुनतेही सत्राजीतकी स्त्री खिजल कर बोली कि मैंने कब कोई बात घरमें सुन बाहर कही है जो तुम कहते हो क्या सब नारी समान होती हैं यों सुनाय फिर उसने कहा कि जबतक तुम अपने मनकी बात मेरे आगे न कहोगे तबतक मैं अन्न पानीभी न खाऊंगी यह वचन नारीसे सुन सत्राजीत बोला कि झूट सच्चकी तो भगवान जाने पर मेरे मनमें एक बात आई है सो मैं तेरे आगे कहता हूं परन्तु तू किसके सोंहीं मत कहियो उसकी स्त्री बोली अच्छा मैं न कहूंगी॥

सत्राजीत कहने लगा कि एक दिन श्रीकृष्णजीने मुजसे मणि मांगी और मैंने न दी इससे मेरे जीमें आता है कि उसीने मेरे जीमें आता है कि उसीने मेरे भाईको बनमें जाय मारा औ मणि ली यह उसीका काम है दूसरेकी सामर्थ नहीं जो ऐसा काम करे॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज बातके सुनतेही उसे रात भर नींद न आई और उसने सात पांच कर रैन गंवाई भोर होतेही उसने जा सखी सहेली और दासीसे कहा की श्रीकृष्ण जीने प्रसेनको मारा औ मणिली यहबात रात मैंने अपने कान्तके मुखसे सुनी है पर तुम किसीके आगे मत कहियो वे

वहांसे तो भला कह चुपचाप चली आईं पर अचरज कर एकान्त बैठ आपसमें चरचा करने लगीं निदान एक दासीने यह बात श्रीकृष्णचन्द्रके रनबासमें जा सुनाई सुनतेही सबके जीमें आया कि जो सत्राजीतकी स्त्रीने यह बात कही है तो झूठ न होगी ऐसे समझ उदास हो सब रनवास श्रीकृष्णको बुरा कहने लगा इस बीच किसीने आय श्रीकृष्णजीसे कहा कि महाराज तुम्हें तो प्रसेनके मारने औ मणिके लेनेका कलङ्क लग चुका तुम क्या बैठ रहे हो कछ इसका उपाय करो॥

इतनी बातके सुनतेही श्रीकृष्णजी पहले तो घबराये पीछे कुछ शोच समझ वहां आये जहां उग्रसेन वसुदेव औ बलराम सभा में बैठे थे और बोले कि महाराज हमें सब लोग यह कलङ्क लगाते हैं कि कृष्णने प्रसेनको मार मणि ले ली इससे आपकी आज्ञा ले प्रसेन और मणिके ढूंढ़नेको जाते हैं जिस्से यह अपयश छूटे यों कह श्रीकृष्णजी वहांसे आय कितने एक यदुवंशियों औ प्रसेनके साथियोंको साथ ले बनको चले कितनी एकदूर जाय देखें तो घोड़ोंके चरण चिह्न दिष्ट पड़े तिन्हींको देखते देखते वहां जाय पहुंचे जहां सिंहने तुरङ्ग समेत प्रसेनको मार खाया था दोनों कि लोथ और सिंहके पांओंका चिह्न देख सबने जाना कि उसे सिंहने मार खाया॥

यह समझ मणि न पाय श्रीकृष्णचन्द्र सबको साथ लिये लिये वहां गये जहां वह औंडी अंधेरी महा भयावनी गुफा थी उसके द्वारपर देखते क्या हैं कि सिंह मरा पड़ा है पर मणि वहांभी नहीं ऐसे अचरज देख सब श्रीकृष्णजीसे कहने लगे कि महाराज इस बनमें ऐसा बली जन्तु कहांसे आया जो सिंहको मार मणि ले गुफामें पैठा अब इसका कुछ उपाय नहीं जहां तक ढूंढ़नेका धर्म था तहांतक आपने ढूंढ़ा तुम्हारा कलङ्क छूटा अब नाहरके सिर अपयश पड़ा॥

श्रीकृष्णजी बोले चलो इस गुफामें धसके देखें कि नाहरको मार मणि कौन लेगया वे सब बोले कि महाराज जिस गुफाका मुख देखे हमें डर लगता है तिसमें धसेंगे कैसे बरन हम तुमसेभी बिनती कर कहते हैं कि इस महाभयावनी गुफामें आपभी न जाइये घरको पराधिये हम सब मिल नगरमें कहेंगे कि प्रसेनको मार सिंहने मणि ली औ सिंहको मार मणि ले कोई जन्तु एक अति डरावनी औंडी गुफामें गया यह हम सब अपनी आंखों देख आये श्रीकृष्णचन्द्र बोले मेरा मन मणिमें लगा है मैं अकेला गुफामें जाता हूं दश दिन पीछे आऊंगा तुम दश दिन तक यहां रहियो इससे हमें बिलम्ब होय तो घर जाय सन्देसा कहियो महाराज इतनी बात कह हरि उस अन्धेरी भयवनी गुफामें पैठे और चले चले वहां पहुंचे जहां जामवन्त सोता था और उसकी स्त्री अपनी लड़कीको खड़ी पालनेमें झुलाती थी॥

वह प्रभुको देख भय खाय पुकारी औ जामवन्त जागा तो धाय हरिसे आय लिपटा औ मल्लयुद्ध करने लगा जब उसका कोई दाव और बल हरि पर न चला तब मनहीं मन बिचार कर कहने लगा कि मेरे बलके तो हैं लक्ष्मण राम और इस संसारमें ऐसा बली कौन है जो मुजसे करे संग्राम महाराज जामवन्त मनहीं मन ज्ञानसे यों बिचार प्रभुका ध्यान कर॥

ठाढ़ो उसरि जोरि कै हाथ। बोलो दरश देहु रघुनाथ॥
अन्तरजामी मैं तुम जाने। लीला देखतही पहिचाने॥
भलो करी लीनैं औतार। करि हो दूर भूमिको भार॥
त्रेता युग तें इहि ठां रहैा। नारद भेद तुम्हारो कहैा॥
मणिके काजे प्रभु इत ऐहैं। तबही तो कौ दरशन दैहैं॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि हे राजा जिस समय जामवन्तने प्रभुको ज्ञान यों बखान किया तिसी काल श्रीमुरारी भक्त हितकारीने जामवन्तको लगन देख

मगन हो रामका भेष कर धनुष बाण धर दरशन दिया आगे जामवन्तने अष्टाङ्ग प्रणाम कर खड़े हो हाथ जोड़ अति दीनता से कहा कि हे कृपासिन्धु दीनबन्धु जो आपकी आज्ञा पाऊं तो अपना मनोरथ कह सुनाऊं प्रभु बोले अच्छा कह तब जामवन्तने कहा कि हे पतितपावन दीननाथ मेरे चितमें यों है कि यह कं न्या जाम्बवती आपको व्याह दूं औ जगतमें यश बड़ाई लूं भग वानने कहा जो तेरी इच्छामें ऐसे आया तो हमेंभी प्रमाण है इतना बचन प्रभुके मुखसे निकलतेही जामवन्तने पहले तो श्रीकृ ष्णचन्द्रकी चन्दन अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य ले पूजाकी पीछे वेदकी बिधिसे अपनी बेटी व्याह दी और उसके यौतुकमें वह मणिभी धर दी॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवमुनि बोले कि हे राजा श्रीकृष्ण चन्द्र आनन्दकन्द तो मणि समेत जाम्बवतीको ले यों गुफासे च ले औ जो यादव गुफाके मुह पर प्रसेन औ श्रीकृष्णके साथी खड़े थे अब तिनकी कथा सुनिये कि गुफाके बाहर उन्हें जब अट्ठाई श दिन बोते औ हरि न आये तब वे वहांसे निराश हो अने क अनेक प्रकारकी चिन्ता करते और रोते पीटते द्वारिकामें आये ये समाचार पाय सब यदुबंशी निपट घबराये औ श्रीकृष्णका ना म ले ले महा शोक कर कर रोने पीटने लगे और सारे रनवा समें कुहराम पड़ गया निदान सब रानियां अति व्याकुल हो तन छीन मनमलीन राजमन्दिरसे निकल रोती पीटती वहां आई जहां नगरके बाहर एक कोस पर देवीका मन्दिर था॥

पूजा कर गौरीको मनाय हाथ जोड़ शिर नाय कहने लगीं हे देवी तुझे सुर नर मुनि सब ध्यावते हैं औ तुझसे जो बर मांग ते हैं सो पावते हैं तू भूत भविष्य वर्तमानकी सब बात जानती है कहो श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द कब आवेंगे महाराज सब रानियां तो देवीके द्वार धरणा दे यों मनाय रही थीं औ उग्रसेन वसुदे

ब बलदेव आदि सब यादव महा चिन्तामें बैठे थे कि इस बीच श्रीकृष्ण अविनाशी द्वारिकावासी हंसते हंसते जाम्बवतीको लिये आय राजसभामें खड़े हुए प्रभुका चन्द्रमुख देख सबको आनन्द हुआ औ यह शुभ समाचार पाय सब रानियांभी देवी पूजघर आईं औ मङ्गलाचार करने लगीं इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज श्रीकृष्ण जीन सभामें बैठतेही सत्राजीतको बुला भेजा औ वह मणि देकर कहा कि यह मणि हमन न ली थी तुमने झूठमूठ हमे कलङ्क दिया था॥

यह मणि जानवन्तही लीनो। सुता समेत मोही तिन दीनी॥
मणिलै तबहि चल्यौ शिर नाय। सत्राजित मन शोचतु जाय॥
हरि अपराध कियौ मैं भारी। अनजाने दीनी कुल गारी॥
यादौपतिहि कलङ्क लगायौ। मणिके काजे बैर बढ़ायौ॥
अब यह दोष कटै सो कीजे। सतिभामा मणि कृष्णहि दीजे॥

महाराज ऐसे मनहीं मन शोच बिचार करता मणि लिये मन मारे सत्राजीत अपने घर गया और उसने सब अपने जीका बिचार स्त्रीसे कह सुनाया विसकी स्त्री बोली स्वामी यह बात तुमने अच्छी बिचारी सत्यभामा श्रीकृष्णको दीजे औ जगतमें यश लीजे इतनी बातके सुनतेही सत्राजीतने एक ब्राह्मणको बुलाय शुभ लग्न मुहूर्त्त ठहराय रोली अक्षत रुपया नारियल एक थालीमें धर पुरोहितके हाथ श्रीकृष्णचन्द्रके यहां टीका भेज दिया श्रीकृष्णजी बड़ी धूमधामसे मौड़ बांध ब्याहन आये तब सत्राजीतने सब रीति भांति कर बेदकी बिधिसे कन्या दान किया और बहुतसा धन दे यौतुकमें विस मणिकोभी धर दिया॥

मणिको देखतेही श्रीकृष्णजीने उसमेंसे निकाल बाहर किया और कहा कि यह मणि हमारे किसी कामकी नहीं क्योंकि तुमने सूर्य्यको तपस्या कर पाई हमारे कुलमें श्रीभगवान छुड़ाय और देवताकुछो बस नहीं लेते यह तुम अपने घरमें रक्खो महा

राज श्रीकृष्णचन्द्रजीके मुखसे इतनी बात निकलतेही सत्राजीत मणि ले लजाय रहा औ श्रीकृष्णजी सत्यभामाको ले बाजे गाजेसे निज धाम पधारे औ आनन्दसे सत्यभामा समेत राजमन्दिरमें जा बिराजे॥

इतनी कथा सुन राजा परीक्षितने श्रीशुकदेवजीसे पूछा कि कृपानिधान श्रीकृष्णजीको कलङ्क क्यों लगा सो कृपाकर कहो शुकदेवजी बोले राजा॥

चांद चौथ कौ देखियौ, मोहन भादों मास।
तातें लगौ कलङ्क यह, अति मन भयौ उदास॥

और सुनौ।

जो भादोंकी चौथको, चांद निहारै कोय।
यह प्रसङ्ग श्रवणनि सुने, ताहि कलङ्क न होय। इति॥

५८ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज मणिके लिये जैसे सतधन्या सत्राजीतको मार मणि ले अक्रूरको दे द्वारिका छोड़ भागा तैसे मैं कथा कहता हूं तुम चित दे सुनौ एक समै हस्तिनापुरसे आय किसीने बलराम सुखधाम औ श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्दसे यह सन्देसा कहा कि॥

पाण्डौ न्यौते अन्धसुत, घरके बीच सुवाय।
अर्द्ध रात्र चहुंओर ते, दीनी आग लगाय॥

इतनी बातके सुनतेही दोनोंभाई अति दुखपाय घबराय तत्काल दारुक सारथीसे अपनारथ मङ्गाय तिसपरचढ़ हस्तिनापुरको गये औ रथसे उतर कौरोंकी सभामे जा खड़े रह वहां देखते क्या है कि सब तनछीन मनमलीन बैठे हैं दुर्य्योधन मनहीं मन कुछ सोचता है भीष्म नैनोंसे जल मोचता है धृतराष्ट्र बड़ा दुख करता है द्रोणाचार्यकोभी आंखोंसे पानी चलता है बिदुरजीही जो पछताय गान्धारी बैठी उसके पास आय औरभी जो कौरोंकी

स्त्रीयां थीं सोभी पाण्डवोंकी सुध कर कर रो रही थीं औ सारी सभा शोकमय हो रही थी महाराज वहांकी यह दशा देख श्रीकृष्ण बलरामजीभी उनके पास जा बैठे औ उन्होंने पाण्डवोंका समाचार पूछा पर किसीने कुछ भेद न कहा सब चुप हो रहे॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज श्रीकृष्ण बलरामजी तो पाण्डवोंके जलनेके समाचार पाय हस्तिनापुरको गये औ द्वारिकामें सतधन्वा नाम एक यादव था कि जिसे पहले सत्यभामा मांगी थी तिसके यहां अक्रूर और कृतबरमा मिलकर गये और दोनोंने उससे कहा कि हस्तिनापुरको गये श्रीकृष्ण बलराम अब आय पड़ा है तेरा दांव सत्राजीतसे तू अपना बैर ले क्योंकि विसने तेरी बड़ी चूक की जो तेरी मांग श्रीकृष्णको दी औ तुझे गाली चढ़ाई अब यहां उसका कोई नहीं है सहाई इतनी बातके सुनतेही सतधन्वा अति क्रोध कर उठा और रात्रि समै सत्राजीतके घर जा ललकारा निदान छल बल कर उसे मार वह मणि ले आया तब सतधन्वा अकेला घरमें बैठ कुछ सोच बिचार मनहीमन पछताय कहने लगा॥

मैं यह बैर कृष्ण सों कियौ। अक्रूरकौ मतौ सुन लियौ॥
कृतबरमा अक्रूर मिल, मतौ दियौ मोहि आय।
साध कहै जो कपटकी तासों कहा बसाय॥

महाराज इधर सतधन्वा तो इस भांति पछताय बार बार कहता था कि होनहारसे कुछ न बसाय कर्मकी गति किसीसे जानी नहीं जाय और उधर सत्राजीतको मरा निहार उसकी नारी रो रो कन्त कन्त कर उठी पुकार उसके रोनेकी धुन सुन सब कुटुम्बके लोग क्या स्त्री क्या पुरुष अनेक अनेक भांतिकी बातें कह कह रोने पीटने लगे औ सारे घरमें कुहराम पड़ गया पिताका मरना सुन उसी समै आय सत्यभामाजी सबको समझाय बुझाय बापकी लोथ तेलमें डलवाय अपना रथ मङ्गवाय तिस पर चढ़

श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्दके पास चलीं और रात दिनके बीच आ पहुंचीं॥

देखतही उठ बोले हरी। घर है कुशल क्षेम सुन्दरी॥
सतिभामा कहि जोड़े हाथ। तुम बिन कुशल कहां यदुनाथ॥
हमहिं बिपति सतधन्वा दई। मेरा पिता हत्यो मणि लई॥
धरे तेलमें ससुर तिलारे। करौ दूर सब शुद्ध हमारे॥
धरे तेलमें ससुर तिहारे। करौ दूर सब शूल हमारे॥

इतनी बात कह सत्यभामाजो श्रीकृष्ण बलदेवजीके सोंहीं खड़ी हो हाय पिता हाय पिता कर धायमार रोने लगीं तिनका रोना सुन श्रीकृष्ण बलरामजीनेभी पहले तो अति उदास हो रोकर लोक रीति दिखाई पीछे सत्यभामाको आशा भरोसा दे ढाड़स बंधाय वहांसे साथ ले द्वारिकामें आये श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज द्वारिकामें आतेही श्रीकृष्णचन्द्रने सत्यभामाको महा दुखी देख प्रतिज्ञा कर कहा कि सुन्दरि तुम अपने मनमें धीरज धरो और किसी बातकी चिन्ता मत करो जो होना था सो हुआ पर अब मैं सतधन्वाको मार तुम्हारे पिताका बैर लूंगा तब मैं और काम करूंगा॥

महाराज राम कृष्णके आतेही सतधन्वा अति भयखाय घर छोड़ मनहींमन यह कहता कि पराये कहे मैंने श्रीकृष्णजीसे बैर किया अब शरण किसकी लूं कृतबरमाके पास आया और हाथ जोड़ अति बिनती कर बोला कि महाराज आपके कहेसे मैंने किया यह काम अब मुझपर कोप है श्रीकृष्ण औ बलराम इससे मैं भागकर तुम्हारी शरण आया हूं मुझे कहीं रहनेको ठौर बताइये सतधन्वासे यह बात सुन कृतबरमा बोला कि सुनो हम से कुछ नहीं हो सकता जिसका बैर श्रीकृष्णचन्द्रसे भया सो नर सबहीसे गया त क्या नहीं जानता था कि हैं अति बली मुरारी तिनसे बैर किये होगी हारी किसीके कहेसे क्या हुआ अपना भ

ख बिचार काम क्यों न किया संसारकी रीति है कि बैर ब्याह औ प्रीति समानहीसे कीजे तू हमारा भरोसा मत रख हम श्रीकृष्ण चन्द्र आनन्दकन्दके सेवक हैं तिनसे बैर करना हमें नहीं शोभता जहां तेरे सींग समाय तहां जा॥

महाराज इतनी बात सुन सतधन्वा निपट उदास हो वहांसे चल अक्रूरके पास आया हाथ बांध शिर नाय बिनती कर हाहा खाय कहने लगा कि प्रभु तुम हो यादव पति ईश तुम्हें मानके सब निवावते हैं सीस साध दयाल धरन तुम धीर दुख सह आप हरते हो पर पीर बचन कहेकी लाज है तुम्हें अपनी शरण रक्खो तुम हमें मैंने तुम्हारेही कहा मान यह काम किया अब तुम्ही श्रीकृष्णके हाथसे बचाओ॥

इतनी बातके सुनतेही अक्रूरजीने सतधन्वासे कहा कि तू बड़ा मूरख है जो हमसे ऐसी बात कहता है क्या तू नहीं जानता कि श्रीकृष्णचन्द्र सबके करता दुख हरता हैं उनसे बैर कर संसारमें कब कोई रहासकता है कहने वालेका क्या बिगरा अब तो तेरे शिर आन पड़ी कहा है सुर नर मुनिकी यह है रीति अपने स्वारथके लिये करते हैं प्रीति और जगतमें बहुत भांतिके लोग हैं सो अनेक अनेक प्रकारकी बातें अपने स्वारथके कहते हैं इससे मनुष्यको उचित है किसीके कहे पर न जाय जो काम करे तिसमें पहले अपना भला बुरा बिचार ले पीछे उस काजमें पांव दे तूने समझ बूझ कर किया है काम अब तुझे कहीं जगतमें रहनेको नहीं है धाम जिसने श्रीकृष्णसे बैर किया वह फिर न जिया जहां भागके रहा तहां मारा गया मुझे मरना नहीं जो तेरा पक्ष करूं संसारमें जी सबको प्यारा है॥

महाराज अक्रूरजीने जब सतधन्वाको यों रूखे रूखे बचन सुनाये तब तो वह निराश हो जीनेकी आश छोड़ मणि अक्रूरजीके पास रख रथ पर चढ़ नगर छोड़ भागा और उसके पीछे रथ

वह श्रीकृष्ण बलरामजीभी उठ दौड़े औ चलते चलते इन्होंने उसे सौ जोजन पर जाय लिया इनके रथकी आहट पाय सतधन्वा अति घबराय रथसे उतर मिथिलापुरीमें जा बड़ा॥

प्रभुने उसे देख क्रोध कर सुदरशन चक्रको आज्ञा की तू अभी सतधन्वाका शिर काट प्रभुकी आज्ञा पातेही सुदरशन चक्रने उसका शिर जा काटा तब श्रीकृष्णचन्द्रने उसके पास जाय मणि ढूढ़ी पर न पाई फिर इन्होंने बलदेवजीसे कहा कि भाई सतधन्वाको मारा औ मणि न पाई बलरामजी बोले कि भाई वह मणि किसी बड़े पुरुषने पाई तिसमे हमें लाय नहीं दिखाई वह मणि किसीके पास छिपानेकी नहीं तुम देखियो निदान प्रगटेगी कहीं न कहीं॥

इतनी बात कह बलदेवजीने श्रीकृष्णचन्द्रसे कहा कि भाई अब तुम तो द्वारिका पुरीको सिधारो औ हम मणिके खोजनेको जाते हैं जहां पावेंगे तहांसे ले आवेंगे॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्द तो सतधन्वाको मार द्वारिकापुरी पधारे औ बलराम सुखधाम मणिके खोजनेको सिधारे देश देश नगर नगर गांव गांवमें ढूढ़ते ढूढ़ते बलदेवजी चले चले अयोध्यापुरी जा पहुंचे इनके पहुंचनेके समाचार पाय अयोध्याका राजा दुर्य्योधन उठ धाया आगे बढ़ भेट कर भेट दे प्रभुको बाजे गाजेसे पाटम्बरके पांवड़े डालता निज मन्दिरमें ले आया सिंहासन पर बिठाय अनेक प्रकारसे पूजा कर भोजन करवाय अति बिनती कर शिर नाय हाथ जोड़ सनमुख खड़ा हो बोला कृपासिन्धु आपका आना इधर कैसे हुआ सो कृपाकर कहिये॥

महाराज बलदेवजीने उसकी मनकी लगन देख मगन हो अपने आनेका सब भेद कह सुनाया इनकी बात सुन राजा दुर्य्योध

न बोला कि नाथ वह मणि कहीं किसीके पास न रहेगी क भी न कभी आपसे आप प्रकाश हो रहेगी यों सुनाय फिर हाथ जोड़ कहने लगा कि दीन दयाल मेरे बड़े भाग जो आपका दर शन मैंने घर बैठे पाया औ जन्म जन्मका पाप गंवाया अब कृपाक र दासके मनकी अभिलाषा पूरीकीजे और कुछ दिवस रह शिष्य कर गदायुद्ध शिखाय जगमें यश लीजे महाराज दुर्य्योधनसे इतनी बात सुन बलरामजीने उसे शिष्य किया और कुछ दिन वहां रह सब गदायुद्धकी विद्या सिखाई पर मणि वहांभी सारे नगरमें खो जी औ न पाई आगे श्रीकृष्णजीके पहुंचनेके उपरान्त कितने एक दिन पीछे बलरामजीभी द्वारिका नगरीमें आये तो श्रीकृष्णचन्द्र जीने सब यादों साथ ले सत्राजीतको तेलसे निकाल अग्निसंस्कार किया औ अपने हाथों दाह दिया॥

जब श्रीकृष्णजी क्रिया कर्मसे निश्चिन्त हुए तब अक्रूर औ कृतब रमा कुछ आपसमे शोच बिचार कर श्रीकृष्णजीके पास आय उ न्हें एकान्त ले जाय मणि दिखाय कर बोले कि महाराज यादव सब बहिर मुख भये औ माय में मोह गये तुम्हारा सुमरण ध्या न छोड़ धनान्ध हो रहे हैं जो ये अब कुछ कष्ट पावें तो ये प्रभुकी सेवामें आवें इस लिये हम नगर छोड़ मणि ले भागते हैं जब हम इनसे आपका भजन सुमरण करावेंगे तभी द्वारिकापुरीमें अवेंगे इतनी बात कर अक्रूर औ कृतबरमा सब कुटुम्ब समेत आधी रातको श्रीकृष्णचन्दके भेदमें द्वारिकापुरीसे भागे ऐसे कि किसीने न जाना कि किधर गये भोर होतेही सारे नगरमें यह चरचा फैली कि न जानिय रातकि र तमें अक्रूर औ कृतबरमा कुटुम्ब समेत किधर गये औ क्या हुए॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इधर द्वारि कापुरीमें तो नित घर घर यह चरचा होने लगी औ उधर अ क्रूरजी प्रथम प्रयागमें जाय मुण्डन करवाय त्रिवेणी न्हाय बहुत

सा दान पुण्य कर तहां हरि पैंड़ी बंधवाय गयाको गये वहांभी फल्गु नदीके तीर बैठ शास्त्रकी रीतिसे श्राद्ध किया औ गयालियोंको जिमाय बहुतही दान दिया पुनि गदाधरके दरशन कर तहांसे चल काशी पुरीमे आये इनके आनेका समाचार पाय इधर उधरके राजा सब आय आय भेंट धरने लगे औ ये वहां यज्ञ दान तप व्रत कर रहने लगे॥

इसमें कितने एक दिन बीते श्रीमुरारी भक्त हितकारीने अक्रूरजीका बुलाना जीमें ठान बलरामजीसे आनके कहा कि भाई अब प्रजाको कुछ दुख दीजे औ अक्रूरजीको बलवा लीजे बलदेवजी बोले महाराज जो आपकी इच्छामें आवै सो कीजे औ साधोंको सुख दीजै इतनी बात बलरामजीके मुखसे निकलतेही श्रीकृष्णचन्द्रजीने ऐसा किया कि द्वारिकापुरीमें घर घर ताप तिजारी मिरगी छईदाद खाज आधासीसी कोढ़ महाकोढ़ जलन्धर भगन्दर कण्ठदर अतीसार आंव मड़ोड़ा खांसी शुल अधाङ्ग सीताङ्ग झोला सन्निपात आदि व्याधि फैल गई॥

औ चार महीने बरषाभी न हुई तिसे सारे नगरके नदी नाले सरोवर सुख गये तृण अन्नभी कुछ न उपजा नभचर जलचर थलचर जीवजन्तु पक्षी और ढोर लगे व्याकुल हो सुख सुख मरने और पुरबासी मारे भूखोंके त्राहि त्राहि करने निदान सब निबासी महा व्याकुल हो निपट घबराये श्रीकृष्णचन्द दुख निकन्दके पास आये औ अति गिड़गिड़ाय अधिक अधीनता कर हाथ जोड़ शिर नाय कहने लगे॥

हम तौ शरण तिहारी रहैं। कष्ट महा अब क्योंकर सहैं॥
मेघ न बरख्यौ पीड़ा भई। कहा बिधाताने यह ठई॥

इतना कह फिर कहने लगे कि हे द्वारिकानाथ दीन दयाल हमारे तो करता दुख हरता तुमहीं हो तुम्हें छोड़ कहां जाय औ किसे कहैं यह उपाध बैठे बिठायेमें कहांसे आई और क्यों हु

है सो कृपाकर कहिये॥

श्री शुकदेवमुनि बोले कि महाराज इतनी बातके सुनतेही श्रीकृष्णचन्द्रजीने उनसे कहा कि सुनो जिस पुरसे साधजन निकल आता है तहां आपसे आप काल दरिद्र दुख आते हैं जबसे अक्रूरजी इस नगरसे गये हैं तभीसे यहां यह गति हुई है जहां रहते हैं साध सतबादी औ हरिदास तहां होता है अशुभ अकाल बिपतका नाश इन्द्र रखता है हरि भक्तोंसे सनेह इसी लिये उस नगरमें भली भांति बरषाता है मेह॥

इतनी बातके सुनतेही सब यादव बोल उठे कि महाराज आपने सच कहा यह बात हमारे भी जीमें आई क्योंकि अक्रूरके पिताका सुफलक नाम है वहभी बड़ा साध सतबादी धर्मात्मा है जहां वह रहता है तहां कभी नहीं होता है दुख दरिद्र औ अकाल सदा समय पर बरषता है मेह तिस्से होता है सुकाल और सुनिये कि एक समै काशीपुरीमें बड़ा दुरभिच्छ पड़ा तब काशीका राजा सुफलकको बुलाय ले गया महाराज सुफलकके जातेही उस देशमें मेह मन मानता बरषा समा हुआ औ सबका दुख गया पुनि काशीपुरीके राजाने अपनी लड़की सुफलकको ब्याह दी वे आनन्दसे वहां रहने लगे तिस राजकन्याका नाम गान्दिनी था तिसीका पुत्र अक्रूर है॥

इतनी कह सब यादो बोले कि महाराज हम तो यह बात आगेसे जानते थे अब जो आप आज्ञा कीजे सो करें श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि अब तुम अति आदर मान कर अक्रूरजीको जहां पाओ तहांसे ले आओ यह बचन प्रभुके मुखसे निकलतेही सब यादव मिल अक्रूरको ढूंढ़न निकले औ चले चले बारानशी पुरीमें पहुंचे अक्रूरजीसे भेट कर भेट दे हाथ जोड़ शिर नाय सनमुख खड़े हो बोले॥

चलो नाथ बिलम्ब मत करो। तुम बिन पुरजन भये बिहाल॥

जितहीं तुम तितहीं सुखबास। तुम बिन कष्ट दरिद्र बिनास॥
यद्यपि घरमें श्रीगोपाल। तज कष्ट दै परो अकाल॥
साधुनिके बश श्रीपति रहैं। तिन तें सब सुख सम्पति लहैं॥

महाराज इतनी बातके सुनतेही अक्रूरजी वहांसे अति आतुर हो कुटुम्ब समेत कृतबरमाको साथ ले सब यदुबंशियोंको लिये बाजे गाजेसे चल खड़े हुए और कितने एक दिनोंके बीच आ सब समेत द्वारिकापुरीमें पहुंचे इनके आनेके समाचार पाय श्रीकृष्णजी औ बलराम आगे बढ़ आय इन्हें अति मान सनमानसे नगरमे लिवाय ले गये हे राजा अक्रूरजीके पुरीमें प्रवेश करतेही मेह बरषा औ समा हुआ सारे नगरका दुख दरिद्र बह गया अक्रूरकी महिमा हुई सब द्वारिकावासी आनन्द मङ्गलसे रहने लगे॥

आगे एक दिन श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्दने अक्रूरजीको निकट बुलाय एकान्त लेजायके कहा कि तुमने सत्राजीतकी मणि लेक्या की वह बोला महाराज मेरे पास है फिर प्रभुने कहा जिसकी बस्तु तिसे दीज औ वह न होय तो बिसके पुत्रको सौंपिये पुत्र न होय तो उसकी स्त्रीको दीजिये स्त्री न होय तो उसके भाईको दीजे भाई न हो तो उसके कुटम्बको सौंपिये कुटुम्बभी न हों तो उसके गुरुपुत्रको दीजे गुरुपुत्र न हो तो ब्राह्मणको दीजिये पर किसीका द्रव्य आप न लीजिये यह न्याय है इससे अब तुम्हें उचित है कि सत्राजीतकी मणि उनके नातीको दो औ जगतमें बड़ाई लो॥

महाराज श्रीकृष्णचन्द्रके मुखसे इतनी बातके निकलतेही अक्रूरजीने मणि लाय प्रभुके आगे धर हाथ जोड़ अति बिनती कर कहा कि दीननाथ यह मणि आप लीजे औ मेरा अपराध दूर कीजे क्योंकि जो इस मणिसे सो निकला सो ले मैंने तीरथ यात्रामें उठाया है प्रभु बोले अच्छा किया यों कह मणि ले हरिने

सत्यभामाको आय दी औ उसके चितकी सब चिन्ता दूर की। इति ॥

५९ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एक दिन श्रीकृष्णचन्द्र जगबन्धु आनन्दकन्दजीने यह बिचार किया कि अब चलकर पाण्डवोंको देखिये जो आगसे बच जीते जागते हैं इतनी बात कह हरि कितने एक यदुबंशियोंको साथ ले द्वारिकापुरीसे चल हस्तिनापुर आय इनके आनेका समाचार पाय युधिष्ठिर अर्जुन भीम नकुल सहदेव पांचों भाई अति हरषित हो उठ धाये औ नगरके बाहर आय मिल बड़ी आव भगत कर लिवाय घर ले गये।

घरमें जातेही कुन्ती औ द्रौपदीने पहले तो सात सुहागनोंको बुलाय मोतियांका चौक पुरवाय तिसपर कञ्चनकी चौकी बिछवाय उस पै श्रीकृष्णको बिठाय मङ्गलाचार करवाय अपने हाथों आरती उतार पीछे प्रभुके पांव धुलवाय रसोईमें ले जाय षटरस भोजन करवाया महाराज जब श्रीकृष्णचन्द्र भोजन कर पान खाने लगे तब॥

कुन्ती ढिग बैठी कहै बात। पिता बन्धु पूछत कुशलात॥
नीके सूरसेन बसुदेव। बन्धु भतीजे अरु बलदेव॥
तिनमें प्राण हमारो रहै। तुम बिन कौन कष्ट दुख दहै॥
जब जब बिपतपरी अतिभारी। तब तुम रक्षा करी हमारी॥
अहो कृष्ण तुम पर दुख हरण। पांचो बन्धु तुम्हारी शरण॥
जैसे मृगकी झुंडकि बासा। त्यों ये अम्बसुतनके बासा॥

महाराज जब कुन्ती यों कह चुकी।

तबहिं युधिष्ठिर जोरे हाथ। तुम हो प्रभु यादवपति नाथ॥
तुमको योगेश्वर नित ध्यावत। शिव बिरञ्चके ध्यान न आवत॥
हमको घरही दरशन दीनो। ऐसो कहा पुण्य हम कीनो॥
चारमास रहके सुख देहो। बरषा रितु बीते घर जैहो॥

इतनो कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इस बात

के सुनतेही भक्तहितकारी श्रीबिहारी उनको आज्ञा भरोसा दे वहां रहे औ दिन दिन आनन्द प्रेम बढ़ाने लगे एक दिन राजा युधिष्ठिरके साथ श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुन भीम नकुल सहदेवको लिये धनुषबाण कर गहे रथपर चढ़ बनमें अहेरको गये वहां जाय रथसे उतर फेंट बांध बांहें चढ़ाय शरसाध जङ्गल झाड़ झाड़ लगे सिंह बाघ गेंडे अरने साबर सूकर हिरण रोज मार मार राजा युधिष्ठिरके सनमुख लाय लाय धरने औ राजा युधिष्ठिर हंस हंस रीझ रीझ ले ले जो जिसका भक्ष था तिसे देने लगे और हिरण रोज साबर रसोईमें भेजने॥

तिस समै श्रीकृष्णचन्द्र औ अर्जुन आखेट करते करते कितनी एक दूर सबसे आगे जाय एक वृक्षके नीचे खड़े हुए फिर नदीके तीर जाके दोनोंने जल पिया इसमें श्रीकृष्णजी देखते क्या हैं कि नदीके तीर एक अति सुन्दरी नवयौवना चन्द्रमुखी चम्पकबरणी मृगनयनी पिकबयनी गजगवनी कटि केहरी नख सिखसे सिङ्गार किये अनङ्ग मद पिये महाछबि लिये अकेली फिरती है उसे देखतेही हरि चकित थकित हो बोले।

दहको सुन्दरी बिहरति अङ्ग। कोऊ नहीं तासुके सङ्ग॥

महाराज इतनी बात प्रभुके मुखसे सुन औ तिसे देख अर्जुन हड़बड़ाय दौड़कर वहां गया जहां वह महासुन्दरी नदीके तीर तीर बिहरती थी औ पूछने लगा कि कह सुन्दरी तू कौन है औ कहांसे आई है और किस लिये यहां अकेली फिरती है यह भेद अपना सब मुझे समझायकर कह इतनी बातके सुन नेही॥

सुन्दरि कथा कहै आपनी। हौं कन्या हौं सूरज तनी॥
कालिन्दी है मेरो नाम। पिता दियौ जलमें बिश्राम॥
रचे नदीमें मन्दिर आय। मोसों पिता कहैा समझाय॥
सोधो सखा नदी दिग फेरो। आय मिलैगो ह्वां बर तेरो॥

यदुकुल मांहि कृष्ण औतरे। सो काजे दीनि तौ अजुसरे॥
आदिपुरुष अविनाशी हरी। ता काजे तू है औतरी॥
ऐसे जबहि तात रवि कहेउ। तबते मैं हरि पदको चहेउ॥

महाराज इतनी बातके सुनतेही अर्जुन अति प्रसन्न हो बोले कि हे सुन्दरि जिसके कारण तू यहां फिरती है वेई प्रभु अविनाशी द्वारिकावासी श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द आय पहुंचे महाराज जों अर्जुनके मुंहसे इतनी बात निकली तों भक्त हितकारी श्री बिहारीभी रथ बढ़ाय जा पहुंचे प्रभुको देखतेही अर्जुनने उस बिसका सब भेद कह सुनाया तब श्रीकृष्णचन्द्रजीने हंसकर भट उसे रथपर चढ़ाय नगरकी बाट ली जितनेमे श्रीकृष्णचन्द्र बनसे नगरमे आवें तितनेमें बिश्वकर्माने एक मन्दिर अति सुन्दर सब से निराला प्रभुकी इच्छा देख बना रक्खा हरिने आतेही कालिन्दीको वहां उतारा औ आपभी रहने लगे॥

आगे कितने एक दिन पीछे एक समै श्रीकृष्णचन्द औ अर्जुन रात्रिकी बिरियां किसी स्थानपर बैठे थे कि अग्निने आय हाथ जोड़ सिर नाय हरिसे कहा महाराज मैं बहुत दिनकी भूखी सारे संसारमें फिर आई पर खानेको कहीं न पाया अब एक आस आपकी है जो आज्ञा पाऊं तो बन जङ्गल जाय खाऊं प्रभु बोले अच्छा जाय खा फिर आगने कहा कृपानाथ मैं अकेली बनमें नहीं जा सकती जो जाऊं तो इन्द्र आय मुझे बुझाय देगा यह बात सुन श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे कहा कि बन्धु तुम जाय अग्निको चराय आओ यह बहुत दिनसे भूखी मरती है॥

महाराज श्रीकृष्णचन्द्रजीके मुखसे इतनी बातके निकलतेही अर्जुन धनुष बाण ले अग्निके साथ हुए औ र आग बनमें जाय भड़की औ र लगे आम इमली बड़ पीपल पाकड़ ताल तमाल महुआ जामन खिरनी कचनार दाख चिरोंजी कोंजा नीब बेर आदि सब वृक्ष जलने औ र॥

पटकैं कांस बांस अति चटके। बनके जीव फिरें मग भटकें॥

जिधर देखिये तिधर सारे बनमे आग हह कर जलती है औ धुआं मण्डलाय आकाशको गया विसधुयेको देख इन्द्रने मेघपति को बुलायके कहा कि जाय तुम अति बरषा कर अग्निको बुझाय बन और बनके पशु पक्षी जीव जन्तुवोंको बचाओ इतनी आज्ञा पाय मेघपति दल बादल साथ ले वहां जाय घहराय जों बरषने को हुआ तों अर्जुनने ऐसे पवन बाण मारे कि बादल राई काई हो यों उड़ गये कि जैसे रुईके पहल पौनके झोकेसें उड़ जांय न किसीने आते देखे न जाते जों आये तों सहजही बिलाय गये और आग बन झाड़खण्ड जलाती जलाती वहां आई कि जहां मय नाम असुरका मन्दिर था अग्निको अति रिस भरी आती देख मय महाभय खाय नङ्गे पांओं गलेमें कपड़ा डाले हाथ बांधे मन्दिरासे निकल बैसन्दरके सनमुख आय खड़ा हुआ और अष्टाङ्ग प्रणाम कर अति गिड़गिड़ायके बोला हे प्रभु इस आगसे बचाय बेग मेरी रक्षा करो॥

धरी अग्नि पायो सन्तोष। अब तुम मानों जिन कछु दोष॥
मेरी बिनती मनमें लाओ। बैसन्दर मोहि बेग बचाओ॥

महाराज इतनी बात मय दैत्यके मुखसे निकलतेही अग्निबाण बैसन्दरने धरे औ अर्जुनभी सुकच रहे खड़े निदान वे दोनों मयको साथ ले श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्दके निकट जा बोले कि महाराज॥

यह मय असुर आय है काम। तुम्हरे लिये बने है धाम।
अबहीं सुध तुम मयकी लेह। अग्नि बुझाय अभय कर देह।

इतनी बात कह अर्जुनने गाण्डीव धनुष शर समेत हाथसे भूमिमें रक्खा तब प्रभुने आमकी ओर आंख दबाय सैनकी वह तुरन्त बुझ गई और सारे बनमें शीतलता हुई फिर श्रीकृष्णचन्द अर्जुन सहित मयको साथ ले आगे बढ़े वहां जाय मयने कहा कि

मणिमय मन्दिर अति सुन्दर सुहावने मन भावने छणभरमें बनाय खड़े किये ऐसे कि जिनकी शोभा कुछ बरणी नहीं जाती जो देखनेको आता सो चकित हो चित्रसा खड़ा रह जाता आगे श्रीकृष्णजी वहां चार महीने बिरमे पीछे वहांसे चल कहां आये कि जहां राजसभामें राजा युधिष्ठिर बैठे थे आतेही प्रभुने राजासे द्वारिका जानेकी आज्ञा मांगी यह बात श्रीकृष्णचन्द्रके मुखसे निकलतेही सभा समेत राजा युधिष्ठिर अति उदास हुए औ सारे रनवासमें भी क्या स्त्री क्या पुरुष सब चिन्ता करने लगे निदान प्रभु सबको यथायोगत्र समझाय बुझाय आशा भरोसा दे अर्जुनको साथ ले युधिष्ठिरसे बिदा हो हस्तिनापुरसे चल हंसते खेलते कितने एक दिनोंमें द्वारिकापुरी आ पहुंचे इनका आना सुन सारे नगरमें आनन्द हो गया औ सबका बिरह दुख गया मात पिताने पुत्रका मुख देख सुख पाया औ मनका खेद सब गंवाया॥

आगे एक दिन श्रीकृष्णजीने राजा उग्रसेनके पास जाय कालिन्दीका भेद सब समझायके कहा कि महाराज भानुसुता कालिन्दीको हम ले आये हैं तुम वेदकी बिधिसे हमारा उसके साथ ब्याह कर दो यह बात सुन उग्रसेननें वोंहीं मन्त्रीको बुलाय आज्ञा दी कि तुम अबही जाय ब्याहकी सब सामा लाओ आज्ञा पाय मन्त्रीने बिबाहकी सामग्री बातकी बातमें सब लाह दी तिसी समै उग्रसेनने एक जोतिषीको बुलाय शुभ दिन ठहराय श्रीकृष्णजीका कालिंदीके साथ वेदकी बिधिसे ब्याह कर किया॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज कालिंदीका बिबाह तो यों हुआ अब आगे जैसे मित्रबिन्दाको हरि लाये औ ब्याहा तैसे कथा कहता हुं तुम चित दे सुनो सूरसेनकी बेटी श्रीकृष्णजीकी फूफी तिसका नाम राजाधिदेवी उसकी कन्या मित्रबिंदा जब वह ब्याहन योग हुई तब उसने स्वयम्बर किया तहां

सब देश देशके नरेश गुणवान रूप निधान महाज्ञान बलवान सूर वीर अति धीर बनठनके एकसे एक जा अधिक इकट्ठे हुए ये स माचार पाते श्रीकृष्णचन्द जीभी अर्जुनको साथ ले वहां गये औ जाके बीचों बीच स्वयम्बरके खड़े हुए॥

हरषी सुन्दरि देखि मुरारि। बार बार मुख रही निहारि॥

महाराज यह चरित्र देख सब देश देशके राजा तो लज्जित हो मनहीं मन अनखाने लगे और दुर्योधनने जाय उसके भाई मित्रसे नसे कहा कि बन्धु तुम्हारे मामाका बेटा है हरी तिसे देख भूली है सुन्दरी यह लोक बिरुद्ध रीति है इसके होनेसे जगमें हंसाई होगी तुम जाय बहनको समझाओ कि कृष्णको न बरे नहीं तो सब राजाओंकी भीड़में हंसी होयगी इतनी बातके सुनतेही मित्रसेनने जाय बहनको बुझायके कहा॥

महाराज भाईकी बात सुन समझ जों मित्रबिन्दा प्रभुके पाससे हटकर अलग दूर हो खड़ी हुई तों अर्जुनने झुककर श्रीकृष्ण चन्द्रके कानमें कहा महाराज अब आप किसकी कान करते हैं बात बिगड़ चुकी जो कुछ करनाहो सो कीजै बिलम्ब न करिये अर्जुनकी बात सुनतेही श्रीकृष्ण स्वयम्बरके बीचसे झट हाथ पकड़ मित्रबिंदाको उठाय रथमें बैठाय लिया औ वोंहीं सबके देखते देखते रथ हांक दिया उसकाल सब भूपाल तो अपने अपने शस्त्र ले ले घोड़ा पर चढ़ चढ़ प्रभुका आगे घेर लड़नेको जा खड़े रहे औ नगर निवासी लोग हंस हंस तालियां बजाय बजाय गालियां दे दे यों कहने लगे॥

फूफू सुता क्यों ब्याहन आयो। यहतें कृष्ण भलो यश पायो॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जब श्रीकृष्णचन्द्रजीने देखा कि चारों ओरसे जो असुरदल घिर आया है सो लड़े बिन न रहेगा तब तिन्होंने कै एक बाण निखंगसे निकाल धनुष तान ऐसे मारे कि वह सब सेना असुरोंकी छितीछान

हो पशांकी वहां बिलाय गई औ प्रभु निर्द्वन्द्व आनंदसे द्वारिका पहुंचे॥

श्रीशुकदेवजी बोले महाराज श्रीकृष्णजीने मित्रबिंदाको तो यों ले जाय द्वारिकामें व्याहा अब आगे जैसे सत्याको प्रभु लाये सो कथा कहता हुं तुम मन लगाय सुनौ कौशलदेशमें नगनजित नाम नरेश तिसीकी कन्या सत्या जब वह व्याहन जोग हुई तब राजाने सात बैल अति ऊंचे भयावने बिन नाथे मंगवाय यह प्रतिज्ञा कर देशमें छुड़वाय दिये कि जो इन सातों वृषभोंको एक बार नाथ लावेगा उसे मैं अपनि कन्या व्याहुंगा महाराज वे सातों बैल शिर झुकाये पुछ उठाय भौं खुंद खुंद धकारते फिरैं औ जिसे पावैं तिसे हनैं॥

आगे ये समाचार पाय श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुनको साथ ले वहां गये औ जा राजा नगनजितके सनमुख खड़े हुए इनको देखतेहि राजा सिंहासनसे उतर अष्टाङ्ग प्रणाम कर इन्हें सिंहासन पर बिठाय चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ाय धूप दीप नैवेद्य आगे धर हाथ जोड़ शिर नाय अति बिनती कर बोला कि आज मेरे भाग जागे जो शिव विरञ्चके करता प्रभु मेरे घर आये यों सुनाय फिर बोला कि महाराज मैंने एकमे प्रतिज्ञा की है सो हे नी कठिन थी पर अब मुझे निश्चै हुआ कि वह आपकी कृपासे तुरन्त पूरी होगी प्रभु बोले कि ऐसी क्या प्रतिज्ञा तुने की है कि जिसका होना कठिन है कह राजाने कहा कृपानाथ मैंने सात बैल अन नाथे छुड़वाय यह प्रतिज्ञा की है कि जो इन सातों बैलोंको एक बेर नाथेगा तिसे मैं अपनी कन्या व्याहुंगा श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज॥

सुन हरि फेंट बांध तहं गये। सात रूप धर ठाढ़े भये॥
काहु न लखी अलख व्योहार। सातों नाथे एकहि बार॥

वे वृषभ नाथके नाथनेके समय ऐसे खड़े रहे कि जैसे काठके

घेल खड़े होंय प्रभु सातोंको नाथ एक रस्सीमें गांथ राजसभा में ले आये यह चरित्र देख सब नगर निवासी तो क्या स्त्री क्या पुरुष अचरज कर धन्य धन्य करने लगे औ राजा नगनजितने उसी समे पुरोहितको बुलाय वेदकी विधिसे कन्या दान दिया तिसके यौतुकमें दश सहस्र गाय नौ लाख हाथी दश लाख घोड़े तिहत्तर लाख रथ दो दास दासी अनगनित दिये श्रीकृष्णचन्द्र सब ले वहांसे जब चले तब खिजलाय सब राजाओंने प्रभुको मारगमें आन घेरा तहां मारे बाणोंके अर्जुनने सबको मार भगाया हरि आनन्द मङ्गलसे सब समेत द्वारिकापुरी पहुंचे उसकाल सब द्वारिकाबासी आगे आय प्रभुको बाजे गाजेसे पाटम्बरके पांवड़े डालते राजमन्दिरमें ले गये औ यौतुक देख सब अचंभे रहे॥

नगनजीतकी करत बड़ाई। कहत लोग यह बड़ी सगाई॥
भलो ब्याह कोशल पति कियो। कृष्णहिं इतो दायजो दियो॥

महाराज नगर निवासी तो इस ढबकी बातें कर रहे थे कि इसी समय श्रीकृष्णचन्द्र औ बलरामजीने वहां आके राजा नगनजितका दिया हुआ सब दायजा अर्जुनको दिया औ जगतमें यश लिया आगे अब जैसे श्रीकृष्णजी भद्राको ब्याह लाये सो कथा कहता हूं तुम चित लगाय निचिन्त हो सुनो केकय देशके राजाकी बेटी भद्राने स्वयम्बर किया औ देश देशके नरेशोंको पत्र लिखे वे जाय इकठे हुए॥

तहां श्रीकृष्णचन्द्रभी अर्जुनको साथ ले गये और स्वयम्बरके बीच सभामें जा खड़े रहे जब राजकन्या माला हाथमें लिये सब राजाओंको देखती भालती रूप सागर जगत उजागर श्रीकृष्णचन्द्रके निकट आई तो देखतेही भूल रही औ उसने माला इनके गलेमें डाली यह देख उसके मात पिताने प्रसन्न हो वह कन्या हरिको वेदकी बिधिसे ब्याह दी तिसके दायजेमें बहुत कुछ दिया कि जिसका पारावार नहीं।

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज श्रीकृष्णचन्द्र भद्राको तो यों व्याह लाये फिर जैसे प्रभुने लक्ष्मणाको व्याहा सो कथा कहता हूं तुम सुनो भद्रदेशका नरेश अति बली औ बड़ा प्रतापी तिसको कन्या लक्ष्मणा जब व्याहन जोग हुई तब उसने स्वयम्बर कर चारों दिशाके नरेशोंको पत्र लिख लिख बुलाया वे अति धूमधामसे अपनी अपनी सेना साज वहां आये औ स्वयम्बरके बीच बड़े बनावसे पांति पांति जा बैठे॥

श्रीकृष्णचन्द्रजीभी अर्जुनको साथ लिये तहां गये और स्वयम्बरके बीच जा खड़े भये तों लक्ष्मणाने सबको देख आ श्रीकृष्णजीके गलेमें माला डाली आगे उसके पिताने वेदकी बिधिसे प्रभुकेसाथ लक्ष्मणाका व्याह कर दिया सब देश देशके नरेश जो वहां आये थे सो महा लज्जित हो आपसमें कहने लगे कि देखें हमारे रहते किस भांति कृष्ण लक्ष्मणाको ले जाता है॥

ऐसे कह वे सब अपना अपना दल साज मारग रोक जा खड़े हुए जों श्रीकृष्णचन्द्र औ अर्जुन लक्ष्मणा समेत रथ ले आगे बढ़े तों तिन्होंने इन्हें आय रोका और युद्ध करने लगे निदान कितनी एक बेरमें मारे बाणोंके अर्जुन औ श्रीकृष्णजीने सबको मार भगाया और आप अति आनन्द मङ्गलसे नगर द्वारिका पहुंचे इनके जातेही सारे नगरमें घर घर मङ्गलाचार होने लगे॥

भई बधाई मङ्गलाचार, होत वेद रीतिक व्यौहार॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इस भांति श्रीकृष्णचन्द्रजी पांच व्याह कर लाये तब द्वारिकामें आठों पटरानियों समेत सुखसे रहने लगे औ पटरानियां आठों पहर सेवा करने लगीं पटरानियोंके नाम रुक्मिणी जाम्बवती सत्यभामा कालिन्दी मित्रबिन्दा सत्या भद्रा लक्ष्मणा। इति॥

६० अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि हे राजा एक समय पृथ्वीनाथ मनुष्यतन

धारण कर अति कठिन तप करने लगी तहां ब्रह्मा बिष्णु रुद्र इन तीनों देवताओंने आ विससे पूछा कि तू किस लिये इतनी कठिन तपस्या करती है धरती बोली कृपासिन्धु मुझे पुत्रकी बासना है इस कारण महातप करती हूं दयाकर मुझे एक पुत्र अति बलवन्त महा प्रतापी बड़ा तेजस्वी दो ऐसा कि जिसका सामना संसारमें कोई न करै न वह किसीके हाथसे मरै॥

यह बचन सुन प्रसन्न हो तीनों देवताओंने बर दे उसे कहा कि तेरा सुत नरकासुर नाम अति बली महाप्रतापी होगा उससे लड़कोई न जीतेगा सृष्टिके सब राजाओंको जीत अपने बश करेगा स्वर्गलोकमें जाय देवताओंको मार भगाय अदितिके कुण्डल छीन आप पहनेगा और इंद्रका छत्र छिनाय लाय अपने शिर धरेगा संसारके राजाओंकी कन्या सोलह सहस्र एक सौ लाय अनव्याही घेर रक्खेगा तब श्रीकृष्णचन्द्र सब अपना कटक ले उस पर चढ़ जायेंगे और उनसे तू कहैगी इसे मारो पुनि वे मार सब राजकन्याओंको ले द्वारिकापुरी पधारेंगे॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज तीनों देवताओंने बर दे जब यों कहा तब भूमि इतना कह चुप हो रही कि मैं ऐसी बात क्यों कहूंगी कि मेरे बेटेको मारो आगे कितने एक दिन पीछे भूमिका पुत्र भौमासुर हुआ तिसीका नाम नरकासुरभी कहते हैं वह प्रागजोतिषपुरमें रहने लगा उस पुरके चारोओर पहाड़ोंकी ओट और जल अग्नि पवनका कोट बनाय सारे संसारके राजाओंकी कन्या बलकर छीन छीन धाय समेत लाय लाय उसने वहां रक्खीं नित उठ उन सोलह सहस्र एक सौ राज कन्याओंके खाने पिने पहरनेकी चौकसी वह किया करै और बड़े यतनसे उन्हें पालन करवावे॥

एक दिन भौमासुर अति कोप कर पुष्पक बिमानमें बैठ जो लङ्कासे लाया था सुरपुरमें गया औ लगा देवताओंको सताने विस

के दुखसे देवता स्थान छोड़ छोड़ अपना जीव ले ले जिधर तिध र भाग गये तब वह अदितिके कुण्डल औ इन्द्रका छत्र छत्र छीन लाया आगे सब सृष्टि के सुर नर मुनियोंको अति दुख देने लगा तिसका सब आचरण सुन श्रीकृष्णचन्द्र जगबन्धुजीने अपने जीमें कहा ॥

बाहि मार सुन्दरि सब लाऊं। सुरपति छत्र तहीं पहुंचाऊं ॥
जाय अदितिके कुण्डल दैहौं। निर्भय राज इन्द्रको कैहौं ॥

इतना कह पुनि श्रीकृष्णचन्द्रजीने सत्यभामासे कहा कि हे ना री तू मेरे साथ चले तो भौमासुर मारा जाय क्योंकि तू भूमिका अंश है इस लेखे उसकी मा हुई जब देवताओंने भूमिको पुत्रका बर दिया था तब यह कह दिया था कि जब तू मारनेको कहैगी तब तेरा पुत्र मरेगा नहीं तो किसीसे किसी भांति मारा न मरे गा इस बातको सुनतेही सत्यभामाजी कुछ मनहीं मन सोच सम झ इतना कह अनमनी हो रहीं कि महाराज मेरा पुत्र आप का सुत हुआ तुम उसे क्योंकर मारोगे ॥

प्रभुने इस बातको टाल कहा कि उसके मारनेकी तो मुझे कुछ इतनी चिन्ता नहीं पर एक समय मैंने तुम्हें बचन दिया था ति से पूरा किया चाहता हूं सत्यभामा बोली सो क्या प्रभु कहने ल गे कि एक समय नारदजीने आय मुझे कल्पवृक्षका फूल दिया वह ले मैंने रुक्मिणीको भेजा वह बात सुन तू रिसाय रही तब मैंनें यह प्रतिज्ञा करी कि तू उदास मत हो मैं तुझे कल्पवृक्षही ला दूंगा सो अपना बचन प्रतिपालनेको और तुझे सुरपुर दि खानेको साथ ले चलता हूं ॥

इतनी बातके सुनतेही सत्यभामाजी प्रसन्न हो हरिके साथ च लनेको उपस्थित हुई तब प्रभु उसे गरुड़ पर अपने पीछे बैठाय साथ ले चले कितनी एक दूर जाय श्रीकृष्णचन्द्रजीने सत्यभामा जीसे पूछा कि सुच कहो तु हरि इस बातको सुन तू पहले क्या

समझ अप्रसन्न हुई हो उसका भेद मुझे समझायके कह जो मेरे मनका सन्देह जाय सतभामा बोली कि महाराजि तुम भौमासुर को मार सोलह सहस्र एकसौ राजकन्या लाओगे तिनमें मुझे भी गिनोगे यह समझ अनमनी हुई थी॥

श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि तू किसी बातकी चिन्ता मत करै मैं कल्प वृक्ष लाय तेरे घरमें रक्खूंगा औ तू तिसके साथ मुझे नारदमुनि को दान कीजो फिर मोल ले मुझे अपने पास रक्खना मैं तेरे सदा आधीन रहूंगा ऐसेही इन्द्रानीने इन्द्रको कल्पवृक्ष साथ दान किया था औ अदितिने कश्यपको इस दानके करनेसे कोई नारी तेरी समान मेरे ना होगी महाराज इसी भांतिकी बातें कहते कहते श्रीकृष्णजी प्रागजोतिषपुरके निकट जा पहुंचे वहां पहाड़का कोट अग्नि जल पवनकी ओट देखतेही प्रभुने गरुड़ औ सुदरशन चक्रको आज्ञा की तिन्होंने पलभरमें दाय बुझायें बह य थांभ अच्छा पन्थ बनाय दिया॥

जो हरि आगे बढ़ नगरमें जाने लगे तो गढ़के रखवाले दैत्य लड़नेको चढ़ आये प्रभुने तिन्हें गदासे सहजहीं मार गिराये तिनके मरनेका समाचार पाय मुर नाम राक्षस पांच सीस वाला जो उस पुर गढ़का रखवाला था सो अति क्रोध कर त्रिशूल हाथमें ले श्रीकृष्णजी पर चढ़ आया औ लगा आंखें लाल लाल कर दांत पीस पीस कहने कि।

मोतें बली कौन जग और, जाहि देखि हों मैं या ठौर॥

महाराज इतना कह मुर दैत्य श्रीकृष्णचन्द्र पर यों दपटा कि ज्यों गरुड़ सर्प पर झपटे आगे उसने त्रिशूल चलाया सो प्रभु चक्र से काट गिराया फिर खिजलाय मुरने जितने शस्त्र हरि पर घाले तितने प्रभुने सहजही काट डाले पुनि वह हकबकाय दौड़कर प्रभुसे आय लिपटा और मल्लयुद्ध करने लगा निदान कितनी एक बेरमें युद्ध करते करते श्रीकृष्णजीने सत्यभामाजीकी महा भयमा

न आन सुदर्शन चक्रसे उसके पांचों सिर काट डाले धड़से सिर गिरतेही धमका सुन भौमासुर बोला कि यह अति शब्द काहे का हुआ इस बीच किसीने जा सुनाया कि महाराज श्रीकृष्णने आय मुर दैत्यको मारडाला॥

इतनी बात सुनतेही प्रथम तो भौमासुरने अति खेद किया पीछे अपने सेनापतिको युद्ध करनेका आयसु दिया वह सब कटक साज लड़नेको गढ़के द्वार पर जा उपस्थित हुआ और तिसके पीछे अपने पिताका मरना सुन मुरके सात बेटे जो अति बलवान औ बड़े योद्धा थे सोभी अनेक अनेक प्रकारके अस्त्र शस्त्र धारण कर श्रीकृष्णचन्द्रजीके सन्मुख लड़नेको जा खड़े हुए पीछेसे भौमासुरने अपने सेनापति औ मुरके बेटोंसे कहला भेजा कि तुम सावधानीसे युद्ध करो मैंभी आवता हूं॥

लड़नेकी आज्ञा पातेही सब असुर दल साथ ले मुरके बेटों समेत भौमासुरा सेनापति श्रीकृष्णजीसे युद्ध करनेको चढ़ आया औ एकाएकी प्रभुके चारोंओर सबकटक दल बादलसा जाय छाया सब ओरसे अनेक अनेक प्रकारके अस्त्र शस्त्र भौमासुरके सूर श्री कृष्णचन्द्र पर चलाते थे औ वे सहज सुभावही काट काट ढेर करते जाते थे निदान हरिने श्रीसत्यभामाजीको भयातुर देख असुर दलको मुरके सातों बेटों समेत सुदर्शनचक्रसे बातकी बातमें यों काट गिराया कि जैसे किसान ज्वारकी खेतिको काट गिरावे।

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज मुरके पुत्र समेत सब सेना कटी सुन पहले तो भौमासुर अति चिन्ता कर महा घबराया पीछे कुछ सोच समझ धीरज कर कितने एक महाबली राक्षसोंको अपने साथ लिये लाल लाल आंखें क्रोधसे किये कसकर फेंट बांधे शर साधे बकता झकता श्रीकृष्णसे लड़नेको आय उपस्थित हुआ जों भौमासुरने प्रभुको देखा तो उसने एकबार अति रिसाय मूठका मूठ बाण चलाय सो हरि

न तीन तीन टुकरे कर काट गिराये उसकाल।

काढ़ खड़ भौमासुर लियौ, कोपि हंकारि कृष्ण उर दियौ॥
करै शब्द अति मेघ समान, अरे गवांर न पावै जान॥
करकस बचन तहां उच्चरै, महा युद्ध भौमासुर करै॥

महाराज वह तो अति बलकर इन पर गदा चलाता था और श्रीकृष्णजीके शरीरमें उसको चोट यों लगती थी कि जों हाथ के अङ्गमें फूल छड़ी आगे वह अनेक अनेक अस्त्र शस्त्र ले प्रभुसे लड़ा औ प्रभुने सब काट डाले तब वह फिर घर जाय एक त्रिशूल ले आया औ युद्ध करनेको उपस्थित हुआ॥

तब सतिभामा टेर सुनाई, अब किन याहि हतौ यदुराई॥
बचन सुनत प्रभु चक्र संभारौ, काटि सीस भौमासुर मारौ॥
कुण्डल मुकुट सहित शिर परौ, धरके गिरत शेष थरहरौ॥
तिहूं लोकमें आनन्द भयौ, शोच दुःख सबहीको गयौ॥
तासु जोति हरि देह समानी, जै जै शब्द करै सुरज्ञानी॥
घिरे बिमान पुहुप बरषावैं, वेद बखानि देव यश गावैं॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज भौमासुरके मरतेही भूमि औ भौमासुरकी स्त्री पुत्र समेत आय प्रभुके सन्मुख हाथ जोड़ शिर निवाय अति बिनती कर कहने लगी कि हे जोतीसरूप ब्रह्मरूप भक्तहितकारी बिहारी तुम साध सन्तके हेतु धरबे हो भेष अनन्त तुम्हारी महिमा लीला माया है अपरम्पार तिसे कौन जाने और किसे इतनी सामर्थ है जो बिन कृपा तुम्हारी दिसे बखाने तुम सब देवोंके हो देव कोई नहीं जानता तुम्हारा भेव॥

महाराज ऐसे कह छत्र कुण्डल पृथ्वी प्रभुके आगे धर फिर बोली दीननाथ दीनबन्धु कृपासिन्धु यह सुभगदन्त भौमासुरका बेटा आपकी शरण आया है अब करुणा कर अपना कोमल कमलसा कर इसके सीस पर दीजै औ अपने भयसे इसे निर्भय कीजै इत

नी बातके सुनतेही करुणा निधान श्रीकान्हने करुणा कर सुभग दन्तके सीस पर हाथ धरा और अपने डरसे उसे निडर करा तब भौमावती भौमासुरकी स्त्री बहुतसी भेट हरिके आगे धर अति बिनती कर हाथ जोड़ सीस झुकाय खड़ी हो बोली॥

हे दीनदयाल कृपाल जैसे आपने दरशन दे हम सबको कृतारथ किया तैसे अब चलकर मेरा घर पवित्र कीजे इस बातके सुनतेही अन्तरजामी भक्तहितकारी श्रीमुरारी भौमासुरके घर पधारे उसका ले बे दोनों मा बेटे हरिको पाटम्बरके पांवड़े डाल घरमें ले जाय सिंहासन पर बिठाय अरघ दे चरणामृत ले अति दीनता कर बोले हे त्रिलोकीनाथ आपने भला किया जो इस महा असुरको बध किया हरिसे बिरोध कर किसने संसारमें सुख पाया रावण कुम्भकरण कंसादिने बैरकर अपनाजी गवांया और जिन जिनने आपसे द्रोह किया तिस तिसका जगतमें नाम लेबा पानी देवा कोई न रहा॥

इतनी कह फिर भौमावती बोली हे नाथ अब आप मेरी बिनती मान सुभगदन्तको निज सेवक जान जो सोलह सहस्र राजकन्या इसके बापने अनव्याही रोक रक्खी हैं सो अङ्गीकार कीजे महाराज यों कह उसने सब राजकन्याओंको निकाल प्रभुके सोंहीं पांतकी पांत ला खड़ी किया वे जगत उजागर रूपसागर श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्दको देखतेही मोहित हो अति गिड़गिड़ाय हाहा खाय हाथ जोड़ बोलीं नाथ जैसे आपने आय हम अबलाओंको इस महादुष्टकी बन्दिसे निकाला तैसे अब कृपाकर इन दासियोंको साथ ले चलिये औ निज सेवामें रखिये तो भला॥

यह बात सुन श्रीकृष्णचन्द्रने तिन्हें इतना कहा कि हम तुम्हारे साथ ले चलनेको रथ पालकियां मङ्गावें हैं सुभगदन्तकी ओर देखा सुभगदन्त प्रभुके मनका कारण समझ अपनी राजधानीमें

जाय हाथी घोड़े सजवाय घुड़बहल औ रथ समझाम ते अगम गाते जुतवाय सुखपाल पालकी नालकी डोली चण्डोल झालाओं रके कसवाय लिवाय लाया हरि देखतेही सब राजकन्याओंको उनपर चढ़नेकी आज्ञा दे सुभगदत्तको साथ ले राज मन्दिरमें जाय उसे राजगादीपर बिठाय राजतिलक बिसे निज हाथसे दे आप बिदा ले जिसकाल सब राजकन्याओंको साथ लिये वहांसे द्वारिकाको चले तिस समयकी शोभा कुछ बरनी नहीं जाती कि हाथी बैलोंकी झलाबोर मखाय मनो झूलोंकी चमक और घोड़ोंकी पाखरोंकी दमक औ सुखपाल पालकी नालकी डोली चण्डोल रथ घड़बहलोंके घटाटेपोंकी ओप औ उनकी मोतियों की झालरोंकी जोत सूरजकी जोतसे मिल एक हो जगमगा य रही थी॥

आगे श्रीकृष्णचन्द्र सब राजकन्याओंको लिये कितने एक दिनमें चले चले द्वारिकापुरी पहुंचे वहां जाय राजकन्याओंको राजम न्दिरमें रख राजा उग्रसेनके पास जाय प्रणाम कर पहले तो श्री कृष्णजीने भौमासुरकोमारने और राजकन्याओंके छुड़ाय लाने का सब भेद कह सुनाया फिर राजा उग्रसेनसे बिदा हो प्रभु स त्यभामाको साथ ले छत्र कुण्डल लिये गिरुड़पर बैठ स्वर्गको गये तहां पहुंचतेही॥

कुण्डल दिये अदितिके ईश। छत्र धश्यो सुरपतिके सीस।

यह समाचार पाय वहां नारद आये तिनसे हरिने कह सुनाया कि तुम जाय इन्द्रसे कहो जो सत्यभामा तुमसे कल्पवृक्ष मांगती हैं देखो वह क्या कहता है इस बातका उत्तर मुझे ला दो पीछे समझा जायगा महाराज इतनी बात श्रीकृष्णचन्द्रजीके मुखसे सुन नारदजीने सुरपतिसे जाय कहा कि सत्यभामा तुम्हारी भौजाई तुमसे कल्पतरु मांगती हैं तुम क्या कहते हो सो कहो मैं उन्हें जाय सुनाऊं कि इन्द्रने यह इस बातके सुनतेही इन्द्रपद

लै तो हकबकाय कुछ सोच रहा पीछे उसने नारद मुनिका कहा सब इन्द्रानीसे जाय कहा॥

इन्द्रानी सुन कहै रिसाय। सुरपति तेरी कुमति न जाय॥
तू हैं बड़ौ मूढ़ पति अन्धु। को हैं कृष्ण कौन को बन्धु॥

तुझे वह सुध है कै नहीं जो उसने ब्रजमेंसे तेरी पूजा भेट ब्रजबासियोंसे गिरि पुजवाय छलकर तेरी पूजाका सब पकवान आप खाया फिर सात दिन तुझे गिरिपर बरषवाय उसने तेरा गर्ब गंवाय सब जगतमें निरादर किया इस बातको कुछ तेरे ताईं लाज है कै नहीं वह अपनी स्त्रीकी बात मानता है तू मेरा कहा क्यों नहीं सुनता॥

महाराज जब इन्द्रानीने इन्द्रसे यों कह सुनाया तब वह अपनासा मुंह ले उलटा नारदजीके पास आया और बोला हे ऋषिराय तुम मेरी ओरसे जाय श्रीकृष्णचन्दसे कहो कि कल्पवृक्ष नन्दन बन तज अनत न जायगा औ जायगा तो वहां किसी भांति न रहेगा इतना कह फिर समझाके कहियो जो आगेकी भांति अब यहां हमसे बिगाड़ न करैं जैसे ब्रजमें ब्रजबासियोंको बहकाय गिरिको मिसकर सब हमारी पूजाकी सामा खाय गये नहीं तो महायुद्ध होगा॥

यह बात सुन नारदजीने आय श्रीकृष्णचन्दसे इन्द्रको बात कही कह सुनायके कहा महाराज कल्पतरु इन्द्र तो देता या पर इन्द्रानीने न देने दिया इस बातके सुनतेही श्रीमुरारी गर्ब प्रहारी नन्दन बनमें जाय रखवालोंको मार भगाय कल्पवृक्षको उठाय गरुड़पर धर ले आये उसकाल वे रखवाले जो प्रभुके हाथकी मार खाय भागे थे इन्द्रके पास जा पुकारे कल्पतरुके ले जानेके समाचार पाय महाराज राजा इन्द्र अति कोप कर बज्र हाथमें ले सब देवताओंको बुलाय ऐरावत हाथी पर चढ़ श्रीकृष्णचन्दजीसे युद्ध करनेको उपस्थित हुआ॥

फिर नारदमुनिजीने जाय इन्द्रसे कहा राजा तू महा मूरख है जो स्त्रीके कहे भगवानसे लड़नेको उपस्थित हुआ है ऐसी बात कहते तुझे लाज नहीं आती जो तुझे लड़नाही था तो जब भौमासुर तेरा छत्र औ अदितिके कुण्डल छिनाय ले गया तब क्यों न लड़ा अब प्रभुने भौमासुरको मार कुण्डल औ छत्र ला दिया तो तू उनहींसे लड़ने लगा जो तू ऐसाही बलवान था तो भौमासुरसे क्यों न लड़ा तू वह दिन भूल गया जो व्रजमें जाय प्रभुकी अति दीनता कर अपना अपराध क्षमा कराय आया फिर उनहींसे लड़ने चला है महाराज नारदजीके मुखसे इतनी बात सुनतेही राजा इन्द्र जो युद्ध करनेको उपस्थित हुआ तो अछताय पछताय लज्जित हो मनमार रह गया॥

आगे श्रीकृष्णचन्द द्वारिका पधारे तब हरषित भये देख हरिको यादव सारे प्रभुने सत्यभामाके मन्दिरमें कल्पवृक्ष ले जायके रक्खा औ राजा उग्रसेनने सोलह सहस्र एक सौ जो राजकन्या अनब्याही थीं सो सब वेदरीतिसे श्रीकृष्णचन्दको ब्याहीं॥

भयो वेद बिधि मङ्गलाचार। ऐसे हरि बिहरत संसार॥
सोलह सहस्र एक सौ गेहा। रहत कृष्ण कर परम सनेहा॥
पटरानी आठों जे गनो। प्रीति निरन्तर तिन सों घनी॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि हे राजा हरिने ऐसे भौमासुरको बध किया औ अदितिका कुण्डल और इन्द्रका छत्र ला दिया फिर सोलह सहस्र एक सौ आठ बिबाह कर श्रीकृष्णचन्द द्वारिकापुरीमें आनन्दसे सबको ले लीला करने लगे इति॥

६१ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एक समै मणिमय कञ्चनके मन्दिरमें कुन्दनका जड़ाउ छपरखट बिछा था तिसपर फेनसे बिछोने फलोंसे संवारे कपोलगेंदुआ औ ओसीसे समेत सुगन्धसे महक रहे थे ऊपर गुलाबनीर चोआ चन्दन अरगजा सजके चा

रों ओर पाटीमें भरे धरे थे अनेक अनेक प्रकारके चित्र विचित्र चारोंओर भीतों पर खिंचे हुए थे आलेमें जहां तहां फूल फल पकवान पाक धरे थे और सब सुखका सामान जो चाहिये सो उपस्थित था॥

झालावोरका घाघरा भूमझुमाता तिस पर सच्चे मोती टके हुए चमचमाती अङ्गिया झलझलाती सारी औ जगमगाती ओढ़नी पहने ओढ़े नख सिखसे सिङ्गार किये रोलूकी आड़ दिये बड़े२ मोतियोंकी नथ सीसफूल करनफूल मांगटीका ढेंढ़ी बंदी चन्द्रहार मोहनमाल धकधुकी पञ्चलड़ी सतलड़ी मोतीमाल दुहरे तिहरे नौरतन औ भुजबन्ध कङ्कण पहुंची नौगरी चूड़ी छाप छल्ले किङ्किनी अनवट बिछुए जेहर तेहर आदि सब आभूषण रतन जटित पहने चन्द्रवदनी चम्पकबरणी मृगनयनी पिकबयनी गजगमनी कटिकेहरी श्रीरुक्मिणीजी और मेघबरण चन्द्रमुख कमलनैन मोरमुकुट दिये बनमाल हिये पीताम्बर पहरे पीत पट ओढ़े रूपसागर त्रिभुवन उजागर श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द तहां बिराजते थे औ आपसमें परस्पर सुख लेते देते थे एकाएकी लेटे लेटे श्रीकृष्णजीने रुक्मिणीजीसे कहा॥

कि सुन सुन्दरी एक बात मैं तुझसे पूछता हूं तू उसका उत्तर मुझे दे कि तू तो महासुन्दरी सब गुण संयुक्त औ राजा भीष्मक की पुत्री और महाबली बड़ाप्रतापी राजा शिशुपाल चन्देरीका राजा ऐसा कि जिनके घर सात पीढ़ीसे राज चला आता है औ हम उनके त्राससे भागे फिरते हैं औ मथुरापुरी तज समुद्रमें आय बसे हैं उन्हींके भयसे ऐसे राजाको तुम्हें तुम्हारे माता पिता भाई देते थे औ वह बरात ले व्याहनेकोभी आ चुका था तिसे न बर तुसने कुलकी मर्याद छोड़ संसारकी लाज औ मात पिता बन्धुकी सङ्का तज हमें ब्राह्मणके हाथ बुला भेजा॥

तुमहरे योग न हम परवीन। भूपति नाहिं रूप गुण हीन॥

काहू याचक कीरत करी। सो तुम सुनके मनमें धरी॥
कटक साज नृप ब्याहन आयो। तब तुम हमको बोलि पठायो॥
आय उपाध बनीही भारी। क्योंहू कै पति रही हमारी॥
तिनके देखत तुमकों लाये। दल हलधर उनके बिचराये॥
तुम लिख भेजही यह बानी। शिशुपाल तें छुड़ावे आनी॥
सो परतीज्ञा रही तिहारी। कछु न इच्छा हुती हमारी॥
अब हूं कछु न गयो तिहारो। सुन्दरि मानहु बचन हमारो॥

कि जो कोई भूपति कुलीन गुनी बली तुम्हारे जोग होय तुम तिसके पास जा रहो महाराज इतनी बातके सुनतेही रुक्मिनीजी भयचक हो भहरखय पछाड़ खाय भूमिपर गिरीं औ जल बिन मीनकी भांति तड़फड़ाय अचेत हो लगीं उर्द्धसांस लैने तिसकाल॥

इहि छबि मुख अलका बली, रही लिपट इक सङ्ग॥
मानहुं शशि भूलत परैन, पीवत अली भुवङ्ग॥

यह चरित्र देख इतना कह श्रीकृष्णचन्द्र घबराकर उठे कि यह तो अभी प्राण तजती है औ चतुर्भुज हो उसके निकट जाय दो हाथोंसे पकड़ उठाय गोदमें बैठाय एक हाथसे पंखा करने लगे औ एक हाथसे अलक संवारने महाराज उसकाल मन्दलाल प्रेम बश हो अनेक अनेक चेष्टा करने लगे कभी पीताम्बरसे प्यारीका चन्द मुख पोंछते थे कभी कोमल कमलसा अपना हाथ उसके हृदे पर रखते थे निदान कितनी एक बेरमें श्रीरुक्मिणीजीके जीमें जी आया तब हरि बोले॥

तू है सुन्दरि प्रेम गम्भीर। तें मन कछू न राखा धीर॥
तें मन जान्यों सांचे छाड़ो। हमने हंसी प्रेमको माड़ो॥
अब तू सुन्दरि देह सम्भार। प्राण दौरके नैन उघार।
जौलों तू बोलत नहिं प्यारी। तौलों हम दुख पावत भारी॥
ऐसो बचन सुनत पिय नारि। चितई बारिज नयन उघारि।

देखे कृष्ण गोदमें लिये। भई लाज अति सकुची हिये॥
अरबराय उठ ठाढ़ी भई। हाथ जोरि पायन परि रही॥
बोले कृष्ण पीठ कर देत। भली भली जू प्रेम अचेत॥

हमने हाँसी ठानी सो तुमने सचही जानी हंसीकी बातमें क्रोध करना उचित नहीं उठो अब क्रोध दूर करो औ मनका शोक हरो महाराज इतनी बातके सुनतेही श्रीरुक्मिणीजी उठ हाथ जोड़ शिर नाय कहने लगीं कि महाराज अपने जो कहा कि हम तुम्हारे जोग नहीं सो सच कहा क्योंकि तुम लक्ष्मीपति शिव विरञ्चके ईश तुम्हारी समताका त्रिलोकीमें कौन है हे जगदीश तुम्हें छोड़ जोजन औरको धावे सो ऐसे है जैसे कोई हरि यश छोड़ गीधगुन गावे महाराज अपने जो कहा कि तुम किसी महाबली राजाको देखो सो तुमसे अति बली औ बड़ा राजा त्रिभुवनमें कौन है सो कहो॥

ब्रह्मा रुद्र इन्द्रादि सब देवता वर नाई तो तुमहारे आज्ञाकारी हैं तुम्हारी कृपासे वे जिसे चाहते हैं तिसे महाबली प्रतापी यशी तेजस्वी वर दे बनाते हैं और जो लोग आपकी सैकडोंबरष अति कठिन तपस्या करते हैं सो राजपद पाते हैं फिर तुम्हारा भजन ध्यान जप तप भूल नीति छोड़ अनीति करते हैं तब वे आपसे आपही अपना सरबसु खोय भ्रष्ट होते हैं कृपानाथ तुम्हारी तो सदा यह रीति है कि अपने भक्तोंके हेतु संसारमें आय बार बार औतार लेते हो औ दुष्ट राजसोंको मार पृथ्वीका भार उतार निज जनोंको सुख दे कृतारथ करते हो॥

औ नाथ जिसपर तुम्हारी बड़ी दया होती है और वह धन राज यौवन रूप प्रभुता पाय जब अभिमानसे अन्धा हो धर्म कर्म तप सत दया पूजा भजन भूलता है तब तुम उसे दरिद्र बनाते हो क्योंकि दरिद्री सदाही तुम्हारा ध्यान सुमरन किया करता है इसीसे तुम्हें दरिद्री भाता है जिस पर तुम्हारी बड़ी कृपा

होगी सो सदा निर्धन रहैगा महाराज इतना कह फिर रुक्मिणीजी बोलीं कि हे प्राणनाथ जैसा काशीपुरीके राजा इन्द्रद्युम्नकी बेटी अम्बाने किया था तैसा मैं न करूंगी कि वह पति छोड़ राजा भीष्मके पास गई औ जब उसने उसे न रक्खा तब फिर अपने पतिके पास आई पुनि पतिने उसे निकाल दिया तद उनने गङ्गा तीरमें बैठ महादेवका बड़ातप किया वहां भोलानाथने आय उसे मुंहमांगा बर दिया उस बरके बलसे जाय उसने राजा भीष्मसे आपना पलटा लिया सो मुझसे न होगा॥

अरु तुम नाथ यहै। समझाई। काकु कायक करी बड़ाई॥
बाकौ बचन मान तुम लियौ। हम पै विप्र पटैके दियौ॥
याचक शिव बिरञ्चि शारदा। नारद गुण गावत सरवदा॥
विप्र पठायौ जाने दयाल। आय कियौ दुष्टनि कों काल॥
दीन जान दासी सङ्ग लई। तुम सोहि नाथ बड़ाई दई॥
यह सुनि कृष्ण कहत सुन प्यारी। ज्ञान ध्यान गति लही हमारी॥
सेवा भजन प्रेम तें जान्यो। ताही सों मेरो मन मान्यौं॥

महाराज प्रभुके मुखसे इतनो बात सुनतेही सन्तुष्ट हो रुक्मिणीजी फिर हरिकी सेवा करने लगीं। इति॥

६२ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज सोलह सहस्र एक सौ आठ स्त्रियोंको ले श्रीकृष्णचन्द आनन्दसे द्वारिकापुरीमें विहार करने लगे औ आठोंपटरानियां आठोंपहर हरिकी सेवामें रहैं नित उठ भोरही कोई मुख धुलावै कोई उबटन लगाय न्हिलावै कोई षटरस भोजन बनाय जिमावै कोई अच्छे पान लौंग इलायची जावित्री जायफल समेत पियको बनाय खिलावै कोई सुथरे बस्त्र औ रतनजटित आभूषण चुनवास औ बनाय प्रभुको पहनाती थी कोई फूलमाल पहराय गुलाबनीर छिड़क केशर चन्दन चरचती थी कोई पंखा डुलाती थी और कोई पांव दाबती थी॥

महाराज इसी भांति सब रानियां अनेक अनेक प्रकारसे प्रभुकी सदा सेवा करैं औ हरि हर भांति उन्हे सुख दैं इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज कईबरषके बीच॥

एक एक यदुनाथकी नारि न जाये पुत्र।
इक इक कन्या लक्ष्मी दश दश पुत्र सुपुत्र॥
एक लाख इकसठ सहस ऐसो बाढ़ इकसार।
भये कृष्णके पुत्र ये गुण बल रूप अपार॥

सब मेघबरनै चन्द्रमुख कमलनयन नीले पीले झंगुले पहनेग ण्डे कठले ताइत गलेमें डाले घर घर बालचरित्र कर कर मात पिताको सुख दे औ उनकी मायें अनेक भांतिसे लाड़ प्यार कर प्रतिपाल करें महाराज श्रीकृष्णचन्द्रजीके पुत्रोंको होना सुन रु क्मने अपनी स्त्रीसे कहा कि अब मैं अपनी कन्या चारुमती जो कृतबरमाके बेटेको मांगी है विसे न दूंगा स्वयम्बर करूंगा तुम किसीको भेज मेरी बहन रुक्मिणीको पुत्र समेत बुलावा भेजो॥ इतनी बातके सुनतेही रुक्मकी नारीने अति बिनती कर न नदको पत्र लिख पुत्र समेत बुलवाया एक ब्राह्मणके हाथ औ स यम्बर किया भाई भौजाईकी चिट्ठी पातेही रुक्मिणीजी श्रीकृष्ण चन्द्रजीसे आज्ञा ले बिदा हो पुत्र सहित चलीं चलीं द्वारिकासे भोजकटमें भाईके घर पहुंची॥

देख रुक्मने अति सुख पायो। आदर कर नीचो शिर नायो॥
पायन पर बोली भौजाई। शरण भयो तब तें अब आई॥

यह कह फिर उसने रुक्मिणीजीसे कहा कि ननद जो तुम आई हो तो हमपर दया मया कीजे और इस चारुमती कन्या को अपने पुत्रके लिये लीजे इस बातके सुनतेही रुक्मिणीजी बोली कि भौजाई तुम पतिकी गति जानती हो मत कोसीसे क रह करवाओ,भैयाकी बात कुछ कही नहीं जाती क्या जानिये किस समय क्या करे इससे कोई बात कहते करते भय लगता है

रुक्म बोला कि बहन अब तुम किसी भांति न डरो कुछ उपाध न होगी वेदकी आज्ञा है कि दक्षिणदेशमें कन्यादान भानजेको दीजे इस कारण मैं अपनी पुत्री चारुमती तुम्हारे पुत्र प्रद्युम्न को दूंगा श्रीकृष्णचन्द्रजीसे बैरभाव छोड़ नया सम्बन्ध करूंगा॥

महाराज इतना कह जब रुक्म वहांसे उठ सभामें गया तब प्रद्युम्नजीभी मातासे आज्ञा ले बन ठन कर स्वयम्बरके बीच गये तो क्या देखते हैं कि देश देशके नरेश भांति भांति बस्त्र शस्त्र आभूषण पहने बांधे बनाव किये बिबाहकी अभिलाषा हियेमें लिये सब खड़े हैं और वह कन्या जैमाल कर लिये चारोंओर दृष्ट किये बीचमें फिरती है पर किसी पै दृष्ट उसकी नहीं ठहरती इस में जों प्रद्युम्नजी स्वयम्बरके बीच गये तों देखतेही उस कन्याने मोहित होआ इनके गलेमें जैमाल डाली सब राजा अछताय पछताय मुंह देखते अपनासा मुंह लिये खड़े रह गये और अपने मनहीमन कहने लगे कि भला देखें हमारे आगेसे इस कन्याको कैसे ले जायगा हम बाटहीमें छीन लेंगे॥

महाराज सब राजा तो यों कह रहे थे और रुक्मने वर कन्या को मढ़के नीचे ले जाय वेदकी बिधिसे सङ्कल्प कर कन्यादान किया और उसके यौतुकमें बहुतही धन द्रव्य दिया कि जिसका कुछ वारापार नहीं आगे श्रीरुक्मिणीजी पुत्रको ब्याह भाई भौजाईसे बिदा हो बेटे बहूको ले रथपर चढ़ जों द्वारिकापुरीको चलीं तों सब राजाओंने आय मारग रोका इस लिये कि प्रद्युम्न जीसे लड़ कन्याको छीन लें॥

उनकी यह कुमति देख प्रद्युम्नजी अपने अस्त्र शस्त्र ले युद्ध करनेको उपस्थित हुए कितनी बेरतक इनसे उनसे युद्ध रहा निदान प्रद्युम्नजी उन सबोंको मार भगाय आनन्द मङ्गलसे द्वारिकापुरी पहुंचे इनके पहुंचनेके समाचार पाय सब कुटुम्बके लोग क्या स्त्री क्या पुरुष पुरोके बाहर आय रीति भांति कर पारम्बरके

पांवड़े डालते बाजे गाजेसे इन्हें ले गये सारे नगरमें मङ्गल हुआ ये राजमन्दिरमें सुखसे रहने लगे॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा महाराज कईबरष पीछे श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्दके पुत्र प्रद्युम्न जीके पुत्र हुआ उस काल श्रीकृष्णजीने जोतिषियोंको बुलाय सब कुटुम्बके लोगोंको बैठाय मङ्गलाचार करवाय शास्त्रकी रीति से नाम करण किया जोतिषियोंने पत्रा देख बरष मास पक्ष दिन तिथि घड़ी लग्न नक्षत्र ठहराय उस लड़केका नाम अनिरुद्ध रक्खा उस काल॥

फूले अंगन समांय, दान दक्षिणा द्विजन को।
देत न कृष्ण अघाय, प्रद्युम्नके बेटा भयो॥

महाराज नातीके होनेका समाचार पाय पहले तो रुक्मने बहन बहनोईको अति हितकर यह पत्रीमें लिख भेजा कि तुम्हारे पोतेसे हमारी पोतीका व्याह होय तो बड़ा आनन्द है और पीछे एक ब्राह्मणको बुलाय रोली अक्षत रुपया नारियल दे उसे समझायके कहा कि तुम द्वारिकापुरीमें जाय हमारी ओरसे अतिबिनती कर श्रीकृष्णजीका पौत्र अनिरुद्ध जो हमारा दोहता है तिसे टीका दे आओ बातके सुनतेही ब्राह्मण टीका औ लग्न साथही ले चला चला श्रीकृष्णचन्दके पास द्वारिकापुरीमें गया विसे देख प्रभुने अति मान सनमान कर पूछा कि कहो देवता आपका आना कहांसे हुआ ब्राह्मण बोला महाराज मैं राजा भीष्मकके पुत्र रुक्मका पठाया उनकी पोती औ आपके पौत्रसे सम्बन्ध करनेको टीका औ लग्न ले आया हूं॥

इस बातके सुनतेही श्रीकृष्णजीने दश भाइयोंको बुलाय टीका औ लग्न ले विस ब्राह्मणको बहुत कुछ दे बिदा किया और आप बलरामजीके निकट जाय चलनेका बिचार करने लगे निदान वे

दोनों भाई वहांसे उठ राजा उग्रसेनके पास जाय सब समाचार सुनाय उनसे बिदा हो बाहर आय बरातकी सब सामा मंगवाय मंगवाय इकठी करवाने लगे कई एक दिनमें जब सब सामान उपस्थित हो चुका तब बड़ी धूमधामसे प्रभु बरात ले द्वारिकासे भोजकट नगरको चले॥

उस काल एक झमझमाते रथ पर तो श्रीरुक्मिणीजी पुत्र पौत्रको लिये बैठी जाती थीं औ एक रथ पर श्रीकृष्णचंद्र औ बलराम बैठे जाते थे निदान कितने एक दिनोंमें सब समेत प्रभु वहां पहुंचे महाराज बरातके पहुंचतेही रुक्म कलिङ्गादि सब देश देशके राजाओंको साथ ले नगरके बाहर जाय अगौनी कर सबको बागे पहराय अति आदरमान कर जनवासेमें लिवाय ला या आगे सबको खिलाय पिलाय मढ़ेके नीचे लिवाय ले गया औ उसने वेदकी विधिसे कन्या दान किया तिसके यौतुकमें जो दान दिया उसको मैं कहां तक कहूं वह अकथ है॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले महाराज ब्याहके हो चुकतेही राजा भीष्मकने जनवासेमें जाय हाथ जोड़ अति बिनती कर श्रीकृष्णचंद्रजीसे चुप चुपाते कहा महाराज बिबाह हो चुका औ रस रहा अब आप शीघ्र चलनेका बिचार कीजे क्योंकि॥

भूप सगे जे रुक्म बुलाये। ते सब दुष्ट उपाधी आये॥
मत काहू सों उपजै रारि। याहि तें डौं कहत मुरारि॥

इतनी बात कह जों राजा भीष्मक गये तोंहीं श्रीरुक्मिणीजीके निकट रुक्म आया॥

कहत रुक्मिणी टेर कर, किस घर पहुंचे जाय॥
बैरी भूपति पाहुने, जुरे तिहारे आय॥
जो तुम भैया चाहो भलो, हमहिं बेग पहुंचान चलो॥

नहीं तो रसमें अनरस होता दीसे है यह बचन सुन रुक्म बोला कि बहन तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो मैं पहले जो राजा देश देशके पाहुने आये हैं तिन्हें बिदाकर आऊं पीछे

जो तुम कहोगी सो मैं करूंगा इतना कह रुक्म वहांसे उठ जो राजा पाहुने आये थे उनके पास गया वे सब मिलके कहने लगे कि रुक्म तुमने कृष्ण बलदेवको इतना धन द्रव्य दिया और तिन्होंने मारे अभिमानके कुछ भला न माना एक तो हमें इस बातका पछतावा है औ दूसरे उस बातकी कसक हमारे मनसे नहीं जाती कि जो बलरामने तुम्हें अभरम किया था॥

महाराज इस बातके सुनतेही रुक्मको क्रोध हुआ तब राजा कलिङ्ग बोला कि एक बात मेरे जीमें आई है कहो तो कहूं रुक्मने कहा कहो फिर उसने कहा कि हमें श्रीकृष्णसे कुछ काम नहीं पर बलरामको बुला दो तो हम उससे चौपड़ खेल सब धन जीत लें और जैसा उसे अभिमान है तैसा यहांसे रोते हाथ बिदा करैं जों कलिङ्गने यह बात कही तोंही रुक्म वहांसे उठ कुछ शोच बिचार करता बलरामजीके निकट जा बोला कि महाराज आपको सब राजाओंने प्रणाम कर बुलाया है चौपड़ खेलनेको॥

सुन बलभद्र तबहि तहां आये। भूपति उठके सीस निवाये॥

आगे सब राजा बलरामजीका शिष्टाचर कर बोले कि आपको चौपड़ खेलनेका बड़ा अभ्यास है इस लिये हम आपके साथ खेला चाहते हैं इतना कह उन्होंने चौपड़ मंगवाय बिछाई और रुक्मसे औ बलरामजीसे होने लगी पहले रुक्म दश बेर जीता तो बलदेवजीसे कहने लगा कि धन तो सब बीता अब काहेसो खेलोगे इसमें राजा कलिङ्ग बड़ी बात कह हंसा यह चरित्र देख बलदेवजी नीचा शिर कर शोच बिचार करने लगे तब रुक्मने दश करोड़ रुपये एक बार लगाये सो बलरामजीने जों जीतके उठाये तों सब धांधल कर बोले कि यह रुक्मका पासा पड़ा तुम क्यों रुपये समेटते हो॥

सुनि बलराम फेर सब दीने। अर्ब लगायो पासे लीने॥

फिर हलधर जीते औ रुक्म हारा उस समयभी रोंगटी कर सब राजाओंने रुक्मको जिताया और यों कह सुनाया॥

जुआ खेल पासेकी सार। यह तुम जानों कहा गंवार॥
जुआ युद्ध गति भूपति जाने। ग्वाल गोप गयन पहचाने॥

इस बातके सुनतेही बलदेवजीका क्रोध यों बढ़ा कि जैसे पून्यौ को समुद्रकी तरङ्ग बढ़े निदान जों तों कर बलरामजीने क्रोधको रोक मनको समझाय फिर सात अर्ब रुपये लगाये और चौपड़ खेलने लगे फिरभी बलदेवजी जीते औ सबोंने कपट कर रुक्म होको जीता कहा इस अनीतिके होतेही आकाशसे यह बाणी हुई कि हलधर जीते औ रुक्म हारा अरे राजाओ तुमने क्यों झूठ बचन उचारा महाराज जब रुक्म समेत सब राजाओंने आकाश बाणी सुनी अनसुनी की तब तो बलदेवजी महाक्रोधसें आय बोले॥

करी सगाई बैर नछांडेरा। हम सों फेर कलह तुम मांडेरा॥
मारों तोहि अरे अन्याई। भलौ बुरौ मानहु भौजाई॥
अब काहूकी कान न करि हैं। आज प्राण कपटीके हरि हैं॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज निदान बलरामजीने सबके देखते रुक्मको मार डाला औ कलिङ्गको पकड़ मारे घूसोंके उसके दांत उखाड़ डाले औ कहा कि तूभी मुंह पसारके हंसा था आगे सब राजाओंको मार भगाय बलरामजीने जनवासेमें श्रीकृष्णचन्द्रजीके पास आय वहांका सब ब्यौरा कह सुनाया॥

बातके सुनतेही हरिने सब समेत वहांसे प्रस्थान किया और चले चले आनन्द मङ्गलसे द्वारिकामें आन पहुंचे इनके आतेही सारे नगरमें सुख छाय गया घर घर मङ्गलाचार होने लगा औ कृष्णजी औ बलदेवजीने उग्रसेन राजाके सनमुख जाय हाथ जो ड़ कहा महाराज आपके पुण्यप्रतापसे अनिरुद्धको ब्याह लाये

औ महाबुद्धि रुक्मको मारि आये इति॥

६३ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज अब जो द्वारिकानाथका बल पाऊं तो ऊषा हरणकी कथा सब गाऊं जैसे उसने रात्रि समै सपनेमें अनिरुद्धजीको देखा औ आसक्त हो खेद किया पुनि चित्ररेखाने जो अनिरुद्धको लाय ऊषासे मिलाया तैसे मैं सब प्रसङ्ग कहता हूं तुम मन दे सुनो ब्रह्माके बंशमें पहले कस्यप हुआ तिसका पुत्र हिरणकस्यप अतिबली महाप्रतापी औ अमर भया उसका सुत हरिजन प्रभु भक्त पहलाद नाम हुआ तिसका बेटा राजा बिरोचन बिरोचनका पुत्र राजा बलिजिसका यशधर्म धरणीमें अबतक छाय रहाहै कि प्रभुने बावन अवतारले राजाबलिको छलि पाताल पठाया उस बलिका जेष्ठ पुत्र महापराक्रमी बड़ा तेजस्वी बाणासुर हुआ वह शोणितपुरमे बसे नितप्रति कैलाशमें जाय शिवकी पूजा करे ब्रह्मचर्य्य पालै सत्य बोलै जितेन्द्री रहै महाराज एक दिन बाणासुर कैलाशमें जाय हरकी पूजा कर प्रेमसे आय लगा मगन हो मृदङ्ग बजाय बजाय नाचने गाने उसका गाना बजाना सुन श्रीमहादेव भोलानाथ मगन हो लगे पारवतीजीको साथ ले नाचने औ डमरु बजाने निदान नाचते नाचते शङ्करने अति सुख पाय प्रसन्न हो बाणासुरको निकट बुलायके कहा पुत्र मैं तुझपर सन्तुष्ट हुआ बर मांग जो तू बर मांगेगा सो मैं दूंगा॥

तैं कर बाजे भले बजाये। सुनत श्रवण मेरे मन भाये॥

इतनी बातके सुनतेही महाराज बाणासुर हाथ जोड़ शिरनाय अति दीनता कर बोला कि कृपानाथ जो आपने मेरे पर कृपा की तो पहले अमर कर मुझे सब पृथ्वीका राज दीजे पीछे मुझे ऐसा बली कीजे कि कोई मुझसे न जीते महादेवजी बोले कि मैंने तुझे यही बर दिया औ सब भयसे निर्भय किया त्रिभुवनमें ते

रे बलको कोई न पावेगा औ बिधाताकाभी कुछ तुझपर बश न चलेगा॥

मैं अति हिय आनन्द कर, दिये सहस्र भुज ताहि।
बाजो भले बजायकै, दियौ परम सुख मोहि॥

अब तू घर जाय निचिन्ताईसे बैठ अविचल राज कर महाराज इतना बचन भोलानाथके मुखसे सुन सहस्र भुज पाय बाणासुर अति प्रसन्न हो परिक्रमा दे शिरनाय बिदा होय आज्ञा ले शोणितपुरमें आया आगे त्रिलोकीको जीत सब देवताओंको बश कर नगरके चारोंओर जलकी चुआन चौड़ी खाई औ अग्नि पवनका कोट बनाय निर्भय हो सुखसे राज करने लगा कितने एक दिन पीछे॥

लरवे बिन भई भुज सबल, फरकहि अति सहि राय।
कहत बान कासों लरैं, का पर अब चढ़ि जांय॥

भई खाज लरवे बिन भारी। को पुजवै हिय हौंस हमारी॥

इतना कह बाणासुर घरसे बाहर जाय लगा पहाड़ उठाय उठाय तोड़ तोड़ चूर करने औ देश देश फिरने जब सब पर्वत फोड़ चुका औ उसके हाथोंकी सुरसुराहट खुजलाहट न गई तब॥

कहत बाण अब कासों लरों। इतनी भुजा कहा लै करों॥
सबल भार मैं कैसे सहों। बहुरि जायकै हरसों कहों॥

महाराज ऐसे मनहीमन शोच बिचार कर बाणासुर महादेव जीके सनमुख जा हाथ जोड़ शिरनाय बोला कि हे त्रिशूलपाणि त्रिलोकीनाथ तुमने जो कृपाकर सहस्र भुजा दीं सो मेरे शरीर पर भारी भईं उनका बल अब मुझसे सम्भाला नहीं जाता इसका कुछ उपाय कीजे कोई महाबली युद्ध करनेको मुझे बताय दीजे मैं त्रिभुवनसें ऐसा पराक्रमी किसको नहीं देखता जो मेरे सनमुख हो युद्ध करे हां दयाकर जैसे आपने मुझे महाबली कि

या तैसेही अब कृपाकर मुझसे लड़ मेरे मनका अभिलाष पूरा कीजे तो कीजे नहीं तो और किसी अतिबलीको बता दीजे जिसे मैं जाकर युद्ध करूं और अपने मनका शोक हरूं॥

इतना कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज बाणासुरसे इस भांतिकी बातें सुन श्रीमहादेवजीने बल खाय मनहींमन इतना कहा कि मैंने तो इसे साधु जानके बर दिया अब यह मुझीसे लड़नेको उपस्थित हुआ इस मूरखको बलका गर्ब भया यह जीता न बचेगा जिसने अहङ्कार किया सो जगतमें आय बहुत न जिया ऐसे मनहींमन महादेवजी कह बोले कि बाणासुर तू मत घबराय तुझसे युद्ध करनेवाला थोड़े दिनके बीच यदुकुलमें श्रीकृष्णावतार होगा उस बिन त्रिभुवनमें तेरा समहना करने वाला कोई नहीं यह बचन सुन बाणासुर अति प्रसन्न हो बोला नाथ वह पुरुष कब अबतार लेगा और मैं कैसे जानूंगा कि अब वह उपजा राजा शिवजीने एक ध्वजा बाणासुरको देके कहा कि इस बैरखको ले जाय अपने मन्दिरके ऊपर खड़ी कर दे जब यह ध्वजा आपसे आप टूटकर गिरे तब तू जानियो कि तेरा रिपु जन्मा॥

महाराज जद शङ्करने उसे ऐसे कह समझाया तद बाणासुर ध्वजा ले निज घरको चला शिरनाय आगे घर जाय ध्वजा मन्दिर पर चढ़ाय दिन दिन यही मनाता था कि कब वह पुरुष प्रगटे औ मैं उससे युद्ध करूं इसमें कितने एक बरष बीते उसकी बड़ी रानी जिसका नाम बाणावती तिसे गर्भ रहा औ पूरे दिनों एक लड़की हुई उसकाल बाणासुरने जोतिषियोंको बुलाय बैठायके कहा कि इस लड़कीका नाम औ गुन गनकर कहो इतनी बातके कहतेही जोतिषियोंने झट बरष मास पक्ष तिथि बार घड़ी मुहूर्त नक्षत्र ठहराय लग्न बिचार उस लड़कीका नाम ऊषा धरके कहा कि महाराज यह कन्या रूप गुण शीलकी खान

होगो इसको ग्रह औ नक्षत्र ऐसेही आन पड़े हैं॥

इतना सुन बाणासुरने अति प्रसन्न हो पहले बहुत कुछ जोति षियोंको दे बिदा किया पीछे मङ्गलामुखियोंको बुलाय मङ्गलाचार करवाया पुनि जों जों वह कन्या बढ़न लगी तों तों बाणासुर उस अति प्यार करने लगा जब ऊषा सात बरषकी भई तब उसके पिताने शोणितपुरके निकटही कैलाश था तहां कई एक सखी सहेलियोंके साथ उसे शिव पारवतीके पास पढ़नेको भेज दिया ऊषा गणेश सरस्वतीको मनाय शिव पारवतीको सनमुख जाय हाथ जोड़ शिरनाय बिनतीकर बोली॥

कि हे कृपासिन्धु शिव गौरी दयाकर मुझ दासीको विद्यादान दीजे औ जगतमें यश लीजे महाराज ऊषाके अति दीन बचन सुन शिव पार्वतीजीने उसे प्रसन्न हो विद्याका आरम्भ करवाया वह नित प्रति जाय जाय पढ़ पढ़ आवे इसमें कितने एक दिनके बीच सब शास्त्र पढ़ गुण विद्यावान हुई औ सब यन्त्र बजाने लगी एक दिन ऊषा पारवतीके साथ मिलकर बीन बजाय संगीतकी रीतिसे गाय रही थी कि उसकाल शिवजीने आय पारवतीसे कहा हे प्रिये मैंने जो कामदेवको जलया था तिसे अब श्रीकृष्णचन्द्रजीने उपजाया इतना कह श्रीमहादेवजी गिरजाको साथ ले गङ्गातीर पर जाय नीरमें न्हाय न्हिलाय सुखकी इच्छा कर अति लाड़ प्यारसे लगे पारवतीजीको वस्त्र आभूषण पहराने औ हित करने निदान अति आनन्दमें मगन हो डमरू बजायर ताण्डवनाच नाच नाच सङ्गीत शास्त्रकी रीतिसे गाय गाय शिवाको लगे रिझान और बड़े प्यारसे कण्ठ लगाने उस समय ऊषा शिव गौरीका सुखप्यार देख देख पतिके मिलनकी अभिलाषा कर मनहींमन कहने लगी कि मेराभी कन्त होय तो मैंभी शिव पार्वतीकी भांति उसके साथ विहार करूं पति बिन कामिनी ऐसे शोभाही न दे जैसे चन्द्र बिन यामिनी॥

महाराज जों उषाने मनहीं मन इतनी बात कही तों अन्तर जामी श्रीपारवतीजीने उषाकी अन्तर गति जानि उसे अति हितसे निकट बुलाय प्यार कर समझायके कहा कि बेटी तू किसी बातकी चिन्ता मनमें मत कर तेरा पति तुझे सपनेमें आय मिलेगा तू विसे ढूढ़वाय लीजो औ उसीके साथ सुख भोग कीजो ऐसे बर दे शिवरानीने उषाको बिदा किया वह सब विद्या पढ़ बर पाय दण्डवत कर अपने पास आई पिताने एक मन्दिर अति सुन्दर निराला उसे रहनेको दिया औ यह कितनी एक सखी सहे लियोंको ले वहां रहने लगी औ दिन दिन बढ़ने॥

महाराज जिस काल वह बाल बारह बरषकी हुई तो उसके मुखचन्द्रको जोतिको देखि पूर्णमासीका चन्द्रमा छबि छीन हुआ बालोंकी श्यामताके आगे मावसकी अन्धेरी फीका लगने लगी उसकी चोटीकी सटकाई लख नागनि अपनी केंचली छोड सटक गई भौंहकी बंकाई निरख धनुष धकधकाने लगा आंखोंकी बड़ाई चञ्चलाई पेख मृग मीन खञ्जन खिसाय रहे नाककी सुन्दरताई को देख तिलफूल मुरझाय गया उसके अधरकी लाली लख बिम्बाफल बिल बिलाने लगा दांतकी पांति निरख दाडिमका हिया दरक गया कपोलोंकी कोमलताई पेख गुलाब फलनेसे रहा गले की गुलाई देख कपोत कलमलाने लगे कुचोंकी कोर निरख कमल कली सरोबरमें जाय गिरी जिसकी कटिकी कृशता देख के हरीने वनबास लिया जांघोंकी चिकनाई पेख केलेने कपूर खाया देहकी गुराई निरख सोनेको सकुच भई औ चम्पा चम्प गया कर पदके आगे पदुमकी पदवी कुछ न रही ऐसी वह गजगमनी पिकबयनी नवबाला यौवनकी सरसाईसे शोभायमान भई कि जिसने इन सबकी शोभा छीन ली॥

आगे एक दिन वह नवयौवनका सुगन्ध उबटन लगाय निर्मल नीरसे मल मल न्हाय कंघी चोटी कर पाटी संवार मांग मोति

यों से भर अञ्जन मञ्जन कर मिहंदी महं वर रचाय पान खाय अच्छे जड़ाऊ सोनेके गहने मंगाय शीशफूल बेना बेंदी बंदीं ढ ढ़ी करनफूल चौदानियां झूड़ें गजमोतियोंकी मय भलके लटक न समेत जुगनी मोतियोंके दूलड़ेमें गुहो चन्द्रहार मोहनमाल पंचलड़ी सतलड़ी धुकधुकी भुजबन्द नौरतन चूड़ी नौगरी कङ्कण कड़े मुदरी छाप छले किङ्किणी जेहर तेहर गूजरी अनवट बि छुए पहन सुथरा भमभमाता सच्चे मोतियोंकी कोरका बड़े घेरका घाघरा औ चमचमाती आंचल पल्लूकी सारी पहर जगम गाती कंचुली कस उपरसे भलमलाती ओढ़नी ओढ़ तिस पर सुगन्ध लगाय इस सज धजसे हंसती हंसती सखियोंके साथ मात पिताको प्रणाम करने गई कि जैसे लक्ष्मी जों सनमुख जाय दण्ड वत कर ऊषा खड़ी भई तों बाणासुरने इसके यौबनकी छटा देख निज मनमें इतना कह इसे बिदा किया कि अब यह व्याहन जो ग हुई और पीछेसे कएक राक्षस उसके मन्दिरकी रखवालीको भेजे औ कितनी एक राक्षसी जिसकी चौकसीको पठाईं वे वहां जाय आठपहर सावधानीसे रहने लगे और राक्षसनियां सेवा करने लगीं॥

महाराज वह राजकन्या पतिके लिये नितप्रति तप दान ब्रत कर श्रीपारवतीजीकी पूजा किया करे एक दिन नित्य कर्मसे निचिन्त हो रात्रि समै सेज पर अकेली बैठी मन मन यों शोच रही थी कि देखिये पिता मेरा बिवाह कब करें औ किस भांति मेरा बर मुझे मिले इतना कह पतिहोके ध्यानमें सो गई तो स पनेमें देखती क्या है कि एक पुरुष किशोर बैस श्याम बरन च न्द्रमुख कमल नयन अति सुन्दर काम स्वरूप मोहन रूप पीता म्बर पहरे मोर मुकुट शिर धरे त्रिभङ्गी छबि करे रतन जटित आभूषण मकराकृत कुण्डल बनमाल गुञ्जहार पहने औ पीतबसन ओढ़े महाचञ्चल सनमुख आय खड़ा हुआ॥

यह उसे देखतेही मोहित हो लजाय सिर झुकाय रही तब उसने कुछ प्रेम सनी बातें कह सनेह बढ़ाय निकट आय हाथ पकड़ कण्ठ लगाय इसके मनका भरम औ शोच संकोच सब बिसराय दिया फिरतो परस्पर शोच संकोच तज सेज पर बैठ हाव भाव कटाक्ष औ आलिङ्गन चुम्बन कर सुख लेने देने लगे औ आनन्दसें मगन हो प्रीतिकी बातें करने कि इसमें कितनी एक बेर पीछे ऊषाने ज्यों प्यार कर चाहा कि पतिको अंकबार भर कण्ठ लगाऊं त्यों नयनोंसे नींद गई औ जिस भांति हाथ बढ़ाय मिलनेको भई थी तिसी भांति मुरझाय पछताय रह गई॥

जाग परी शोचति खरी, भयो परम दुख ताहि॥
कहां गयो वह प्राणपति, देखति चहु दिशि चाहि॥
शोचति ऊषा मिलोंहों काहि, फिर कैसे मैं देखों ताहि॥
सोवत जो रहती हों आज, प्रीतम कबहु न जातो भाज॥
क्यों सुखमें गहिबे कों भई, जो यह नींद नयन तें गई॥
जागतही यामिनि यम भई, जैहै क्योंकर अब यह दई॥
बिन प्रीतम जाय निपट अचैन, देखे बिन तरसत हैं नैन॥
श्रवण सुन्यौ चाहत हैं बैन, कहां गये प्रीतम सुख दैन॥
जो सपने पिय पुनि लख लेऊं, प्राण साथ कर विनके देऊं॥

महाराज इतना कह ऊषा अति उदास हो पियका ध्यान कर सेज पर जाय मुख लपेट पड़ रही जब रात जाय भोर हुआ और डेढ़ पहर दिन चढ़ा तब सखी सहेली मिल आपसमें कहने लगीं कि आज क्या है जो ऊषा इतना दिन चढ़ा औ अबतक सोती नहीं उठी यह बात सुन चित्ररेखा बाणासुरके प्रधान कूषभाण्ड की बेटी चित्रशालामें जाय क्या देखती है कि ऊषा छपरखटके बीच मनमारे जो हारे निढ़ाल पड़ी रो रो लम्बी सांसे ले रही है उसकी यह दशा देख॥

चित्ररेखा बोली अकुलाय। कह सखि तु मोसों समझाय॥

आज कहा सोचति है खरी। परम बियोग सिन्धुमें परी॥
रोरो अधिक उसासें लेत। तन मन व्याकुल है किहि हेत॥
तेरे मनका दुख परिहरौं। मन चीत्यौ कारज सब करौं॥
मोसी सखी और ना घनी। है परतीति मोहि आपनी॥
सकल लोकमें हे फिर आऊं। जहां जाउं कारज कर लयाऊं॥
मोकों बर ब्रह्माने दीनौ। बस मेरे सबही कों कीनौ॥
मेरे सङ्ग शारदा रहै। वाके बल कहिहौं जो कहै॥
ऐसी महा मोहिनी जानौ, ब्रह्मा रुद्र इन्द्र छलि आनौ॥
मेरो कोऊ भेद न जाने। अपनौ गुणको आप बखाने॥
ऐसै और न कहि है कोऊ, भलौ बुरौ कोउ किन होऊ॥
अब तु कह सब अपनी बात, कैसें कटी आजकी रात॥
मो सों कपट करै जिन प्यारी, पुजबोंगी सब आश तिहारी॥

महाराज इतनी बातके सुनतेही ऊषा अति सकुचाय शिर नाय चित्ररेखाके निकट आय मधुर बचनसे बोली कि सखी मैं तुझे अपनी हितू जान रातकी बात सब कह सुनाती हूं तू निज मन में रख और कुछ उपाय कर सकै तो कर आज रातको सपनेमें एकपुरुष मेघबरण चन्द्रबदन कमलनैन पीताम्बर पहने पीतपट ओढे मेरे पास आय बैठा औ उसने अति हितकर मेरा मन हाथमें ले लिया मैंभी सोच सङ्कोच तज उससे बातें करने लगी निदान बतराते बतराते जो मुझे प्यार आया तो मैंने उसे पकड़नेको हाथ बढ़ाया इस बीच मेरी नींद गई औ उसकी मोहिनी मूरति मेरे ध्यानमें रही॥

देखो सुन्यौ और नहिं ऐसो। मैं कछु कहा बताऊं जैसो॥
वाकी छबि बरणी नहिं जाय। मेरो चित ले गयो चोराय॥

जब मैं कैलाशमें श्रीमहादेवजीके पास बिद्या पढ़ती थी तब श्री पार्वतीजीने मुझे कहा था कि तेरा पति तुझे सपनेमें आय मिलेगा तू उसे ढूंढ़वा लीजो सो बर आज रात मुझे सपनेमें मि

ला मैं उसे कहां पाऊं औ अपने बिरहकी पीर किसे सुनाऊं कहां जाऊं उसे किस भांति ढूढ़वाऊं न बिसका नाम जानूं न गाम महाराज इतना कह जद ऊषा लम्बी सांसे ले मुरझाय रह गई तद चित्ररेखा बोली कि सखी अब तू किसी बातकी चित्तमें चिन्ता मत करै मैं तेरे कन्तको तुझे जहां होगा तहांसे ढूंढ़ ला मिलाऊङ्गी मुझे तीनों लोकमें जानेकी सामर्थ है जहां होगा तहां जाय जैसे बनेगा तैसेही ले आऊङ्गी तू मुझे उसका नाम बता औ जानेकी आज्ञा दे॥

ऊषा बोली बीर तेरी वही कहावत है कि मरी क्योंकि सांस न आई जो मैं उसका गावं गावंही जानती तो दुख काहेका था कुछ न कुछ उपाय करती यह बात सुन चित्ररेखा बोली सखी तू इस बातकाभी सोच न कर मैं तुझे त्रिलोकीके पुरुष लिख दिखाती हूं तिनमेंसे अपने चितचोरको देख बता दीजो फिर ला मिलाना मेरा काम है तब तो हंसकर ऊषा बोली बहुत अच्छा महाराज यह बचन ऊषाके मुखसे निकलतेही चित्ररेखा लिखनेका सब सामान मङ्गाय आसन मार बैठी औ गणेश शारदाको मनाय गुरुका ध्यानकर लिखने लगी पहले तो उसने तिनलोक चौदहभुवन सातद्वीप नौखण्डपृथ्वी आकाश सातोंसमुद्र आठोंलोक बैकुंठ सहित लिख दिखाये पीछे सब देव दानव गन्धर्व किन्नर यक्ष ऋषि मुनि लोकपाल दिगपाल औ सब देशोंके भूपाल लिख लिख एक एक कर चित्ररेखाने दिखाया पर ऊषाने अपना चाहीता उनमें न पाया फिर चित्ररेखा यदुबंशियोंकी मूरत एक एक लिख लिख दिखाने लगी इसमें अनिरुद्धका चित्र देखतेही ऊषा बोली॥

अब मन चोर सखी मैं पायो। रात यही मेरे ढिग आयो॥
कर अब सखी तू कछु उपाव। याकों ढूढ़ कहूं तें ल्याव॥
सुन कै चित्ररेख यों कहै। अब यह मोतें किम बच रहै॥

यों सुनाय चित्ररेखा पुनि बोली कि सखी तू इसे नहीं जानती मैं पहचानूं हूं यह यदुबंशी श्रीकृष्णचन्द्रजीका पोता प्रद्युम्नजीका बेटा औ अनिरुद्ध इसका नाम है समुद्रके तीर नीरमें द्वारिका नाम एक पुरी है तहां यह रहता है हरि आज्ञासे उस पुरीकी चौकी आठ पहर सुदरशनचक्र देता है इस लिये कि कोई दैत्य दानव दुष्ट आय यदुबंशियोंको न सतावै और जो कोई पुरीमें आवे सो बिन राजा उग्रसेन औ सूरसेनकी आज्ञा न आने पावे महाराज इस बातके सुनतेही ऊषा अति उदास हो बोली कि सखी जो वहां ऐसी बिकट ठांव है तो तू किस भांति तहां जाय मेरे कन्तको लावेगी चित्ररेखाने कहा आली तू इस बातसे निचिन्त रह मैं हरि प्रतापसे तेरे प्राणपतिको ला मिलाती हूं॥

इतना कह चित्ररेखा रामनामी कपड़े पहन गोपि चन्दनका ऊर्द्धपुण्ड्र तिलक काढ़ छापे उर भुजमूल औ कंठमें लगाय बहुतसी तुलसीकी माला गलेमें डाल हाथमें बड़े बड़े तुलसीके हीरोंकी सुमरन ले ऊपरसे हीराबल ओढ़ कांखमें आसन लपेट भगवतगीताकी पोथी दबाय परम भक्त बैष्णवका भेष बनाय ऊषाको यों सुनाय शिरनाय बिदा हो द्वारिकाको चली॥

पैड़े अब आकाशके अन्तरीक्ष हो जाऊं।
लयाऊं तेरे कन्त कों, चित्ररेख तो नाऊं॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज चित्ररेखा अपनी मायाकर पवनके तुरङ्गपर चढ़ अम्बरो रातमें स्याम घटाके साथ बातकी बातमें द्वारिकापुरीमें जा बिजलीसी चमकी औ श्रीकृष्णचन्द्रके मन्दिरमें बड़ गई ऐसे कि इसका जाना किसीने न जाना आगे यह ढूंढ़ती ढूंढ़ती वहां गई जहां पलङ्गपर सोये अनिरुद्धजी अकेले सपनेमें ऊषाके साथ बिहार कर रहे थे इसने देखतेही झट उस सोतेका पलङ्ग उठाय घट अपनी बाट ली॥

सोवतही परजङ्क समेत। लिये जात ऊषाके हेत।
अनिरुद्धको ले आई तहां। ऊषा चिन्तति बैठी जहां॥

महाराज पलङ्ग समेत अनिरुद्धको देखतेही ऊषा पहले तो ह कबकाय चित्ररेखाके पाओंपर जाय गिरी पीछे यों कहने लगी कि धन्य है धन्य है सखी तेरे साहस औ पराक्रमको जो ऐसी कठिन ठौर जाय बातकी बातमें पलङ्ग समेत उठा लाई औ अपनी प्रतिज्ञा पूरी की मेरे लिये तैंने इतना कष्ट किया इसका पलटा मैं तुझे नहीं दे सकती तेरे गुणकी चटणिया रही॥

चित्ररेखा बोली सखी संसारमें बड़ा सुख यही है जो औरको सुख दीजे औ कारजभी भला यही है कि उपकार कीजे यह शरीर किसी कामका नहीं इससे किसीका काम हो सके तो यही बड़ा काम है इसमें स्वारथ परमारथ दोनों होते हैं महाराज इतना बचन सुनाय चित्ररेखा पुनि यों कह विदा हो अपने घर गई कि सखी भगवानके प्रतापसे तेरा कान्त मैंने तुझे ला मिलाया अब तू इसे जगाय अपना मनोरथ पूरा कर चित्ररेखाके जातेही ऊषा अति प्रसन्न लाज कीये प्रथम मिलनका भय लिये मनहीमन कहने लगी॥

कहा बात कहि पियहि जगाऊं। कैसे भुजभर कंठ लगाऊं॥

निदान बीन मिलाय मधुर मधुर सुरोंसे बजाने लगी बीनकी धुनि सुनतेही अनिरुद्धजी जाग पड़े और चारोंओर देख देख मनेमन यों कहने लगे यह कौन ठौर किसका मन्दिर मैं यहां कैसे आया और कौन मुझे पलङ्ग समेत उठा लाया महाराज उस काल अनिरुद्धजी तो अनेक अनेक प्रकारकी बातें कह कह अचरज करते थे औ ऊषा शोच सङ्कोच लिये प्रथम मिलनका भय किये एक ओर कोनेमें खड़ी पियका चन्द्रमुख निरख निरख अपने लोचन चकोरोंको सुख देती थी इस बीच॥

अनिरुद्ध देखि कहैं अकुलाय। कह सुन्दरि तू अपने भाय॥

है तू को मोपै क्यों आई। कै तू मोहि आप लै आई॥
सांच झूठ एकौ नहीं जानौं। सपनौं सो देख तू हौं मानौं॥

महाराज अनिरुद्धजीने इतनी बातें कहीं औ ऊषाने कुछ उत्तर न दिया बरन और भी लाजकर कोनेमें सट रही तब तो उन्होंने झट उसे हाथ पकड़ पालङ्ग पर ला बिठाया औ प्रतिसनीथ रके बातें कह उसके मनका शोचसङ्कोच और भय सब मिटाया आगे वे दोनों परस्पर सेजपर बैठे हावभाव कटाक्षकर सुखलेने देने लगे औ प्रेमकथा कहने इस बीच बातोंही बातों अनिरुद्धजीने ऊषासे पूछा कि हे सुन्दरी तूने प्रथम मुझे कैसे देखा और पीछे किस भांति यहां मङ्गाया इसका भेद समझाकर कह जो मेरे मनका भरमजाय इतनी बातके सुनतेही ऊषा पतिका मुख निरख हरषके बोली॥

मोहि मिले तुम सपने आय। मेरौ चित लै गये चुराय॥
जागी मन भारी दुख लहैरा। तब मैं चित्ररेख सों कहैरा॥
सोई प्रभु तुम कौं यहां लाई। ताकी गति जानी नहिं जाई॥

इतना कह पुनि ऊषाने कहा महाराज मैं तो जिस भांति तुम्हें देखा औ पाया तैसे सब कहसुनाया अब आप कहिये अपनी बात समझाय जैसे तुमने मुझे देखा यादवराज यह बचन सुन अनिरुद्ध अति आनन्द कर मुसकुरायके बोले कि सुन्दरि मैंभी आज रात्रिको सपनेमें तुझे देख रहा था कि नींदहीमें कोई मुझे उठाय यहां ले आया इसका भेद अबतक मैंने नहीं पाया कि मुझे कौन लाया जागा तो मैंने तुझेही देखा॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज ऐसे वे दोनों पिय प्यारी आपसमें बतराय पुनि प्रीति बढ़ाय अनेक अनेक प्रकारसे काम कलोल करने लगे औ बिरहकी पीर हरने आगे पानकी मिटाई मोतीमालकी शीतलताई औ दीप जोतिकी मन्दताई निरख जो ऊषा बाहर जाय देखे तो उषाकाल हुआ चन्द्रकी

जाति घटी तारे द्युतिहीन भये आकाशमें अरुणाई छाई चारों ओर चिड़ियां चुह चुहाईं सरोवरमें कुमुदिनी कुम्हलाईं औ कमल फूले चकवा चकईका संयोग हुआ॥

महाराज ऐसा समय देख एकबार तो सब द्वार मूंद ऊषा बहुत घबराय घरमें आय अति प्यार कर पियको कंठ लगाय लेटी पीछे पिपियको दुराय सखी सहेलियोंसे छिपाय छिप छिप कन्तकी सेवा करने लगी निदान अनिरुद्धका आना सखी सहेलियोंने जाना फिर तो वह दिन रात पतिके सङ्ग सुख भोग किया करे एक दिन ऊषाकी मा बेटीकी सुध लेने आई तो उसने छिप कर देखा कि वह एक महा सुन्दर तरुण पुरुषके साथ कोठेमें बैठी आनन्दसे चौपड़ खेल रही है यह देखतेही बिन बोले चाले दबे पाओं फिर मनहीमन प्रसन्न हो आशीस देती हंट मारे वह अपने घर चली गई॥

आगे कितने एक दिन पीछे एक दिन ऊषा पतिको सोते देख जीमें यह बिचार कर सकुचती सकुचती घरसे बाहर निकली कि कहीं ऐसा न हो जो कोई मुझे न देख अपने मनमें जाने कि ऊषा पतिके लिये घरसे नहीं निकलती महाराज ऊषा कन्तको अकेला छोड़ जाते तो गई पर उससे रहा न गया फिर घरमें जाय किवाड़ लगाय बिहार करने लगी यह चरित्र देख पौरियोंने आपसमें कहा कि भाई आज क्या है जो राजकन्या अनेक दिन पीछे घरसे निकली औ फिर उलटे पाओं चली गई इतनी बातके सुनतेही उनमेंसे एक बोला कि भाई मैं कई दिनसे देखता हूं ऊषाके मन्दिरका द्वार दिन रात लगा रहता है और घरभीतर कोई पुरुष कभी हंस हंस बातें करता है औ कभी चौपड़ खेलता है दूसरेने कहा जो यह बात सच है तो चलो बाणासुरसे जाय कहैं समझ बूझ यहां क्यों बैठ रहैं॥

एक कहै यह कही न जाय। तुम सब बैठ रहो अरगाय॥

भली बुरी होवे सो होय। होनहार मेटै नहिं कोय॥
कहूं न बात कुंअरि कि कहिये। चुप ह्वै देख बैठही रहिये॥

महाराज द्वारपाल आपसमें ये बातें करतेही थे कि कई एक जोधा साथ लिये फिरता फिरता बाणासुर वहां आ निकला और मन्दिरके ऊपर दृष्ट कर शिवजीकी दी हुई धुजा न देख बोला यहांसे धुजा क्या हुई द्वारपालोंने उत्तर दिया कि महाराज वह तो बहुत दिन हुए कि टूटकर गिर पड़ी इस बातके सुनतेही शिवजीका बचन स्मरण कर भावित हो बाणासुर बोला॥

कबकी धुजा पताका गिरी। बैरी कहूं अबतरेया हरी॥

इतना बचन बाणासुरके मुखसे निकलतेही एक द्वारबाल सनमुख जा खड़ा हो हाथ जोड़ शिरनाय बोला कि महाराज एक बात है पर वह मैं कह नहीं सकता जो आपकी आज्ञा पाऊं तो जोकी तो कह सुनाऊं बाणासुरने आज्ञा की अच्छा कह तब पौरिया बोला कि महाराज अपराध क्षमा कई दिनसे हम देखते हैं कि राजकन्याके मन्दिरमें कोई पुरुष आया है वह दिन रात बातें किया करता है उसका भेद हम नहीं जानते कि वह कौन पुरुष है औ कब कहांसे आ या है और क्या करता है इतनी बातके सुनते प्रमाण बाणासुर अति क्रोधकर शस्त्र उठाय दबे पाओं अकेला ऊषाके मन्दिरमें जाय छिप कर क्या देखता है कि एक पुरुष श्यामबरन अतिसुन्दर पीत पट ओढ़े निद्रासें अचेत ऊषाके साथ सोया पड़ा है॥

सोचत बाणासुर यों हिये। होय पाप सोवत बध किये॥

महाराज यों मनहींमन बिचार बाणासुर तो कई एक रखवाले वहां रख उनसे यह कहा कि तुम इसके जागतेही हमें जाय कहियो आपने घर जाय सभा कर सब राक्षसोंको बुलाय कहने लगा कि मेरा बैरी आन पहुंचा है तुम सब दल ले ऊषाका मन्दिर जाय घेरो पीछेसे मैंभी आता हूं आगे इधर तो बाणासुरको

आज्ञा पाय सब राक्षसोंने आय उषाका घर घेरा औ उधर अ निरुद्धजी और राजकन्या निद्रासे चौंक पुनि सार पासे खेलने लगे इसमें चौपड़ खेलते खेलते उषा क्या देखती है कि चहुंओरसे घन घोर घटा घिर आई बिजली चमकने लगी दादुर मोर पपीहे बोलने लगे महाराज पपीहेकी बोली सुनतेही राजकन्या इतना कह पियके कंठ लगी॥

तुम पपिहा पिय पिय मत करौ। यह बियोग भाषा परिहरौ॥

इतनेमें किसीने जाय बाणासुरसे कहा कि महाराज तुम्हारा बैरी जागा बैरीका नाम सुनतेही बाणासुर अति कोप करके उठा औ अस्त्र शस्त्र ले उषाकी पौलीमें आय खड़ा हुआ और लगा छिपकर देखने निदान देखते देखते॥

बाणासुर यों कहै हंकार। कोहै रे तू गेह मझार॥

घन तन बरण मदन मन हारी। कमल नयन पीताम्बर धारी॥

अरे चोर बाहर किन आवै। जान कहां अब मोसो पावै॥

महाराज जब बाणासुरने टेरके यों कहे बैन तब उषा औ अनिरुद्ध सुन और देख भये निपट अचैन पुनि राजकन्याने अति चिन्ता कर भयमान हो लम्बी सांस ले कन्तसे कहा कि महाराज मेरा पिता असुर दल ले चढ़ि आया अब तुम इसके हाथसे कैसे बचोगे॥

तबहि कोप अनिरुद्ध कहै, मत डर पै तू नारि।
स्यार झुण्ड राक्षस असुर, पलमें डारों मारि॥

ऐसे कह अनिरुद्धजीने वेदमन्त्र पढ़ एक सौ आठ हाथकी शिला बुलाय हाथमें ले बाहर निकल दलमें जाय बाणासुरको ललकारा इनके निकलतेही वाणासुर धनुष चढ़ाय सब कटक ले अनिरुद्धजी पर यों टूटा कि जैसे मधुमाखियोंका झुण्ड किसीपै टूटे जद असुर अनेक अनेक प्रकारके अस्त्र शस्त्र चलाने लगे तद क्रोधकर अनिरुद्धजीने शिलाके हाथ कैएक ऐसे मारे कि सब अ

सुर दल काईसा फट गया कुछ मरे कुछ घायल हुए बचे सो भाग गये पुनि बाणासुर जाय सबको घेर लाया औ युद्ध करने लगा महाराज जितने अस्त्र शस्त्र असुर चलाते थे तितने इधर उधर हो जाते थे औ अनिरुद्धजीके अङ्गमें एकभीन लगता था॥

जे अनिरुद्ध पर परें हथयार। अधबर कटें शिलाकी धार॥
शिला प्रहार सहेगा नहिं परै। वज्र चोट मानो सुरपति करै॥
लागत सीस बीच तें फटै। टूटहि जांध भुजा धर कटै॥

निदान लड़ते लड़ते जब बाणासुर अकेला रह गया औ सब कटक कट गया तब उसने मनहींमन अचरज कर इतना कह नागपाससे अनिरुद्धजीको पकड़ बांधा कि इस अजीतको मैं कैसे जितूंगा॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज जिस समय अनिरुद्धजीको बाणासुर नागपाससे बांध अपनी सभामें ले गया उसकाल अनिरुद्धजी तो मनहींमन यों बिचारते थे कि मुझे कष्ट होय तो ब्रह्माका बचन झूठा करना उचित नहीं क्योंकि जो मैं नागपाससे बल कर निकलूंगा तो उसकी असर्याद होगी इससे बंधे रहनाहीं भला है और बाणासुर यह कह रहा था कि अरे लड़के मैं तुझे अब मारता हूं जो कोई तेरा सहायक हो तो तू बुला इस बीच उषाने पियकी यह दशा सुन चित्ररेखासे कहा कि सखी धिक्कार है मेरे जीतबको जो पति मेरा दुखमें रहै औ मैं सुखसे खाऊं पीऊं और सोऊं चित्ररेखा बोली सखी तू कुछ चिन्ता मतकरै तेरे पतिका कोई कुछ कर न सकेगा निचिन्त रह अभी श्रीकृष्णचन्द औ बलरामजी सब यदुबंशियोंको साथ ले चढि आवेंगे और असुर दलको संहार तुझ समेत अनिरुद्धको छुड़ाय ले जायेंगे उनकी यही रीति है जिस राजाके सुन्दर कन्या सुनते हैं तहांसे बल छल कर जैसे बने तैसे ले जाते हैं उन्हींका यह पोता है जेर कुण्डलपुरसे राजा भीष्मक

की बेटी रुक्मिणीको महा बली बड़े प्रतापी राजा शिशुपाल औ जरासिन्धुसे संग्राम कर ले गये थे तैसेही अब तुझे ले जायेंगे तू किसी बातकी भावना मत करे उषा बोली सखी यह दुख मुझ से सहा नहीं जाता॥

नागपाश बांधे पिय हरी। दहे गात ज्वाला बिष भरी॥
होंकैसें पौढ़ौं सुख सैना। पिय दुख क्योंकर देखों नैना॥
प्रीतम बिपत परे क्यों जीऔं। भोजन करों न पानी पीऔं॥
बर बध अब बाणासुर कीजे। मोकों शरण कन्तकी दीजे॥
होनहार होनी है होय। तासों कहा कहैगा कोय॥
लोक बेदकी लाज न मानौं। पिय सङ्ग दुखसुखही मैं जानौं॥

महाराज चित्ररेखासे ऐसे कह जब ऊषा कन्तके निकट जाय निडर निशङ्क हो बैठी तब किसीने बाणासुरको जा सुनाया कि महाराज राजकन्या घरसे निकल उस पुरुषके पास गई इतनी बातके सुनतेही बाणासुरने अपने पुत्र स्कन्धको बुलायके कहा कि बेटा तुम अपनी बहनको सभासे उठाय घरमें ले जाय पकड़ रक्खो औ निकलने न दो॥

पिताकी आज्ञा पातेही स्कन्ध बहनके पास जा अति क्रोधकर बोला कि तैंने यह क्या किया पापनी जो छोड़ी लोक लाज औ कान अपनी हे नीच मैं तुझे क्या बध करूं होगा पाप और अप यशसे भी हूं डरूं उषा बोली कि भाई जो तुम्हें भावे सो कहो औ करो मुझे पारबतीजीने जो बर दिया था सो बर मैंनें पाया अब दूसरे छोड़ और को धाऊं तो अपनेको गाली चढ़ाऊं तजती हैं पतिको अकुलीनी नारी यही रीति परम्परासे चली आती है बीच संसार जिससे बिधताने सम्बन्ध किया उसीके सङ्ग जगतमें अपयश लिया तो लिया महाराज इतनी बातके सुनतेही स्कन्ध क्रोध कर हाथ पकड़ ऊषाको वहांसे मन्दिरमें उठा लाया औ फिर न जाने दिया पुनि अनिरुद्धजीकोभी वहांसे उठाय कहीं अनत ले

जाय बन्ध किया उसकाल इधर तो अनिरुद्धजी प्यारीके बियोग में महाशोग करते थे औ उधर राजकन्या कन्तके बिरहमें अन्न पानी तज कठिन जोग करने लगी॥

इस बीच कितने एक दिन पीछे एक दिन नारदमुनिजीने पह ले तो अनिरुद्धजीको जाय समझाया कि तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो अभी श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द औ बलराम सुखधाम राक्षसोंसे कर संग्राम तुम्हें छुड़ाय ले जयेंगे पुनि बाणासुर को जा सुनाया कि राजा जिसे तुमने नागपाशसे पकड़ बांधा है वह श्रीकृष्णका पोता औ प्रद्युम्नजीका बेटा है औ अनिरुद्ध उसका नाम है तुम यदुबंशियोंको भली भांतिसे जानते हो जो जानो सो करो मैं इस बातसे तुम्हें सावधान करने आया था सो कर चला यह बात सुन इतना कह बाणासुरने नारदजीको बिदा किया कि नारदजी मैं सब जानता हूं। इति॥

६४ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जब अनिरुद्धजीको बन्धे बन्धे चार महिने हुए तब नारदजी द्वारिकापुरीमें गये तो वहां क्या देखते हैं कि सब यादव महा उदास मनमलीन तनछीन हो रहे हैं और श्रीकृष्णजी औ बलरामजी उनके बीचमें बैठे अति चिन्ता कर कह रहे हैं कि बालकको उठाय यहांसे कौन ले गया इस भांतिकी बातें हो रहीं थीं रनवासमें रोना पीटना हो रहा था ऐसा कि कोई किसीकी बात न सुनता था नारदजीके जातेही सब लोग क्या स्त्री क्या पुरुष धाये औ अति व्याकुल तनछीन मन मलीन रोते बिल बिलाते सनमुख आय खड़े हुए आगे अति बिनती कर हाथ जोड़ शिरनाय हाहा खाय खाय नारदजीसे सब पूछने लगे॥

सांची बात कहौ रिषि राय। जासों जिय राखें बहराय॥
कैसे सुधि अनिरुद्धकी लहैं। कहौ साधि ताके हम रहैं॥

इतनी बातके सुनतेही श्रीनारदजी बोले कि तुम किसी बात की चिन्ता मत करो औ अपने मनका शोग हरो अनिरुद्धजी जी ते जागते शोणितपुरमें हैं वहां विन्होंने जाय राजा बाणासुरकी कन्यासे भोग किये इसी लिये उसने उन्हें पकड़ नागपाससे बांधा है बिन युद्ध किये वह किसी भांति अनिरुद्धजीको न छोड़ेगा यह भेद मैंने तुम्हें कह सुनाया आगे जो उपाय तुमसे हो सके सो करो महाराज यह समाचार सुनाय नारदमुनिजी तो चले गये पीछे सब यदुबंशियोंने जाय राजा उग्रसेनसे कहा कि महा राज हमने ठीक समाचार पाये कि अनिरुद्धजी शोणितपुरमें बा णासुरके यहां हैं इन्होंने उसकी कन्या रमी इससे उनने इन्हें नागपाससे बांध रक्खा है अब हमें क्या आज्ञा होती है इतनी बातके सुनतेही राजा उग्रसेनने कहा कि तुम हमारी सब सेना ले जाओ और जैसे बने तैसे अनिरुद्धको छुड़ा लाओ ऐसा बचन उग्रसेनके मुखसे निकलतेही महाराज सब यादव तो राजा उग्र सेनका कटक ले बलरामजीके साथ हुए और श्रीकृष्णचन्द्र औ प्रद्युम्नजी गरुड़ पर चढ़ सबसे आगे शोणितपुरको गये॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जिस काल बलरामजी राजा उग्रसेनका सब दल ले द्वारिकापुरीसे धौंसा दे शोणितपुरको चले उस समयकी कुछ सोभा बरनी नहीं जाती कि सबके आगे तो बड़े बड़े दन्तीले मतवाले हाथियोंकी पांति तिन पर धौंसा बाजता जाता था औ धुजा पताका फहराती थीं तिनके पीछे एक और गजोंकी अवली अम्बारियों समेत जिन पर बड़े बड़े रावत योधा सूर बीर यादव झिलम टोप पहने सब अस्त्र शस्त्र लगाये बैठे जाते थे उनके पीछे रथोंके तांतोंके तांतें हुए आते थे विनकी पीठपर घुड़चढ़ोंके यूथके यूथ बरन बरनके घोड़े गंडेपट्टे वाले गजगाह पाखर डाले जमाते ढहरा ते नचाते कुदाते फंदाते चले जाते थे और उनके बीच बीच

चारण यश गाते थे औ कड़खैत कड़खा तिस पीछे फरी खांड़े छुरीं कटारीं जमधर धौतें बरछीं बरछे भाले बल्लम बाने पटे धनुष बाण गदा चक्र फरसे गण्डासे सुहांगीं गुप्तीं बाक बिछुए स मेत अनेक अनेक प्रकारके अस्त्र शस्त्र लिये पैदलोंका दल टीड़ी दलसा चला जाता था उनके मध्य मध्य धौंसे ढोल डंफ बांसुरी भेरी रनसिंगोंका जो शब्द होता था सो अतिही सुहावना लगता था॥

उड़ी रेणु आकाश लों छाई। छिप्या भानु भयों निसकें भाई।
चकवी चलवा भयौ बियोग। सुन्दरी करैं कन्त सों भोग॥
फूले कमल कुमुद कुम्हलाने। निशचर फिरहिं निशा जिय जाने॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जिस समय बलरामजी बारह अक्षौहिणी सेना ले अति धूमधामसे उसके गढ़ गढ़ी कोट तोड़ते औ देश उजाड़ते जा शोणितपुरमें पहुंचे और श्रीकृष्णचन्द्र औ प्रद्युम्नजीभी आन मिले तिसी समै किसीने अति भय खाय घबराय जाय हाथ जोड़ शिरनाय बाणासुरसे कहा कि महाराज कृष्ण बलराम अपनी सब सेना ले चढ़ आये औ उन्होंने हमारे देशके गढ़ गढ़ी कोट ढाय गिराये औ नगर को चारोंओरसे आय घेरा अब क्या आज्ञा होती है॥

इतनी बातके सुनतेही बाणासुर महाक्रोध कर अपने बड़े बड़े राक्षसोंको बुलाय बोला तुम सब दल अपना दल ले जाय नगर के बाहर जाय कृष्ण बलरामके सनमुख खड़े हो पीछेसे मैंभी आता हूं महाराज आज्ञा पातेही वे असुर बातकी बातमें बारह अक्षौहिणी सेना ले श्रीकृष्ण बलरामजीके सोंहीं लड़नेको अस्त्र शस्त्र लिये आ खड़े रहे उनके पीछेही श्रीमहादेवजीका भजन सुमिरण ध्यान कर बाणासुरभी आ उपस्थित हुआ श्रीशुकदेव मुनि बोले कि महाराज ध्यानके करतेही शिवजीका आसन डोला औ ध्यान छूटा तो उन्होंने ध्यान धर जाना कि मेरे भक्त

पर भीड़ पड़ी है इस समय चलकर उसकी चिन्ता मेटा चाहिये॥

यह मनहीं मन बिचार जब पारबतीजीको अर्द्धाङ्ग धर जटा जूट बांध भस्म चढ़ाय बहुतसी भांग और आक धतूरा खाय श्वेत नागोंका जनेऊ पहन गजचर्म ओढ़ मुण्डमाल सर्पहार पहन त्रिशूल पिनाक डमरू खप्पर ले नन्दीपर चढ़ भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी भूतनी प्रेतनी पिशाचनी आदि सेना ले भोलानाथ चले उस समैकी कुछ शोभा बरनी नहीं जाती कि कानमें गजमणिकी मुद्रा ललाट पै चन्द्रमा सीस पर गङ्गाधरै लाल लाल लोचन करे अति भयङ्कर भेष महाकालकी मूरति बनाये इस रीतिसे बजाते गाते सेनाको नचाते जाते थे कि वह रूप देखही बनि आवे कहनेमें न आवे निदान कितनी एक बेरमें शिवजी अपनी सेना लिय वहां पहुंचे कि जहां सब असुरदल लिये बाणासुर खड़ा था हरको देखतेही बाणासुर हषरके बोला कि कृपासिन्धु आप बिन कौन इस समय मेरी सुध ले॥

तेज तुम्हारे छुन कों दहै। यादवकुल अब कैसें रहै॥

यों सुनाय फिर कहने लगा कि महाराज इस समै धर्मयुद्ध करो औ एक एकके सनमुख हो एक एक लड़ो महाराज इतनी बात जों बाणासुरके मुखसे निकली तों इधर असुरदल लड़नेको तुलकर खड़ा हुवा औ उधर यदुबंशी आ उपस्थित हुए दोनोंओर जुझाऊ बाजने लगे शूरबीर रावत योधा धीर अस्त्र शस्त्र साजने औ अधीर नपुंसक कायर खेत छोड़ छोड़ जी ले ले भागने लगे॥

उसकाल महाकालस्वरूप शिवजी श्रीकृष्णचन्द्रके सनमुख हुए बाणासुर बलरामजीके सोंहीं हुआ स्कन्द प्रद्युम्नजीसे आय भिड़ा औ इसी भांति एक एकसे जुट गया औ दोनोंओरसे शस्त्र चलने लगा उधर धनुष पिनाक महादेवजीके हाथ इधत शारङ्ग धनुष लिये यदुनाथ शिवजीने ब्रह्मबाण चलाया श्रीकृष्णजीने ब

॥ ३१॥

ड्यालसे काट गिराया फिर रुद्रने चलाई महाबयार सो हरिने तेजसे टोनीटार पुनि महादेवने अग्नि उपजाई वह मुरारिने मेह बरसाय बुझाई और एक महा ज्वाला उपजाई सो सदाशिव जीके दलमें धाई उसने डाढ़ी मूछ औ जलायके केश कीने सब असुर भयानक भेष॥

जब असुरदल जलने लगा औ बड़ा हाहकार हुआ तब भोला नाथने जले अधजले राक्षसों औ भूत प्रेतोंको तो जलबरषाय ठण्डा किया और आप अति क्रोधकर नारायणीबाण चलानेको लिया पुनि मनहींमन कुछ सोच समझ न चलाय रख दिया फिर तो श्रीकृष्णजी आलस्यबाण चलाय सबको अचेत कर लगे असुरदल काटने ऐसे कि जैसे किसान खेती काटे यह चरित्र देख जों महादेवजीने अपने मनमें सोच कर कहा कि अब प्रलययुद्ध बिन किये नहीं बनता तोंही स्कन्ध मोरपर चढ़ धाया और अन्तरीक्ष हो उसने श्रीकृष्णजीकी सेनापर बाण चलाया॥

तब हरि सों प्रद्युम्न उच्चरै। मोर चढो ऊपर तें लरै॥
आज्ञा देहु युद्ध अति करैं। मारों अबहि भूमि गिर परै॥

इतनी बातके कहतेही प्रभुने आज्ञा दी औ प्रद्युम्नजीने एक बाण मारा सो मोरको लगा स्कन्ध नीचे गिरा स्कन्धके गिरतेही बाणासुर अति कोपकर पांच धनुष चढ़ाय एक एक धनुषपर दो दो बाण धर लगा मेहसा बरषाने और श्रीकृष्णचन्द्र बीचही लगे काटने महाराज उसकाल इधर उधरके मारू ढोल डफसे बाजते थे कड़खेत धमालसी गाते थे घावोंसे लोहूकी धार पिचकारियोंसी चल रही थीं जिधर तिधर जहां तहां लाल लाल लोहू गुलालसा दृष्ट आता था बीच बीच भूत प्रेत पिशाच जो भांति भांतिके भेष भयावने बनाये फिरते थे सो भगतसी खेल रहे थे औ रक्तकी नदी रङ्गकीसी नदी वह निकली थी लड़ाई क्या दोनोंओर होलीसी हो रहीथी इसमें लड़ते लड़ते फिरने एक

बेर पीछे श्रीकृष्णजीने एक बाण ऐसा मारा कि उसके रथका सा बथी उड़ गया औ घोड़े भड़के निदान रथवानके मरतेही बाणा सुरभी रणभूमि छोड़ भागा श्रीकृष्णजीने उसका पीछा किया॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज बाणासु रके भागनेके समाचार पाय उसकी मा जिसका नाम कोटरा सो उसी समै भयानक भेष छूटे केश नङ्गमनङ्गी आ श्रीकृष्णचन्द्रजी के सन्मुख खड़ी हुई औ लगी पुकार करने॥

देखतही प्रभु मुंदे नैन। पीठ दई ताके सुन बैन॥
तौलों बाणासुर भज गयौ। फिर अपनौं दल जोरत भयौ॥

महाराज जबतक बाणासुर एक अक्षौहिणी दलसाज वहां आया तबतक कोटरा श्रीकृष्णजीके आगसे न हटी पबकी सेना देख अ पने घर गई आगे बाणासुरने आय बड़ा युद्ध किया पर प्रभुके स नमुख न ठहरा फिर भाग महादेवजीके पास गया बाणासुरको भयातुर देख शिवजीने अति क्रोधकर महाविषमज्वरको बुला य श्रीकृष्णजीकी सेनापर चलाया वह महाबली बड़ा तेजस्वी जि सका तेज सूरजकी समान तीन मुण्ड नौपग छः करवाला त्रिलो चन भयानक भेष श्रीकृष्णचन्द्रके दलको आय साला उसके तेजसे यदुबंशी लगे जलने औ थर थर कांपने निदान अति दुखपाय घबराय यदुबंशियोंने आय श्रीकृष्णजीसे कहा कि महाराज शिव जीके ज्वरने आय सारे कटकको जलाय मारा अब इसके हाथ से बचाइये नहीं तो एकभी यदुबंशी जीतो न बचेगा महाराज इतनी बात सुन औ सबको कातर देख हरिने शीतज्वर चला या वह महादेवके ज्वरपर धाया इसे देखतेही वह डरकर प लाया औ चला चला सदाशिवजीके पास आया॥

तब ज्वर महादेव सों कहै। राख हु शरण कृष्ण ज्वर दहै॥

यह बचन सुन महादेवजी बोले कि श्रीकृष्णचन्द्रजीके ज्वरको बिन श्रीकृष्णचन्द्र ऐसे त्रिभुवनमें कोई नहीं जो हरे इससे उत्तम

यही है कि तू भक्त हितकारी श्रीमुरारीके पास जा शिव बाक्य सुन सोच बिचार बिषमज्वर श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्दजीके सन मुख जा हाथ जोड़ अति बिनती कर गिड़गिड़ाय हाहा खाय बोला हे कृपासिन्धु दीनबन्धु पतितपावन दीनदयाल मेरा अप राध क्षमा कीजे औ अपने ज्वरसे बचाय लीजे॥

प्रभु तुम हो ब्रह्मादिक ईश। तुम्हरी शक्ति अगम जगदीश॥
तुम्हीं रचकर सृष्टि संवारी। सब माया जग कृष्ण तुम्हारी॥
कृपा तुम्हारी यह मैं बूझो। ज्ञान भये जग करता सूझो॥

इतनी बातके सुनतेही हरिदयाल बोले कि तू मेरी शरण आ या इसीसे बचा नहीं तो जीता न बचता मैंने तेरा अबका अप राध क्षमा किया फिर मेरे भक्त औ दासोंको मत व्यापियो तुझे मेरीही आन है ज्वर बोला कृपासिन्धु जो इस कथाको सुनेगा उसे शीतज्वर एक तरा औ तिजारी कभी न व्यापैगी पुनि श्री कृष्णचन्द्र बोले कि तू अब महादेवके निकट जा यहां मत रह न हीं तो मेरा ज्वर तुझे दुख देगा आज्ञा पातेही बिदा हो दण्ड वत कर बिषमज्वर सदाशिवजीके पास गया औ ज्वरका बाधा सब मिट गया इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महा राज॥

यह सम्वाद सुने जो कोय। ज्वरकौ डर ताकौं नहीं होय॥

आगे बाणासुर अति कोपकर सब हाथोंमें धनुष बाण ले प्रभुके सनमुख आ ललकारके बोला॥

तुम तें युद्ध कियो मैं भारी। पूजी तऊ न साद हमारी॥

जब यह कह लगा सब हाथोंसे बाण चलाने तब श्रीकृष्णचन्द्रजी ने सुदरशन चक्रको छोड़ उसके चार हाथ रख सब हाथ काट डाले ऐसे कि जैसे कोई बातके कहते वृक्षके गुद्दे छांट डाले हाथ के कटतेही बाणासुर शिथिल हो गिरा घावोंसे लोहूकी नदी वह निकली तिसमें भुजायें मगरमच्छसी जनाती थीं कटे हुए हाथि

योंके मस्तक घड़ियालसे डूबते जाते थे बीच बीच रथ बेड़े नवा
ड़ेसे बहे जाते थे और जिधर तिधर रणभूमिमें स्वान स्यार गिद्ध
आदि पशु पत्नी लोथें खेंच खेंच आपसमें लड़ लड़ झगड़ झगड़
फाड़ फाड़ खाते थे पुनि कौवे शिरोंसे आंखें निकाल ले ले उड़
उड़ जाते थे॥

श्रीशुकदेवजी बोले महाराज रणभूमिकी यह गति देख बाणा
सुर अति उदास हो पछताने लगा निदान निबल हो सदाशिव
जीके निकट गया तब॥

कहत रुद्र मन माहिं बिचार। अब हरिकी कीजे मनुहार॥

इतना कह श्रीमहादेवजी बाणासुरको साथ ले वेदपाठ करते
वहां आय कि जहां रणभूमिमे श्रीकृष्णचन्द्र खड़े थे बाणासुरको
पावोंपर डाल शिवजी हाथ जोड़ बोले कि हे शरणागतवत्सल
अब यह बाणासुर आपकी शरण आया इसपर कृपा दृष्टि कीजे
औ इसका अपराध मनमें न लीजे तुमतो बार बार अवतार लेते
हो भूमिका भार उतारनेको औ दुष्ट हनन औ संसारके तारन
को तुम हो प्रभु अलख अभेद अनन्त भक्तोंके हेत संसारमें आय
प्रगटते हो भगवन्त नहीं तो सदा रहते हो बिराटस्वरूप तिसका
है यह रूप स्वर्ग शिर नाभि आकाश पृथ्वी पांव समुद्र पेट इन्द्र
भुजा पर्वत नख बादल केश रोम वृक्ष लोचन शशि औ भानु ब्रह्मा
मन रुद्र अहङ्कार पवन स्वांसा पलक लगना रात दिन गरजन
शब्द॥

ऐसे रूप सदा अनुसरौ। काहू पै नहीं जाने परौ॥

और यह संसार दुखका समुद्र है इसमें चिन्ता औ मोहरूपी
जल भरा है प्रभु बिन तुम्हारे नामकी नावके सहारे कोई इस
महा कठिन समुद्रके पार नहीं जा सकता औ यों तो बहुतेरे डू
बते उछलते हैं जो नर देह पाकर तुम्हारा भजन सुमरन औ
न करेगा आप सो नर भूलेगा धर्म औ बढ़ावेगा पाप जिसने संसा

त्में आय तुम्हारा नाम न लिया तिसने अमृत छोड़ विष पिया जिसके हृदेमें तुम बसे आय उसीको भक्ति मुक्ति मिली गुन गाय॥

इतना कह पुनि श्रीमहादेवजी बोले कि हे कृपासिन्धु दीनब न्धु तुम्हारी महिमा अपरम्पार है किसे इतनी सामर्थ है जो उसे बखाने औ तुम्हारे चरित्रोंको जाने अब मुझ पर कृपा कर इस बाणासुरका अपराध क्षमा कीजे औ इसे अपनी भक्ति दीजे यहभी तुम्हारी भक्तिका अधिकारी है क्योंकि भक्त प्रहलादका बंश अंश है श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि शिवजी हम तुममें कुछ भेद नहीं औ जो भेद समझेगा सो महानरकमें पड़ेगा और मुझे कभी न पावेगा जिसने तुम्हें ध्याया तिसने अन्त समै मुझे पाया इसने निष्कपट तुम्हारा नाम लिया तिसीसे मैंने इसे चतुर्भुज किया जिसे तुमने बर दिया औ दोगे तिसका निबाह मैंने किया औ करूंगा॥

महाराज इतना बचन प्रभुके मुखसे निकलतेही सदाशिवजी दण्डवत कर बिदा हो अपनी सेना ले कैलाशको गये औ श्रीकृष्ण चन्द्र वहांहीं खड़े रहे तब बाणासुर हाथ जोड़ शिरनाय बिनती कर बोला कि दीनानाथ जैसे आपने कृपा कर मुझे तारा तैसे अ ब चलके दासका घर पवित्र कीजे औ अनिरुद्धजी औ ऊषाको अपने साथ लीजे इस बातके सुनतेही श्रीबिहारी भक्तहितकारी प्रद्युम्नजीको साथ ले बाणासुरके धाम पधारे महाराज उसकाल बाणासुर अति प्रसन्न हो प्रभुको बड़ी आवभगतसे पाटम्बरके पांवड़े डालता लिवाय ले गया आगे॥

चरण धोय चरणोदक लियौ। अचमन कर माथे पर दियौ॥

पुनि कहने लगा कि जो चरणोदक सबको दुर्लभ है सो मैंने ह रिकी कृपासे पाया औ जन्म जन्मका पाप गंवाया यही चरणोदक त्रिभुवनको पवित्र करता है इसीका नाम गङ्गा है इसे ब्रह्माने कमण्डलमें भरा शिवजीने शीस पर धरा पुनि सुर मुनि ऋषिने

आना औ भगीरथने तीनों देवताओंकी तपस्या कर संसारमें आना तबसे इसका नाम भागीरथी हुआ यह पापमलहरनी पवित्रकरनी साधु सन्तको सुख देनी बैकुन्ठकी निसेनी है औ जो इसमें न्हाया उसने जन्म जन्मका पाप गंवाया जिसने गङ्गाजल पिया तिसने निस्संदेह परमपद लिया जिनने भागीरथीका दरशन किया तिनने सारे संसारको जीत लिया महाराज इतना कह बाणासुर अनिरुद्धजी औ ऊषाको ले आय प्रभुके सनमुख हाथ जोड़ बोला॥

क्षमिये दोष भावई भई। यह, मैं ऊषा दासी दई॥

यों कह वेदकी बिधिसे बाणासुरने कन्यादान किया औ तिसके यौतुकमें बहुत कुछ दिया कि जिसका वारापार नहीं॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज ब्याहके होते ही श्रीकृष्णचन्द्र बाणासुरको आशा भरोसा दे राजगादी पर बैठाय पाते बहूको साथ ले बिदा हो धौंसा बजाय सब यदुबंशियों समेत वहांसे द्वारिकापुरीको पधारे इनके आनके समाचार पाय सब द्वारिकाबासी नगरके बाहर जाय प्रभुको बाजेगाजेसे लिवाय लाये उसकाल पुरबासी हाटबाट चौहटों चौवारों कोठोंसे मङ्गली गीत गाय गाय मङ्गलाचार करते थे औ राजमन्दिरमें श्रीरुक्मिणी आदि सब सुन्दरी बधाये गाय गाय रीति भांति करती थीं औ देवता अपने अपने बिमानों पर बैठे ऊपरसे फूल बरसाय बरषाय जैजैकार करते थे और घर बाहर सारे नगरमें आनन्द हो रहा था कि उसी समय बलराम सुखधाम औ श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द सब यदुबंशियोंको बिदा दे अनिरुद्ध ऊषाको साथ ले राजमन्दिरमें जा बिराजे॥

आनी ऊषा गेह मझारी। हरषहिं देखि कृष्णकी नारी॥
देहिं अशीश सासु उर लावें। निरखि हरषि भूषण पहिरावें॥

इति।

६५ अध्याय॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इक्ष्वाकुवंशी राजा नृग बड़ा ज्ञानी दानी धर्मात्मा साहसी था उसने अनगनित गौदानकी जो गङ्गाकी बालूके कण भादोंके मेहकी बुंदे औ आकाशके तारे गिने जाय तो राजा नृगके दानकी गायेंभी गिनी जांय ऐसा जो ज्ञानी महादानी राजा सो थोड़े अधर्मसे गिरगिट हो अन्धे कूए में रहा तिसे श्रीकृष्णचन्द्रजीने मोक्ष दिया॥

इतनी कथा सुन श्रीशुकदेवजीसे राजा परीक्षितने पूछा महाराज ऐसा धर्मात्मा दानी राजा किस पापसे गिरगिट हो अन्धे कूएमें रहा औ श्रीकृष्णचन्द जीने कैसे उसे तारा यह कथा तुम मुझे समझा कर कहो जो मेरे मनका संदेह जाय श्रीशुकदेवजी बोले महाराज आप चित्त दे मन लगाय सुनिये मैं जोंकी तों सब कथा कह सुनाता हूं कि राजा नृग तो नित प्रति गौदान किया करतेही थे पर एक दिन प्रातही न्हाय सन्ध्या पूजा करके सहस धौली धूमरि काली पीली भूरि कबरी गै। मंगाय रूपके खुर सोनके सींग तांबेकी पीठ समेत पाटम्बर उढ़ाय संकल्पी औ र उनके ऊपर बहुतसा अन्न धन ब्राह्मणोंको दिया वे ले अपने घर गये दूसरे दिन फिर राजा उसी भांति गौदान करने लगा तो एक गाय पहले दिनकी संकल्पी अनजाने आन मिली सोभी राजाने उन गायोंके साथ दानकर दी ब्राह्मण ले अपने घरको चला आगे दूसरे ब्राह्मणने अपनी गो पहचान बाटमें रोकी औ कहा कि यह गाय मेरी है मुझे कलह राजाके यहांसे मिली है भाई तु क्यों इसे लिये जाता है यह ब्राह्मण बोला इसे तो मैं अभी राजाके यहांसे लिये चला आता हूं तेरी कहांसे हुई महाराज वे दोनो ब्राह्मण इसी भांति मेरी मेरी कर झगड ने लगे निदान झगडते झगडते वे दोनों राजाके पास गये राजाने दोनोंकी बात सुन हाथ जोड़ अति बिनती कर कहा कि॥

कोऊ लाख रुपैया लेउ। गैया एक कोऊको देउ॥

इतनी बातके सुनतेही दोनों झगड़ालू ब्राह्मण अति क्रोधकर बोले कि महाराज जो गाय हमने स्वस्ति बोलके ली सो करोड़ रुपैये पानेसेभी हम न देंगे वह तो हमारे प्राणके साथ है महाराज पुनि राजाने उन ब्राह्मणोंको पावों पड़ पड़ अनेक अनेक भांति फुसलाया समझाया पर उन तामसी ब्राह्मणोंने राजाका कहना न माना निदान महा क्रोधकर इतना कह दोनों ब्राह्मण गाय छोड़ चले गये कि महाराज जो गाय आपने सङ्कल्प कर हमें दी औ हमने स्वस्ति बोल हाथ पसार ली वह गाय रुपैये ले न हीं दी जाती अच्छा यों तुम्हारे यहां रहो तो कुछ चिन्ता नहीं॥ महाराज ब्राह्मणोंके जाते राजा नृग पहले तो अति उदास हो मनहीमन कहने लगा कि यह अधर्म अनजाने मुझसे हुआ सो कैसे छूटेगा औ पीछे अति दान पुण्य करने लगा कितने एक दिन बीते राजा नृग कालबश हो मर गया उसे यमके गण धर्मराजके पास ले गये धर्मराज राजाको देखतेही सिंहासनसे उठ खड़ा हुवा पुनि आवभगत कर आसन पर बैठाय अति हितकर बोला महाराज तुम्हारा पुण्य है बहुत और पाप है थोड़ा कहो पहले क्या भुगतोगे॥

सुनि नृग कहत जोर कै हाथ। मेरो धर्म टरो जिन नाथ॥
पहले हौं भुगतोंगो पाप। तन धरकै सहिहौं सन्ताप॥

इतनी बातके सुनतेही धर्मराजने राजा नृगसे कहा कि महाराज तुमने अनजाने जो दानकी हुई गाय फिर दानकी उसी पापसे आपको गिरगिट हो बनबीच गोमती तीर अन्धेकूएमें रहना हुआ जब द्वापरके अन्तमें श्रीकृष्णचन्द्र अवतार लेंगे तब तुम्हें वे मोक्ष देंगे महाराज इतना कह धर्मराज चुप रहा औ राजा नृग उसी समै गिरगिट हो अन्धेकूएमें जा गिरा औ जीव भक्षण कर कर वहां रहने लगा॥

॥ ३२॥

आगे कई युग बीते द्वापरके अन्तमें श्रीकृष्णचन्द्रजीने अवतार लिया औ व्रजलीला कर जब द्वारिकाको गये औ उनके बेटे पोते भये तब एक दिन कितने एक श्रीकृष्णजीके बेटे पोते मिल अहेरको गये औ बनमे अहेर करते करते प्यासे भये ढंढोवे बनमें जल ढूंढ़ते ढूंढ़ते उसी अन्धेकूप पर गये जहां राजा गिरगिट का जन्म ले रहा था कूएमें झांकतेही एकने पुकारके सबसे कहा कि अरे भाई देखो इस कूएमें कितना पड़ा एक गिरगिट है।

इतनी बातके सुनतेही सब दौड़ आये औ कूएके मनघटे पर खड़े हो लगे पगड़ी फेंटे मिलाय मिलाय लटकाय लटकाय उसे काढ़ने औ आपसमें यों कहने कि भाई इसे बिन कूएसे निकाले हम यहांसे न जायंगे महाराज जब वह पगड़ी फेंटोंकी रस्सोसे न निकला तब उन्होंने गांवसे सन सूत मूञ्ज चामकी मोटी मोटी भारी भारी बरतें मंगवाई औ कूएमें फांस गिरगिटको बांध बलकर खैंचने लगे पर वह वहांसे टसकाभी नहीं तब किसीने द्वारिकामें जाय श्रीकृष्णचन्द्रजीसे कहा कि महाराज बनमे अन्धे कूएके भीतर एक बड़ा मोटा भारी गिरगिट है उसे सब कुंवर काढ़ हारेपर वह नहीं निकलत॥

इतनी बातके सुनतेही हरि उठ धाये औ चले चले वहां आये जहां सब लड़के गिरगिटको निकाल रहे थे प्रभुको देखतेही सब लड़के बोले कि पिता देखो यह कितना बड़ा गिरगिट है हम बड़ी बेरसे इसे निकाल रहे हैं यह निकलता नहीं महाराज इस बचनको सुन ज्यों श्रीकृष्णचन्द्रजीने कूएमें उतर उसके शरीरमें चरण लगाया त्यों वह देह छोड़ अति सुन्दर पुरुष हुवा।

भूपति रूप रहेउगहि पाय। हाथ जोड़ बिनवै शिर नाय॥

कृपासिन्धु आपने बड़ी कृपा की जो इस महाबिपतमें आय मेरी सुध ली शुकदेवजी बोले राजा जब वह मनुष्यरूप हो हरिसे

इस ढबकी बातें कहने लगा तब यादवोंके बालक औ हरिके बेटे पोते अचरज कर श्रीकृष्णचन्द्रसे पूछने लगे कि महाराज यह कौन है किस पापसे गिरगिट हो यहां रहा था सो कृपाकर कहो तो हमारे मनका सन्देह जाय उसकाल प्रभुने आप कुछ न कह उस राजासे कहा॥

अपनौ भेद कहो समझाय। जैसे सबै सुनै मन लाय॥
को हो आप कहां तें आये। कौन पाप यह काया पाये॥
सुनकै नृग कह जोरे हाथ। तुम सब जानत यदुनाथ॥

तिस पर आप पूछते हो तो मैं कहता हूं मेरा नाम है राजा नृग मैंने अनगनित गौ ब्राह्मणोंको तुम्हारे निमित्त दीं एक दिनकी बात है कि मैंने कितनी एक गाय सङ्कल्पकर ब्राह्मणोंको दीं दूसरे दिन उन गायोंमेंसे एक गाय फिर आई सो मैंने और गायोंके साथ अनजाने दूसरे द्विजको दानकर दी जों लेकर निकला तों पहले ब्राह्मणने अपनी गौ पहचान इससे कहा यह गाय मेरी है मुझे कलराजाके यहांसे मिली है तू इसे क्यों लिये जाता है वह बोला मैं अभि राजाके यहांसे लिये चला आता हूं तेरी कैसे हुई महाराज वे दोनों विप्र इसी बातपर झगड़ते झगड़ते मेरे पास आये मैंने उन्हें समझाया और कहा कि एक गायके पलटे मुझसे लाख गौ लो औ तुममेंसे कोई यह गाय छोड़ दो॥

महाराज मेरा कहा हठकर उन दोनोंने न माना निदान गौ छोड़ क्रोधकर वे दोनों चले गये मैं अछताय पछताय मन मार बैठ रहा अन्त समय यमके दूत मुझे धर्मराजके पास ले गये धर्मराजने मुझसे पूछा कि राजा तेरा धर्म है बहुत औ पाप है थोड़ा कह पहले क्या भुगतेगा मैंने कहा पाप इस बातके सुनतेही महाराज धर्मराज बोले कि राजा तैने ब्राह्मणको दी हुई गाय फिर दान की इस अधर्मसे तू गिरगिट हो पृथ्वीपर जाय गोमती तीर बनके बीच अन्धेकूएमें रह जब द्वापर युगके अन्तमें श्रीकृष्ण

चन्द अवतार ले तेरे पास आयंगे तब तेरा उद्धार होगा महारा
ज तभीसे मैं गिरट खरूप इस अंधेकूपमें पड़ा आपके चरण कम
लका ध्यान करता था अब आय आपने मुझ महाकष्टसे उवारा
औ भवसागरसे पार उतारा॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि
महाराज इतना कह राजा नृग तो बिदा हो बिमानमें बैठ बैकुं
ठको गया औ श्रीकृष्णचन्द्रजी सब बाल गोपालोंको समझायके
कहने लगे॥

बिप्र दोष जिन कोऊ करौ। मत कोऊ अंश बिप्र को हरौ।
मन सङ्कल्प कियौ जिन राखैरा। सत्य वचन बिप्रन सो भाखैरा॥
बिप्रहि दियौ फेर जो लेइ। ताकौं दण्ड इतौ यम देइ॥
बिप्रनके सेवक भये रहियै। सब अपराध बिप्रको सहियै।
बिप्रहि मानें सो मोहि माने। बिप्रन अरु मोहि भिन्न न जाने॥

जो मुझमें औ ब्राह्मणमें भेद जानेगा सो नरकमे पड़ेगा औ बि
प्रको मानेगा वह मुझे पावेगा औ निस्संदेह परमधाममें जावेगा
महाराज यह बात कह श्रीकृष्णजी सबको वहांसे ले द्वारिकापुरी
पधारे इति॥

६६ अध्याय।

श्रीशुकदेव बोले कि महाराज एक समै श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द
औ बलराम सुखधाम मणिमय मन्दिरमें बैठे थे कि बलदेवजीने
प्रभुसे कहा भाई जब हमें वृन्दावनसे कंसने बुला भेजा था औ ह
म मथुराको चले थे तब गोपियों और नन्द यशोदासे हमने तुम
ने यह बचन किया थ कि हम शीघ्रही आय मिलेंगे सो वहां न
जाय द्वारिकामें आय बसे वे हमारी सुरत करते होंगे जो आज्ञा
आप करें तो हम जन्मभूमि देखि आवें औ उनका समाधान क
रि आवें प्रभु बोले कि अच्छा इतनी बातके सुनतेही बलरामजी
सबसे बिदा हो हल मूसल ले रथपर चढ़ सिधारे॥

महाराज बलरामजी जिस पुर नगर गांवमें जाते थे तहांसे

राजा आगू बढ़ अति शिष्टाचार कर इन्हें ले जाते थे और ये एक एकका समाधान करते जाते थे कितने एक दिनमें चले चले बल रामजी अवन्तिका पुरी पहुंचे॥

विद्या गुरुको किये प्रणाम। दिन दश तहां रहे बलराम॥

आगे गुरुसे बिदा हो बलदेवजी चले चले गोकुलमें पधारे! तो देखते क्या हैं कि बनमें चारोंओर गायें मुंहबायें बिन तृण खायें श्रीकृष्णचन्द्रकी सुरत किये बांसुरीकी तानमें मन दिये रांभतीं हांकती फिरती हैं तिनके पीछे पीछे ग्वालबाल हरि यश गाते प्रेम रङ्गराते चले जाते हैं औ जिधर तिधर नगर निवासी लोग प्रभुके चरित्र औ लीला बखान रहे हैं महाराज जन्मभूमिमें जाय ब्रजबासियों औ गायोंकी यह अवस्था देखि बलरामजी करुणाकर नयनमें नीर भर लाये आगे रथकी ध्वजा पताका देख श्रीकृष्णचन्द्र औ बलरामजीका आना जान सब ग्वालबाल दौड़ आये प्रभु उनके आतेही रथसे उतर लगे एक एकके गले लग लग अति हितसे क्षेम कुशल पूछने इस बीच किसीने जा नन्द यशोदासे कहा कि बलदेवजी आये यह समाचार पातेही नन्द यशोदा औ बड़े बड़े गोप ग्वाल उठ धाये उन्हें दूरसे आते देख बलरामजी दौड़कर नन्दरायके पाओंपर जाय गिरे तब नन्दजीने अति आनन्दकर नयनोंमें जल भर बड़े प्यारसे बलरामजीको उठाय कंठसे लगाया औ वियोग दुख गंवाया पुनि प्रभुने।

गहे चरण यशमतिके जाय। उनि हितकर उर लिये लगाय॥
भुज भरि भेट कन्ठ गहि रही। लोचन तें जल सलिता बही॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजासे कहा कि महाराज ऐसे मिल जुल नन्दरायजी बलरामजीको घरमें ले जाय कुशल क्षेम पूछने लगे कि कहो उग्रसेन वसुदेव आदि सब यादव औ श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द आनन्दसे हैं और कभी हमारी सुरत करते हैं बलरामजी बोले कि आपकी कृपासे सब आनन्द मङ्गलसे हैं औ सदा

सर्वदा कृष्णआपका गुण गाते रहते हैं इतना बचन सुन नन्दराय चुप रहे पुनि यशोदारानी श्रीकृष्णजीकी सुरत कर लोचनमें नीर भर अति व्याकुल हो बोलीं कि बलदेवजी हमारे प्यारे नैनोंके तारे श्रीकृष्णजी अच्छे हैं बलरामजीने कहा बहुत अच्छे हैं पुनि नन्दरानी कहने लगीं कि बलदेव जबसे हरि यहांसे सिधारे तबसे हमारी आंख आगे अंधेरा हो रहा है हम आठ पहर उन्हींका ध्यान किये रहती हैं औ वे हमारी सुरत भुलाय द्वारिकामें जाय छाय रहे और देखो बचन देवकी रोहणीभी हमारी प्रीति छोड़ बैठी॥

मथुरा तें गोकुल ढिग जान्यौ। बसी दूर तबही मन मान्यौ।
भेंटन मिलन आवते हरी। फिर न मिल ऐसी उन करी॥

महाराज इतना कह जब यशोदाजी अति व्याकुल हो रोने लगीं तब बलरामजीने बहुत समझाय बुझाय आशा भरोसा दे उनको ढाढ़स बंधाया पुनि आप भोजन कर पान खाय घरसे बाहर निकले तो क्या देखते हैं कि सब ब्रजयुवती तनछीन मन मलीन छूटे केश मैले भेष जी हारे घरबारकी सुरत बिसारे प्रेम रंगराती यौवनकी माती हरिगुन गाती बिरहसे व्याकुल जिधर तिधर मन्मवत चली जाती हैं महाराज बलरामजीको देखतेही अति प्रसन्न हो सब दौड़ आई औ दण्डवत कर हाथ जोड़ चारों ओर खड़ी हो लगीं पूछने औ कहने कि कहो बलराम सुखधाम अब कहां बिराजते हैं हमारे प्राण सुन्दर श्याम कभी हमारी सुरत करते हैं बिहारी कै राजपाट पाय पिछली प्रीति सब बिसारी जबसे यहांसे गये हैं तबसे एक बार ऊधोके हाथ योगका संदेसा कह पठाया था फिर किसीकी सुध न ली अब जाय समुद्रमांहि बसे तो काहेको किसीकी सोध लेंगे इतनी बातके सुनतेही एक गोपी बोल उठी कि सखी हरिकी प्रीतिका कौन करै परखा उनका तो देखा सबसे यही लेखा॥

वे काहुके नाहि न ईठ। मात पिता कों जिन दई पीठ॥
राधा बिन रहते नहीं घरी। सोऊ है बरसाने परी॥

पुनि हम तुमने घरबार छोड़ कुलकान लोकलाज तज सुत पति त्याग हरिसे नेह लगाय क्या फल पाया निदान नेहकी नावपर चढ़ाय बिरहसमुद्र मांझ छोड़ गये अब सुनती हैं कि द्वारिकामें जाय प्रभुने बहुत ब्याह किये और सोलह सहस्र एक सा राज कन्या जा भामासुरने घेर रक्खी थीं तिन्हेंभी श्रीकृष्णने लाय ब्याहीं अब उनसे बेटे पोते नाती भये उन्हें छोड़ यहां क्यों आवेंगे यह बात सुन एक और गोपी बोली कि सखी तुम हरिकी बातोंका कुछ पछता वाही मत करो क्योंकि उनके ता गुन सब ऊधोजोने आगेही सुनाये थे इतना कह पुनि वह बोली कि आली मेरी बात माना तो अब॥

हलधर जूके परसौ पाय। रहि है इनहींके गुणगाय॥
ये है गैार श्याम नहीं गात। करि हें नाहि कपटकी बात॥
सुनि संकर्षण उत्तर दियौ। तिहरे हेतु गवन हम कियौ॥
आवन हम तुम सों कहि गये। तातें कृष्ण पठै ब्रज दये॥
रहि हैं मास करेंगे रास। पुजवेंगे सब तुम्हरो आस॥

महाराज बलरामजोने इतना कह सब व्रजयुवतियोंको आज्ञा दी कि आज मधुमासकी रात है तुम सिङ्गार कर बनमें आओ हम तुम्हारे साथ रास करेंगे यह कह बलरामजी सांझ समै बनको सिधारे तिनके पीछे सब ब्रज युवतीभी सुथरे वस्त्र आभूषण पहन नख सीससे सिङ्गार कर बलदेवजीके पास जा पहुंचीं॥

ठाढ़ी भईं सबै शिर नाय। हलधर छवि बरणी नहिं जाय॥
कनक बरण नीलाम्बर धरें। शशिमुख कमल नयन मन हरें॥
कुण्डल एक श्रवणि छबि छाजै। मनो भान शशि सङ्ग बिराजै॥
एक श्रवण हरि यश रस पान। दूजे कुण्डल धरत न कान॥
अङ्ग अङ्ग प्रति भूषण घने। तिनकी शोभा कहत न बने॥

यों कह पांय परी सुन्दरी। लीला रास करहु रस भरी॥

महाराज इतनी बातके सुनतेही बलरामजीने हूं किया हूं के करतेही रासकी सब बस्तु आय उपस्थित हुई तब तो सब गोपियां सोच संकोच तज अनुराग कर बीन मृदङ्ग करताल उपङ्ग मुरली आदि सब यन्त्र ले ले लगीं बजाने गाने औ थेई थेई कर नाच नाच भाव बताय बताय प्रभुको रिझाने उनका बजाना गाना नाचना सुन देख मगन हो बारुणी पान कर बलदेवजी भी सबके साथ मिल गाने नाचने औ अनेक अनेक भांतिके कुतुहल कर कर सुख देने लेने लगे उसकाल देवता गन्धर्ब किन्नर यक्ष अपनी अपनी स्त्रियों समेत आय आय बिमान पर बैठे प्रभु गुण गाय गाय अधरसे फुल बरषाते थे चन्द्रमा तारा मण्डल समेत रासमण्डलीका सुख देख देख किरणोंसे अमृत बरषाता था औ पवन पानीभी थम रहा था॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इसी भांति बलरामजीने ब्रजमें रह चैत्र बैशाख दो महीने रात्रिको तो ब्रजयुवतीयोंके साथ रास बिलास किया औ दिनके हरि कथा सुनाय नन्द यशोदाको सुख दिया उसीमें एक दिन रात समे रास करते करते बलरामजीने जो।

नदी तीर करके बिश्राम। बोले तहां कोपके राम॥
यमुना तु इतहीं बहि आव। सहस धारकर मोहि न्हावव॥
जो न मानिहै कहैगा हमारा। खण्ड खण्ड जल होय तिहारा।

महाराज जब बलरामजीकी बात अभिमान कर यमुनाने सुनी अनसुनीकी तब तो इन्होंने क्रोध कर उसे हलसे खैंच ली औ असनान किया उसी दिनसे वहां यमुना अबतक टेढ़ी है आगे न्हाय श्रम मिटाय बलरामजी सब गोपियोंको सुख दे साथ ले बनसे चल नगरमें आये तहां।

गोपी कहैं सुनो ब्रजनाथ। हम कों ले चलियो साथ॥

यह बात सुन बलरामजी गोपियोंको आशा भरोसा दे ढाढ़स बंधाय बिदा कर बिदा होने नन्द यशोदाके पास गये पुनि उन्हें भी समझाय बुझाय धीरज बंधाय कई दिन रह बिदा हो द्वारिकाको चले औ कितने एक दिनोंमें जाय पहुंचे इति॥

६७ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज काशीपुरीमें एक पौण्ड्रक नाम राजा सो महाबली औ बड़ा प्रतापी था तिसने बिष्णुका भेष किया औ छल बल कर सबका मन हर लिया सदा पीत बसन बैजन्तीमाल मुक्तमाल मणिमाल पहने रहै औ शङ्खचक्र गदा पद्म लिये दो हाथ काठके किये एक घोड़ेपर काठहीका गरुड़ धरे उसपर चढ़ा फिरै वह वासुदेव पौण्ड्रक कहावे औ सबसे आपको पुजावे जो राजा उसकी आज्ञा न माने उसपर चढ़ जाय फिर मार धड़कर उसे अपने बशमें रक्खै॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा उसका यह आचरण देख सुन देश देश नगर नगर गांव गांव घर घरमें लोग चरचा करने लगे कि एक वासुदेव तो ब्रजभूमिके बीच यदुकुलमें प्रगट हुए थे सो द्वारिकापुरीमें बिराजते हैं दूसरा अब काशीमें हुआ है दोनोंमें हम किसे सञ्चा जानें औ मानें महाराज देश देशमें यह चरचा हो रही थी कि कुछ सम्मान पाय बासुदेव पौण्ड्रक एक दिन अपनी सभामें आय बोला॥

को है कृष्ण द्वारिका रहै। ताकों बासुदेव जग कहै॥
भक्त हेतु भू हौं औतरेया। मेरो भेष तहां तिन धरेया॥

इतनी बात कह एक दूतको बुलाय उसने ऊंच नीचकी बातें सब समझाय बुझाय इतना कह द्वारिकामें श्रीकृष्णचन्द्रजीके पास भेज दिया कि कै तो मेरा भेष बनाये फिरता है सो छोड़ दे नहीं तो लड़नेका बिचार कर आज्ञा पातेही दूत बिदा हो काशीसे चला चला द्वारिकापुरी पहुंचा औ श्रीकृष्णचन्द्रजीकी सभामें जा

उपस्थित हुआ प्रभुने इससे पूछा कि तू कौन है और कहांसे आया है बोला मैं काशीपुरीके वासुदेव पौण्ड्रकका दूत हूं स्वामीका पठाया कुछ सन्देसा कहने आपके पास आया हूं कहो तो कहूं श्रीकृष्णचन्द्र बोले अच्छा कह प्रभुके मुखसे यह बचन निकलतेही दूत खड़ा हो हाथ जोड़ कहने लगा कि महाराज वासुदेव पौण्ड्रकने कहा है कि त्रिभुवनपति जगतका करता तो मैं हूं तू कौन है जो मेरा भेष बनाय जरासिन्धुके डरसे भाग द्वारिकामें जाय रहा है कैतो मेरा बाना छोड़ शीघ्र आय मेरी शरण गह नहीं तो तेरे सब यदुबंशियों समेत तुझे आय मारूंगा औ भूमिका भार उतार अपने भक्तोंको पालूंगा मैंही हूं अलख अगोचर निरङ्कार मेराही जप तप यज्ञ दान करते हैं सुर मुनि ऋषि नर बार बार मैंही ब्रह्मा हो बनाता हूं विष्णु हो पालता हूं शिव हो संहारता हूं मैंनेही मच्छरूप हो वेद डूबते निकाले कच्छ स्वरूप हो गिरि धारण किया बराह बन भूमिको रख लिया नृसिंह अवतार ले हिरणकश्यपको बध किया बावन अवतार ले बलिको छला रामावतार ले महादुष्ट रावणको मारा मेरा यही काम है कि जब जब असुर मेरे भक्तोंको आय सताते हैं तब तब मैं अवतार ले भूमिका भार उतारता हूं॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज वासुदेव पौण्ड्रकका दूत तो इस ढबकी बातें करता था औ श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द रत्नसिंहासन पर बैठे यादवोंकी सभामें हंस हंस कर सुनते थे कि इस बीच कोई यदुबंशी बोल उठा॥

तोहि कहा यम आयौ लैन। भाखत तू जो ऐसे बैन॥
मारें कहा तोहि हम नीच। आयौ है कपटीके बीच॥

जो तू बसीठ न होता तो बिन मारे न छोड़ते दूतको मारना उचित नहीं महाराज जब यदुबंशीने यह बात कही तब श्रीकृष्ण

औने उस दूतको निकट बुलाय समझाय बझायके कहा कि तू जाय अपने वासुदेवसे कह कि कृष्णने कहा है जो मैं तेरा बाना छोड़ शरण आताहूं सावधान हो रहो इतनी बातके सुनतेही दूत दण्डवत कर बिदा हुआ औ श्रीकृष्णचन्द्रजीभी अपनी सेना ले काशीपुरीको सिधारे दूतने जाय वासुदेव पौण्ड्रकसे कहा कि महाराज मैंने द्वारिकामें जाय आपका कहा संदेसा सब श्रीकृष्ण को सुनाया सुनकर उन्होंने कहा कि तू अपने स्वामीसे जाय कह कि सावधान हो रहे मैं उसका बाना छोड़ शरण लेने आता हूं॥

महाराज वसीठ यह बात कहताही था कि किसीने आय कहा कि महाराज आप निचिन्त क्या बैठे हो श्रीकृष्ण अपनी सेना ले चढ़ि आया इतनी बातके सुनतेही वासुदेव पौण्ड्रक उसी भेष से अपना सब कटक ले चढ़ धाया औ चला चला श्रीकृष्णजीके सनमुख आया तिसके साथ एक औरभी काशीका राजा चढ़ दौड़ा दोनों ओर दल तुल कर खड़े हुए जुझाऊ बाजे बाजने लगे सूर वीर रावत लड़ने औ कायर खेत छोड़ छोड़ अपना जीव ले ले भागने लगे उसकाल युद्धकरता कालबश हो वासुदेव पौण्ड्रक उसी भांति श्रीकृष्णचन्द्रजीके सनमुख जा ललकारा उसे विष्णु भेषसे देख सब यदुवंशियोंने श्रीकृष्णचन्द्रसे पूछा कि महाराज इसे इस भेषसे कैसे मारेंगे प्रभुने कहा कपटीके मारनेका कुछ दोष नहीं॥

इतनी कह हरिने सुदरशनचक्रको आज्ञा दी उसने जातेही जो दो भुजा काठकी थीं सो उखाड़ लीं उसके साथ गरुड़भी टूटा औ तुरङ्ग भागा जब वासुदेव पौण्ड्रक नीचे गिरा तब सुदरशनने उसका शिर काट फेंका॥

कटत सीस नृप पौण्ड्रक तरेया। सीस जाय काशीमें परेया॥
जहां हुतौ ताकौ रनवासु। देखत सीस सुन्दरी तासु॥
रोवैं यों कहि खेंचें बार। यह गति कहा भई करतार॥

तुम तो अजर अमर है भये। कैसे प्राण पलकमें गये॥

महाराज रानियोंका रोना सुन सुदक्ष नाम उसका एक बेटा था सो वहां आय बापका शिर कटा देख अति क्रोधकर कहने लगा कि जिसने मेरे पिताको मारा है उससे मैं बिन पलटा लिये न रहूंगा॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज वासुदेव पौण्ड्रकको मार श्रीकृष्णचन्द्रजी तो अपना सब कटक ले द्वारिकाको सिधारे औ उसका बेटा अपने बापका बैर लेनेको महादेवजीकी अति तपस्या करने लगा इसमें कितने एक दिन पीछे एक दिन प्रसन्न हो महादेव भोलानाथने आय कहा कि बर मांग यह बोला महाराज मुझे यही बर दीजे कि श्रीकृष्ण से मैं अपने पिताका बैर लूं शिवजी बोले अच्छा जो तू बैर लिया चाहता है तो एक काम कर बोला क्या कहा उलटे वेदमन्त्रोंसे यज्ञ कर इससे एक राक्षसी अग्निसे निकलेगी उससे जो तू कहेगा सो वह करेगी इतना बचन शिवजीके मुखसे सुन महाराज यह जाय ब्राह्मणोंको बुलाय वेदी रच तिल जौ घी चीनी आदि सब होमकी सामा ले शाकल बनाय लगा उलटे वेदमन्त्र पढ़ पढ़ होम करने निदान यज्ञ करते करते अग्निकुण्डसे कृत्या नाम एक राक्षसी निकली सो श्रीकृष्णजीके पीछे ही पीछे नगर देश गांव जलाती जलाती द्वारिकापुरीमें पहुंची औ लगी पुरीको जलाने नगरको जलता देख सब यदुबंशी भय खाय श्रीकृष्णचन्द्रजीके पास जा पुकारे कि महाराज इस आगसे कैसे बचेंगे यह तो सारे नगरको जलाती चली आती है प्रभु बोले तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो यह कृत्या नाम राक्षसी काशीसे आई है मैं अभी इसका उपाय करता हूं॥

महाराज इतना कह श्रीकृष्णजीने सुदर्शनचक्रको आज्ञा दी कि इसे मार भगाव औ इसी समय जाय काशीपुरीको जलाय

अब हरिकी आज्ञा पातेही सुदर्शनचक्रने कृत्याको मार भगा या औ बातके कहतेही काशीको जा जलाया॥

परजा भागी फिरैं दुखारी। गारी देहिं सुदच्छहि भारी।
फिरेउ चक्र शिवपुरी जलाय। सोई कही कृष्णसों आय॥ इति॥

६८ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जैसे बलराम सुखधाम रूपनिधानने दुबिद कपिको मारा तैसेही मैं कथा कहता हूं तुम चित दे सुनो एक दिन दुबिद जो सुग्रीवका मन्त्री औ मयन्दो कपिका भाई औ भौमासुरका सखा था कहने लगा कि एक शूल मेरे मन में है सो जब न तब खटकता है यह बात सुन किसीने उस्से पूछा कि महाराज सो क्या बोला जिसने मेरे मित्र भौमासुरको मारा तिसे मारूं तो मेरे मनका दुख जाय॥

महाराज इतना कह वह उसी समै अति क्रोध कर द्वारिकापुरीको चला श्रीकृष्णचन्द्रके देश उजाड़ता औ लोगोंको दुख देता किसीको पानी बरषाय बहाया किसीको आग बरषाय जलाया किसीको पहाड़से पटका किसी पर पहाड़ दे पटका किसीको समुद्रमें डुबाया किसीको पकड़ बांध गुफामें छिपाया किसीका पेट फाड़ डाला किसी पर वृक्ष उखाड़मारा इसी रीतिसे लोगोंको सताता जाता था औ जहां मुनि ऋषि देवताओंको बैठे पाता था तहां गू मूत रुधिर बरषाता था निदान इसी भांति लोगोंको दुख देता औ उपाध करता जा द्वारिकापुरी पहुंचा औ अल्प तन धर श्रीकृष्ण चंदके मंदिर पर जा बैठा उसको देख सब सुंदरी मंदिरके भीतर किवाड़ दे दे भागकर जाय छिपीं तब तो वह मनहीं मन यह बिचार बलरामजीके समाचार पाय रेवत गिर पर गया कि॥

पहले हलधर कों बध करों। पाछे प्राण कृष्णके हरों॥

जहां बलदेवजी स्त्रियोंके साथ बिहार करते थे महाराज छिप

कर यह वहां क्या देखता है कि बलरामजी मद पी सब स्त्रियोंको साथ ले एक सरोवर बीच अनेक अनेक भांतिकी लीला कर कर गाय गाय न्हाय न्हिलाय रहे हैं यह चरित्र देख दुबिद एक पेड़ पर जा चढ़ा औ किलकारियां मार मार घुरक घुरक लगा डाल डाल कूद कूद फिर फिर चरित्र करन औ जहां मदिराका भरा कलश औ सबके चीर धरेथे तिन्हपर हगने मूतने लगा बंदरको सब सुंदरी देखतेही डर कर पुकारीं कि महाराज यह कपि कहांसे आया जो हमें डराय डराय हमारे बस्त्रों पर हग मूत रहा है इतनी बातके सुनतेही बलदेवजीने सरोवरसे निकल जो हंसके ढेल चलाया तो वह इनको मतवाला जान महा क्रोध कर किलकारी मार नीचे आया आतेही उसने मदका भरा घड़ा जो तीर पर धरा था सो लुढ़काय दिया औ सारे चीर फाड़ लीर लीर कर डाले तब तो क्रोध कर बलरामजीने हल मूसल सम्भाले औ वहभी पर्वत सम हो प्रभुके सोंहीं युद्ध करनेको आय उपस्थित हुआ इधरसे ये हल मूसल चलाते थे औ उधरसे वह पेड़ पर्वत॥

महायुद्ध दोउ मिल करैं। नेक न कहूं ठौर तें टरैं॥

महाराज ये तो दोनों बली अनेक अनेक प्रकारकी घातें बातें कर निधड़क लड़ते थे पर देखनेवालोंका मारे भयके प्राणही निकलता था निदान प्रभुने सबको दुखित जान दुबिदको मार गिराया उसके मरतेही सुर नर मुनि सबके जीको आनंद हुवा औ दुख द्वन्द गया॥

फूले देव पुहुप बरसावैं। जैजैकार हलधरहि सुनावैं॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने कहा कि महाराज त्रेतायुगसे वह बंदरही था तिसे बलदेवजीने मार उद्धार किया आगे बलराम सुखधाम सबको सुख दे वहांसे साथ ले द्वारिकापुरीमें आये औ दुबिदके मरनेके समाचार सारे यदुबंशियोंको सुनाये इति॥

६९ अध्याय॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा अब दुर्योधनकी बेटी लक्ष्मणाकी बिवाहकी कथा कहता हूं कि जैसे साम्ब हस्तिनापुर जाय उसे ब्याह लाये महाराज राजा दुर्योधनकी पुत्री लक्ष्मणा जब ब्याहन जोग हुई तब उसके पिताने सब देश देशके नरेशोंको पत्र लिख लिख बुलाया औ स्वयम्बर किया स्वयम्बरके समाचार पाय श्रीकृष्णचन्दका पुत्र जो जाम्बवतीसे था साम्ब नाम वहभी वहां पहुंचा वहां जाय साम्ब क्या देखता है कि देश देशके नरेश बलवान रूपनिधान महाजान सुथरे बस्त्र आभूषण रत्नजड़ित पहने अस्त्र शस्त्र बांधे मौन साधे स्वयम्बरके बीच पांति पांति खड़े हैं औ उनके पीछे उसी भांति सब कौरवभी जहां तहां बाहर बाजन बाज रहे हैं भीतर मङ्गली लोग मङ्गलाचार कर रहे हैं सबके बीच राजकुमारी मात पिताकी प्यारी मनहीं मन यों कहती हार लिये आंखोंकीसी पुतली फिरती है कि मैं किसे बरूं॥

महाराज जब वह सुन्दरी शीलवान रूपनिधान माला लिये लाज किये फिरती फिरती साम्बके सनमुख आई तब इन्होंने शोच संकोच तज निर्भय उसे हाथ पकड़ रथमें बैठाय अपनी बाट ली सब राजा खड़े मुंह देखते रह गये औ कर्ण द्रोण शल्य भूरिश्रवा दुर्योधन आदि सारे कौरवभी उस समय कुछ न बोले पुनि अति क्रोध कर आपसमें कहने लगे कि देखो इसने क्या काम किया जो रसमें आय अनरस किया कर्ण बोला कि यदुबंशियोंकी सदासे यह टेव है कि जहां कहीं शुभ काजमें जाते हैं तहां उपाधही करते हैं शल्यने कहा॥

जात हीन अबहीं ये बढ़े। राज पाय माते पर चढ़े॥

इतनी बातके सुनतेही सब कौरव महा कोप कर अपने अपने अस्त्र शस्त्र ले यों कह चढ़ दौड़े कि देखें वह कैसा बली है जो हमारे आगेसे कन्या ले निकल जायगा औ बीच बाटके साम्बको

जा घेरा आगे दोनों ओरसे शस्त्र चलने लगे निदान कितनी एक बेरके लड़नेमें जब साम्बका सारथी मारा गया औ वह नीचे उतरा तब ये उसे घेर पकड़ कर बांध लाये सभाकी बीचों बीच खड़ा कर इन्होंने उससे पूछा कि अब तेरा पराक्रम कहां गया यह बात सुन वह लजाय रहा इसमें नारदजीने आय राजा दुर्योधन समेत सब कौरवोंसे कहा कि यह साम्ब नाम श्रीकृष्णचन्द्रका पुत्र है तुम इसे कुछ मत कहो जो होना था सो हुआ अभी इसके समाचार पाय दल साज आवेंगे श्रीकृष्णचन्द्र औ बलरामजी कुछ कहना सुनना हो सो उनसे कह सुन लीजो लड़केसे बात कहनी तुम्हें किसी भांति उचित नहीं इसने लड़क बुद्धिकी तो की महाराज इतना बचन कह नारदजी वहांसे बिदा हो चले चले द्वारिकापुरीको गये औ उग्रसेन राजाकी सभामें जा खड़े रहे ॥

देखत सबै उठे शिर नाय। आसन दियौ ततक्षण लाय ॥

बैठतेही नारदजी बोले कि महाराज कौरवोंने साम्बको बांध महादुःख दिया औ देते हैं इस समै जाय उसकी सुध लो तो लो नहीं फिर साम्बका बचना कठिन है ॥

गर्ब भयो कौरव कौं भारी। लाज सकुच नहिं करी तिहारी।
बालककौं बांध्यौ उन ऐसे। शत्रु कौं बांधे कोऊ जैसे ॥

इस बातके सुनतेही राजा उग्रसेनने अति कोप कर यदुबंशियोंको बुलायके कहा कि तुम अभी सब हमारा कटक ले हस्तिनापुर पर चढ़ जाओ औ कौरवोंको मार साम्बको छुड़ाय ले आओ राजाकी आज्ञा पातेही जों सब दल चलनेको उपस्थित हुआ तों बलरामजीने जाय राजा उग्रसेनसे समझाय कर कहा कि महाराज आप उनपर सेना न पठाइये मुझे आज्ञा कीजे जो मैं जाय उन्हें उलहना दे साम्बको छुड़ाय लाऊं देखूं उन्होंने किस लिये साम्बको पकड़ बांधा इस बातका भेद बिन मेरे गये न खुलेगा ॥

इतनी बातके कहतेही राजा उग्रसेनने बलरामजीको हस्तिनापुर जानेकी आज्ञा दी औ बलदेवजी कितने एक बड़े बड़े पण्डित ब्राह्मण औ नारदमुनिको साथ ले द्वारिका से चलचले हस्तिनापुर पहुंचे उस समय प्रभुने नगरके बाहर एक बाड़ीमें डेरा कर नारदजीसे कहा कि महाराज हम यहां उतरे हैं आप जाय कौरवोंसे हमारे आनेके समाचार कहिये प्रभुकी आज्ञा पाय नारदजीने नगरमें जाय बलरामजीके अनेक समाचार सुनाये॥

सुनके सावधान सब भये। आगे होय लेन तहां गये॥
भीषम कर्ण द्रोण मिल चले। लीने बसन पाटम्बर भले॥
दुर्योधन यों कहिके धायौ। मेरो गुरु संकर्षण आयौ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजासे कहा कि महाराज सब कौरवोंने उस बाड़ीमें जाय बलरामजीसे भेट कर भेट दी औ पाओं पड़ हाथ जोड़ बहुतसी स्तुति की आगे चोआ चन्दन लगाय फूल माल पहराय पाटम्बरके पांवड़े बिछाय बाजेगाजेसे नगरमें लिवा लाये पुनि षटरस भोजन करवाय पास बैठ सबकी कुशल क्षेम पूछ पूछा कि महाराज आपका आना यहां कैसे हुआ कौरवोंके मुखसे यह बात निकलतेही बलरामजी बोले कि हम राजा उग्रसेनके पठाये संदेसा कहने तुम्हारे पास आये हैं कौरव बोले कहो बलदेवजीने कहा कि राजाजीने कहा है कि तुम्हें हमसे बिरोध करना उचित न था।

तुम हो बहुत सो बालक एक। कियो युद्ध तज ज्ञान बिवेक।
महा अधर्म जानके कियो। लोक लाज तज सुत गहलियो॥
ऐसो गर्व तुम्हें अब भयो। समझ बूझ ताको दुख दयो।

महाराज इतनी बातके सुनतेही कौरव महाकोप कर बोले कि बलरामजी बस करो बस करो अधिक बड़ाई उग्रसेनकी मत करो हमसे यह बात सुनी नहीं जाती चार दिनकी बात है कि उग्र

सेनको कोई जानता मानता न था जबसे हम रे यहां सगाईकी तभीसे प्रभुता पाई अब हमीसे अभिमानकी बात कह पठाई उसे लाज नहीं आती जो द्वारिकामें बैठा राज पाय पिछली बात सब गंवाय जो मन मानता है सो कहता है वह दिन भूल गया कि मथुरामें ग्वाल गूजरोंके साथ रहता खाता था जैसा हमने साथ खिलाय सम्बन्ध कर राज दिलवाया तिसका फल हाथों हाथ पाया औ किसी पूरे पर गुण करते तो वह जन्मभर हमारा गुण मानता किसीने सच कहा है कि ओछेकी प्रीत बालूकी भीत स मान है॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले महाराज ऐसे अनेक अने क प्रकारकी बातें कह कह कर्ण द्रोण भीष्म दुर्योधन शल्य आदि सब कौरव गर्व कर उठउठ अपने घरगये औ बलरामजी इनकी बातें सुन सुन हंसि हंसि वहां बैठे मनहीं मन यों कहते रहे कि इनको राज औ बलका गर्व भया है जो ऐसी ऐसी बातें करते हैं नहीं तो ब्रह्मा रुद्र इन्द्रका ईश जिसे निवावै सीस तिस उग्रसेनकी ये निन्दा करें तो मेरा नाम बलदेव जो सब कौरवोंको नगर स मेत गङ्गामें डबोऊं नहीं तो नहीं॥

महाराज इतना कह बलदेवजी अति क्रोध कर सब कौरवोंको नगर समेत हलसे खेंच गङ्गातीर पर ले गये औ चाहें डुबोवें कि तोंहीं अति घबराय भय खाय सब कौरव आय हाथ जोड़ शिर नाय गिड़ गिड़ाय बिनती कर बोले कि महाराज हमारा अपरा ध क्षमा कीजे हम आपकी शरण आये अब बचाय लीजे जो कहो गे सो करेंगे सदा राजा उग्रसेनकी आज्ञामें रहेंगे राजा इतनी बातके कहतेही बलरामजीका क्रोध शान्त हुआ औ जो हलसे खेंच नगर गङ्गा तीर पर लाये थे सो वहीं रक्खा तिसी दिनसे हस्तिनापुर गङ्गा तीर पर है पहले वहां न था आगे उन्होंने साम्बको छोड़ दिया औ राजा दुर्योधनने चचा भतीजोंको मनाय

घरमें लेजाय मङ्गलाचार करवाय वेदकी विधिसे साम्बको क न्यादान दिया औ उसके यौतुकमें बहुत कुछ संकल्प किया ॥
इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने कहा कि महाराज ऐसे बलराम जी हस्तिनापुर जाय कौरवोंका गर्व गमाय भतीजेको छुड़ाय व्याह लाये उसकाल सारी द्वारिकापुरीमें आनन्द हो गया औ बलदेव जीने हस्तिनापुरका सब समाचार ब्योरे समेत समझाय राजा उग्रसेनके पास जाय कहा इति ॥

७० अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एक समय नारदजीके मनमें आई कि श्रीकृष्णचन्द्र सोलह सहस्र एक सौ आठ स्त्री ले कैसे गृह स्थ आश्रम करते हैं सो चलकर देखा चाहिये इतना विचार चले चले द्वारिकापुरीमें आये तो नगरके बाहर क्या देखते हैं कि कहीं बाड़ियोंमें नाना भांतिके बड़े बड़े ऊंचे ऊंचे वृक्ष रहे फल फूलों से भरे खड़े झूम रहे हैं तिन पर कपोत कीर चातक मोर आ दि पक्षी मन भावन बोलियां बैठे बोल रहे हैं कहीं सुन्दर सरो वरोंमें कमल खिले हुए तिन पर भौंरोंके झुण्डके झुण्ड गूञ्ज रहे तीरमें हंस सारस समेत खग कुलाहल कर रहे हैं कहीं फुलवा ड़ियोंमें माली मीठे सुरोंसे गाय गाय ऊंचे नीचे नीर चढ़ाय क्यारियोंमें जल खैंच रहे हैं कहीं इन्दारे बावड़ियों पर रहंट परोहे चल रहे हैं औ पनघट पर पनहारियोंके ठट्टके ठट्ट लगे हैं तिनकी शोभा कुछ बरणी नहीं जाती वह देखेही बन आवे ॥
महाराज यह शोभा बन उपबनकी निरख हरष नारदजी पुरी में जा देखें तो अति सुंदर कञ्चनके मणिमय मंदिर जगमगाय रहे हैं तिन पर धुजा पताका फहराय रही हैं द्वार द्वारमे तोरण बंदन नवार बन्धी हैं द्वारपर केलेके खम्भ औ कञ्चनके कुम्भ सप ल्लव भरे धरे हैं घर घरकी जाली झरोखों मोखोंसे धूपका धुंवां निकल श्याम घटासा मण्डलाय रहा है उसके बीच सोनेके कलश

कलशियां बिजलीसी चमक रही हैं घर घर पूजा पाठ होम यज्ञ दान हो रहा है ठौर ठौर भजन सुमिरण गान कथा पुराणकी चरचा चल रही है जहां तहां यदुबंशी इन्द्रकीसी सभा किये बैठे हैं औ सारे नगरमें सुख छाय रहाहै॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज नारदजी पुरीमें जातेही मगन हो कहने लगे कि प्रथम किस मन्दिरमें जाऊं जो श्रीकृष्णचन्द्रको पाऊं महाराज मनही मन इतना कह नारदजी पहले श्रीरुक्मिणीजीके मन्दिरमें गये वहां श्रीकृष्णचन्द्र बिराजते थे सो इन्हें देख उठ खड़े भये रुक्मिणीजी जलकी झारी भर लाई प्रभुने पांव धोय आसन पर बैठाय धूप दीप नैवेद्य धर पूजा कर हाथ जोड़ नारदजीसे कहा॥

जा घर चरण साधुके परें। ते नर सुख सम्पद अनुसरें॥
हमसे कुटुम्बी तारण हेतु। घरहि आय तुम दरशन देतु॥

राजरान प्रभुके मुखसे इतना बचन निकलतेही यह असीस दे नारदजी जाम्बवतीके मन्दिरमें गये कि जगदीश तुम थिर थिर रहो श्रीरुक्मिणीजीके शीस तो देखा कि हरि सारपासे खेल रहे हैं नारदजीको देखतेही जों प्रभु उठे तों नारदजी आशीर्वाद दे उलटे फिरे पुनि सत्यभामाके यहां गये तो देखा कि श्रीकृष्णचन्द्र बैठे तेल उबटन लगवाय रहे हैं वहांसे चुपाचाप नारदजी फीर आये इस लिये कि शास्त्रमें लिखा है जो तेल लगानेके समै न राजा प्रणाम करै न ब्राह्मण आशीस आगे नारदजी कालिन्दीके घर गये वहां देखा कि हरि सो रहे हैं महाराज कालिन्दीने नारदजीको देखतेही हरिको पांव दाब जगाया प्रभु जागतेही ऋषिके निकट जाय दण्डवत कर हाथ जोड़ बोले कि साधुके चरण तीरथके जल समान हैं जहां पड़ें तहां पवित्र करते हैं यह सुन वहांसेभी असीस दे नारदजी चल खड़े हुए औ मित्रबिन्दाके धाम गये तहां देखा कि ब्रह्मभोज हो रहा है औ श्रीकृष्ण परो

रहे हैं नारदजीको देख प्रभुने कहा कि महाराज जो कृपा कर आये हो तो आपभी प्रसाद ले हमें उच्छिष्ट दीजे औ घर पवित्र कीजे नारदजीने कहा महाराज मैं थोड़ा फिर आऊं फिर आऊंगा ब्राह्मणोंको जिमा लीजे पुनि ब्रह्म शेष आय मैं पाऊंगा यों सुनाय नारदजी बिदा हो सत्याके गेह पधारे वहां क्या देखते हैं कि श्रीबिहारी भक्तहितकारी आनन्दसे बैठे बिहार कर रहे हैं यह चरित्र देख नारदजी उलटे पांवो फिरे पुनि भद्राके स्थान पर गये तो देखा कि हरि भोजन कर रहे हैं वहांसे फिरे तो लक्ष्मणाके गेह पधारे तो तहां देखा कि प्रभु स्नान कर रहे हैं॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने कहा कि महाराज इसी भांति नारदमुनिजी सोलह सहस्र एक सौ आठ घर फिरे पर बिन श्रीकृष्ण कोई घर न देखा जहां देखा तहां हरिको गृहस्थाश्रम का काजही करते देखा यह चरित्र लख॥

नारदके मन अचरज एह। कृष्ण बिना नहीं कोउ गेह।
जा घर जाऊं तहां हरि प्यारी। ऐसी प्रभु लीला बिस्तारी॥
सोलह सहस अठोतर सौ घर। तहां तहां सुन्दरि संग गिरधर॥
मगन होय रिषि कहत बिचारी। योगमाया यदुनाथ तिहारी॥
काहू सों नहीं जानी परै। कौन तिहारी माया तरै॥

महाराज जब नारदजीने अचम्भा कर कहे ये बैन तब बोले प्रभु श्रीकृष्णचन्द्र सुखदैन कि नारद तू अपने मनमें कुछ खेद मत करै मेरी माया अति प्रबल है औ सारे संसारमें फैल रही है यह मुझीही सोहती है तो दूसरेकी क्या सामर्थ जो इसके हाथसे बचे औ जगतके बीच आय इसमें न राचे॥

नारद सुन बिनवैं शिर नाय। मो पर कृपा करौ यदुराय॥

जो आपकी भक्ति सदा मेरे चितमें रहै औ मेरा मन मायाके बश होय बिषयकी बासना न चहै राजा इतना कह नारदजी प्रभुसे बिदा हो दण्डवत कर बीन बजाते गुन गाते अपने स्थानको

गये औ श्रीकृष्णचन्द्रजी द्वारिकामें लीला करते रहे इति॥

७१ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एक दिन श्रीकृष्णचन्द्र रात समै श्रीरुक्मिणीजीके साथ बिहार करते थे औ श्रीरुक्मिणीजी आनन्दमें मगन बैठीं प्रीतमका चन्द्रमुख निरख अपने नयन चकोरोंको सुख देती थीं कि इस बीच रात बितीत भई दिन चिड़ियां चुहचुहाई अम्बरमें अरुणाई छाई चकोरको बियोग हुवा औ चकवा चकवियोंको संयोग कमल बिकसे कुमुदिनी कुम्हलाई चन्द्रमा छबि छीन भया औ सूरजका तेज बढ़ा सब लोग जागे औ अपना अपना गृहकाज करने लागे॥

उसकाल रुक्मिणीजी तो हरिके समीपसे उठ सोच संकोच लिये घरकी टहल टकोर करने लगीं औ श्रीकृष्णचन्द्रजी देह शुद्धकर हाथ मुंह धोय स्नान कर जप ध्यान पूजा तर्पणसे निचिन्त होय ब्राह्मणोंको नाना प्रकारके दान दे नित्यकर्मसे सुचित हो बालभोग पाय पान लौंङ्ग इलायची जायफ़्री जायफलके साथ खाय सुथरे पैहन वस्त्र आभूषण मङ्गाय पहन शस्त्र लगाय राजा उग्रसेनके पास गये पुनि जुहार कर यदुबंशियोंकी सभाके बीच आय रत्न सिंहासन पर बिराजे॥

महाराज उसी समै एक ब्राह्मणने जाय द्वारपालोंसे कहा कि तुम श्रीकृष्णचन्द्रजीसे जाकर कहो कि एक ब्राह्मण आपके दरशनकी अभिलाषा किये द्वारपर खड़ा है जो प्रभुकी आज्ञा पावे तो भीतर आवे ब्राह्मणकी बात सुन द्वारपालने भगवानसे जा कहा कि महाराज एक ब्राह्मण आपके दरशनकी अभिलाषा किये पौरपर खड़ा है जो आज्ञा पावे तो आवे हरि बोले अभी लावो प्रभुके मुखसे बात निकलतेही द्वारपाले हाथोंहाथ ब्राह्मणको सनमुख ले गये बिप्रको देखतेही श्रीकृष्णचन्द्र सिंहासनसे उतर दण्डवत कर आगे बढ़ हाथ पकड़ उसे मन्दिरमें ले गये औ रत्न सिंहास

नपर अपने पास बैठाय पूछने लगे कि कहो देवता आपका आ
ना कहांसे हुवा औ किस कार्यके हेत पधारे ब्राह्मण बोला कृपा
सिन्धु दीनबन्धु मैं मगध देशसे आया हूं औ बीश सहस्र राजाओं
का संदेसा लाया हूं प्रभ बोले सो क्या ब्राह्मणने कहा महाराज
जिन बीश सहस राजाओंको जरासिन्धने बल कर पकड़ हथकड़ी
बेड़ी दे रक्खा है तिन्होंने मेरे हाथ आपको अति बिनतीकर
यह सन्देसा कहला भेजा है दीननाथ तुम्हारी सदा सर्वदा यह
रीति है कि जब जब असुर तुम्हारे भक्तोंको सताते हैं तब तब
तुम अवतार ले अपने भक्तोंकी रक्षा करते हो नाथ जैसे हिर
ण्यकश्यपसे प्रह्लादको छुड़ाया औ गजको ग्राहसे तैसेही दया
कर अब हमें इस महादुष्टके हाथसे छुड़ाइये हम महाकष्टमें हैं
तुम बिन और किसकी सामर्थ नहीं जो इस महा बिपतसे नि
काले औ हमारा उद्धार करे॥

महाराज इतनी बातके सुनतेही प्रभु दयाल हो बोले कि हे दे
वता तुम अब चिन्ता मत करो उनकी चिन्ता मुझे है इतनी बा
तके सुनतेही ब्राह्मण सन्तोष कर श्रीकृष्णचन्दको आशीष देने
लगा इतनेके बीच नारदजी आ उपस्थित हुए प्रणाम कर श्रीकृ
ष्णचन्दने उनसे पूछा कि नारदजी तुम सब ठौर जाते आते हो
कहो हमारे भाई युधिष्ठिर आदि पांचों पाण्डव इन दिनों कैसे
हैं औ क्या करते हैं बहुत दिनसे हमने उनके कुछ समाचार
नहीं पाये इसी हमारा चित उन्होंमें लगा है नारदजी बोले कि
महाराज मैं उन्होंके पाससे आता हूं हैं तो कुशलक्षेमसे पर इ
न दिनों राजसूय यज्ञ करनेके लिये निपट भावित हो रहे औ
घड़ी घड़ी यह कहते हैं कि बिना श्रीकृष्णचन्दकी सहायताके
हमारा यज्ञ पूरा न होगा इससे महाराज मेरा कहा मानिये तो॥

पहिले उनको यज्ञ संवारो। पीछे असुर कहूं पग धारो॥

महाराज इतनी बात नारदजीके मुखसे सुनतेही प्रभुने ऊधो

जोको बुलायके कहा॥

ऊधो तुम हौ सखा हमारे। मन आसन ते कबहुं न न्यारे॥
दुहूं ओरकी भारी भीर। पहले कहां चलें कहौ बीर॥
उत राजा संकटमें भारी। दुख पावत किये आश हमारी॥
इत पण्डुनि मिलि यज्ञ रचायो। ऐसे कह प्रभु बचन सुनायौ॥

७२ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज पहले तो श्रीकृष्णचन्द्रजीने उस ब्राह्मणको इतना कह बिदा किया जो राजाओंका संदेसा लाया था कि देवता तुम हमारी ओरसे सब राजाओंसे जाय कहो कि तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो हम बेग आय तुम्हें छुड़ाते हैं महाराज यह बात कह श्रीकृष्णचन्द्र ब्राह्मणको बिदा कर ऊधोजीको साथ ले राजा उग्रसेन शूरसेनकी सभामें गये औ इन्होंने सब समाचार उनके आगे कहे वे वे सुन चुप हो रहे इसमें ऊधोजी बोले कि महाराज ये दोनों काज कीजे पहले राजाओंको जरासिन्धुसे छुड़ा लीजे पीछे चलकर यज्ञ संवारिये क्योंकि राजसूय यज्ञका काम बिन राजा और कोई नहीं कर सकता औ वहां बीश सहस्र नृप एकठे हैं उन्हें छुड़ा आगे वे सब गुन मान यज्ञका काज बिन बुलाये जाकर करेंगे महाराज और कोई दशों दिशा जीत आवेगा तोभी इतने राजा एकठे न पावेगा इससे अब उत्तम यही है कि हस्तिनापुरको चलिये पाण्डवोंसे मिल मताकर जो काम करना हो सो करिये॥

महाराज इतना कह पुनि ऊधोजी बोले कि महाराज राजा जरासिन्धु बड़ा दाता औ गौ ब्राह्मणका मानने औ पूजने बाला है जो कोई उससे जाकर जो मांगता है सो पाता है याचक उसके यहांसे बिमुख नहीं जाता वह झूठ नहीं बोलता जिससे बचन बंध होता है उससे निबाहता है औ दश सहस्र हाथीका बल रखता है उसके बलकी समान भीमसेनका बल है नाथजो तुम वहां

चलो तो भीमसेनकोभी अपने साथ ले चलो मेरी बुद्धिमें आता है कि उसकी मीच भीमसेनके हाथ है॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि राजा जब ऊधोजीने ये बातें कहीं तभी श्रीकृष्णचन्द्रजीने राजा उग्रसेनसे बिदा हो सब यदुवंशियोंसे कहा कि हमारा कटक सा जो हम हस्तिनापुरको चलेंगे बातके सुनतेही सब यदुवंशी सेना साज ले आये औ प्रभुभी आठों पटरानियों समेत कटकके साथ हो लिये महाराज जिसकाल श्रीकृष्णचन्द्र कुटुम्ब सहित सब सेना ले धौंसा दे द्वारिकापुरीसे हस्तिनापुरको चले उस समयकी शोभा कुछ बरनी नहीं जाती आगे हाथियोंका कोटबायें दाहने रथ घोड़ोंकी ओट बीचमें रनवास औ पीछे सब सेना साथ लिये सबकी रक्षा किये श्रीकृष्णचन्द्रजी चले जाते थे जहां डेरा होता था तहां कै योजनके बीच एक सुन्दर सुहावना नगर बन जाता था देश देशके नरेश भय खाय आय आय भेटकर भेट धरते थे औ प्रभु उन्हें भयातुर देख तिनका सब भांति समाधान करतेथे॥

निदान इसी धूमधामसे चले चले हरि सब समेत हस्तिनापुरके निकट पहुंचे इसमें किसीने राजा युधिष्ठिरसे जाय कहा कि महाराज कोई नृपति अति सेना ले बड़ी भीड़भाड़से आपके देश पर चढ़ आया है आप बेग उसे देखिये नहीं तो उसे यहां पहुंचा जानिये महाराज इस बातके सुनतेही राजा युधिष्ठिरने अति भय खाय अपने नकुल सहदेव दोनों छोटे भाईयोंके यह कह प्रभुके सनमुख भेजा कि तुम देखि आओ कि कौन राजा चढ़ आता है राजाकी आज्ञा पातेही॥

सहदेव नकुल देख फिर आये। राजा कौ ये बचन सुनाये॥
प्राणनाथ आये हैं हरी। सुनि राजा चिन्ता परिहरी॥

आगे अति आनन्दकर राजा युधिष्ठिरने भीम अर्जुनको बुलायके कहा कि भाई तुम चारों भाई आगू जाय श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द

कन्दको ले आओ महाराज राजाको आज्ञा पाय औ प्रभुका आ
नासुन वे चारों भाई अति प्रसन्न हो भेट पूजाकी सब सामा औ
बड़े बड़े पण्डितोंको साथ ले बाजेगाजेसे प्रभुको लेने चले निदान
अति आदर मानसे मिल वेदकी विधिसे भेट पूज कर ये चारों
भाई श्रीकृष्णजीको सब समेत पाटम्बरके पांवड़े डालते चोत्रा च
न्दन गुलाबनीर छिड़कते चांदी सोनेके फूल बरषाते धूप दीप
नैवेद्य करते बाजेगाजेसे नगरमें ले आये राजा युधिष्ठिरने प्रभु
से मिल अति सुखमाना औ अपना जीतव सुफल जाना आगे
बाहर भीतर सबने सबसे मिल यथायोगत्र परस्पर सनमान किया
औ नयनोंको सुख दिया घर बाहर सारे नगरमें आनन्द हो ग
या औ श्रीकृष्णचन्द वहां रह सबको सुख देने लगे। इति॥

७३ अध्याय॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एक दिन श्रीकृष्णचन्द करुणा
सिन्धु दिनबन्धु भक्तहितकारी ऋषि मुनि ब्राह्मण क्षत्रियोंकी स
भामें बैठे थे कि राजा युधिष्ठिरने आय अति गिड़गिड़ाय बिन
ती कर हाथ जोड़ शिरनायके कहा कि हे शिव विरञ्चिके ईश
तुम्हारा ध्यान करते हैं सदा सुर मुनि ऋषि योगीश तुमहो अ
लख अगोचर अभेद कोई नहीं जानता तुम्हारा भेद॥

मुनि योगेश्वर इकचित ध्यावत। तिनके मनछिन कभून आवत॥
हम कों घरहीं दरशन देतु। मानत प्रेम भक्तके हेतु॥
जैसी मोहन लीला करो। काहु पै नहीं जाने परो॥
मायामें भुलयौ संसार। हम सों करत लोक व्यौहार॥
जो तुम कों सुमिरत जगदीश। ताहि आपनो जानत ईश॥
अभिमानी ते हो तुम दूर। सतवादीके जीवन मूर॥

महाराज इतना कह पुनि राजा युधिष्ठिर बोले कि हे दीन
दयाल आपकी दयासे मेरे सब काम सिद्ध हुए पर एकही अभि
लाषा रही प्रभु बोले सो क्या राजाने कहा कि महाराज मेरा

यही मनोरथ है कि राजसूय यज्ञकर आपको अर्पण करूं तो भव सागर तरूं इतनी बातके सुनतेही श्रीकृष्णचन्द्र प्रसन्न हो बोले कि राजा यह तुमने भला मनोरथ किया इसमें सुर नर मुनि ऋषि सब सन्तुष्ट होंगे यह सबको भाता है और इसका करना तुम्हे कुछ कठिन नहीं क्योंकि तुम्हारे चारों भाई अर्जुन भीम नकुल सहदेव बड़े प्रतापी औ अति बली हैं संसारमें ऐसा अब कोई नहीं जो इनकी सामहना करें पहले इन्हें भेजिये कि ये जाय दशों दिश के राजाओंको जीत अपने बश कर आवें पीछे आप निश्चिन्ताईसे यज्ञ कीजे॥

राजा प्रभुके मुखसे इतनी बात जों निकली तोंहीं राजा युधिष्ठिर ने अपने चारों भाइयोंको बुलाय कटकदे चारोंको चारोंओर भेज दिया दक्षिणको सहदेवजी पधारे पश्चिमको नकुल सिधारे उत्तरको अर्जुन धाये पूरबमें भीमसेनजी आये आगे कितने एक दिनके बीच महाराज वे चारों हरिप्रतापसे सातद्वीप नौखण्ड जीत दशों दिशाके राजाओंको बश कर अपने साथ ले आये उसकाल राजा युधिष्ठिरने हाथ जोड़ श्रीकृष्णचन्द्रजीसे कहा कि महाराज आपकी सहायतासे यह काम तो हुआ अब क्या आज्ञा होती है इसमें ऊधोजी बोले कि धर्मावतार सब देशके नरेश तो आये पर अब इक मगध देशका राजा जरासिन्धुही आपके बशका नहीं औ जबतक वह बश न होगा तबतक यज्ञभी करना सुफल न होगा महाराज जरासिन्धु राजा जैद्रथका बेटा महाबली बड़ा प्रतापी औ अति दानी धर्मात्मा है हर किसीकी सामर्थ्य नहीं जो उसका सामहना करे इस बातको सुन जों राजा युधिष्ठिर उदास हुए तों श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि महाराज आप किसी बात की चिन्ता न कीजे भाई भीम अर्जुन समेत हम आज्ञा दीजे कै तो बल छल कर हम उसे पकड़ लावें कै मार आवें इस बातके सुनतेही राजा युधिष्ठिरने दोनों भाइयोंको आज्ञा दी तब हरि

ले उन दोनोंको अपने साथ ले मगध देशकी बाट ली आगे जाय पन्थमें श्रीकृष्णजीने अर्जुन औ भीमसे कहा कि॥

बिप्र रूप ह्वै पग धारिये। छल बल कर बैरी मारिये॥

महाराज इतनी बात कह श्रीकृष्णजीने ब्राह्मणका भेष किया उनके साथ भीम अर्जुननेभी बिप्र भेष लिया तीनों त्रिपुण्ड किये पुस्तक कांखमें लिये अति उज्जल स्वरूप सुन्दर रूप बन ठन कर ऐसे चले कि जैसे तीनों गुन सत रज तम देह धरे जाते होंय कै तीनों काल निदान कितने एक दिनोंमें चले चले ये मगध देशमें पहुंचे औ दो पहरके समय राजा जरासिन्धुकी पौर पर जा खड़े हुए इनका भेष देख पौरिओंने अपने राजासे कहा कि महाराज तीन ब्राह्मण अतिथि बड़े तेजस्वी महापण्डित अति ज्ञानी कुछ आकांक्षा किये द्वारपर खड़े हैं हमें क्या आज्ञा होती है महाराज बातके सुनतेही राजा जरासिन्धु उठ आया औ इन तीनोंको प्रणाम कर अतिमान सनमानसे घरमें ले गया आगे वह इन्हें सिंहासनपर बैठाय आप सनमुख हाथ जोड़ खड़ा हो देख देख सोच सोच बोला॥

याचक जो पर द्वारे आवे। बड़ो भूप सोउ अतिथि कहावे॥
बिप्र नहीं तुम योधा बली। बात न कहु कपटकी भली॥
जो ठग ठगनि रूपधर आवे। ठगि तो जाय भलो न कहावे॥
छिपै न छत्री कांति तिहारि। दीसत सूरबीर बलधारी॥
तेजवन्त तुम तीनों भाई। शिव बिरञ्चि हरिसे बर दाई॥
मै जान्यो जियकर निर्मान। करों देव तुम आप बखान॥
तुम्हरी इच्छा हो सो करो। अपनी बाचा तें नहिं टरों॥
दानी मिथ्या कबहु न भाखै। धन तन सर्ब्बसु कछू न राखै॥
मांगो सोई देहों दान। सुत सुन्दरी सर्ब्बसु पराण॥

महाराज इस भांतके सुनतेही श्रीकृष्णचन्द्रजीने कहा कि महाराज किसी समै राजा हरिचन्द बड़ा दानी हो गया है कि जिस

की कीर्ति संसारमें अबतक छाय रही है सुनिये एक समै राजा हरिचन्द्रके देशमें काल पड़ा औ अन्न बिन सब लोग मरने लगे तब राजाने अपना सर्वसु बेच बेच सबको खिलाया जद देश नगर धन गया औ निर्धन हो राजा रहा तद एक दिन सांझ समै यह कुटुम्ब सहित भूखा बैठा था कि इसमें बिश्वामित्रने आय इनका सत देखनेको यह बचन कहा महाराज मुझे धन दीजे औ कन्या दानका फल लीजे इस बचनके सुनतेही जो कुछ घरमें था सो ला दिया पुनि ऋषिने कहा महाराज मेरा काम इतनेमें न होगा फिर राजाने दास दासी बेच धन ला दिया औ धन जन गंवाय निर्धन निर्जन हो स्त्री पुत्रको ले रहा पुनि ऋषिने कहा कि धर्म मूरत इतने धनसे मेरा काम न सरा अब मैं किसके पास जाय मागूं मुझे तो संसारमें तुझसे अधिक धनवान धर्मात्मा दानी कोई नहीं दृष्ट आता हां एक सुपच नाम चण्डाल मायापात्र है कहो तो उससे धन मागूं पर इसमेंभी लाज आती है कि ऐसे दानी राजाको याच उसे क्या याचूं महाराम इतनी बातके सुनतेही राजा हरिचन्द बिश्वामित्रको साथ ले उस चण्डालके घर गये औ इन्होंने उससे कहा कि भाई तू हमें एक बरषके लिये गहने धर औ इनका मनोरथ पूराकर सुपच बोला॥

कैसे टहल हमारी करि हो। राजस तामस मनतें हरि हौ॥
तुम नृप महा तेज बलधारी। नीच टहल है खरी हमारी॥

महाराज हमारे तो यही काम है कि शुमशानमें जाय चौकी दें औ जो मृतक आवे उससे कर लें पुनि हमारे घर बारकी चाकरी करें तुमसे यह हो सके तो मैं रुपये दूं औ तुम्हें बन्धक रक्खूं राजाने कहा अच्छा मैं बरषभर तुम्हारी सेवा करूंगा तुम इन्हें रूपये दो महाराज इतना बचन राजाके मुखसे निकलतेही सुपचने बिश्वामित्रको रुपये गिन दिये वह ले अपने घर गया औ राजा वहां रह उसकी सेवा करने लगा कितने एक दिन पी

छे कालबश हो राजा हरिचन्द्रका पुत्र रोहिताश्व मर गया उस मृतकको ले रानी मरघटमें गई औ जों चिता बनाय अग्निसंस्कार करने लगी तोंहीं राजाने कर मांगा॥

रानी बिलख कहै दुख पाय। देखौ समझ हिये तुम राय॥

यह तुम्हारा पुत्र रोहिताश है औ कर देनेको मेरे पास और तो कुछ नहीं एक यह चीर है जो पहरे खड़ी हूं राजाने कहा मेरा इसमे कुछ बश नहीं मैं स्वामीके कार्य पर खड़ा हूं जो स्वामीका काम न करूं तो मेरा सत जाय महाराज इस बातके सुन तेही रानीने चीर उतारनेको जों आंचल पर हाथ डाला तों तीनों लोक कांप उठे वोंहीं भगवानने राजा रानीका सत देख पहले एक बिमान भेज दिया औ पीछेसे आय दरशन दे तीनोंका उद्धार किया महाराज जब बिधाताने रोहिताशको जिवाय राजा रानीको पुत्र सहित बिमान पर बैठाय बैकुन्ठ जानेकी आज्ञा की तब राजा हरिचन्दने हाथ जोड़ भगवानसे कहा कि हे दीनबन्धु पतितपावन दीनदयाल मैं सुपच बिना बैकुन्ठ धाममें कैसे जाऊं बिश्राम इतना बचन सुन औ राजाके मनका अभिप्राय जान श्रीभक्तहितकारी करुणासिन्धु हरिनेपुरी समेत सुपचकोभी राजा रानी औ कुंवरके साथ तारा॥

यहां हरिचन्द अमरपद पायौ। यहां युगानयुग यश चलि आयौ॥

महाराज यह प्रसङ्ग जरासिन्धुको सुनाय श्रीकृष्णचन्द्रजीने कहा कि महाराज और सुनिये कि रन्तिदेवने ऐसा तप किया कि आठ तालीस दिन बिनपानी रहा औ जब जल पीने बैठा तिसी समय कोई प्यासा आया इसमे वह नीर आप न पी उस तृषावन्तको पिलाया उस जलदानसे उसने मुक्ति पाई पुनि राजा बलिने अति दान किया तो पातालका राज लिया औ अबतक उसका यश चला जाता है फिर देखिये कि उद्दालकमुनि छठे महीने अन्न खाते थे एक समै खाती बिरियां यहां कोई अतिथि आया

उन्हों ने अपना भोजन आप न खाय भूखेको खिलाया औ उस क्षुधाहीमें मरे निदान अन्नदान करनेसे बैकुण्ठको गये चढ़कर बिमान ॥

पुनि एक समय सब देवताओंको साथ ले राजा इन्द्रने जाय दधीचीसे कहा कि महाराज हम वृत्रासुरके हाथसे अब बच नहीं सकते जो आप अपना अस्थि हमें दीजे तो उसके हाथसे बचें नहीं तो बचना कठिन क्योंकि वह बिन तुम्हारे हाड़के आयुध किसी भांति न मारा जायगा महाराज इतनी बातके सुनतेही दधीचिने शरीर गाय से चटवाय जांघका हाड़ निकाल दिया देवताओंने ले उस अस्थिका बज्र बनाया औ दधीचिने प्राण गंवाय बैकुण्ठधाम पाया ॥

ऐसे दानी भये अपार। तिनका यश गावत संसार ॥

राजा यों कह श्रीकृष्णचन्द्रजीने जुरासिन्धुसे कहा कि महाराज जैसे आगे और युगमे धरमात्मा दानी राजा हो गये हैं तैसे अब इस कालमें तुम हो जो आगे उन्होंने याचकोंकी अभिलाषा पूरीकी तो तुम अब हमारी आश पूजाओ ॥

कहा है याचक कहा न मांगई; दाता कहा न देय।
गृह सुत सुन्दरि लोभ नहीं; तन शिर दे यश लेय ॥

इतना बचन प्रभुके मुखसे निकलतेही जुरासिन्धु बोला कि याचकको दाताकी पीर नहीं होती तौभी दानी धीर अपनी प्रकृति नहीं छोड़ता इसमें सुख पावे कै दुख देखो हरिने कटकरूप कर बावन बन राजा बलिके पास जाय तीन पैंड़ पृथ्वी मांगी उस समै शुकने बलिको चिताया तौभी राजाने अपना प्रण न छोड़ा ॥

देह समेत मही तिन दई। ताकी जगमें कीरति भई ॥
याचक विष्णु कहा यश लीनौं। सर्बस ले तोऊ हठ कीनौं ॥

इसो तुम पहले अपना नाम भेद कहो तद जो तुम मांगोगे सो मैं मिथ्या नहीं भाषता श्रीकृष्णचन्द बोले कि राजा हम सच्ची

हैं वासुदेव मेरा नाम है तुम भली भांति हमें जानते हो औ ये दोनों अर्जुन भीम हमारे फुफेरे भाई हैं हम युद्ध करनेको तुम्हारे पास आये हैं हमसे युद्ध कीजे हम यही तुमसे मांगने आये हैं और कुछ नहीं मांगते महाराज यह बात श्रीकृष्णचन्द्रजीसे सुन जरासिन्धु हंसकर बोला कि मैं तुझसे क्या लड़ू तू मेरे सोंहीसे भाग चुका है औरअर्जुनसेभी न लड़ूगा क्योंकि यह विदर्भदेश गया था करके नारीका भेष रहा भीमसेन कहो तो इससे लड़ू यह मेरी समानका है इससे लड़नेमें मुझे कुछ लाज नहीं॥

पहले तुम सब भोजन करौ। पाछे मल्ल अखारे लरौ॥
भोजन दे नृप बाहर आयौ। भीमसेन तहं बोलि पठायौ॥
अपनी गदा ताहि तिन दई। गदा दूसरी आपुन लई॥
जहां सभा मण्डल बन्यौ, बैठे जाय मुरारि॥
जरासिन्धु अरु भीम तहां, भये ठाढ़े इक वारि॥
टोपा शीस काछनो काछें। बने रूप नटुवाके आछें॥

महाराज जिस समय दोनों बीर अखाड़ेमें खम ठोक गदा तान धज पलट झूमकर सनमुख आये उसकाल ऐसे जनाये कि मानों दो मतङ्ग मतवाले उठ धाये आगे जरासिन्धुने भीमसेनसे कहा कि पहले गदा तु चला क्योंकि तु ब्राह्मणका भेष ले मेरी पौरी पै आया था इससे मैं पहले प्रहार तुझ पर न करूंगा यह बात सुन भीमसेन बोले कि राजा हमसे तुमसे धर्मयुद्ध है इसमें यह ज्ञान न चाहिये जिसका जी चाहे सो पहले शस्त्र करे महाराज उन दोनों बीरोंने परस्पर ये बातें कर एक साथही गदा चलाई औ युद्ध करने लगे॥

ताकत घात आप आपनी। चोट करत बाईं दाहनी॥
अङ्ग बचाय उछरिपग धरें। झरपहिंगदा गदा सोंलरें॥
खटपट चोट गदा पटकारी। लागत शब्द कुलाहल भारी॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि

महाराज इसी भांति वे दोनों बली दिन भर तो धर्मयुद्ध करते औ सांझको घर आय एक साथ भोजन कर विश्राम ऐसे नित लड़तेर सत्ताईश दिन भये तब एक दिवस उन दोनोंके लड़नेके समय श्रीकृष्णचन्द्रजीने मनहींमन बिचारा कि यह यों न मारा जायगा क्योंकि जब यह जन्मा था तब दो फांक हो जन्मा था उस समै जरा राक्षसीने आय जरासिन्धुका मुंह औ नाक मूंदी तब दोनों फांकें मिल गई यह समाचार सुनि उसके पिता जैद्रथने जोतिषियोंको बुलायके पूछा कि कहो इस लड़केका नाम क्या होगा औ कैसा होगा जोतिषियोंने कहा कि महाराज इसका नाम जुरासिन्धु हुआ औ यह बड़ा प्रतापी औ अजर अमर होगा जबतक इसकी सन्धि न फटेगी तबतक यह किसीसे न मारा जायगा इतना कह जोतिषी बिदा हो चले गये महाराज यह बात श्रीकृष्णजीने मनहींमन सोच औ अपना बल दे भीमसेनको तिनका चीर सैनसे जताया कि इसे इस रीतिसे चीर डालो प्रभुके चिताते ही भीमसेनने जुरासिन्धुको पकड़ कर दे मारा औ एक जांघ पर पांव दे दूसरा पांव हाथसे पकड़ यों चीरडाला कि जैसे कोई दातन चीरडाले जुरासिन्धुके मरतेही सुर नर गन्धर्व ढोल दमामे भेर बजाय फूल बरषाय बरषाय जैजैकार करने लगे औ दुख द्वन्द्व जाय सारे नगरमें आनन्द हो गया उसी बिरियां जुरासिन्धुकी नारी रोती पीटती आ श्रीकृष्णजीके सनमुख खड़ी हो हाथ जोड़ बोली कि धन्य है धन्य है नाथ तुम्हें जो ऐसा काम किया कि जिसने सरबस दिया तुमने उसका प्राण लिया जो जन तुम्हें सुत बित औ समर्पै देह उससे तुम करते हो ऐकाही नेह॥

कपटरूप कर छल बल कियौ। जगत आय तुम यह यश लियौ॥

महाराज जुरासिन्धुकी राणीने जब करुणाकर करुणानिधानके आगे हाथ जोड़ बिनती कर यों कहा तब प्रभुने दयाल हो पहले

जरासिन्धुको क्रिय को पीछे उसके सुत सहदेवको बुलाय राज तिलक दे सिंहासनपर बैठायके कहा कि पुत्र नीति सहित राज कीजो औ ऋषि मुनि गौ ब्राह्मण प्रजाकी रक्षा इति॥

७४ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज राजपाट पर बैठाय समझाय श्रीकृष्णचन्द्रजीने सहदेवसे कहा कि राजा अब तुम जाय उन राजाओंको ले आओ जिन्हें तुम्हारे पिताने पहाड़की कन्दरामें मूंद रक्खा है इतना बचन प्रभुके मुखसे सुनतेही जरासिंधका पुत्र सहदेव बहुत अच्छा कह कन्दराके निकट जाय उसके मुखसे शिला उठाय आठ सौ बीश सहस्र राजाओंको निकाल हरिके सनमुख ले आया आतेही हथकड़ियां बेड़ियां पहने गलेमें सांकल लोहेको डाले नख केश बढ़ाये तनछीन मनमलीन मैले भेष सब राजा प्रभुके सनमुख पांति पांति खड़े हो हाथ जोड़ बिनती कर बोले हे कृपासिंधु दीनबंधु आपने भले समय आय हमारी सुध ली नहीं तो सब मरचुके थे तुम्हारा दरशन पाया हमारे जीमें जी आया पिछला दुख सब गंवाया॥

महाराज इस बातके सुनतेही कृपासागर श्रीकृष्णचन्द्रने जो उनपर दृष्टि की तो बातकी बातमें सहदेव उनको ले जाय हथकड़ी बेड़ी कटवाय क्षौर करवाय न्हलाय धुलवाय षटरस भोजन खिलाय बस्त्र आभूषण पहराय अस्त्र शस्त्र बंधवाय पुनि हरिके ढिंग लिवाय लाया। उसकाल श्रीकृष्णचन्द्रजीने उन्हे चतुर्भुज हो शङ्खचक्र गदा पद्म धारण कर दरशन दिया प्रभुका स्वरूप भूप देखतेही हाथ जोड़ बोले नाथ तुम संसारके कठिन बन्धनसे जीवको छुड़ाते हो तुम्हें जरासिंधुकी बन्धसे हमें छुड़ाना क्या कठिन था जैसे आपने कृपाकर हमें इस कठिन बन्धनसे छुड़ाया तैसेही अब हमें गृहरूप कूपसे निकाल काम क्रोध लोभ मोहसे छुड़ाइये जो हम एकान्त बैठ आपका ध्यान करें औ भवसागरको

तर्रें श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जब सब राजाओंने ऐसे ज्ञान बैरागभरे बचन कहे तब श्रीकृष्णचन्द्रजी प्रसन्न हो बोले कि सुनो जिनके मनमें मेरी भक्ति है वे निस्सन्देह भक्ति मुक्ति पावेंगे बन्ध मोक्ष मनहींका कारण है जिनका मन स्थिर है तिन्हें घर औ बन समान है तुम और किसी बातकी चिन्ता मत करो आनन्दसे घरमें बैठ नीति सहित राज करो प्रजाको पालो गौ ब्राह्मणकी सेवामें रहो झूठ मत भाषो काम क्रोध लोभ अभिमान तजो भावभक्तिसे हरिको भजो तुम निःसंदेह परम पद पाओगे संसारमें आय जिसने अभिमान किया वह बहुत न जिया देखो अभिमानने किसे किसे न खो दिया॥

सहस्र बाहु अतिबली बखान्यौ। परशुराम ताकौ बल भांन्यौ॥
बेण भूप रावण हो भयौ। गर्ब आपने सोऊ गयौ॥
भौमासुर बाणासुर कंस। भये गर्व तें ते बिध्वंस॥
श्रीमद गर्ब करो जिन कोय। त्यागे गर्व सो निर्भय होय॥

इतना कह श्रीकृष्णचन्द्रजीने सब राजाओंसे कहा कि अब तुम अपने घर जाओ कुटुम्बसे मिल अपना राजपाट संभाल हमारे न पहुंचते न पहुंचते हस्तिनापुरमें राजा युधिष्ठिरके यहां राजसूय यज्ञमें शीघ्र आओ महाराज इतना बचन श्रीकृष्णचन्द्रजीके मुखसे निकलतेही सहदेवने सब राजाओंके जानेका सामान जितना चाहिये तितना बातकी बातमें ला उपस्थित किया वे ले प्रभुसे बिदा हो अपने अपने देशोंको गये औ श्रीकृष्णचन्द्रजीभी सहदेवको साथ ले भीम अर्जुन सहित वहांसे चल चले चले आनन्द मङ्गलसे हस्तिनापुर आये आगे प्रभुने राजा युधिष्ठिरके पास जाय जरासिंधके मारनेके समाचार औ सब राजाओंके छुड़ानेके ब्योरे समेत कह सुनाये॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्दजीके हस्तिनापुर पहुंचते पहुं

चतेही वे सब राजाभी अपनी सेना ले भेंट सहित आन पहुंचे औ राजा युधिष्ठिरसे भेंट कर भेंट दे श्रीकृष्णचन्द्रजीकी आज्ञा ले हस्तिनापुरके चारोंओर जा उतरे औ यज्ञकी टहलमें आ उपस्थित हुए। इति॥

७५ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जैसे यज्ञ राजा युधिष्ठिरने किया औ शिशुपाल मारा गया तैसे मैं सब कथा कहता हूं तुम चित दे सुनो बीश सहस्र आठ सौ राजाओंके जातेही चारोंओरके और जितने राजा थे क्या सूर्यबंशी औ क्या चन्द्रबंशी तितने सब आय हस्तिनापुरमें उपस्थित हुए उस समय श्रीकृष्णचन्द्र औ राजा युधिष्ठिरने मिलकर सब राजाओंका सब भांति शिष्टाचार कर समाधान किया औ हरएकको एक एक काम यज्ञका सौंपा आगे श्रीकृष्णजीने राजा युधिष्ठिरसे कहा कि महाराज भीम अर्जुन नकुल सहदेव सहित हम पांचों भाई तो सब राजाओंको साथ ले ऊपरकी टहल करें और आप ऋषि मुनि ब्राह्मणोंको बुलाय यज्ञका आरम्भ कीजे महाराज इतनी बातके सुनतेही राजा युधिष्ठिरने सब ऋषि मुनि ब्राह्मणोंको बुलाकर पूछा कि महाराजो जो जो बस्तु यज्ञमें चाहिये सो सो आज्ञा कीजे महाराज इस बातके कहतेही ऋषि मुनि ब्राह्मणोंने ग्रन्थ देख देख यज्ञकी सब सामग्री एक पत्रपर लिख दीं औ राजाने वोंहीं मंगवाय उनके आगे धरवा दी ऋषि मुनि ब्राह्मणोंने मिल यज्ञकी वेदी रची चारों वेदके सब ऋषि मुनि ब्राह्मण वेदीके बीच आसन बिछाय जा बैठे पुनि शुचि होय स्त्री सहित गंठजोड़ा बांध राजा युधिष्ठिरभी आय बैठे औ द्रोणाचार्य कृपाचार्य धृतराष्ट्र दुर्योधन शिशुपाल आदि जितने योधा औ बड़े बड़े राजा थे वेभी आन बैठे ब्राह्मणोंने स्वस्तिबाचन कर गणेश पुजवाय कलश स्थापन कर ग्रह स्थापन किया राजाने भरद्वाज गौतम बशिष्ठ बिश्वामित्र बाम

देव पराशर व्यास कश्यप आदि बड़े बड़े ऋषि मुनि ब्राह्मणोंका बरन किया औ उन्होंने वेदमन्त्र पढ़ पढ़ सब देवताओंका आवाहन किया औ राजासे यज्ञका संकल्प करवाय होमका आरम्भ किया॥

महाराज मन्त्र पढ़ ऋषि मुनि ब्राह्मण आहुति देने लगे औ देवता प्रत्यक्ष हाथ बढ़ाय बढ़ाय लेने उस समय ब्राह्मण वेदपाठ करते थे औ सब राजा होमनेकी सामग्री ला ला देते थे औ राजा युधिष्ठिर होमते थे कि इसमें निर्द्वन्द्व यज्ञ पूरण हुआ औ राजाने पूर्णाहुति दी उसकाल सुर नर मुनि राजाको धन्य धन्य कहने लगे औ यक्ष गन्धर्व किन्नर बाजन बजाय यश गाय गाय फूल बरसावने इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज यज्ञसे निश्चिन्त हो राजा युधिष्ठिरने सहदेवजीको बुलायके पूछा॥

पहलले पूजा काकी कीजे। अक्षत तिलक कौन को दीजे॥
कौन बड़ो देवन को ईश। ताहि पूज हम नावें सीस॥

सहदेवजी बोले कि महाराज सब देवोंके देव हैं वासुदेव कोई नहीं जानता इनका भेव ये हैं ब्रह्मा रुद्र इन्द्रके ईश इन्हींको पहले पूजनवाइये सीस जैसे तरवरकी जड़में जल देनेसे सब शाखा हरी होती हैं तैसे हरिकी पूजा करनेसे सब देवता सन्तुष्ट होते हैं यही जगतके करता हैं औ यही उपजाते पालते मारते हैं इनकी लीला है अनन्त कोई नहीं जानता इनका अन्त येई हैं प्रभु अलख अगोचर अबिनाशी इन्हींके चरण कमल सदा सेवती है कमला भई दासी भक्तोंके हेतु बार बार लेते हैं अवतार तनु हैं धर करते लोक व्यौहार॥

बंधु कहत घर बैठे आवें। अपनी माया मांहि भुलावें॥
महा मोह यम प्रेम भुलाने। ईश्वर को भ्राता कर जाने॥
इनतें बड़ो न दीसे कोई। पूजा प्रथम इन्हींकी होई॥

महाराज इस बातके सुनतेही सब ऋषि मुनि औ राजा बोल उठे कि राजा सहदेवजीने सत्य कहा प्रथम पूजन जोग हरिही हैं तब तो राजा युधिष्ठिरने श्रीकृष्णचन्द्रजीको सिंहासन पर बिठाय आठों पटरानियां समेत चन्दन अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य कर पूजा पुनि सब देवताओं ऋषियों मुनियों ब्रह्मणों और राजाओंकी पूजा की रङ्ग रङ्गके जोड़े पहनाये चन्दन केशरकी खौड़ें कीं फूलोंके हार पहराये सुगन्ध लगाय यथा जोग राजाने सबकी मनहार की श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा ॥

हरि पूजत सब कों सुख भयौ । शिशुपाल कौ सीस भूं नयौ ॥

कितनी एक बेर तक तो वह शिर झुकाये मनहीं मन कुछ शोच बिचार करता रहा निदान कालवश हो अति क्रोध कर सिंहासनसे उतर सभाके बीच निःसंकोच निडर हो बोला कि इस सभामें धृतराष्ट्र दुर्योधन भीष्म कर्ण द्रोणाचार्य आदि सब बड़े बड़े ज्ञानी मानी हैं पर इस समय सबकी गति मति मारी गई बड़े बड़े मुनीश बैठे रहे औ नन्द गोपके सुतको पूजा भई औ कोई कुछ न बोला जिसने ब्रजमें जन्म ले ग्वाल बालोंकी जूठी छाक खाई तिसीकी इस सभामें भई प्रभुताई बड़ाई ॥

ताहि बड़ो सब कहत अचेत । सुरपतिकौ बलि कागहि देत ।

जिनने गोपी ग्वालनोंसे नेह किया इस सभामें तिसेही सबसे बड़ा साध बनाय दिया जिसने दूध दही मही माखन घर घर चुराय खाया उसीका यश सबने मिल गाया बाट घाटमें जिनने लिया दान उसीका यहां हुवा सनमान पर नारीसे जिसने छल बल कर भोग किया सबने मता कर उसीको पहले तिलक दिया ब्रजमेंसे इन्द्रकी पूजा जिसने उड़ाई औ पर्व्वतकी पूजा ठहराई पुनि पूजाकी सब सामग्री गिरके निकट लिवाय ले जाय मिस कर आपही खाई तोभो उसे लाज न आई जिसकी जात पांत औ मात पिता कुल धर्मका नहीं ठिकाना तिसीको अलख अबिनाशी कर

सबने माना॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज इसी भांतिसे काल बश होय राजा शिशुपाल अनेक अनेक बुरी बातें श्रीकृष्णचन्द्रजीको कहता था औ श्रीकृष्णचन्द्रजी सभाके बीच सिंहासन पर बैठे सुन सुन एक एक बात पर एक एक लकीर खैंचते थे इस बीच भीष्म कर्ण द्रोण औ बड़े बड़े राजा हरिनिन्दा सुन अति क्रोध कर बोले कि अरे मूर्ख तू सभामें बैठा हमारे सनमुख प्रभुकी निन्दा करता है रे चण्डाल चुप रह नहीं अभी पछाड़ मार डालते हैं महाराज यह कह शस्त्र ले ले सब राजा शिशुपालके मारनेको उठ धाये उस समय श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्दने सबको रोक कर कहा कि तुम इस पर शस्त्र मत करो खड़े खड़े देखो यह आपसे आपही मारा जाता है मैं इसके सौ अपराध सहूंगा क्योंकि मैंने बचन हारा है सौसे बढ़ती न सहूंगा इसी लिये मैं रेखा काढ़ता जाता हूं॥

महाराज इतनी बातके सुनतेही सबने हाथजोड़ श्रीकृष्णचन्दसे पूछा कि कृपानाथ इसका क्या भेद है जो आप इसके सौ अपराध क्षमा करियेगा सो कृपाकर हमें समझाईये औ हमारे मनका संदेह जाय प्रभु बोले कि जिस समय यह जन्मा था तिस समय इसको तीन नेत्र औ चार भुजा थीं यह समाचार पाय इसके पिता राजा दम घोषने जोतिषियों औ बड़े बड़े पण्डितोंको बुलायके पूछा कि यह लड़का कैसा हुआ इसका बिचार कर मुझे उत्तर दो राजाकी बात सुनतेही पण्डित औ जोतिषियोंने शास्त्र बिचारके कहा कि महाराज यह बड़ा बली औ प्रतापी होगा और यहभी हमारे बिचारमें आता है कि जिसके मिलनेसे इसकी एक आंख औ दो बांह गिर पड़ेंगी वह उसीके हाथ मारा जायगा इतना सुन इसकी मा महादेवी सूरसेनकी बेटी वसुदेवकी बहन हमारी फूफी अति उदास भई औ आठ पहर पुत्रहीकी चिन्ता

में रहने लगी॥

कितने एक दिन पीछे एक समै पुत्रको लिये पिताके घर द्वारिकामें आई औ इसे सबसे मिलाया जब यह मुझसे मिला औ इसकी एक आंख औ दो बांह गिर पड़ी तब फूफीने मुझे बचन बन्ध करके कहा कि इसकी मीच तुम्हारे हाथ है तुम इसे मत मारियो मैं यह भीख तुमसे मागती हूं मैंने कहा अच्छा सौ अपराध हम इसके न गिनेंगे इस उपरान्त अपराध करेगा तो हनेंगे हमसे यह बचन ले फूफू सबसे बिदा हो इतना कह पुत्रसहित अपने घर गई कि यह सौ अपराध क्यों करेगा जो कृष्णके हाथ मरेगा॥

महाराज इतनी कथा सुनाय श्रीकृष्णजीने सब राजाओंके मनका भ्रम मिटाय उन लकीरोंको गिना जो एक एक अपराध पर खैंची थीं गिनते ही सौसे बढ़ती हुईं तभी प्रभुने सुदरशन चक्रको आज्ञा दी उसने झट शिशुपालका शिर काट डाला उसके धड़से जो जोति निकली सो एक बार तो आकाशको धाई फिर आय सबके देखते ही श्रीकृष्णचन्द्रके मुखमें समाई यह चरित्र देख सुर नर मुनि जैजैकार करने लगे औ पुष्प बरषावने उस काल श्रीमुरारी भक्तहितकारीने उसे तीसरी मुक्ति दी औ उसकी क्रिया की॥

इतनी कथा सुन राजा परीक्षितने श्रीशुकदेवजीसे पूछा कि महाराज तीसरी मुक्ति प्रभुने किस भांति दी सो मुझे समझायके कहिये शुकदेवजी बोले कि राजा एकबार यह हिरणकश्यप हुवा तब प्रभुने नृसिंह अवतार ले तारा दूसरी बेर रावण भया तो हरिने रामावतार ले इसका उद्धार किया अब तीसरी बिरियां यह है इसीसे तीसरी मुक्ति भई इतना सुन राजाने मुनिसे कहा कि महाराज अब आगे कथा कहिये श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा यज्ञके हो चुकतेही राजा युधिष्ठिरने सब राजाओंको स्त्री

सहित पहराय ब्राह्मणोंको अनगनित दान दिया देनेका काम यज्ञमें राजा दुर्योधनको था तिसने द्वेष कर एकको ठौर अनेक दिये इसमें उसका यश हुवा तौभी वह प्रसन्न न हुवा॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज यज्ञके पूर्ण होतेही श्रीकृष्णजी राजा युधिष्ठिरसे बिदा हो सब सेना ले कुटम्ब सहित हस्तिनापुरसे चले चले द्वारिकापुरी पधारे प्रभुके पहुंचेही घर घर मङ्गलाचार होने लगा औ सारे नगरमें आनन्द हो गया इति॥

७६ अध्याय।

राजा परीक्षित बोले कि महाराज राजसूय यज्ञ होनेसे सबकोई प्रसन्न हुए एक दुर्योधन अप्रसन्न हुवा इसका कारण क्या है सो तुम मुझे समझायके कहो जो मेरे मनका भ्रम जाय श्रीशुकदेव जी बोले कि राजा तुम्हारे पितामह बड़े ज्ञानी थे उन्होंने यज्ञमें जिसे जैसा देखा तिसे तैसा काम दिया भीमको भोजन करवानेका अधिकारी किया पूजा पर सहदेवको रक्खा धन लानेको नकुल रहे सेवा करने पर अर्जुन ठहरे श्रीकृष्णचन्द्रजीने पांव धोने औ जूठी पत्तल उठानेका काम लिया दुर्योधनको धन बांटनेका कार्य दिया और सब जितने राजा थे तिन्होंने एक एक काज बांट लिया महाराज सब तो निष्कपट यज्ञकी टहल करते थे पर एक राजा दुर्योधनही कपट सहित काम करता था इससे वह एककी ठौर अनेक उठाताथा निज मनमें यह बात ठानके कि इनका भण्डार टूटे तो अप्रतिष्ठा होय पर भगवतकृपासे अप्रतिष्ठा न होय और यश होता था इस लिये वह अप्रसन्न था और वह यहभी न जानता था कि मेरे हाथमें चक्र है एक रुपया दूंगा तो चार इकठे होंगे॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा अब आगे कथा सुनिये श्रीकृष्णचन्द्रजीके पधारतेही राजा युधिष्ठिरने सब राजा

औंको खिलाय पिलाय पहराय अति शिष्टाचार कर बिदा किये वे दल साजर अपने अपने देशको सिधारे आगे राजा युधिष्ठिर पाण्डव औ कौरवोंको ले गङ्गास्नानको बाजेगाजेसे गये तीरपर जाय दण्डवत कर रज लगाय आचमन कर स्त्री सहित नीरमें पैठे उनके साथ सबने स्नान किया पुनि न्हाय धोय सन्ध्या पूजनसे निचिन्त होय वस्त्र आभूषण पहन सबको साथ लिये राजा युधिष्ठिर कहां आते हैं कि जहां मयदैत्यने अति सुन्दर मन्दिर सुवर्णके रतनजटित बनाये थे महाराज वहां जाय राजा युधिष्ठिर सिंहासनपर बिराजे उसकाल गन्धर्व गुन गाते थे चारण बन्दी जन यश बखानते थे सभाके बीच पातर नृत्य करती थीं घरबाहरमें मङ्गली लोग गाय बजाय मङ्गलाचार करते थे और राजा युधिष्ठिरकी सभा इन्द्रकीसी सभा होरही थी इस बीच राजा युधिष्ठिरके आनेके समाचार पाय राजा दुर्योधनभी कपट स्नेह किये वहां मिलनेको बड़ी धूमधामसे आया॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज वहां मयने चौकके बीच ऐसा काम किया था कि जो कोई आता तिसे थलमें जलका भ्रम होता था औ जलमें थलका महाराज जो राजा दुर्योधन मन्दिरमें पैठा तो उस थल देख जलका भ्रम हुवा उसन वस्त्र समेत उठाय लिये पुनि आगे बढ़ जल देख उसे थलका धोखा हुवा जो पांव बढ़ाया तो उसके कपड़े भींगे यह चरित्र देख सब सभाके लोग खिलखिला उठे राजा युधिष्ठिरने हंसीको रोक मुंह फेर लिया महाराज सबके हस पड़तेही राजा दुर्योधन अति लज्जित हो महा क्रोधकर उलटा फिर नवा सभामें बैठ कहने लगा कि कृष्णका बल पाय युधिष्ठिरको अति अभिमान हुआ है आज सभामें बैठ मेरी हांसीकी इसका पलटा मैं लूं औ उसका गर्व तोडूं तो मेरा नाम दुर्योधन नहीं तो नहीं इति॥

७७ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जिस समय श्रीकृष्णचन्द्र औ बलरामजी हस्तिनापुरमें थे तिसी समै शाल्व नाम दैत्य शिशुपालका साथी जो रुक्मिणीके ब्याहमें श्रीकृष्णचन्द्रजीके हाथकी मार खाय भागा था सो मनहींमन इतना कह लगा महादेवकी की तपस्या करने कि अब मैं अपना बैर यदुबंशियोंसे लूंगा॥

इंद्रीजीत सबै बश कीनी। भूक प्यास सब रितु सह लीनी॥
ऐसी बिधि तप लागैवा करण। सुमिरै महादेवके चरण॥
नित उठ मुठी रेत लै खाय। करै कठिन तप शिव मन लाय॥
बरष एक ऐसी बिधि गयौ। तबहीं महादेव बर दयौ॥

कि आजसे तू अजर अमर हुआ औ एक रथ मायाका तुझे मय दैत्य बना देगा तू जहां जाने चाहेगा वह तुझे तहां ले जायगा बिमानकी भांति त्रिलोकीमें उसे मेरे बरसे सब ठौर जानेकी सामर्थ होगी॥

महाराज सदाशिवजीने जों बर दिया तों एक रथ आय इसके सनमुख खड़ा हुआ यह शिवजीको प्रणामकर रथपर चढ़ द्वारिकापुरीको घर धमका वहां जाय नगर निवासियोंको अनेक अनेक भांतिकी पीड़ा उपजाने लगा कभी अग्नि बरसाता था कभी जल कभी बृक्ष उखाड़ नगर पर फेंकता था कभी पहाड़ उसके डरसे सब नगर निवासी अति भयमान हो भाग राजा उग्रसेनके पास जा पुकारे कि महाराजकी दुहाई दैत्यने आय नगरमें अति धूम मचाई जो इसी भांति उपाध करैगा तो कोई जीता न रहैगा महाराज इतनी बातके सुनतेही राजा उग्रसेनने प्रद्युम्नजी औ साम्बको बुलायके कहा कि देखो हरिका पीछा ताक यह असुर आया है प्रजाको दुख देने तुम इसका कुछ उपाय करो राजाकी आज्ञा पाय प्रद्युम्नजी सब कटक ले रथपर बैठ नगरके बाहर लड़नेको जा उपस्थित हुए औ साम्बको भयातुर देख बोले कि

तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो मैं हरिप्रतापसे इस असुरको बातकी बातमें मार लेता हूं इतना बचन कह प्रद्युम्नजी सेना ले शस्त्र पकड़ ज्यों उसके सनमुख हुए त्यों उसने ऐसी मायाकी कि दिनकी महा अंधेरी रात होगई प्रद्युम्नजीने वोंहीं तेज बाण चलाय यों महा अन्धकारको दूर किया कि ज्यों सूरजका तेज कुहासेको दूर करे पुनि कई एक बाण उन्होंने ऐसे मारे कि उसका रथ अस्तव्यस्त हो गया औ वह घबराकर कभी भाग जाता था कभी आय अनेक अनेक राक्षसी माया उपजाय उपजाय लड़ता था औ प्रभुकी प्रजाको अति दुख देता था॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज दोनोंओरसे महायुद्ध होतेही था कि इस बीच एकाएकी आय शाल्व दैत्यके मन्त्री द्युमतने प्रद्युम्नजीकी छातीमें एक गदा ऐसी मारी कि मूर्छाखाय गिरे इनके गिरतेही वह किलकारी मारके पुकारा कि मैंने श्रीकृष्णके पुत्र प्रद्युम्नको मारा महाराज यादवतो राक्षसोंसे महायुद्ध कर रह थे उसी समय प्रद्युम्नजीको मूर्छित देख दारुक सारथीका बेटा रथमें डाल रणसे ले भागा औ नगरमें ले आया चैतन्य होतेहो प्रद्युम्नजीने अति क्रोध कर सूतसे कहा॥

ऐसो नाहिं उचित हो तोहि। आन अचेत भजावै मोहि॥
रण तजके तू लायो धाम। यह तो नहीं सूरको काम॥
यदुकुलमें ऐसो नहीं कोय। तजके खेत जो भागेरा होय॥

क्या तैंने कहीं मुझे भागते देखा था जो तू आज मुझे रणसे भगाय लाया था यह बात जो सुनेगा सो मेरी हांसी औ निन्दा करेगा तैंने यह काम भला न किया जो बिन काम कलङ्कका टीका लगा दिया महाराज इतनी बातके सुनतेही सारथी रथसे उतर सनमुख खड़ा हो हाथ जोड़ शिरनाय बोला कि हे प्रभु तुम सब नीति जानते हो ऐसा संसारमें कोई धर्म नहीं जिसे तुम

नहीं जानते कहा है॥

रथी सूर जो घायल परै। ताहि सारथी लै नीकरै॥
जो सारथी परै खा घाय। ताहि बचाय रथी लै जाय॥
लागी प्रबल गदा अति भारी। मूर्छित है सुध देह बिसारी॥
तब हों रण तें लै नीसरैया। खामि क्रोह अपयश तें डरैया॥
घरी एक लीनों बिश्राम। अब चलकर कीजे संग्राम॥
धर्म नीति तुम तें जानिये। जग उपहास न मन आनिये॥
अब तुम सब्रहोकों बध करिहौ। माया मयदानवकी हरिहौ॥

महाराज ऐसे कह सूत प्रद्युम्नजीको जलके निकट ले गया वहां जाय उन्होंने मुख हाथ पांव धोय सावधान होय कवच टोप पहन धनुष बाण सम्भाल सारथीसे कहा भला जो भया सो भया पर अब तू मुझे वहां ले चल जहां असुर यदुबंशियोंसे युद्धकर रहा है बातके सुनतेही सारथी बातकी बातमें रथ वहां लेगया जहां वह लड़ रहा था जातेही इन्होंने ललकार कर कहा कि तू इधर उधर क्या लड़ता है आ मेरे सनमुख हो जो तुझे शिशुपालके पास भेजूं यह बचन सुनतेही वह जों प्रद्युम्नजी पर आय टूटा तों कई एक बाण मार इन्होंने उसे मार गिराया औ साम्बनेभी असुर दल काट काट समुद्रमें पाटा॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जब असुरदल सेयुद्ध करते करते द्वारिकामें सब यदुबंशियोंको सत्ताईस दिन हुए तब अन्तरजामी श्रीकृष्णचन्द्रजीने हस्तिनापुरमें बैठे बैठे द्वारिका की दशा देख राजा युधिष्ठिरसे कहा कि महाराज मैंने रात्रिस्वप्नमें देखा कि द्वारिकामें महा उपद्रव हो रहा है और सब यदुबंशी अति दुखी हैं इससे अब आप आज्ञा दो तो हम द्वारिकाको प्रस्थान करें यह बात सुन राजा युधिष्ठिरने हाथ जोड़कर कहा जो प्रभुकी इच्छा इतना बचन राजा युधिष्ठिरके मुखसे निकलते ही श्रीकृष्ण बलराम सबसे बिदा हो जों पुरके बाहर निकले

तो क्या देखते हैं कि बाईं ओर एक हरिणी दौड़ी चली आती है औ सोंहीं स्वान खड़ा शिर झाड़ता है यह अपशगुन देख हरि ने बलरामजीसे कहा कि भाई तुम सबको साथ ले पीछे आओ मैं आगे चलता हूं महाराज भाईसे यों कह श्रीकृष्णचन्द्रजी आगे जाय रन भूमिमें क्या देखते हैं कि असुर यदुबंशियोंको चारों ओरसे बड़ी मार मार रहे हैं औ वे निपट घबराय घबराय शस्त्र चलाय रहे हैं यह चरित्र देख हरि जो वहां खड़े हो कुछ भावित हुए तो पीछेसे बलदेवजीभी जा पहुंचे उसकाल श्रीकृष्णजीने बलरामजीसे कहा कि भाई तुम जाय नगर औ प्रजाकी रक्षा करो मैं इन्हें मार चला आता हूं प्रभुकी आज्ञा पाय बलदेवजी तो पुरीमें पधारे औ आप हरि वहां रणमें गये जहां प्रद्युम्नजी शाल्वसे युद्ध कर रहे थे यदुपतिके आतेही शङ्ख धुनि हुई औ सबने जाना कि श्रीकृष्णचन्द्र आये महाराज प्रभुके आतेही शाल्व अपना रथ उड़ाय आकाशमें ले गया औ वहांसे अग्निसम बाण बरषाने लगा उस समय श्रीकृष्णचन्द्रजीने सोलह बाण गिनकर ऐसे मारे कि उसका रथ औ सारथी उड़ गया औ वह लड़खड़ाय नीचे गिरा गिरतेही सम्भलकर एक बाण उसने हरिकी बाम भुजामें मारा औ यों पुकारा कि रे कृष्ण खड़ा रह मैं युद्ध कर तेरा बल देखता हूं तैंने तो शंखासुर औ शिशुपाल आदि बड़े बड़े बलवान छल बल कर मारे हैं पर अब मेरे हाथसे तेरा बचना कठिन है॥

मो सों तोहि परैगो अब काम। कपट छाड़ि कीजो संग्राम॥
बाणासुर भौमासुर बली। तेरो मग देखत हैं हरी॥
पठऊं तहां बहुरि नहिं आवै। भाजे तु न बड़ाई पावै॥

यह बात सुन जो श्रीकृष्णजीने इतना कहा कि रे मूरख अभिमानी कायर क्रूर जो हैं सच्चे गम्भीर धीर सूर वे पहले किसीसे बड़ा बोल नहीं बोलते तो उसने दौड़कर हरि पर एक गदा

अति क्रोधकर चलाई सो प्रभुने सहज सुभावही काट गिराई पुनि श्रीकृष्णचन्द्रजीने उसे एक गदा मारी वह गदा खाय मायाकी ओटमें जाय दो घड़ी मूर्छित रहा फिर कपटरूप बनाय प्रभुके सनमुख आय बोला॥

माय तिहारी देवकी, पठयो मोहि अकुलाय॥
रिपु शाल्व बसुदेव कों, पकरे लीये जाय॥

महाराज वह असुर इतना बचन सुनाय वहांसे जाय मायाका बसुदेव बनाय बांध लाय श्रीकृष्णचन्द्रके सोंहीं आय बोला रे कृष्ण देख मैं तेरे पिताको बांध लाया हूं अब इसका शिर काट सब यदुबंशियोंको मार समुद्रमें डारूंगा पीछे तुझे मार इकछत्र राज करूंगा महाराज ऐसे कह उसने मायाके बसुदेवका शिर पकड़ के श्रीकृष्णजीके देखते काटडाला औ बरछीके फल पर रख स बको दिखाया यह मायाका चरित्र देख पहले तो प्रभुको मूर्छा आ ई पुनि देह सम्भाल मनहीं मन कहन लगे कि यह क्योंकर हुवा जो यह बसुदेवजीको बलदेवजीके रहते द्वारिकासे पकड़ लाया क्या यह उनसेभी बली है जो उनके सनमुखसे बसुदेवजीको ले निकल आया॥

महाराज इसी भांतिकी अनेक अनेक बातें कितनी एक बेर लग आसुरी मायामें आय प्रभुनकी औ महाभावित रहे निदान ध्यान कर हरिने देखा तो सब आसुरी मायाकी छायाका भेद पाया तब तो श्रीकृष्णचन्द्रजीने उसे ललकारा प्रभुकी ललकार सुन वह आकाशको गया औ लगा वहांसे प्रभुपर शस्त्र चलाने इस बीच श्रीकृष्णचन्द्रजीने कई एक बाण ऐसे मारे कि वह रथसमेत समुद्र में गिरा गिरतेही सम्भल गदा ले प्रभु पर झपटा तब तो हरिने उसे अति क्रोधकर सुदरशन चक्रसे मार गिराया ऐसे कि जैसे सुरपतिने बृत्रासुरको मार गिराया था महाराज उसके गिरते ही उसके सीसकी मणि निकल भूमि पर गिरी औ जोति श्रीकृ

ष्णचन्द्रजीके मुखमें समाई इति॥

७८ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा अब मैं शिशुपालके भाई दन्तबक्र औ बिदूरथकी कथा कहता हूं कि जैसे वे मारे गये जबसे शिशुपाल मारा गया तबसे वे दोनों श्रीकृष्णचन्द्रजीसे अपने भाईका पलटा लेनका विचार किया करतेथे निदान शाल्व औ द्युमतके मरतेही अपना सब कटक ले द्वारिकापुरी पर चढ़ि आये औ चारोंओरसे घेर लगे अनेक अनेक प्रकारके यन्त्र औ शस्त्र चलाने॥

परेउ नगरमें खरभर भारी। सुनि पुकार रथ चढ़े मुरारी॥

आगे श्रीकृष्णचन्द्रजी नगरके बाहर जाय वहां खड़े हुए कि जहां अति कोप किये शस्त्र लिये वे दोनों असुर लड़नेको उपस्थित थे प्रभुको देखतेही दन्तबक्र महा अभिमान कर बोला कि हे कृष्ण तू पहले अपना शस्त्र चलाय ले पीछे मैं तुझे मारूंगा इतनी बात मैंने इस लिये तुझे कही कि मरते समय तेरे मनमें यह अभिलाषा न रहे कि मैंने दन्तबक्र पर शस्त्र न किया तुने तो बड़े बड़े बली मारे हैं पर अब मेरे हाथसे जाता नाबचेगा महाराज ऐसे कितने एक दुष्ट बचन कह दन्तबक्रने प्रभु पर गदा चलाई सो हरिने सहजही काट गिराई पुनि दूसरी गदा ले हरिसे महायुद्ध करने लगा तब तो भगवानने उसे मार गिराया औ उसका जी निकल प्रभुके मुखमें समाया॥

आगे दन्तबक्रका मरना देख बिदूरथ जो युद्ध करनेको चढ़ आया तोंहीं श्रीकृष्णजीने सुदरशनचक्र चलाया उसने बिदूरथका शिर मुकुट कुण्डल समेत काट गिराया पुनि सब असुरदलको मार भगाया तत्काल॥

फूले देव पुहुप बरषावैं। किन्नर चारण हरि यश गावैं॥
सिद्ध साधु विद्याधर सारे। जय जय चढ़े बिमान पुकारे॥

पुनि सब बोले कि महाराज आपनी लीला अपरम्पार है कोई

इसका भेद नहीं जानता प्रथम हिरणकश्यप औ हिरणाक्ष भये पीछे रावण औ कुम्भकरण अब ये दन्तवक्त्र औ शिशुपाल हो आये तुमने तीनों बेर इन्हें मारा औ परम मुक्ति दी इससे तुम्हारी गति कुछ किसूसे जानी नहीं जाती महाराज इतना कह देवता तो प्रभुको प्रणाम कर चले गये औ हरि बलरामजीसे कहने लगे कि भाई कौरव औ पाण्डवोंसे हुई लड़ाई अब क्या करें बलदेव जी बोले कृपानिधान कृपाकर आप हस्तिनापुरको पधारिये तो रथ यात्रा कर पीछेसे मैंभी आता हूं इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज यह बचन सुन श्रीकृष्णचन्द्रजी तो वहां को पधारे जहां कुरुक्षेत्रमें कौरव औ पाण्डव महाभारत युद्ध करते थे औ बलरामजी तीरथ यात्राको निकले आगे सब तीरथ करते करते बलदेवजी नीमषारमें पहुंचे तो वहां क्या देखते हैं कि एक ओर ऋषि मुनि यज्ञ रच रहे हैं औ एक ओर ऋषि मुनिकी सभामें सिंहासन पर बैठे सूतजी कथा बांच रहे हैं इन को देखतेही शौनकादि सब मुनि ऋषियोंने उठ कर प्रणाम किया औ सूत सिंहासनपर गद्दी लगाये बैठा देखता रहा॥

महाराज सूतके न उठतेही बलरामजीने शौनकादि सब ऋषि मुनियोंसे कहा कि इस मूरखको किसने बक्ता किया औ व्यास आसन दिया बक्ता चाहिये भक्तिवन्त बिबेकी औ ज्ञानी यह है गुणहीन कृपण औ अति अभिमानी पुनि चाहिये निर्लोभी औ परमारथी यह है महालोभी औ आप स्वारथी ज्ञानहीन अबिवेकीको यह व्यास गादी फबती नहीं इसे मारें तो क्या पर यहांसे निकाल दिया चाहिये इस बातके सुनतेही शौनकादि बड़े बड़े मुनि ऋषि अतिबिनती कर बोले कि महाराज तुम हो बीर धीर सकल धर्मनीतिके जान यह है कायर अधीर अबिवेकी अभिमानी अज्ञान इसका अपराध क्षमा कीजे क्योंकि यह व्यास

गादीपर बैठा है औ ब्रह्माने यज्ञ कर्मके लिये हुये यहां स्थापित किया है।

आसन गर्व मूढ़ मन धरैगा। उठि प्रणाम तुम को नहिं करै।
यही न म याको अपराध। परी चूक है तो यह साध।
सूतहिं मारे पातक होय। जगमें भलो कहै नहिं कोय।
निर्फल बचन न जाय तिहारो। वह तुम निज मनमांहि बिचारौ।

महाराज इतनी बातके सुनतेही बलरामजीने एक कुश उठाय सहज सुभाव सूतको मारा उसके लगते वह मर गया यह चरित्र देख शौनकादि ऋषि मुनि हाहाकार कर अति उदास हो बोले कि महाराज जो बात होनी थी सो तो हुई पर अब कृपाकर हमारी चिन्ता मेटिये प्रभु बोले तुम्हें किस बातकी इच्छा है सो कहो हम पूरीकर मुनियोंने कहा महाराज हमारे यज्ञ करनेमें किसी बातका विघ्न न होय यही हमारी बासना है सो पूरी कीजे औ जगतमें यश लीजे इतना बचन मुनियोंके मुखसे निकलतेही अन्तरजामी बलरामजीने सूतके पुत्रको बुलवाय व्यासगादी पर बैठायके कहा यह अपने बापसे अधिक बक्ता होगा औ मैंने इसे अमर पद दे चिरञ्जीव किया अब तुम निचिन्ताईसे यज्ञ करो इति।

७९ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज बलरामजीकी आज्ञा पाय शौनकादि सब ऋषि मुनि अति प्रसन्न हो जों यज्ञ करने लगे तों वल्वल नाम दैत्य इल्वलका बेटा आय महा मेघकर बादल गरजाय बड़ी भयङ्कर अति काली आंधी चलाय लगा आकाशसे रुधिर औ मलमूत्र बरषावने और अनेक अनेक उपद्रव मचाने।

महाराज दैत्यकी यह अनीति देखि बलदेवजीने हल मूसलका आवाहन किया वे आय उपस्थित हुए पुनि महा क्रोधकर प्रभुने बल्वलको हलसे खैंच एक मूसल उसके शिरमें ऐसा मारा कि।

फूटगो मस्तक छूटे प्राण। रुधिर प्रवाह भयो तिहिं थान।

कर भुज धारि परैगा बिकरार। निकले लोचन राते बार॥

बल्वलके मरतेही सब मुनियोंने अति सन्तुष्ट हो बलदेवजीकी पूजा की औ बहुतसी स्तुतिकर भेंट दी फिर बलराम सुखधाम वहांसे बिदा हो तीरथ यात्राको निकले तो महाराज सब तीरथ कर पृथ्वी प्रदक्षिणा करते करते वहां पहुंचे कि जहां कुरुक्षेत्रमें दुर्योधन औ भीमसेन महायुद्ध करते थे औ पाण्डव समेत श्रीकृष्णचन्द्र औ बड़े बड़े राजा खड़े देखते थे बलरामजीके जातेही दोनों बीरोंने प्रणाम किया एकने गुरुजान दूसरेने बन्धु मान महाराज उन दोनोंको लड़ता देख बलदेवजी बोले॥

सुभट समान प्रबल दोऊ बीर। अब संग्राम तजहु तुम धीर॥
कौरव पण्ड़ौ राखहु बंश। बन्धु मित्र सब भये बिध्वंस॥
ह्वैक सुनि बोले शिरनाय। अब रण ते उतरेंगा नहिं जाय॥

पुनि दुर्योधन बोला कि गुरुदेव मैं आपके सनमुख झूठ नहीं भाखता आप मेरी बात मन दे सुनिये यह जो महाभारत युद्ध होता है औ लोग मारे गये औ जाते हैं औ जांयगे सो तुम्हारे भाई श्रीकृष्णचन्द्रजीके मतसे पाण्डव केवल श्रीकृष्णजीके बलसे लड़ते हैं नहीं इनकी क्या सामर्थ थी जो ये कौरवोंसे लड़ते ये बापुरे तो हरिके बश ऐसे हो रहे हैं कि जैसे काठकीपुतली नटुवके बश होय जिधर वह चलावे तिधर वह चले उनको यह उचित न था जो पाण्डवोंकी सहायता कर हमसे इतना द्वेश करें दुःशासनकी भीमसे भुजा उखड़ाई औ मेरी जांघमें गदा लगवाई तुमसे अधिक क्या कहेंगे इस समय॥

जो हरि करैं सोइ अब होय। ये बातें जानै सब कोय॥

यह बचन दुर्योधनके मुखसे निकलतेही इतना कह बलरामजी श्रीकृष्णचन्द्रके निकट आये कि तुमभी उपाध करनेमें कुछ घाट नहीं औ बोले कि भाई तुमने यह क्या किया जो युद्ध करवाय दुःशासनकी भुजा उखड़ाई औ दुर्योधनकी जांघ कटवाई यह ध

र्मयुद्धकी रीति नहीं है कि कोई बलवान हो किसीकी भुजा उ
खाड़े के कटिके नीचे शस्त्र चलावे हां धर्मयुद्ध वह है कि एक एक
को ललकार सनमुख शस्त्र करे श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि भाई तुम
नहीं जानते ये कौरव बड़े अधर्मी अन्याई हैं इनकी अनीति
कुछ कही नहीं जाती पहले इन्होंने दुःशासन शकुन भगदत्तके
कहे जुआ खेल कपटकर राजा युधिष्ठिरका सर्बस जीत लिया
दुःशासन द्रौपदीको हाथ पकड़ लाया इससे उसके हाथ भीमसे
नने उखाड़े दुर्योधनने सभाके बीच द्रौपदीको जांघपर बैठनेको
कहा इसीसे उसकी जांघ काटी गई॥

इतना कह पुनि श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि भाई तुम नहीं जानते
इसी भांतिकी जो जो अनीति कौरवोंने पाण्डवोंके साथकी हैं
सो हम कहांतक कहैंगे इससे यह भारतकी आग किसी रीतिसे
अब न बुझेगी तुम इसका कुछ उपाय मत करो महाराज इतना
बचन प्रभुके मुखसे निकलते ही बलरामजी कुरुक्षेत्रसे चलि द्वारि
कापुरीमें आये औ राजा उग्रसेनसे भेटकर हाथ जोड़ कहने
लगे कि महाराज आपके पुण्य प्रतापसे हम सब तीरथ यात्रा
तो कर आये पर अपराध हमसे हुवा राजा उग्रसेन बोले सो
क्या बलरामजीने कहा महाराज नीमषारमें जाय हमने सूत
को मारा तिनकी हत्या हमें लगी अब आपकी आज्ञा होय तो
पुनि नीमषार जाय यज्ञके दरशन कर तीरथ न्हाय हत्यका पाप
मिटाय आवें पीछे ब्राह्मण भोजन करवाय जातको जिमावें जिस
में यश पावें राजा उग्रसेन बोले अच्छा आप हो आइये महारा
ज राजाकी आज्ञा पाय बलरामजी कितने एक यदुबंशियोंको
साथ ले नीमषार जाय स्नान दानकर शुद्ध हो आय पुनि पुरोहि
तको बुलाय होम करवाय ब्राह्मण जिमाय जातको खिलाय लोक
रीतिकर पवित्र हुए इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले
महाराज॥

औ यह चरित सुनै मन लाय। ताको सबही पाप नशाय॥

इति। ८० अध्याय॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज अब मैं सुदामाकी कथा कहता हूं कि जैसे वह प्रभुके पास गया औ उसका दरिद्र कटा सो तुम मन दे सुनो दक्षिण दिशाकी ओर है एक द्रविड़ देश तहां विप्र औ वणिक बसे थे नरेश जिनके राजमें घर घर होता था भजन सुमिरण औ हरिका ध्यान पुनि सब करते थे तप यज्ञ धर्म दान और साधु सन्त गौ ब्राह्मणका सनमान॥

ऐसे बसैं सबै तिहिं ठौर। हरि बिन कछू न जानै और॥

तिसी देशमें सुदामा नाम ब्राह्मण श्रीकृष्णचन्द्रका गुरुभाई अति दीन तनक्षीन महादरिद्री ऐसा कि जिसके घर पै न घास न खानेको कुछ पास रहता था एक दिन सुदामाकी स्त्री दरिद्रसे अति घबराय महादुख पाय पतिके निकट जाय भय खाय डरती कांपती बोली कि महाराज अब इस दरिद्रके हाथसे महादुख पाते हैं जो आप इसे खोया चाहिये तो मैं एक उपाय बताऊं ब्राह्मण बोला सो क्या कहो तुम्हारे परम मित्र त्रिलोकी नाथ द्वारिकाबासी श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द हैं जो उनके पास जाओ तो यह जाय क्योंकि वे अर्थ धर्म काम मोक्षके दाता हैं॥

महाराज जब ब्राह्मणीने ऐसे समझाय कर कहा तब सुदामा बोला कि हे प्रिये बिन दिये श्रीकृष्णचन्द्रभी किसीको कुछ नहीं देते मैं भली भांतिसे जानता हूं कि जन्मभर मैंने किसीको कभी कुछ नहीं दिया बिन दिये कहांसे पाऊंगा हां तेरे कहेसे जाऊंगा तो श्रीकृष्णजीके दरशन कर आऊंगा इस बातके सुनतेही ब्राह्मणीने एक अति पुराने मैले बस्त्रमें थोड़ेसे चांवल बांध ला दिये प्रभुकी भेंटके लिये और डोर लोटा औ लाठी ला आगे धरी तब तो सुदामा डोर लोटा कांधे पर डाल चांवलकी पोटली कांख में दबाय लाठी हाथमें ले गणेशको मनाय श्रीकृष्णचन्द्रजीका ध्या

न कर द्वारिकापुरीको पधारा॥

महाराज बाटहीमें चलते चलते सुदामा मनहीमन कहने लगा कि भला धन तो मेरी प्रारब्धमें नहीं पर द्वारिका जानेसे श्रीकृष्णचन्द्रका दरशन तो करूंगा इसी भांतिसे शोच बिचार करता करता सुदामा तीन पहरके बीच द्वारिकापुरीमें पहुंचा तो क्या देखता है कि नगरके चारोंओर समुद्र है औ बीचमें पुरी वह पुरी कैसी है कि जिसके चहुंओर बन उपवन फूल फल रहे हैं तड़ाग बापी इन्दारों पर रंहट परोहे चल रहे है ठौर ठौर गायोंके यूथके यूथ चर रहे हैं तिनके साथ ग्वाल बाल न्यारे ही कुतूहल करते हैं॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज सुदामा बन उपबनकी शोभा निरख पुरीके भीतर जाय देखे तो कञ्चनके मणिमय मन्दिर महा सुन्दर जगमगाय रहे हैं ठांव ठांव अथाइयोंमें यदुबंशी इन्द्रकीसी सभा किये बैठे हैं हाठ बाट कोहटोंमें नानाप्रकारकी बस्तु बिक रही हैं घर घर जिधर तिधर गान दान हरि भजन औ प्रभुका यश हो रहा है औ सारे नगर निवासी महाआनन्दमें हैं महाराज यह चरित्र देखता देखता औ श्रीकृष्णचन्द्रका मन्दिर पूछता पूछता सुदामा जा प्रभूकी सिंह पौरपर खड़ा हुवा इसने किसीसे डरते डरते पूछा कि श्रीकृष्णचन्द्रजी कहां बिराजते हैं उसने कहा कि देवता आप मन्दिरके भीतर जाओ सनमुखही श्रीकृष्णचन्द्रजी रत्न सिंहासन पर बैठे हैं॥

महाराज इतना बचन सुन सुदामा जों भीतर गया तों देखते ही श्रीकृष्णचन्द्र सिंहासनसे उतर आगे बढ़ भेंट कर अति प्यार से हाथ पकड़ उसे ले गये पुनि सिंहासन पर बिठाय पांव धोय चरणामृत लिया आगे चन्दन चरच अक्षत लगाय पुष्प चढ़ाय धूप दीप कर प्रभुने सुदामाकी पूजा की॥

इतनी करिके जोरे हाथ। कुशल क्षेम पूछत यदुनाथ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजासे कहा कि महाराज यह चरित्र देख श्रीरुक्मिणीजी समेत आठों पटरानियों औ सोलह सहस्र एक सौ रानियों और सब यदुबंशी जो उस समय वहां थे मनहीं मन यों कहने लगे कि इस दरिद्री दुर्बल मलीन भक्त हीन ब्राह्मणने ऐसा क्या अगले जन्ममें पुण्य किया था जो त्रिलोकी नाथ ने इसे इतना माना महाराज अन्तरजामी श्रीकृष्णचन्द्र उसकाल सबके मनकी बात समझ उनका संदेह मिटाने को सुदामासे गुरुके घरकी बातें करने लगे कि भाई तुम्हें वह सुध है जो एक दिन गुरुपतनीने हमें इन्धन लेने भेजा था औ जब बनसे इन्धन ले गठड़िया बांध शिर पर धर घरको चले तब आंधी और मेह आया औ लगा मूसलधार बरषने जल थल चारोंओर भर गया हम तुम भींगकर महादुख पाय जाड़ा खाय रातभर एक वृक्षके नीचे रहे भोरही गुरुदेव बनमें ढूंढ़ने आये औ अति करुणा कर असीस दे हमें तुम्हें अपने साथ घर लिवाय लाये॥

इतना कह पुनि श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले कि भाई जबसे तुम गुरुदेवके यहांसे बिछड़े तबसे हमने तुम्हारा समाचार न पाया था कि कहां थे औ क्या करते थे अब आय दरश दिखाय तुमने हमें महासुख दिया औ घर पवित्र किया सुदामा बोला कृपासिन्धु दीनबन्धु स्वामी अन्तरजामी तुम सब जानते कोई बात संसारमें ऐसी नहीं जो तुमसे छिपी है इति॥

८१ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज अन्तरजामी श्रीकृष्णजीने सुदामाकी बात सुन औ उसके अनेक मनोरथ समझ हंसकर कहा कि भाई भाभीने हमारे लिये क्या भेंट भेजी है सो देते क्यों नहीं कांखमें किस लिये दबाय रहे हो महाराज यह बचन सुन सुदामा तो सकुचाय मुरझाय रहा औ प्रभुने झट चांवलकी पोटली

उसकी कांखसे निकाल ली पुनि खोल उसमेंसे अति रुचि कर दो मुट्ठी चांवल खाये और जों तीसरी मुट्ठी भरी तों श्रीरुक्मिणी ने हरिका हाथ पकड़ा औ कहा कि महाराज आपने दो लोक तो इसे दिये अब अपने रहनेकोभी कोई ठौर रक्खोगे कि नहीं यह तो ब्राह्मन सुशील कुलीन अति बैरागी महात्यागीसा दृष्ट आता है क्योंकि इसे बिभव पानसे कुछ हर्ष न हुवा इससे मैंने जाना कि ये लाभ हान समान जानते हैं इन्हें पानका हर्ष न जानेका शोक॥

इतनी बात रुक्मिणीजीके मुखसे निकलतेही श्रीकृष्णचन्द्रजी ने कहा कि हे प्रिये यह मेरा परम मित्र है इसके गुन मैं कहांतक बखानू सदा सर्व्वदा मेरे स्नेहमें मगन रहता है और उसके आगे संसारके सुखको तृणवत समझता है॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज ऐसे अनेक प्रकारकी बातें कर प्रभु रुक्मिणीजीको समझाय सुदामाको मन्दिरमें लिवायले गये आगे षटरस भोजन करवाय पान खिलाय हरिने सुदामाको फेनसी सेज पर ले जाय बैठाया वह पंथका हारा थका तो थाही सेज पर जाय सुख पाय सो गया प्रभुने उस समय बिश्वकर्माको बुलायके कहा कि तुम अभी जाय सुदामके मन्दिर अति सुन्दर कञ्चन रत्नके बनाय तिनमें अष्टसिद्धि नव निद्धि धर आओ जो इस किसी बातकी आकांक्षा न रहे इतना बचन प्रभुके मुखसे निकलतेही बिश्वकर्मा वहां जाय बातकी बातमें बनाय आया औ हरिसे कह अपने स्थानको गया॥

भोर होतेही सुदामा उठ स्नान ध्यान भजन पूजासे निचिन्त होय प्रभुके पास बिदा होने गया उस समय श्रीकृष्णचन्द्रजी मुखसे तो कुछ न बोल सके पर प्रेममें मगन हो आंखे डबडबाय शिथल हो देख रहे सुदामा बिदा हो प्रणामकर अपने घरको चला औ

पन्थमें जाय मनही मन बिचार करने लगा कि भला भया जो मैंने प्रभुसे कुछ न मांगा जो उनसे कुछ मांगता तो वे देते तो स ही पर मुझे लोभी लालची समझते कुछ चिन्ता नहीं ब्राह्मणीको मैं समझाय लूंगा श्रीकृष्णचन्द्रजीने मेरा अति मान सनमान किया औ मुझे निर्लोभी जाना यही मुझे लाख है महाराज ऐसे सोच बिचार करता करता सुदामा अपने गांवके निकट आया तो क्या देखता है कि न वह ठाव है न वह टूटी मढ़ैया वहां तो एक इन्द्रपुरीसी बस रही है देखतेही सुदामा अति दुखित हो कहने लगा कि हे नाथ तुने यह क्या किया एक दुख तो थाही दुसरा और दिया यहांसे मेरी झोंपड़ी क्याहुई औ ब्राह्मणी क हां गई किसे पूछूं औ किधर ढूंढूं॥

इतना कह द्वार पर जाय सुदामाने द्वारपालसे पूछा कि ये मन्दि र अति सुन्दर किसके हैं द्वारपालने कहा श्रीकृष्णचन्द्रके मित्र सुदामाके हैं यह बात सुन जों सुदामा कुछ कहनेको हुआ तों भीतरसे देख उसकी ब्राह्मणी अच्छे बस्त्र आभूषण पहने नख सि खसे सिङ्गार किये पान खाये सुगन्ध लगाय सखियांको साथ लि य पतिके निकट आई॥

प्रायन पर पाटम्बर डारे। हाथ जोर ये वचन उचारे॥
ठाढ़े क्यों मन्दिर पग धारो। मन सों सोच करो तुम न्यारो॥
तुम पाछें बिशकर्मा आये। तिन मन्दिर पल मांझ बनाये॥

महाराज इतनी बात ब्राह्मणीके मुखसे सुन सुदामाजी मन्दिर में गये औ अति बिभौ देख महा उदास भये ब्राह्मणी बोली स्वा मी धन पाय लोग प्रसन्न होते हैं तुम उदास हुए इसका कारण क्या है सो कृपा कर कहिये जो मेरे मनका संदेह जाय सुदामा बोले कि हे प्रिये यह माया बड़ी ठगनी है इसने सारे संसारको ठगा है ठगती है औ ठगेगी सो प्रभुने मुझे दी औ मेरे प्रेमकी प्रतीति न की मैंने उनसे कब मांगी थी जो उन्होंने मुझे दी द

सोसे मेरा चित उदास है ब्राह्मणी बोली स्वामी तुमने तो श्रीकृ
ष्णचन्द्रजीसे कुछ न मांगा थी पर वे अंतरजामी घट घटकी जा
नते हैं मेरे मनमें धनकी बासना थी सो प्रभुने पूरी कि तुम अ
पने मतमें और कुछ मत समझो इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव
जीने राजा परीछितसे कहा कि महाराज इस प्रसङ्गको जो सदा
सुने सुनावेगा सो जन जगतमें आय दुख कभी न पावेगा औ अ
न्तकाल बैकुण्ठ धाम जावेगा इति ॥

८२ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज अब मैं प्रभुके कुरुक्षेत्र जानेकी कथा कहता हूं तुम चित दे सुनो कि जैसे द्वारिकासे सब यदुवंशियोंको साथ ले श्रीकृष्णचन्द्र औ बलरामजी सूर्यग्रहण न्हाने कुरुक्षेत्र गये राजाने कहा महाराज आप कहिये मैं मन दे सुनता हूं पुनि श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एक समय सूर्यग्रहणके समाचार पाय श्रीकृष्णचन्द्र औ बलदेवजीने राजा उग्रसेनके पास जायके कहा कि महाराज बहुत दिन पीछे सूर्यग्रहण आया है जो इस पर्व्वको कुरुक्षेत्रमें चलकर कीजे तो बड़ा पुण्य होय क्योंकि शास्त्रमें लिखा है कि कुरुक्षेत्रमें जो दान पुण्य करिये सो सहस्र गुना होय इतनी बातके सुनतेही यदुवंशियोने श्रीकृष्णचन्द्रजीसे पूछा कि महाराज कुरुक्षेत्र ऐसा तीर्थ कैसे हुवा सो कृपाकर हमें समझायके कहिये ॥

श्रीकृष्णजी बोले कि सुनो यमदग्नि ऋषि बड़े ज्ञानी ध्यानी तपस्वी तेजस्वी थे तिनके तिन पुत्र हुए उनमें सबसे बड़े परशुराम सो बैराग कर घर छोड़ चित्रकूटमें जाय औ रहे सदाशिवकी तपस्या करने लगे लड़कोंके होतेही यमदग्नि ऋषि गृहस्थाश्रम छोड़ बैराग कर स्त्रीसहित बनमें जाय तप करने लगे उनकी स्त्री का नाम रेणुका सो एक दिन अपनी बहनको नोतने गई उसकी बहन राजा सहस्रार्जुनकी स्त्रीथी नोता देतेही अहङ्कार कर रा

र्जुनकी रानी रेणुकाकी बहन हंसकर बोली कि बहन तुम हमें हमारे कटक जिमाय सको तो दो नहीं तो न दो॥

महाराज यह बात सुन रेणुका अपनासा मुह ले चुपचाप वहा से उठ अपने उठ अपने घर आई इसे उदास देख यमदग्नि ऋषिने पूछा कि आज क्या है जो तू अनमनी हो रही है महाराज बातके पूछतेही रेणुकाने रोकर सब जोंकी तों बात कही सुनते ही यमदग्नि ऋषिने स्त्रीसे कहा कि अच्छा तू जायके अभी अपनी बहनको कटक समेत नोत आ पतिकी आज्ञा पाय रेणुका बहनके घर जाय नोत आई उसकी बहनने अपने स्वामीसे कहा कि कल तुम्हें हमें दल समेत यमदग्नि ऋषिके यहां भोजन करने जाना है स्त्रीकी बात सुन अच्छा कह वह हंसकर चुप हो रहा भोर होतेही यमदग्नि उठ कर राजा इन्द्रके पास गये औ कामधेनु मांग लाये पुनि जाय राजा सहस्रार्जुनको बुलाय लाये वह कटक समेत आया तिसे यमदग्निजीने इच्छा भोजन खिलाया॥

कटक समेत भोजन कर राजा सहस्रार्जुन अति लज्जित हुवा औ मनहीं मन कहने लगा कि इसने इतने लोगोंको खानेकी सामग्री रात भरमें कहां पाई औ कैसे बनाई इसका भेद कुछ जाना नहीं जाता इतना कह बिदा होय उसने अपने घर जाय यों कह एक ब्राह्मणको भेज दिया कि देवता तुम यमदग्निके घर जाय इस बातका भेद लाओ कि उसने किसके बलसे एक दिनके बीच मुझे कटक समेत नोत जिमाया इतनी बातके सुनतेही ब्राह्मण ने झट जाय देख आय सहस्रार्जुनसे कहा कि महाराज उसके घर में कामधेनु है उसीके प्रभावसे उसने तुम्हें एक दिनमें नोत जिमाया यह समाचार सुन सहस्रार्जुनने उसी ब्राह्मणसे कहा कि देवता तुम जाय हमारी ओरसे यमदग्नि ऋषिसे कहो कि सहस्रार्जुनने कामधेनु मांगी है॥

बातके सुनतेही वह ब्राह्मण वहांसे ले ऋषिके पास गया औ

उसने सहस्रार्जुनकी कही बात कही ऋषि बोले कि यह गाय हमारी नहीं जो हम दें यह तो राजाइन्द्रकी है हम इसे दे नहीं सकते तुम जाय अपने राजासे कहो बातके कहतेही ब्राह्मणने आय राजा सहस्रार्जुनसे कहा कि महाराज ऋषिने कहा है कामधेनु हमारी नहीं यह तो राजा इन्द्रकी है इसे हम दे नहीं सकते इतनी बात ब्राह्मणके मुखसे निकलतेही सहस्रार्जुनने अपने कितने एक योधाओंको बुलायके कहा तुम अभी जाय यमदग्निके घरसे कामधेनु खोल लाओ॥

स्वामीकी आज्ञा पाय योधा ऋषिके स्थानपर गये औ जों धेनुको खोल यमदग्निके सनमुख हो ले चले तों ऋषिने दौड़कर बाटमें जाय कामधेनुको रोका यह समाचार पाय क्रोधकर सहस्रार्जुनने आ ऋषिका शिर काटडाला कामधेनु भाग इन्द्रके यहां गई रेणुका आय पतिके पास खड़ी भई॥

शिर खसोट लोटत फिरै, बैठि रहैगहि पाय।
छाती पीटै रुदन करि, पियपिय कहि बिललाय॥

उसकाल रेणुकाका बिलबिलाना औ रोना सुन दशों दिशाके दिगपाल कांप उठे औ परशुरामजीका तप करते आसन डिगा औ ध्यान छूटा ध्यानके छूटतेही ज्ञानकर परशुरामजी अपना कुठार ले वहां आये जहां पिताकी लोथ पड़ी थी औ माता पीटती खड़ी थी देखतेही परशुरामजीको महा कोप हुवा इसमें रेणुकाने पतिके मारे जानेका सब भेद पुत्रको रो रो कह सुनाया बातके सुनतेही परशुरामजी इतना कह वहां गये जहां सहस्रार्जुन अपनी सभामें बैठा था कि माता पहले मैं अपने पिताके बैरीको मारि आऊं तब आय पिताको उठाऊंगा उसे देखतेही परशुरामजी कोपकर बोले॥

अरे क्रूर कायर कुल द्रोही। तातमारि दुख दीनों मोही॥

ऐसे कह जब फरसा ले परशुरामजी महाकोपमें आये तब वह

भी धनुषबाण ले इनके सोंहीं खड़ा हुआ दोनों बली महायुद्ध करने लगे निदान लड़ते लड़ते परशुरामजीने चार घड़ीके बीच सहस्रार्जुनको मार गिराया पुनि उसका कटक चढ़ि आया तिसेभी इन्होंने उसीके पास काटडाला फिर वहांसे आय पिताकी गति करी औ माताको समझाय पुनि उसी ठौर परशुरामजीने रुद्र यज्ञ किया तभीसे वह स्थान क्षेत्र कहकर प्रसिद्ध हुवा वहां जाकर ग्रहणमें जो कोई स्नान दान तप यज्ञ करता है उसे सहस्र गुना फल होता है॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज इस प्रसङ्गके सुनतेही सब यदुबंशियोंने प्रसन्न हो श्रीकृष्णजीसे कहा कि महाराज शीघ्र कुरुक्षेत्रको चलिये अब बिलम्ब न करिये क्योंकि पर्वपर पहुंचा चाहिये बातके सुनतेही श्रीकृष्णचन्द औ बलरामजीने राजा उग्रसेनसे पूछा कि महाराज सबकोई कुरुक्षेत्रको चलेगा यहां पुरीकी चौकसीको कौन रहेगा राजा उग्रसेनने कहा अनिरुद्धजीको रख चलिले राजाकी आज्ञा पाय प्रभुने अनिरुद्धको बुलाय समझायकर कहा कि बेटा तुम यहां रहो गौ ब्राह्मणकी रक्षा करो औ प्रजाको पालो हम राजाजीके साथ सब यदुबंशियों समेत कुरुक्षेत्र न्हाय आवें अनिरुद्धजीने कहा जो आज्ञा महाराज एक अनिरुद्धजीको पुरीकी रखवालीमें छोड़ सूरसेन वसुदेव उद्धव अक्रूर कृतबरमा आदि छोटे बड़े सब यदुबंशी अपनी अपनी स्त्रियों समेत राजा उग्रसेनके साथ कुरुक्षेत्र चलनेको उपस्थित हुए जिस समै कटक समेत राजा उग्रसेनने पुरीके बाहर डेरा किया उसकाल सब जाय मिले तिनके पीछेसे श्रीकृष्णचन्दजीभी भाई भौजाईको साथ ले आठों पटरानी औ सोलह सहस्र आठ सौ रानी औ बेटों पोतों समेत जाय मिले प्रभुके पहुंचतेही राजा उग्रसेनने वहांसे डेरा उठाया औ राजा इन्द्रकी भांति बड़ी धूमधामसे आगेको प्रस्थान किया॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज कितने एक दिनोंमें चले चले श्रीकृष्णचन्द्र सब यदुबंशियों समेत आनन्द मङ्गलसे कुरुक्षेत्रमें पहुंचे वहां जाय पर्व्वमें सबने स्नान किया औ यथाशक्ति हरएकने हाथी घोड़ा रथ पालकी वस्त्र शस्त्र रत्न आभूषण अन्न धन दान दिया पुनि वहां सबोंने डेरे डाले महाराज श्रीकृष्णचन्द्र औ बलरामजीके कुरुक्षेत्र जानेके समाचार पाय चहुंओरके राजा कुटुम्ब सहित अपनी अपनी सब सेना ले ले वहां आय श्रीकृष्ण बलरामजीको मिले पुनि सब कौरव पाण्डव भी अपना अपना दल ले सकुटुम्ब वहां जाय मिले उसकाल कुन्ती औ द्रौपदी यदुबंशियोंके रनवासमें जाय सबसे मिलीं आगे कुन्तीने भाईके सनमुख जाय कहा कि भाई मैं बड़ी अभागी जिस दिनसे मांगी उसी दिनसे दुख उठाती हूं तुमने जबसे व्याह दी तबसे मेरी सुध कभी न ली औ राम कृष्ण जो सबके हैं सुखदाई उनकोभी मेरी दया कुछ न आई महाराज इस बातके सुनतेही करुणाकर आंखें भर बसुदेवजी बोले कि बहन तू मुझे क्या कहती है इसमें मेरा कुछ बश नहीं कर्मकी गति जानी नहीं जाती हरि इच्छा प्रबल है देखो कंसके हाथ मैंनेभी क्या क्या दुख न पाया ॥

प्रभु आधीन सकल जग आय। कित दुख करो देख जग भाय ॥

महाराज इतना कह बहनको समझाय बुझाय बसुदेवजी वहां गये जहां सब राजा राजा उग्रसेनकी सभामें बैठे थे औ राजा दुर्योधन आदि बड़े बड़े नृप औ पाण्डव उग्रसेनहीकी बड़ाई करते थे कि राजा तुम बड़भागी हो जो सदा श्रीकृष्णचन्द्रका दरशन पाते हो औ जन्म जन्मका पाप गंवाते हो जिन्हें शिव बिरञ्चि आदि सब देवता खोजते फिरें सो प्रभु तुम्हारी सदा रक्षा करें जिनका भेद योगी यती मुनि ऋषि न पावें सो हरि तुम्हारी आज्ञा लेने आवें जो हैं सब जगके ईश वे देते तुम्हें असीस

सीस॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज ऐसे सब रा
जा आय आय राजा उग्रसेनकी प्रसंशा करते थे औ वे यथायोग
सबका समाधान इसमें श्रीकृष्ण बलरामजीका आना सुन नन्द उ
पनन्दभी सकुटुम्ब सब गोपी गोप ग्वालबाल समेत आन पहुंचे
स्नान दानसे सुचित हो नन्दजी वहां गये जहां पुत्र सहित वसु
देव देवकी बिराजते थे इन्हें देखतेही बसुदेवजी उठकर मिले
औ दोनोंने परस्पर प्रेम कर ऐसा सुखमाना कि जैसा कोई गई
बस्तु पाय सुख माने आगे वसुदेवजीने नन्दरायजीसे ब्रजकी पिछ
ली सब बात कह सुनाई जैसे नन्दरायजीने श्रीकृष्ण बलरामजी
को पाला था महाराज इस बातके सुनतेही नन्दरायजी नयनों
में नीर भर वसुदेवजीका मुख देख रहे उसकाल श्रीकृष्ण बलदे
वजी प्रथम नन्द यशोदाजीको यथायोग दण्डवत प्रणामकर पुनि
ग्वालबालोंसे जाय मिले तहां गोपियोंने आय हरिका चन्दमुख
निरख अपने नयन चकोरोंको सुख दिया औ जीतबका फल लिया
इतना कह श्रीशुकदेवजी बोले मिमहाराज वसुदेव देवकी
रोहणी श्रीकृष्ण बलरामसे मिल जो कुछप्रेम नन्द उपनन्द
यशोदा गोपी गोप ग्वालबालोंने किया सो मुझसेकहा नहीं
जाता वह देखेही बन आवै निदान सबको स्नेहमें निपट व्याकुल
देख श्रीकृष्णचन्दजी बोले कि सुनो॥

मेरी भक्ति जो प्राणी करै। भवसागर निर्भय सो तरै॥
तन मनधन तुम अर्पण किन्हौ। नेह निरन्तर कर मोहि चिन्हौ॥
तुम सम बड़ भागी नहो कोय। ब्रह्मा रुद्र इन्द्र कि न होय॥
योगेश्वरके ध्यान न आयो। तुम सङ्ग रह नित प्रेम बढ़ायो॥
हों सबहीके घट घट रहों। अगम अगाध जु बाणी कहों॥

जैसे पृथ्वी जल अग्नि बायु आकाशका है देहमें बास तैसे सब
घटमें मेरा है प्रकाश श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जब श्री

कृष्णचन्द्रने यह सब भेद कह सुनाया तब सब ब्रजबासियोंको धी रज आया इति॥

८३ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जैसे द्रौपदी औ श्रीकृष्णचन्द्र जीकी स्त्रियोंमें परस्पर बातें हुईं सो मैं प्रसङ्ग कहता हूं तुम सुनौ एक दिन कौरव औ पाण्डवोंकी स्त्रियां श्रीकृष्णचन्द्रजीकी नारियोंके पास बैठीं थीं औ प्रभुके चरित्र औ गुन गाती थीं इसमें कुछ बात जो चली तो द्रौपदीने श्रीरुक्मिणीजीसे कहा कि हे सुन्दरी कह तूने श्रीकृष्णचन्द्रजीको कैसे पाया श्रीरुक्मिणीजी बोलीं॥

सुनौ द्रौपदी तुम चित लाय। जैसे प्रभुने किये उपाय॥

मेरे पिताका तो मनोरथ था कि मैं अपनी कन्या श्रीकृष्णचन्द्रको दूं औ भाईने राजा शिशुपालको देनेका मन किया वह बरात लें व्याहनको आया औ श्रीकृष्णचन्द्रजीको मैंने ब्राह्मण भेज बुलाया व्याहके दिन मैं जों गौरीको पूजाकर घरको चली तों श्रीकृष्णचन्द्रजीने सब असुरदलके बीचसे मुझे उठाय ले रथमें बैठाय अपनी बाट ली तिस पीछे समाचार पाय सब असुरदल प्रभु पर आय टूटा सो हरिने सहजही मार भगाया पुनि मुझे ले द्वारिका पधारे वहां जातेही राजा उग्रसेन शूरसेन वसुदेवजीने वेदकी विधिसे श्रीकृष्णचन्द्रजीके साथ मेरा व्याह किया बिबाहके समाचार पाय मेरे पिताने बहुतसा यौतुक भिजवाय दिया॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज जैसे द्रौपदीजीने श्रीरुक्मिणीजीसे पूछा औ उन्होंने कहा तैसेही द्रौपदीजीने सत्यभामा जाम्बवती कालिन्दी भद्रा सत्या मित्रबिन्दा लक्ष्मणा आदि श्रीकृष्णचन्द्रकी सोलह सहस्र एक सौ आठ पटरानियोंसे पूछा औ एक एकने सब समाचार अपने अपने बिबाहका ब्यौर समेत कहा इति॥

८४ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज अब मैं सब ऋषियोंके आने की औ वसुदेवजीके यज्ञ करनेकी कथा कहता हूं तुम चित दे सुनौ महाराज एक दिन राजा उग्रसेन सूरसेन वसुदेव श्रीकृष्ण बलराम सब यदुबंषियों समेत सभा किये बैठे थे औ सब देश दे शके नरेश वहां उपस्थित थे कि इस बीच श्रीकृष्णचंद आनन्दक न्दके दरशनकी अभिलाषाकर व्यास बशिष्ठ विश्वामित्र बामदेव पराशर भृगु पुलस्ति भरद्वाज मारकण्डेय आदि अठाशी सहस्र ऋ षि वहां आये औ तिनके साथ नारदजीभी उन्हें देखतेही सभा की सभा सब उठ खड़ी हुई पुनि सब दण्डवत कर पाटन्बरके पां वड़े डाल सबको सभामें ले गये आगे श्रीकृष्णचंदने सबको आसन पर बैठाय पांव धोय चरणामृत ले पिया औ सारी सभापर छिड़ का फिर चन्दन अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य धर भगवानने सबकी पूजा कर परिक्रमा की पुनि हाथ जोड़ सनमुख खड़े हो हरि बो ले कि धन्य भाग हमारे जो आपने आय घरबैठे दरशन दिया साधका दरशन गङ्गाके स्नान समान है जिसने साधुका दरशन पाया उसने जन्म जन्मका पाप गंवाया इतनी कथा कह श्रीशुक देवजी बोले कि महाराज॥

श्रीभगवान वचन जब कहे। तब सब रिषि विचारत रहे॥

कि जो है जोतिस्वरूप सकल सृष्टिका करता सो जब यह बात क है तब और की किसने चलाई मनहींमन सब मुनियोंने जद इत ना कहा तद नारदजी बोले॥

सुनौ सभा तुम सब मन लाय। हरि माया जानी नहीं जाय॥

ये आपही ब्रह्मा हो उपजावते हैं विष्णु हो पालते हैं शिव हो संहारते हैं इनकी गति अपरम्पार है इसमें किसीकी बुद्धि कुछ काम नहीं करती पर इतना इनकी कृपासे हम जानते हैं कि साधोंके सुख देनेको औ दुष्टोंके मारनेको औ सनातन धर्म चला

नेको बार बार अवतार ले प्रभु आते हैं महाराज जों इतनी बात कह नारदजी सभासे उठनेको हुए तों वसुदेवजी सनमुख आय हाथजोड़ बिनती कर बोले कि हे ऋषिराय मनुष संसारमें आय कर्मसे कैसे छूटे सो कृपाकर कहिये महाराज यह बात वसुदेवजीके मुखसे निकलतेही सब मुनि ऋषि नारदजीका मुख देख रहे तब नारदजीने मुनियोंके मनका अभिप्राय समझ कर कहा कि हे देवताओ तुम। ईस बातका अचरज मत करो श्रीकृष्णकी माया प्रबल है इसने सारे संसारको जीत रक्खा है इसीसे वसुदेवजीने यह बात कही औ दुसरे ऐसेभो कहा है कि जो जन जिसके समीप रहता है वह उसका गुन प्रभाव औ प्रताप माया के वश हो नहीं जानता जैसे॥

गङ्गावासी अनतहि जाई। तजके गङ्ग कूप जल न्हाई॥
योंही यादव भये अयाने। नाहीं कछु कृष्ण गति जाने॥

इतनी बात कह नारदजीने मुनियोंके मनका संदेह मिटाय वसुदेवजीसे कहा कि महाराज शास्त्रमें कहा है जो नर तीरथ दान तप व्रत यज्ञ करता है सो संसारके बन्धनसे छूट परम गति पाता है ईस बातके सुनतेही प्रसन्न हो वसुदेवजीने बातकी बातमें सब यज्ञकी सामा मंगाय उपस्थित की औ ऋषियों औ मुनियोंसे कहा कि कृपाकर यज्ञका आरम्भ कीजे महाराज वसुदेवजी के मुखसे इतना बचन निकलतेही सब ब्राह्मणोंने यज्ञका स्थान बनाय संवारा इय बीच स्त्रियों समेत वसुदेवजी वेदीमें जा बैठे सब राजा औ यादव यज्ञकी टहलमें औ उपस्थित हुए॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजासे कहा कि महाराज जिस समय वसुदेवजी वेदीमें जाय बैठे उसकाल बेदकी बिधिसे मुनियोंने यज्ञका आरम्भ किया औ लगे वेदमन्त्र पढ़ पढ़ आहुति देने औ देवता सदेह भाग आय आय लेने महाराज जिसकाल यज्ञ होने लगा उसकाल उधर किन्नर गन्धर्व भेरी दुंदभी बजायर

गुण गाते थे चारण बन्दी जन यश बखानते थे उर्वशी आदि अ प्सरा नाचतीं थीं औ देवता अपने अपने बिमानोंमें बैठे फूल बरषाकते थे औ इधर सब मङ्गली लोग गाय बजाय मङ्गलाचार करते थे औ याचक जैजैकार इसमें यज्ञ पूरण हुवा औ वसुदे वजोने पूर्णाहुति दे ब्राह्मनोंको पाटम्बर पहराय अलंकृत कर रत्न धन बहुतसा दिया औ उन्होंने वेद मन्त्र पढ़ पढ़ आशीर्ब्बाद कि या आगे सब देश देशके नरेशोंकोभी वसुदेवजीने पहराया औ जिमाया पुनि उन्होंने यज्ञकी भेट कर कर बिदा हो अपनी अप नी बाट ली महाराज सब राजाओंके जातेही नारदजी समेत सा रे ऋषि मुनिभी बिदा हुए पुनि नन्दरायजी गोपी गोप ग्वालबा ल समेत जब वसुदेवजीसे बिदा होने लगे उस समयकी बात कु छ कही नहीं जाती इधर तो यदुबंशी करुणा कर अनेक अनेक प्रकारकी बातें करते थे औ उधर सब व्रजवासी उसका बखान कुछ कहा नहीं जाय वह सुख देखेही बनि आय निदान वसुदेव जी औ श्रीकृष्ण बलरामजीने सब समेत नन्दरायजीको समझाय बुझाय पहराय औ बहुतसा धन दे बिदा किया इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इस भांति श्रीकृष्णचन्द बलराम जी पर्ब न्हाय यज्ञकर सब समेत द्वारिकापुरीमें आये तो घर घर आनन्द मङ्गल भये बधाये इति॥

८५ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज द्वारिकापुरीके बीच एक दिन श्रीकृष्णचन्द औ बलरामजी जों वसुदेवजीके पास गये तों वे उन दोनों भाइयोंको देख ज्ञानबात मनमें बिचार उठ खड़े हुए कि कुरुक्षेत्रमें नारदजीने कहा था कि श्रीकृष्णचन्द जगतके करता हैं औ हाथजोड़ बोले कि हे प्रभु अलख अगोचर अबिनाशी सदा सेवती है तुम्हें कमला भई दासी तुम हो सब देवोंके देव कोई नहीं जानता तुम्हारा भेद तुम्हारोही जोति है चन्द सूरज पृ

घी आकाशमें तुम्हीं करतेहो सब ठौर प्रकाश तुम्हारी माया है प्रबल उसने सारे संसारको भुला रक्खा है त्रिलोकमें सुर नर मुनि ऐसा कोई नहीं जो उसके हाथसे बचा है महाराज इतना कह पुनि वसुदेवजी बोले कि नाथ।

कोऊ न भेद तुम्हारो जाने। वेदन मांझ अगाध बखाने॥
शत्रु मित्र कोऊ न तिहारो। पुत्र पिता न सहोदर प्यारो॥
पृथिवी भार हरण अवतरो। जनके हेत भेष बहु धरो॥

महाराज ऐसे कह वसुदेवजी बोले कि हे करुणासिन्धु दीनबन्धु जैसे आपने अनेक अनेक पतितोंको तारा तैसे कृपाकर मेरा भी निस्तार कीजे जो भवसागरके पार हो आपके गुन गाऊं श्रीकृष्णचन्द बोले कि हे पिता तुम ज्ञानी होय पुत्रोंकी बड़ाई क्यों करते हो तुम टुक आपही मनमें विचारो कि भगवतकी लीला अपरम्पार है उसका पार किसीके आजतक नहीं पाया देखो वह॥

घट घट माहि जोति ह्वे रहै। ताही सों जग निर्गुण कहै॥
आपही सिरजे आपही हरै। रहै मिलेया बांध्यो नहीं परै॥
भू आकाश वायु जल जोति। पञ्च तत्वते देह जो होति॥
प्रभुकी शक्ति सबनिमें रहै। वेद साहिं बिधि ऐसे कहै।

महाराज इतनी बात श्रीकृष्णजीके मुखसे सुनतेही वसुदेवजी मोह बश होय चुपकर हरिका मुख देख रहे तब प्रभु वहांसे चल माताके निकट गये तो पुत्रका मुख देखतेही देवकीजी बोली हे श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्द एक दुख मुझे जबहोतू तब सालै है प्रभु बोले सो क्या देवकीजीने कहा कि पुत्र तुम्हारे छह बड़े भाई जो कंसने मारडाले हैं उनका दुख मेरे मनसे नहीं जाता॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज बातके कहते श्रीकृष्णचन्द्रजी इतनी कह पातालपुरीको गये कि माता तुम अब मत कुढ़ो मैं अपने भाइयोंको अभी जाय ले आता हूं प्रभुके जातेही समाचार

पाय राजा बलि आय अति धूमधामसे पाटम्बरके पांवड़े डाल निज मन्दिरमें लिवाय ले गया आगे सिंहासन पर बिठाय राजा बलिने चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ाय धूप दीप नैवेद्य धर श्रीकृष्णचन्द्र की पूजा की पुनि सनमुख खड़ा हो हाथ जोड़ अति स्तुतिकर बोला कि महाराज आपका आना यहां कैसे हुवा हरि बोले कि राजा सतयुगमें मरीच ऋषि नाम एक ऋषि बड़े ब्रह्मचारी ज्ञानी सत्यबादी औ हरिभक्त थे उनकी स्त्रीका नाम ऊर्णा उसके छह बेटे एक दिन वे छहों भाई तरुण अवस्थामें प्रजापतिके सनमुख जा हंसे उनको हंसते देख प्रजापतिने महा कोपकर यह श्राप दिया कि तुम जाय अवतार ले असुर हो महाराज इस बातके सुनते ही ऋषि पुत्र अति भय खाय प्रजापतिके चरणोंपर जाय गिरे औ बहुत गिड़गिड़ाय अति बिनतीकर बोले कि कृपासिन्धु आपने श्राप तो दियापर अब कृपाकर कहिये कि इस श्रापसे हम कब मोक्ष पावेंगे उनके दीन बचन सुन प्रजापतिने दयाल हो कहा कि तुम श्रीकृष्णचन्द्रके दरशन पाय मुक्त होगे महाराज॥

इतनो कहत प्राण तज गये। ते हरिनाकुश पुत्र जु भये॥
पुनि बसुदेवके जन्मे जाय। तिनकों हत्यो कंसने आय॥
मारत तिन्हें माया ले आई। इह ठां राखि गई सुखदाई॥

उनका दुख माता देवकी करती हैं इसी लिये हम यहां आये हैं कि अपने भाईयोंको ले जाय माताको दीजे औ उनके चित्तकी चिन्ता दूर कीजे श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा इतना बचन हरिके मुखसे निकलतेही राजा बलिने छहों बालक ला दिये औ बहुतसी भेटें आगे धरीं तब प्रभु वहांसे भाइयोंका साथ ले माताके पास आये माता पुत्रोंको देख अति प्रसन्न हुई इस बातको सुन सारी पुरीमें आनन्द हुवा औ उनका श्राप छूटा इति॥

८६ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा जैसे द्वारिकासे अर्जुन श्रीकृष्णच

द्रजीकी बहन सुभद्राको हरि ले गये औ जैसे श्रीकृष्णचन्द्र मिथिलामें जाय रहे तैसे कथा मैं कहता हूं तुम मन लगाय सुनो। देवकीकी बेटी श्रीकृष्णजीसे छोटी जिसका नाम सुभद्रा जब व्याहन जोग हुई तब वसुदेवजीने कितने एक यदुबंशी औ श्रीकृष्ण बलरामजीको बुलायके कहा कि अब कन्या ब्यांहन जोग भई कहो किसे दें बलरामजी बोले कि कहा है ब्याह बैर प्रीति समानसे कीज एक बात मेरे मनमें आई है कि यह कन्या दुर्योधनको दीजे तो जगतमें यश औ बड़ाई लीजे श्रीकृष्णचन्द्रने कहा मेरे बिचारमें आता है जो अर्जुनको लड़की दें तो संसारमें यश लें श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज बलरामजीके कहने पर तो कोई कुछ न बोला पर श्रीकृष्णजीके मुखसे बात निकलतेही सब पुकार उठे कि अर्जुनको कन्या देना अति उत्तम है इस बातके सुनतेही बलरामजी बुरा मान वहांसे उठ गये औ उनका बुरा मानना देख सब लोग चुप रहे आगे ये समाचार पाय अर्जुन सन्यासीका भेष बनाय दण्ड कमण्डल ले द्वारिकामें जाय एक भलीसी ठौर देख मृगछाला बिछाय आसन मार बैठा॥

चार मास बरषा भरि रहैगे। काहू मरम न ताको लहेगे॥
अतिथि जान सब सेवन लागे। बिष्णु हेत तासों अनुरागे॥
वाको भेद कृष्ण सब जान्यौ। काहू सों तिन नाहिं बखान्यौ॥

महाराज एक दिन बलदेवजीभी जिमाने अर्जुनको साथकर घर लिवाय ले गये जो अर्जुन भोजन करने बैठे तो चन्द्रवदनी मृगलोचनी सुभद्राजी दृष्ट आई देखतेही उधर तो अर्जुन मोहित हो सबकी दीठ बचाय फिर फिर देखने लगे औ मनही मन यह बिचार करने कि देखिये बिधाता कब जन्मपत्रीकी बिधि मिलावे औ इधर सुभद्राजी इनके रूपकी छटा देख रीझ मन मन यों कहती थीं कि॥

है कोऊ नृपति नाहिं सन्यासी। को कारण यह भयो उदासी॥

महाराज इतना कह उधर तो सुभद्राजी घरमें जाय पतिके मिलनकी चिन्ता करने लगी औ इधर भोजन कर अर्जुन अपने आसनपर आय प्रियाके मिलनेको अनेक अनेक प्रकारकी भावना करने लगे इसमें कितने दिन पीछे एक समै शिवरात्रिके दिन सब पुरबासी क्या स्त्री क्या पुरुष नगरके बाहर शिव पूजनको गये तहां सुभद्राजी अपनी सखी सहेलियां समेत गईं उनके जानेका समाचार पाय अर्जुनभी रथपर चढ़ धनुष बाण ले वहां जाय उपस्थित हुए महाराज जों शिव पूजन कर सखियांको साथ ले सुभद्राजी फिरीं तों देखतेही शोच संकोच तज अर्जुनने हाथ पकड़ उठाय सुभद्राको रथमें बैठाय अपनी बाट ली॥

सुनिके राम कोप अति करैगो। हल मूसल ले कांधे धरैगो॥
राते नयन रक्तसे करे। घन सम गाज बोल उच्चरे॥
अबहीं जाय प्रलै मैं करि हौं। भू उठायकर माथे धरि हौं॥
मेरी बहन सुभद्रा प्यारी। ताकौं कैसे हरै भिखारी॥
अब हौ जहं सैन्य सो पाऊं। तिनको सब कुल बीज मिटाऊं॥

महाराज बलरामजी तो महाक्रोधमें बक झक रहेही थे कि इस बातके समाचार पाय प्रद्युम्न अनिरुद्ध सांब औ बड़े बूढ़े यादव बलदेवजीके सनमुख आय हाथ जोड़ जोड़ बोले कि महाराज हमें आज्ञा होय तो जाय शत्रुको पकड़ लावें॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जिस समय बलरामजी सब यदुवंशियोंको साथ ले अर्जुनके पीछे चलनेको उपस्थित हुए उसकाल श्रीकृष्णचन्दजीने जाय बलदेवजीको सुभद्रा हरणका सब भेद समझाय औ अति बिनतीकर कहा कि भाई अर्जुन एक तो हमारी फूफीका बेटा औ दूसरे परम मित्र उसने जाने अनजाने समझे बिन समझे यह कर्म किया तो किया पर हमें उससे लड़ना किसी भांति उचित नहीं यह धर्मबिरुद्ध औ लोक बिरुद्ध है इस बातको जो सुनेगा सो कहेगा कि यदुवं

गियोंकी प्रीति है बालूकीसी भीति इतनी बातके सुनतेही बल रामजी शिर धुन झझलाकर बोले कि भाई यह तुम्हाराही काम है कि आग लगाय पानीको दौड़ना नहीं तो अर्जुनकी क्या सामर्थ थी जो हमारी बहनको ले जाता इतना कह मनहीं मन पछताय ताव पेच खाय बलरामजी भाईका मुख देख हल मूसल परक बैठ रहे औ उनके साथ सब यदुबंशीभी॥

श्री शुकदेवजी बोले कि राजा इधर तो श्रीकृष्णचन्दजीने सब को समझाय बुझाय रक्खा औ उधर अर्जुनने घर जाय वेदकी विधिसे सुभद्राके साथ ब्याह किया ब्याहके समाचार पाय श्रीकृष्ण बलरामजीने बस्त्र आभूषण दास दासी हाथी घोड़े रथ औ बहुतसे रुपये एक ब्राह्मणके हाथ सङ्कल्प कर हस्तिनापुर भेज दिये आगे श्रीमुरारी भक्तहितकारी रथपर बैठ मिथिलाको चले जहां श्रुतदेव बहुलाश्व नाम एक ब्राह्मण एक राजा दो भक्त थे महाराज प्रभुके चलतेही नारद वामदेव व्यास अत्रि परशुराम आदि कितने एक मुनि आन मिले श्रीकृष्णचन्दजीके साथ हो लिये पुनि जिस देशमें हो प्रभु जाते थे तहांके राजा आगू आय आय पूज पूज भेंट धरते जाते थे निदान चले चले कितने एक दिनोंमें प्रभु वहां पधारे हरिके आनके समाचार पाय वे दोनों जैसे बैठे थे तैसेही भेंट ले उठ धाये औ श्रीकृष्णचन्दके पास आये प्रभुका दरशन करतेही दोनों भेंट धर दण्डवत कर हाथ जोड़ सनमुख खड़े हो अति बिनतीकर बोले कि हे कृपासिन्धु दीनबन्धु आपने बड़ी दया की जो हमसे पतितोंको दरशन दे पावन किया औ जन्म मरणका निबेड़ा चुका दिया॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज अन्तरजामी श्रीकृष्णचन्द उन दोनों भक्तोंके मनकी भक्ति देखि दो स्वरूप धारण कर दोनोंके घर जाय रहे उन्होंने मन मानता सब रावचाव किया औ हरिने कितने एक दिन वहां ठहर उन्हें अधिक सुख

दिया आगे प्रभु उनके मनका मनोरथ पुरा कर ज्ञान दृढ़ाय जब द्वारिकाको चले तब ऋषि मुनि पन्थसे बिदा हुए औ हरि द्वारिकामें जा बिराजे इति॥

८७ अध्याय।

इतनी कथा सुन राजा परीक्षितने श्रीशुकदेवजीसे पूछा कि महराज आप जो आगू कह आये कि वेदने परमेश्वरकी स्तुति की सो निरगुण ब्रह्मकी स्तुति वेदने क्योंकर की यह मुझे समझाकर कहो जो मेरे मनका संदेह जाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराजा सुनिये कि जिसने बुद्धि इन्द्रि मन प्राण धर्म अर्थ काम मोक्षको बनाया है सो प्रभु सदा निरगुन रूप रहता है पर जब ब्रह्माण्ड रचता है तब सगुण स्वरूप होता है इस्से निरगुण सगुण वही एक ईश्वर है॥

इतना कह पुनि शुकदेवमुनि बोले कि राजा जो प्रश्न तुमने किया सोई प्रश्न एक समय नारदजीने नरनारायणस की थी राजा परीक्षितने कहा कि महाराज यह प्रसङ्ग मुझे समझाकर कहिये जो मेरे मनका संदेह जाय शुकदेवजी बोले कि राजा सत्ययुगमें एक समै नारदजीने सतलोकमें जाय जहां नरनारायण अनेक मुनियोंके सङ्ग बैठे तप करते थे पूछा कि महाराज निराकार ब्रह्मकी स्तुति वेद किस भांति करते हैं सो कृपा कर कहिये नरनारायण बोले कि सुन नारद जो संदेह तुन मुझसे पूछा यही सन्देह एक समय जनलोकमें जहां सनातनादि ऋषि बैठे तप करते थे हुवा था तद सनन्दन मुनिने कथा कहि सबका संदेह मिटाया नारदजी बोले महाराज मैंभी तो वहीं रहता हूं जो यह प्रसङ्ग चलता तो मैंभी सुनता नरनारायणने कहा नारदजी जब तुम श्वेतद्वीपमें भगवत दरशनको गये थे तभी यह प्रसङ्ग चला था इस्से तुमने नहीं सुना॥

इतनी बात सुन नारदजीने पूछा महाराज वहां क्या प्रसङ्ग च

लाया सो कृपा कर कहिये नरनारायण बोले सुन नारद जद मुनियोंने यह प्रश्न की तद सनन्दन मुनि कहने लगे कि सुनो जिस समय महाप्रलय होय चौदह ब्रह्माण्ड जलाकार हो जाते हैं उस समै पूर्णब्रह्म अकेले सोते रहते हैं जब भगवानको सृष्टि करने की इच्छा होती है तब उनके स्वास्से वेद निकल हाथ जोड़ स्तुति करते हैं ऐसे कि जैसे कोई राजा अपने स्थान पर सोता हो औ बंदी जन भोरही उसका यश गाय गाय उसीको जगावें इस लिये कि चैतन्य हो शीघ्र अपने कार्यको करे॥

इतना प्रसङ्ग कह नरनारायण बोले कि सुन नारद प्रभुके मुख से निकल वेद यह कहते हैं कि हे नाथ बेग चैतन्य हो सृष्टि रचो औ जीवोंके मनसे अपनी माया दूर करो क्योंकि वे तुम्हारे रूप को पहचानें माया तुम्हारी प्रबल है यह सब जीवोंको अज्ञान कर रखती है जो इस्से छूटे तो जीवको तुम्हारे समझनेका ज्ञान हो हे नाथ तुम बिन इसे कोई बश नहीं कर सकता जिसके हृदयमें ज्ञानरूप हो तुम बिराजते हो सोई इस मायाको जीतता है नहीं तो किसकी सामर्थ है जो मायाके हाथसे बचे तुम सबके करता हो सब जीव तुम्हींमें समाते हैं ऐसे कि जैसे पृथ्वीसे अनेक वस्तु हो पुनि पृथ्वीमें मिल जाती है कोई किसी देवताकी पूजा स्तुति करे पर वह तुम्हारीही पूजा स्तुति होती है ऐसे कि जैसे कोई कञ्चनके अनेक आभरण बनाय अनेक नाम धरे पर वह कञ्चनही है तिसी भांति तुम्हारे अनेक रूप हैं और ज्ञान कर देखिये तो कोई कुछ नहीं जिधर देखिये तिधर तुम दृष्ट आते हो नाथ तुम्हारी माया अपरम्पार है यह सत रज तम तीन गुण हो तीन स्वरूप धारण कर सृष्टिको उपजाय पालन नाश करती है इसका भेद न किसीने पाया न कोई पावेगा इस्से जीव को उचित यह है कि सब बासना छोड़ तुम्हारा ध्यान करे इसी में इसका कल्याण है महाराज इतना प्रसङ्ग सुनाय नरनारायण

णने नारदसे कहा कि हे नारद जब सनन्दमुनिने पुरातन कथा कह सबके मनका संदेह दूर किया तब सनकादि मुनियोंने वेद की विधिसे सनन्दन मुनिको पूजा की॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि हे राजा यह नारद नारायणका संवाद जो कोई सुनेगा सो निस्सन्देह भक्ति पदारथ पाय मुक्त होगा जो कथा पूर्णब्रह्मकी वेदने गाई सोई कथा सनन्द नमुनिने सनकादि मुनियोंको सुनाई पुनि वही कथा नरनाराय णने नारदके आगे गाई नारदसे व्यासने पाई व्यासने मुझे पढ़ाई सो मैंने अब तुम्हें सुनाई इस कथाको जो जन सुने सुनावेगा सो मन मानता फल पावेगा जो पुन्य होता है तप यज्ञ दान व्रत तीर्थ करनेमें सोई पुन्य होता है इस कथाके कहने सुननेमें इति॥

८८ अध्याय॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज भगवतकी अद्भुत लीला है इसे सब कोई जानता है जो जन हरिकी पूजा करे सो दरिद्री होय और और देवको माननेसे धनवान देखो हरि हरकी कैसी रीति है ये लक्ष्मीपति वे गौरीपति ये धरे वनमाल वे मुण्डमाल ये चक्रपानि वे त्रिशूलपाणि ये धरणीधर वे गङ्गाधर ये मुरली बजावें वे सींगी ये बैकुण्ठनाथ वे कैलाशवासी ये प्रतिपालें वे संहारें ये चरचें चन्दन वे लगावें भभूत ये ओढ़ें अम्बर वे बाघम्बर ये पढ़ें वेद वे आगम इनका वाहन गरुड़ उनका नन्दी ये रहें ग्वाल बालोंमें वे भूत प्रेतोंमें॥

दोऊ प्रभुकी उलटी रीति। जित इच्छा तित कीजे प्रीति।

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज राजा युधिष्ठिरसे श्रीकृष्णचन्दने कहा है कि हे युधिष्ठिर जिसपरमैं अनुग्रह करता हूं होले होले उसका सब धन खाता हूं इस लिये कि धनहीनको भाई बन्धु स्त्री पुत्र आदि सब कुटुम्बके लोग तज देते हैं तब उसे बैराग उपजता है बैराग होनेसे धन जनकी माया

छोड़ निरमोही हो मन लगाय मेरा भजन करता है भजनके प्रतापसे अटल निर्व्वाण पद पाता है इतना कह पुनि शुकदेवजी कहने लगे कि महाराज और देवताकी पूजा करनेसे मनकामना पूरी होती है पर मुक्ति नहीं मिलती।

यह प्रसङ्ग सुनाय मुनिने पुनि राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज एक समय कश्यपका पुत्र वृकासुर तप करनेको अभिलाषा कर जों घरसे निकला तों पन्थमें उसे नारदमुनि मिले नारदजीको देखतेही इसने दण्डवत कर हाथ जोड़ सनमुख खड़ा हो अति दीनताकर पूछा कि महाराज ब्रह्मा विष्णु महादेव इन तीनों देवताओंमें शीघ्र बरदाता कौन है सो कृपाकर कहो तो मैं उन्हींकी तपस्या करूं नारदजी बोले कि सुन वृकासुर इन तीनों देवताओंमें महादेवजी बड़े बरदायक हैं इन्हें न रीझते बिलम्ब न खीजते देखो शिवजीने थोड़ेसे तप करनेसे प्रसन्न हो सहस्रार्जुनको हसस्र हाथ दिया औ अल्पही अपराधमें क्रोधकर उसका नाश किया महाराज इतना कह नारदमुनि तो चले गये औ वृकासुर अपने स्थानपर आय महादेवका अति तप यज्ञ करने लगा सात दिनके बीच उसने छूरीसे अपने शरीरका मांस सब काट काट होम दिया आठवें दिन जब शिर काटनेका मन किया तब भोलानाथने आय उसका हाथ पकड़के कहा कि मैं तुझसे प्रसन्न हुवा जो तेरी इच्छामें आवे सो बर मांग मैं तुझे अभी दूंगा इतना बचन शिवजीके मुखसे निकलतेही वृकासुर हाथ जोड़कर बोला॥

ऐसो बर दीजै अबै, जा शिर राखों हाथ।

भस्म होय सो पलकमें, करहु कृपा तुम नाथ॥

महाराज बातके कहतेही महादेवजीने उसे मुह मांगा बर दिया बर पाय वह शिवहीके शिरपर हाथ धरने गया उसकाल भय खाय महादेवजी आसन छोड़ भागे उनके पीछे असुरभी दो

हा महाराज महाशिवजी जहां जहां फिरें तहां तहां वहभी उनके पीछेही लगा आया निदान अति व्याकुल हो महादेवजी बैकुण्ठमें गये इनका महादुखित देख भक्तहितकारी बैकुण्ठनाथ श्रीमुरारी करुणानिधान करुणाकर बिप्र भेषधर वृकासुरके सनमुख जाय बोले कि हे असुरराय तुम इनके पीछे क्यों श्रम करते हो यह मुझे समझाकर कहो बातके सुनतेही वृकासुरने सब भेद कह सुनाया पुनि भगवान बोले कि असुरराय तुमसा सयाना हो धोखा खाय यह बड़े अचरजकी बात है इस नङ्गमुनङ्ग बावले भांग धतूरा खानेवाले योगीकी बात कौन सत्य माने यह सदा छार लगाये सर्प लिपटाये भयानक भेष किये भूत प्रेतोंको सङ्ग लिये श्मशानमें रहता है इसकी बात किसके जीमें सच आवे महाराज यह बात कह श्रीनारायण बोले कि हे असुरराय जो तुम मेरा कहा झूठ मानो तो अपने शिर पर हाथ रख देख लो॥

महाराज प्रभुके मुखसे इतनी बात सुनतेही मायाके बश अज्ञान हो जों वृकासुरने अपने शिरपर हाथ रक्खा तों जलकर भस्मका ढेर हुवा असुरके मरतेही सुरपुरमें आनन्दके बाजन बाजने लगे औ देवता जैजैकार कर फूल बरषावने विद्याधर गन्धर्ब्ब किन्नर हरिगुन गाने उसकाल हरिने हरको अति स्तुतिकर बिदा किया औ वृकासुरको मोक्ष पदारथ दिया श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इस प्रसङ्गको जो सुने सुनावेगा सो निस्सन्देह हरिहरकी कृपासे परम पद पावेगा इति॥

८६ अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एक समय सरस्वतीके तीर सब ऋषि मुनि बैठे तप यज्ञ करते थे कि उनमेंसे किसीने पूछा कि ब्रह्मा बिष्णु महेश इन तीनों देवताओंमें बड़ा कौन है सो कृपा कर कहो इसमें किसीने कहा शिव किसीने कहा विष्णु किसीने

कहा ब्रह्मा पर सबने मिल एकको बड़ा न बताया तब कई एक कए बड़े बड़े मुनियों ऋषीयोंने कहा कि हम यों तो किसीकी बात नहीं मानते पर हां जो कोई इन तीनों देवताओंकी जाकर परीक्षा कर आवे औ धर्मस्वरूपी कहै तो उसका कहना सत्य माने॥

महाराज यह बात सुन सबने प्रणाम की औ ब्रह्माके पुत्र भृगुको तीनों देवताओंकी परीक्षा कर आनेको आज्ञा दी आज्ञा पाय भृगुमुनि प्रथम ब्रह्मलोकमें गये औ चुपचाप ब्रह्माकी सभामें जा बैठे न दण्डवत की न स्तुति न परिक्रमा दी राजा पुत्रका अनाचार देख ब्रह्माने महाकोप किया औ चाहा कि स्राप दूं पर पुत्रकी ममता कर न दिया उसकाल भृगु ब्रह्माको रजोगुनसे आसक्त देख वहांसे उठ कैलाशमें गये जहां शिव पार्व्वती बिराजते थे तहां जा खड़े रहे इन्हें देख शिवजी खड़े हो जों हाथ पसार मिलनेको हुई तों ये बैठ गये बैठतेही शिवजीने अति क्रोध किया औ इनके मारनेको त्रिशूल हाथमें लिया उस समय श्रीपार्व्वतीजीने अति बिनती कर पाओंपड़ महादेवजीको समझाया औ कहा कि यह तुम्हारा छोटा भाई है इसकी अपराध क्षमा कीजै कहा है।

बालक सों जो चूक कछु परै। साधु न कबहू मनमें धरै॥

महाराज जब पार्व्वतीजीने शिवजीको समझाकर ठण्ढा किया तब भृगु महादेवजीको तमोगुणमें लीन देख चल खड़े हुए पुनि बैकुण्ठमें गये जहां भगवान मणिमय कञ्चनके छपरखट पर फूलोंकी सेजमें लक्ष्मीके साथ सोते थे जातेही भृगुने भगवानके हृदयमें एक लात ऐसी मारी कि वे नींदसे चौंक पड़े मुनिको देख लक्ष्मीको छोड़ छपरखटसे उतर हरि भृगुजीका पांव शिर आंखोंसे लगाय लगे दाबन औ यों कहने कि हे ऋषिराय मेरी अपराध क्षमा कीजे मेरे हृदय कठोरकी चोट तुम्हारे कोमल चरण

कमलमें अनजाने लगी यह दोष चित्तमें न लीजे इतना वचन प्रभुके मुखसे निकलतेही भृगुजी अति प्रसन्न हो स्तुतिकर बिदा हो वहां आय जहां सरस्वतीके तीर सब ऋषि मुनि बैठे थे आते ही भृगुजीने तीनों देवताओंका भेद सबजोंका तों कह सुनाया कि ॥

ब्रह्मा राजसमें लपटान्यौ। महादेव तामसमें सन्यौ।
विष्णु जु सात्विक मांहिं प्रधान। तिन तें बड़ो देव नहिं आन॥
सुनत रिषिन को संसो गयौ। सबहीके मन आनन्द भयौ॥
बिष्णु प्रशंसा सबने करी। अविचल भक्ति हृदेमे धरी॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज मैं अन्तर कथा कहता हूं तुम चित लगाय सुनो द्वारिकापुरीमें राजा उग्रसेन तो धर्मराज करते थे औ श्रीकृष्णचन्द्र बलराम उनकी आज्ञाकारी राजाको राजनीतिसे सब लोग अपने अपने स्वधर्ममें सावधान काज कर्ममें सज्ञान रहते औ आनन्द चैन करते थे तहां एक ब्राह्मणभी अति सुशील धरमिष्ट रहता था एक समै उसके पुत्र हो मरगया वह उसमरे पुत्रको ले राजा उग्रसेनके द्वारपर गया औ जो उसके मुंहमें आया सो कहने लगा कि तुम बड़े अधर्मी दुसकर्मी पापी हो तुम्हारेही कर्म धर्मसे प्रजा दुख पाती है औ मेराभी पुत्र तुम्हारेही पापसे मरा॥

महाराज इसी भांतिकी अनेक अनेक बातें कह मरा लड़का राजद्वारपर रक्ख ब्राह्मण अपने घर आया आगे उसके आठ बेटे हुए औ आठोंको वह उसी रीतिसे राजद्वारपर रक्ख आया जब नवां पुत्र होनेको हुवा तब वह ब्राह्मण फिर राजा उग्रसेनकी सभामें जा श्रीकृष्णचन्द्रजीके सनमुख खड़ा हो पुत्रोंके मरनेका दुख सुमिर सुमिर रो रो यों कहने लगा कि धिक्कार है राजा औ इसके राजको पुनि धिक्कार है उन लोगोंको जो इस अधर्मी की सेवा करते हैं औ धिक्कार है मुझे जो इस पुरीमें रहता हूं

जो इन पापियोंके देशमें न रहता तो मेरे पुत्र बचते इन्होंके अधर्मसे मेरे पुत्र मरे औ किसीने उपराला न किया॥

महाराज इसी ढबकी सभाके बीच खड़ा हो ब्राह्मणने रो रो बहुतसी बातें कही पर कोई कुछ न बोला निदान श्रीकृष्णचन्द्रके पास बैठा सुन सुन घबराकर अर्जुन बोला कि हे देवता तू किसके आगे यह बात कहे है औ क्यों इतना खेद करे है इस सभामें कोई धनुर्धर नहीं जो तेरा दुख दूर करे आज कलके राजा आपकाजी हैं पर दुख निवारण नहीं जो प्रजाको सुख दें औ गौ ब्राह्मणकी रक्षा करें ऐसे सुनाय पुनि अर्जुनने ब्राह्मणसे कहा कि देवता अब तुम जाय अपने घर निचिन्त हो बैठो जब तुमहारे लड़का होनेका दिन आवे तब तुम मेरे पास आइयो मैं तुम्हारे साथ चलूंगा औ लड़केको न मरने दूंगा महाराज इतनी बातके सुनतेही ब्राह्मण खिजलायके बोला कि मैं इस सभाके बीच श्रीकृष्ण बलराम प्रद्युम्न औ अनिरुद्ध छुड़ाय ऐसा बलवान किसीको नहीं देखता जो मेरे पुत्रको कालके हाथसे बचावे अर्जुन बोला कि ब्राह्मण तू मुझे नहीं जानता कि मेरा नाम धनञ्जय है मैं तुझसे प्रतिज्ञा करता हूं कि जो मैं तेरा सुत कालके हाथसे न बचाऊं तो तेरे मरे हुए लड़के जहां पाऊं तहांसे ले आय तुझे दिखाऊं औ वेभी न मिलें तो गाण्डीव धनुष समेत अपने तई अग्निमें जलाऊं महाराज प्रतिज्ञा कर जब अर्जुनने ऐसे कहा तब वह ब्राह्मण सन्तोषकर अपने घर गया पुनि पुत्र होनेके समय विप्र अर्जुनके निकट आया उसकाल अर्जुन धनुष बाण ले उसके साथ उठ धाया आगे वहां जाय उसका घर अर्जुनने बाणोंसे ऐसा छाया कि जिसमें पवनभी प्रवेश न कर सके औ आप धनुषबाण लिये उसके चारोंओर फिरने लगा॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज अर्जुनने बहुतसा उपाय बालकको बचानेको किया

पर न बचा और दिन बालक होनेके समय रोता था उस दिन खासभी न लिया बरन पेटहीसे मरा निकला मरे लड़केका होना सुन लज्जित हो अर्जुन श्रीकृष्णचन्द्रके निकट आया औ उसके पीछे ब्राह्मणभी महाराज आतेही रो रो वह ब्राह्मण कहने लगा कि रे अर्जुन धिक्कार है तुझे औ तेरे जीतबेको जो मिथ्या बचन कह संसारमें लोगोंको मुख दिखाता है अरे नपुंसक जो तू मेरे पुत्रको कालसे न बचा सकता था तो तैंने प्रतिज्ञा क्यों की थी मैं तेरे पुत्रके बचाऊंगा औ न बचा सकूंगा तो तेरे मरे हुए सब पुत्र ला दूंगा॥

महाराज इतनी बातके सुनतेही अर्जुन धनुष बाण ले वहांसे उठ चला चला संयमनी पुरीमें धर्मराजके पास गया इसे देख धर्मराज उठ खड़ा हुवा औ हाथ जोड़ स्तुतिकर बोला कि महाराज आपका आगमन यहां कैसे हुवा अर्जुन बोला कि मैं अमुक ब्राह्मणके बालक लेने आया हूं धर्मराजने कहा कि यहां वे बालक नहीं आये महाराज इतना बचन धर्मराजके मुखसे निकलतेही अर्जुन वहांसे बिदा हो सब ठौर फिरा पर उसने ब्राह्मणके लड़कोंको कहीं न पाया निदान अछता पछता द्वारिकापुरीमें आया औ चिता बनाय धनुष बाण समेत जलनेको उपस्थित हुवा आगे अग्नि जलाय अर्जुन जों चाहे कि चिता पर बैठे तों श्रीमुरारी गर्वप्रहारीने आय हाथ पकड़ा औ हंसके कहा कि हे अर्जुन तू मत जलै तेरी प्रतिज्ञा मैं पूरी करूंगा जहां उस ब्राह्मणके पुत्र होंगे तहांसे ला दूंगा महाराज ऐसे कह त्रिलोकी नाथ रथ पर बैठ अर्जुनको साथ ले पूरवकी ओरको चले औ सात समुद्र पार हो लोकालोक पर्वतके निकट पहुंचे वहां जाय रथसे उतर एक अति अंधेरी कन्दरामें पैठे उस समय श्रीकृष्णचन्द्रजीने सुदरशन चक्रको आज्ञा की वह कोटिसूर्यका प्रकाश किये प्रभुके आगे आगे महाअन्धकारको टालता चला॥

तम तज केतिक आगे गये। जल मैं तबै जु पैठत भये॥
महा तरङ्ग तासुमें लसे। मूंदि आंखियें ता में धसे॥
पहुंचे हुते शेष जी जहां। कृष्ण अरु अर्जुन पहुंचे तहां॥

जातेही आंख खोलकर देखा कि एक बड़ा लम्बा चौड़ा ऊंचा कञ्चनका मणिमय मन्दिर अति सुन्दर है तहां शेषजीके सीस पर रतनजड़ित सिंहासन धरा है तिस पर श्याम घन रूप सुन्दर स्वरूप चन्द्रवदन कमल नयन किरीट कुण्डल पहने पीतबसन ओढ़े पीताम्बर काछे बनमाल मुक्तमाल डाले आप प्रभु मोहनी मूरति बिराजे हैं औ ब्रह्मा रुद्र इन्द्र आदि सब देवता सनमुख खड़े स्तुति करते हैं महाराज ऐसा स्वरूप देख अर्जुन औ श्रीकृष्णचन्द्रजीने प्रभुके सोंही जाय दण्डवत कर हाथजोड़ अपने जानेका सब कारण कहा बातके सुनतेही प्रभुने ब्राह्मणके बालक सब मंगाये दीने औ अर्जुनने देख भाल प्रसन्न हो लीने तब प्रभु बोले॥

तुम दोऊ मेरी कथा जु आदि। हरि अर्जुन देखो चित चाहि॥
भार उतारण भू पर गये। साधु सन्त कों बहु सुख दये
असुर दैत्य तुम सब संहारे। सुर नर मुनिके काज संवारे॥
मेरे अंश जु तुममें द्वै हैं। पूरण काम तुमहारे ह्वै है॥

इतना कह भगवानने अर्जुन औ श्रीकृष्ण जीको बिदा किया ये बालक ले पुरीमें आये द्विजके पुत्र द्विजने पाये घर घर आनन्द मङ्गल भये बधाये इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज॥

जे यह कथा सुनै धर ध्यान। तिनके पुत्र होय कल्याण॥ इति॥

९० अध्याय।

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज द्वारिकापुरीमें श्रीकृष्णचन्द्र सदा बिराजें ऋद्धि सिद्धि सब यदुबंशियोंके घर घर राजें नर नारी बसन आभूषण ले नव बेष बनावें चोआ चन्दन चरच सुगन्ध लगावें महाजन हाट बाट चौहटे झाड़ बुहार छिड़कावें तहां देश

देशके व्यापारी अनेक अनेक पदारथ बेचनेको लावें जिधर तिध र पुरबासी कुतूहल करें ठौर ठौर ब्राह्मण वेद उच्चरें घर घरमें लोग कथा पुराण सुने सुनावें साध सन्त आठों याम हरि यश गावें सारथी रथ घुड़ बहल जोत जोत राजद्वारपर लावें रथी महारथी गजपति अश्वपति शूरबीर रावत जोधा यादव राजा को जुहार करने आवें गुणीजन नाचें गावें बजावें रिझावें बन्दी जन चारण यश बखान कर कर हाथी घोड़े वस्त्र शस्त्र अनधन कञ्चनके रतनजटित आभूषण पावें ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजासे कहा कि महाराज उधर तो राजा उग्रसेनकी राजधानीमें इसी रीतिसे भांति भांतिके कुतूहल हो रहे थे औ इधर श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्द सो लह सहस्र एक सौ आठ युवतियोंके साथ नित्य बिहार करें कभी युवतियां प्रेममें आसक्त हो प्रभुका बेष बनाव करें कभी हरि आसक्त हो युवतियोंको सिङ्गारे औ जो परस्पर लीला क्रीड़ा करें सो अकथ है मुझसे कही नहीं जाती वह देखेही बनि आवे इतना कह शुकदेवजी बोले कि महाराज एक दिन रात्रि समय श्रीकृष्णचन्द सब युवतियोंके साथ बिहार करते थे औ प्रभुके नानाप्रकारके चरित्र देख किन्नर गन्धर्व बीन पखावज भेर दुन्दभी बजाय बजाय गुण गाते थे और एक समा हो रहा था कि इसमें बिहार करते करते जो कुछ प्रभुके मनमें आया तो सबको साथ ले सरोवरके तीर जाय नीरमें पैठ जलक्रीड़ा करने लगें औ जलक्रीड़ा करते करते सब स्त्री श्रीकृष्णचन्दके प्रेममें मगन हो तन मनकी सुरत भुलाय एक चकवा चकवीको सरोवरके वार पार बैठे बोलते देख बोलीं ॥

हे चकई तू दुख क्यों गावे। पिय बियोग नें रैन न सोवे ॥
अति व्याकुल ह्वै पिय हि पुकारे। हमलौं तू निज पियही संहारे ॥
हम तो तिनकी चेरी भई। ऐसे कहि आगे कों गई ॥

पनि समुद्रसे कहने लगा कि हे समुद्र तू जो लम्बी सांस लेता है औ रात दिन जागता है सो क्या तुझे किसीका बिरोग है कै चौदह रत्न गये का शोग है इतना कह फिर चन्द्रमाको देख बोलीं हे चन्द्रमा तू क्यों तनछीन मनमलीन हो रहा है क्या तुझे राज रोग हुवा जो दिन दिन घटता बढ़ता है कै श्रीकृष्णचन्द्रको देख जैसे हमारी गति मति भूलती है तैसे तेरीभी भूली है ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजासे कहा कि महाराज इसी भांति सब युवतियोंने पवन मेघ कोकिल पर्ब्बत नदी हंससे अनेक अनेक बातें कहीं सो जान लीजे आगे सब स्त्री श्रीकृष्णचन्द्रके साथ बिहार करें औ सदा सेवामें रहे प्रभुके गुण गावें औ मनवांछित फल पावें प्रभु गृहस्थधर्मसे गृहस्थाश्रम चलावें महाराज सोलह सहस्र एक सौ आठ श्रीकृष्णचन्द्रकी रानि जो बखानी तिनमें एक एक रानीको दश दश पुत्र औ एक एक कन्या थी औ उनकी सन्तान अनगिनत हुई सो मेरी सामर्थ नहीं जो उनका बखान करूं पर मैं इतना जानता हूं कि तीनकरोड़ अट्ठासी सहस्र एक सौ चटशाल थीं श्रीकृष्णचन्द्रकी सन्तानके पढ़ानेको औ इतनेही पांड़े थे आगे श्रीकृष्णचन्द्रजीके जितने बेटे पोते नाती हुए रूप बल पराक्रम धन धर्ममें कोई कम न था एक एकसे बढ़कर उनका बरणन मैं कहांतक करूं इतना कह ऋषि बोले महाराज मैंने ब्रज औ द्वारिकाकी लीला गाई यह है सबकी सुखदाई जो जन इसे प्रेम सहित गावेगा सो निसन्देह भक्ति मुक्तिपदारथ पावेगा जो फल होता है तप यज्ञ दान ब्रत तीरथ असनान करनेसे सो फल मिलता है हरिकथा सुनने सुनानेसे ॥

इति श्रीलल्लूलालकृते प्रेमसागरे द्वारिका विहार वर्णनो नाम नवतितमोऽध्यायः सम्पूर्णम् ॥

सम्वत् रामचन्द्र अरु अङ्कधरा सुखदान ।
नवमी फागुन कृष्णकी, छपी भौमदिन जान ॥

[illegible]

[illegible]

ॐ रक्तचंदनेन सो भागं रक्तचंदन चर्चितं रक्तपुष्पादि

[illegible]

